लेखाशास्त्र

कंपनी खाते एवं वित्तीय विवरणों का विश्लेषण

कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक

© NCERT
not to be republished

12129

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

12129 – लेखाशास्त्र
कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक

प्रथम संस्करण
जून 2007 ज्येष्ठ 1929

पुनर्मुद्रण
नवंबर 2007, दिसंबर 2008,
सितंबर 2010, जनवरी 2011

संशोधित संस्करण
मार्च 2017, मार्च 2019,
फ़रवरी 2020, जनवरी 2021,
फ़रवरी 2023 माघ 1944

पुनर्मुद्रण
मार्च 2024 चैत्र 1946

PD 2T SU

© **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007, 2023**

₹ 190.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा ताज प्रिंटर्स, 69/6ए, नज़फगढ़ रोड, इंडस्ट्रियल एरिया, नजदीक कीर्ति नगर मैट्रो स्टेशन, नयी दिल्ली – 110 015 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-93-5007-795-5

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी) : *अमिताभ कुमार*
संपादक : *रेखा अग्रवाल*
सहायक उत्पादन अधिकारी : *सुनील कुमार*

आवरण
श्वेता राव

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005 सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफ़लता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सिखाने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितनी वार्षिक केलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षा और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव कराने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती हैं। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और इस पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर आर. के. ग्रोवर की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान दिया, इस योगदान को

संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

© NCERT
not to be republished

पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन

कोविड-19 महामारी को देखते हुए, विद्यार्थियों के ऊपर से पाठ्य सामग्री का बोझ कम करना अनिवार्य है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020* में भी विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री का बोझ कम करने और रचनात्मक नज़रिए से अनुभवात्मक अधिगम के अवसर प्रदान करने पर ज़ोर दिया गया है। इस पृष्ठभूमि में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने सभी कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित करने की शुरुआत की है। इस प्रक्रिया में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा पहले से ही विकसित कक्षावार सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखा गया है।

पाठ्य सामग्रियों के पुनर्संयोजन में निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है—

- एक ही कक्षा में अलग-अलग विषयों के अंतर्गत समान पाठ्य सामग्री का होना;
- एक कक्षा के किसी विषय में उससे निचली कक्षा या ऊपर की कक्षा में समान पाठ्य सामग्री का होना;
- कठिनाई स्तर;
- विद्यार्थियों के लिए सहज रूप से सुलभ पाठ्य सामग्री का होना, जिसे शिक्षकों के अधिक हस्तक्षेप के बिना, वे खुद से या सहपाठियों के साथ पारस्परिक रूप से सीख सकते हों;
- वर्तमान संदर्भ में अप्रासंगिक सामग्री का होना।

वर्तमान संस्करण, ऊपर दिए गए परिवर्तनों को शामिल करते हुए तैयार किया गया पुनर्संयोजित संस्करण है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता और अखंडता]** सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

Reprint 2026-27

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

आर. के. ग्रोवर, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), स्कूल आफ़ मैनेजमेंट स्टडीज़, इग्नू, नयी दिल्ली।

सदस्य

एच.वी. झांब, *रीडर,* खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
एन. के. ककड़, *निदेशक*, महाराजा अग्रसेन इंस्टीट्यूट आफ़ मेनेजमेंट, रोहणी, नयी दिल्ली
एस.एस. सहरावत, *सहायक आयुक्त,* केंद्रीय विद्यालय संगठन, चंडीगढ़
एस.सी.हुसैन, *प्रोफ़ेसर,* वाणिज्य विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली
ओबल रेड्डी, *प्रोफ़ेसर*, वाणिज्य विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश
डी. के. वेद, *प्रोफ़ेसर*, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली
दीपक सहगल, *रीडर*, दीन दयाल उपाध्याय कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
दिनकर देव हांडा, *पीजीटी वाणिज्य,* रोहतगी ए.वी. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नयी सड़क, दिल्ली
राजेश बंसल, *पीजीटी वाणिज्य,* रोहतगी ए.वी. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नयी सड़क, दिल्ली
वनिता त्रिपाठी, *लेक्चरर,* वाणिज्य विभाग, दिल्ली स्कूल आफ़ इकॉनोमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
सविता शंगारी, *पीजीटी वाणिज्य,* ज्ञान भारती स्कूल, साकेत, नयी दिल्ली
सुधीर सपरा, *पीजीटी वाणिज्य,* केंद्रीय विद्यालय, सुलतानपुर, उत्तर प्रदेश

हिंदी अनुवाद

अमर सिंह सचान, *अनुवादक,* आर. के. पुरम, नयी दिल्ली
राजेश बंसल, *पीजीटी वाणिज्य,* रोहतगी ए.वी. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नयी सड़क, दिल्ली

सदस्य-समन्वयक

शिप्रा वैद्या, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर* (वाणिज्य), सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, इस पुस्तक के निर्माण एवं पुनरीक्षण में सहयोग देने हेतु पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति का आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, सविता सिन्हा, *प्रो़फ़ेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग के प्रति भी अपनी कृतज्ञता अर्पित करती है, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक को पूर्ण रूप देने में अपना अमूल्य योगदान दिया। हम उन सभी वाणिज्य शिक्षकों के भी आभारी हैं, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक की क्यू.आर. कोड की अतिरिक्त पाठ्य सामग्री तैयार करने में अपना योगदान दिया है। क्यू. आर. कोड में दी गई विषय सामग्री को ई-पाठशाला ऐप की सहायता से पढ़ा जा सकता है।

परिषद्, विभाग के डी.टी.पी. सहयोग हेतु अपना हार्दिक आभार ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक को पूर्ण रूप देने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी संदर्भ में प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी. का सहयोग भी उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

वर्ष 2011 में लागू की गयी कंपनी अधिनियम 1956 की संशोधित अनुसूची VI (वर्तमान में कंपनी अधिनियम 2013 की अनुसूची III) के अनुसार भारतीय कंपनियों द्वारा तैयार किए गए वित्तीय विवरणों के प्रारूप और प्रदर्शन में बदलाव किया गया है जिसमें तुलन-पत्र और लाभ व हानि विवरण के विशेष संदर्भ में दर्शायी जाने वाली परिसंपत्तियों और देयताओं के सुनिश्चित वर्गीकरण एवं नामावली में परिवर्तन प्रमुख हैं। यह पाठ्यपुस्तक 16 अगस्त, 2019 तक लाए गए लेखाकंन व्यवहारों पर तैयार की गई है।

इस संदर्भ में अपनाए गए नवीन लेखांकन व्यवहारों से प्रभावित निगम वित्तीय प्रतिवेदनों के वर्गीकृत प्रकटन के परिणामस्वरूप इस पाठ्यपुस्तक के संशोधन हेतु सभी वित्तीय विवरणों को निर्धारित प्रारूप में तैयार किया है।

एन.सी.ई.आर.टी. भावी संशोधनों हेतु इस प्रकाशन में सुधार लाने के लिए टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी।

© NCERT not to be republished

विषय-सूची

आमुख *iii*

पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन *v*

अध्याय 1 अंशपूँजी के लिए लेखांकन **1**

1.1 कंपनी की विशेषताएँ 1

1.2 कंपनी के प्रकार 2

1.3 कंपनी की अंशपूँजी 3

1.4 अंशों की श्रेणियाँ एवं प्रकृति 6

1.5 अंशों का निर्गमन 7

1.6 लेखांकन व्यवहार 8

1.7 अंशों का हरण 39

अध्याय 2 ऋणपत्रों का निर्गम एवं मोचन **77**

उपखंड–I

2.1 ऋणपत्र का आशय 77

2.2 अंश और ऋणपत्र के बीच अंतर 78

2.3 ऋणपत्रों के प्रकार 78

2.4 ऋणपत्रों का निर्गम 80

2.5 अधि-अभिदान 88

2.6 रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफ़ल पर ऋणपत्रों का निर्गमन 89

2.7 ऋणपत्रों का संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमन 97

2.8 ऋणपत्रों को निर्गमित करने की शर्तें 101

2.9 ऋणपत्रों पर ब्याज 108

2.10 ऋण पत्र निर्गम पर बट्टा/हानि का अपलेखन 110

अध्याय 3 कंपनी के वित्तीय विवरण **121**

3.1 वित्तीय विवरणों का अर्थ 121

3.2 वित्तीय विवरणों की प्रकृति 122

3.3 वित्तीय विवरणों के उद्देश्य 123

3.4 वित्तीय विवरणों के प्रकार 124

3.5 वित्तीय विवरणों की उपयोगिता एवं महत्त्व 143

3.6 वित्तीय विवरणों की सीमाएँ 144

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

अध्याय 4 लेखांकन अनुपात **149**

4.1 लेखांकन अनुपात का अर्थ 149
4.2 अनुपात विश्लेषण के उद्देश्य 150
4.3 अनुपात विश्लेषण के लाभ 151
4.4 अनुपात विश्लेषण की सीमाएँ 152
4.5 अनुपातों के प्रकार 153
4.6 द्रवता अनुपात 154
4.7 ऋण शोधन क्षमता अनुपात 160
4.8 क्रियाशीलता (या आवर्त) अनुपात 169
4.9 लाभ प्रदता अनुपात 178

अध्याय 5 रोकड़ प्रवाह विवरण **197**

5.1 रोकड़ प्रवाह विवरण के उद्देश्य 198
5.2 रोकड़ प्रवाह विवरण के लाभ 198
5.3 रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यराशियाँ 199
5.4 रोकड़ प्रवाह 199
5.5 रोकड़ प्रवाह विवरण को तैयार करने हेतु क्रियाकलापों का वर्गीकरण 199
5.6 प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह की गणना 205
5.7 निवेश एवं वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह की गणना 214
5.8 रोकड़ प्रवाह विवरण का निर्माण 217

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

12129CH01

अंशपूँजी के लिए लेखांकन

1

एक संगठन का कंपनी प्रारूप संगठन प्रारूप के विकास का तीसरा चरण है। इसकी पूँजी व्यक्तियों की एक विशाल संख्या द्वारा विनियोजित की जाती है, जो कि इसके अंशधारी कहलाते हैं और वो कंपनी के वास्तविक स्वामी भी होते हैं। लेकिन न तो यह संभव है कि वे सभी कंपनी के प्रबंध में भाग लें और न ही यह वांछनीय है। इसलिए वे कंपनी के मामलों को निपटाने के लिए अपने प्रतिनिधि के रूप में संचालक मंडल का चुनाव करते हैं। तथ्य यह है कि कंपनी के सभी मामले कंपनी अधिनियम 2013 के प्रावधानों के अनुसार शासित होते हैं। एक कंपनी से आशय है 'वह कंपनी जो कि कंपनी अधिनियम 2013 के अंतर्गत या किसी अन्य पूर्व कंपनी अधिनियम के अंतर्गत समामेलित या पंजीकृत है'। केवल कानून द्वारा रचित होने के कारण, यह केवल उन परिसंपत्तियों को अपने नियंत्रण में रख सकती है जिनके लिए उसकी रचना करने वाला *चार्टर* उसे अधिकार प्रदान करता है, चाहे वह स्पष्टतः हो अथवा उसके बिलकुल प्रारंभ से प्रासंगिक हो। कंपनी प्राय– अपनी पूँजी अंशों के रूप में (जो अंशपूँजी कहलाती है) और ऋणपत्रों (ऋण पूँजी) के रूप में एकत्रित करती है। यह अध्याय कंपनी की अंशपूँजी के लिए लेखांकन व्यवहार की स्पष्ट व्याख्या करता है।

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के उपरांत आप–

- *व्यवसाय संगठन के स्वरूप के रूप में संयुक्त पूँजी कंपनी की मूल प्रकृति तथा कंपनी के सदस्यों के दायित्व के आधार पर कंपनियों के विभिन्न प्रकारो का वर्णन कर सकेंगे।*
- *कंपनी द्वारा निर्गमित अंशों के प्रकारों का वर्णन कर सकेंगे।*
- *सममूल्य पर अंशों के निर्गमन का लेखांकन व्यवहार, अधिमूल्य तथा बट्टे पर निर्गमन, अधि-अभिदान सहित लेखांकन व्यवहार कर सकेंगे।*
- *विभिन्न परिस्थितियों में अंशों के हरण और हरण किए गए अंशों के पुनः निर्गमन की रूपरेखा का अध्ययन कर सकेंगे।*
- *हरण किए गए अंशों के पुनः निर्गमन पर राशि को पूँजी आरक्षित खाते में हस्तांतरण की जाने वाली राशि में परिकलित कर सकेंगे और अंश हरण खाता तैयार कर सकेंगे।*

1.1 कंपनी की विशेषताएँ

एक कंपनी को व्यक्तियों के एक संघ के रूप में देखा जा सकता है जो कि राशि को एकत्रित करते हैं या फिर राशि को एक सामान्य स्कंध के रूप में एक सामान्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए उपयोग करते हैं। यह एक कृत्रिम व्यक्ति है, जिसका इसके सदस्यों (अंशधारकों)से पृथक कानूनी अस्तित्व होता है और यह अपने हस्ताक्षर के लिए एक विशिष्ट

© NCERT not to be republished

सार्वमुद्रा का प्रयोग करती है। इसलिए यह कुछ विशेषताएँ रखती है जो कि इसे अन्य संस्थानों से पृथक करती हैं। ये निम्नलिखित हैं–

- *निगमित संस्था–* समय-समय पर लागू होने वाले कानूनों के प्रावधानों के अनुसार एक कंपनी का निर्माण किया जाता है। समान्यत: भारत में कंपनियों का निर्माण तथा पंजीकरण कंपनी अधिनियम के अंतर्गत होता है, बैंकिग तथा बीमा कंपनियों को छोड़कर, जिनके लिए पृथक कानून है।
- *पृथक वैधानिक अस्तित्व–* एक कंपनी का अलग कानूनी अस्तित्व होता है जो कि इसके सदस्यों से भिन्न होता है। कंपनी किसी भी प्रकार की परिसंपत्ति का क्रय कर सकती है। यह अनुबंध कर सकती है और अपने नाम से बैंक खाता भी खोल सकती है।
- *सीमित दायित्व–* इसके सदस्यों का दायित्व केवल उनके द्वारा खरीदे गए अंशों की अदत्त राशि तक ही सीमित होता है। गारंटी द्वारा सीमित कंपनी की स्थिति में, कंपनी के समापन की दशा में सदस्यों का दायित्व उनके द्वारा दी गई गारंटी तक ही सीमित रहता है।
- *स्थायी उत्तराधिकार–* कंपनी एक कृत्रिम व्यक्ति है जो कि कानून द्वारा निर्मित होने के कारण इसके सदस्यों के परिवर्तित होने पर भी अस्तित्व में रहती है। एक कंपनी को केवल कानून द्वारा विघटित किया जा सकता है। कंपनी के सदस्यों की मृत्यु, दिवालियापन होने की स्थिति में भी कंपनी के अस्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता सदस्य आते-जाते रहते हैं। इसके बावजूद भी कंपनी निरंतर क्रियाशील रहती है।
- *सार्वमुद्रा–* कंपनी कृत्रिम व्यक्ति होने के कारण अपने नाम के हस्ताक्षर नहीं कर सकती। इसलिए प्रत्येक कंपनी को एक सार्वमुद्रा का प्रयोग आवश्यक है जो कि अधिकारित रूप से कंपनी के लिए हस्ताक्षर करती है। कोई दस्तावेज़ यदि इस पर कंपनी की सार्वमुद्रा नहीं है तो कोई कंपनी इसके लिए बाध्य नहीं होगी।
- *अंशों का हस्तांतरण–* एक सार्वजनिक लिमिटेड कंपनी के अंश मुक्त रूप से हस्तांतरणीय होते हैं। अंशों के हस्तांतरण के लिए कंपनी की अनुमति या किसी सदस्य की सहमति की कोई आवश्यकता नहीं होती। लेकिन कंपनी के अंतर्नियमों में अंशों को हस्तांतरित करने के तरीके का उल्लेख होता है।
- *अभियोग चलाना तथा अभियोजित होना–* कानूनी व्यक्ति होने के कारण एक कंपनी संविदा कर सकती है तथा संविदागत् अधिकारों के प्रवर्तन हेतु दूसरों को बाध्य कर सकती है। यह अभियोग चला सकती है तथा यदि कंपनी संविदा का उल्लंघन करे उसके नाम से उस पर अभियोग चलाया जा सकता है।

1.2 कंपनी के प्रकार

कंपनियों का वर्गीकरण या तो उनके सदस्यों के दायित्व के आधार पर या इसके सदस्यों की संख्या के आधार पर किया जा सकता है। कंपनी के सदस्यों के दायित्व के आधार पर एक कंपनी को नीचे दी गई तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

(i) *अंशों द्वारा सीमित कंपनी–* ऐसी कंपनी में इसके सदस्यों का दायित्व उनके द्वारा लिए गए अंशों के वास्तविक मूल्य तक सीमित होता है। यदि एक सदस्य द्वारा अंशों की पूर्ण राशि का भुगतान कर दिया गया है तो सदस्य के हिस्से कोई दायित्व नहीं होगा। चाहे कंपनी का ऋण कुछ भी हो। उस सदस्य को अपनी निजी परिसंपत्ति से एक पैसे का भी भुगतान नहीं करना होगा। हालाँकि,

© NCERT not to be republished

यदि कोई दायित्व शामिल है भी, तो उसे कंपनी के अस्तित्व के दौरान अथवा समापन पर लागू किया जा सकता है।

(ii) *गारंटी द्वारा सीमित कंपनी*– ऐसी कंपनियों में सदस्यों का दायित्व, कंपनी के समापन होने की दशा में उनके द्वारा दिए गए अंशदान के वचन तक सीमित होता है। अतः इसके सदस्यों का दायित्व इसके समापन की घटना पर ही उत्पन्न होगा।

(iii) *असीमित कंपनी*– जब कंपनी के सदस्यों का दायित्व सीमित नहीं होता है, तो यह कंपनी असीमित कंपनी कहलाती है। जब कंपनी की परिसंपत्ति इसके द्वारा लिए गए ऋणों का भुगतान करने में असमर्थ रहती है, तो इसके सदस्यों की निजी परिसंपत्तियों को इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयोग में लाया जाता है। दूसरे शब्दों में लेनदार उनके बकाये का दावा कंपनी के सदस्यों पर कर सकते हैं। इस प्रकार की कंपनियाँ भारत में नहीं पाई जाती हैं।

सदस्यों की संख्या के आधार पर कंपनियों को निम्नलिखित तीन श्रेणीयों में बाँटा जा सकता है :

क. सार्वजनिक कंपनी : सार्वजनिक कंपनी से आशय एक ऐसी कम्पनी से है जो कि

(अ) एक निजी कंपनी नहीं है।

(ब) एक कंपनी जो निजी कंपनी की सहायक कंपनी नहीं है।

ख. निजी कंपनी : एक निजी कंपनी वो है जो अपने अनुच्छेदों के अनुसार

(अ) अपने अंशों के हस्तानांतरण के अधिकार को प्रतिबंधित करती है

(ब) एकल व्यक्ति कंपनी के अतिरिक्त अपने सदस्यों की संख्या को 200 तक सीमित रखती है (इसके कर्मचारियों को छोड़कर)

(स) जनता को कम्पनी की किसी भी प्रतिभूति के अभिदान के लिए आमंत्रण निषेध करती है:

ग. एकल व्यक्ति कंपनी (OPC) कंपनी अधिनियम 2013 के खंड 2 (62), के अनुसार एकल व्यक्ति कंपनी से आशय उस कम्पनी से है जिसमें केवल एक ही व्यक्ति होता है। कंपनी (समावेषण) नियम, 2014 के नियम 3 के अनुसार

(अ.) एकल व्यक्ति कंपनी केवल उस व्यक्ति द्वारा स्थापित की जा सकती है जो भारतीय नागरिक एवं भारतीय निवासी है।

(ब.) इस प्रकार की कंपनी से आपेक्षित है कि वह गैर बैंकीय वित्तीय निवेश क्रियाओं में कार्य नहीं करेगी।

(स.) इस प्रकार की कंपनी की प्रदत्त पूँजी किसी भी दशा में 50,00,000 (पचास लाख रूपये) से अधिक नहीं हो सकती। इस प्रकार की कंपनी का औसत वार्षिक आवर्त 2,00,00,000 (दो करोड़) से अधिक नहीं हो सकता है।

1.3 कंपनी की अंशपूँजी

कंपनी, कृत्रिम व्यक्ति होने के कारण अपनी पूँजी को स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकती जो आवश्यक रूप से कुछ व्यक्तियों से एकत्रित की जाती है। ये व्यक्ति कंपनी के **अंशधारी** कहलाते हैं तथा इनसे एकत्रित राशि एक कंपनी की अंशपूँजी कहलाती है। चूँकि कंपनी के अंशधारियों की संख्या बहुत अधिक होती है, इसलिए प्रत्येक के लिए अलग-अलग पूँजी खाता नहीं खोला जा सकता।

अतः एकत्रित पूँजी के असंख्य भागों को और उसके अस्तित्व को एक सामान्य पूँजी खाता, जो कि **अंशपूँजी खाता** कहलाता है, में समायोजित कर दिया जाता है।

not to be republished © NCERT

1.3.1 अंशपूँजी का वर्गीकरण

लेखांकन की दृष्टि से कंपनी की अंशपूँजी को निम्न प्रकार श्रेणीबद्ध किया जा सकता है–

- *अधिकृत पूँजी*– अधिकृत पूँजी, कंपनी की अंशपूँजी की वह राशि है जो कि कंपनी के सीमा पार्षद नियम के द्वारा निर्गमित करने हेतु अधिकृत है। कंपनी सीमा पार्षद नियम में उल्लेखित पूँजी से अधिक राशि को एकत्रित नहीं कर सकती। यह प्राधिकृत या पंजीकृत पूँजी भी कहलाती है। अधिकृत पूँजी कंपनी अधिनियम में दी गई प्रक्रिया के अनुसार कम या ज़्यादा की जा सकती है। यह ध्यान देने योग्य है कि कंपनी समस्त अधिकृत पूँजी को जनता में अभिदान के लिए एक ही समय में निर्गमित करने के लिए बाध्य नहीं है। कंपनी अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अंशपूँजी निर्गमित कर सकती है, परंतु किसी भी स्थिति में यह पूँजी अधिकृत पूँजी से अधिक नहीं हो सकती।
- *निर्गमित पूँजी*– अधिकृत पूँजी का वह भाग जिसे जनता को अंश अभिदान के लिए वास्तविक रूप से प्रस्तावित किया जाता है उसे **निर्गमित पूँजी** कहते हैं। इसमें वे अंश भी सम्मिलित हैं जो परिसंपत्ति विक्रेताओं को तथा कंपनी के पार्षद सीमा नियम के हस्ताक्षरकर्ताओं को निर्गमित किए जाते हैं। अधिकृत पूँजी की वह राशि जो कि जनता में अभिदान नहीं की गई है **अनिर्गमित पूंजी** कहलाती है तथा इसे आगामी तिथि को किसी भी समय जनता में अभिदान के लिए निर्गमित किया जा सकता है।
- *अभिदत्त पूँजी*– यह निर्गमित पूँजी का वह भाग है जो जनता द्वारा वास्तविक रूप से अभिदत्त की गई है। जब अंशों का जनता द्वारा पूर्ण रूप से अभिदान होता है तो निर्गमित पूँजी और अभिदत्त पूँजी समान होगी। यह ध्यान देने योग्य है कि अंततः, अभिदत्त पूँजी और निर्गमित पूँजी समान हैं क्योंकि यदि अभिदान के लिए अंशों की संख्या, निर्गमित संख्या से कम है तो कंपनी केवल उन्हीं अंशों का आबंटन करेगी जिनके लिए अभिदान प्राप्त हो चुका है। किसी स्थिति में यह अंशों की संख्या, यदि निर्गमित संख्या से ज़्यादा है तो आबंटित अंश, निर्गमित अंशों के समान होंगे। दूसरे शब्दों में, अधि अभिदान के तथ्य, पुस्तकों में नहीं प्रदर्शित किए जाते हैं।
- *माँगी गई या याचित पूँजी*– अधिकृत पूँजी का वह भाग जो कि अंशों पर माँगी जाती है। कंपनी समस्त राशि या अंशों पर अंकित मूल्य के भाग को माँगने का निर्णय ले सकती है। उदाहरण के लिए, यदि आबंटित अंशों का अंकित मूल्य (वास्तविक मूल्य भी कहलाता है) 10 रुपये है और कंपनी ने केवल 7 रुपये प्रति अंश माँगा है तो इस स्थिति में माँगी हुई या याचित पूँजी केवल 7 रुपये प्रति अंश होगी। शेष 3 रुपये को अंशधारियों से किसी भी समय आवश्यकतानुसार माँग लिया जा सकता है।
- *प्रदत्त पूँजी*– यह माँगी गई पूँजी का वह भाग है जो कि अंशधारियों से वास्तव में प्राप्त कर लिया गया है। जब अंशधारी समस्त माँग राशि का भुगतान कर देते हैं तब माँग पूँजी प्रदत्त पूँजी के समान होगी। यदि कोई अंशधारी माँगी गई राशि का भुगतान नहीं करता है तो यह राशि बकाया माँग कहलाती है। इसलिए प्रदत्त पूँजी, माँगी गई पूँजी में से बकाया माँग की राशि को घटाने पर शेष के समान होगी।

- *अयाचित पूँजी–* अभिदत्त पूँजी का वह भाग जो कि अभी तक माँगा जाना बाकी है। जैसे कि पहले बताया जा चुका है, कंपनी यह राशि किसी भी समय जब आवश्यकता हो, भविष्य के कोषों (निधियों) के लिए एकत्रित कर सकती है।
- *आरक्षित पूँजी–* एक कंपनी द्वारा अयाचित पूँजी का एक भाग जो केवल कंपनी के समापन की दशा के लिए आरक्षित किया जाता है। इस प्रकार की अयाचित राशि कंपनी को 'आरक्षित पूँजी' कहते हैं यह कंपनी के समापन पर केवल लेनदारों के लिए उपलब्ध होती है।

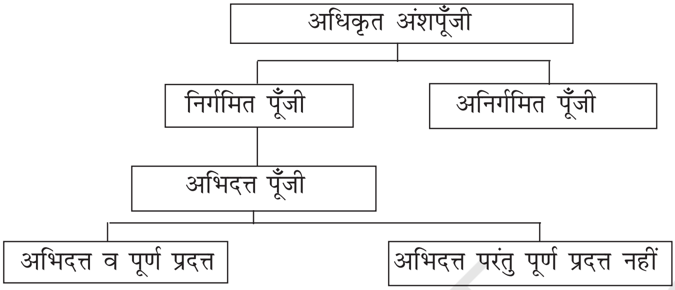

प्रदर्श 1.1 *अंशपूँजी की श्रेणियाँ*

निम्न उदाहरण लेते हैं जो यह दर्शाता है कि अंशपूँजी को तुलन-पत्र में किस प्रकार दर्शाया जाता है। सनराईस कंपनी लिमिटेड 40,00,000 की पूँजी से पंजीकृत है जोकि 10 रु. प्रत्येक के 4,00,000 अंशों में विभाजित है। कंपनी 10 रु. प्रत्येक के 2,00,000 अंशों को जनता के अभिदान के लिए आमंत्रित करती है जिस पर 2 रु. आवेदन पर 3 रु. आबंटन पर, 3 रु. प्रथम माँग पर तथा शेष अंतिम माँग पर देय है। कंपनी ने 2,50,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त किए। कंपनी ने अंतिम निर्णय लेते हुए 2,00,000 अंशों का आबंटन किया 50,000 अंशों के आवेदन को अस्वीकृत कर दिया। कंपनी ने अंतिम माँग की, माँग नहीं की। 2,000 अंशों पर माँग राशि के अतिरिक्त कंपनी ने सभी राशि प्राप्त कर ली। उपरोक्त राशि सनराईज कंपनी लिमिटेड के खातों की टिप्पणी तुलन-पत्र के खातों पर टिप्पणियों में निम्न प्रकार दर्शाया जाएगा–

अंशपूँजी		(रु.)
अधिकृत अथवा पंजीकृत अथवा प्राधिकृत पूँजी		
4,00,000 अंश 10 रु.		40,00,000
निर्गमित पूँजी		
2,00,000 अंश 10 प्रत्येक		20,00,000
अभिदत्त पूँजी		
अभिदत्त परंतु पूर्ण प्रदत्त नहीं		
2,00,000 अंश 10 रु. प्रत्येक 8 रु. याचित	16,00,000	
घटाया– बकाया माँग	6,000	
		15,94,000

© NCERT not to be republished

1.4 अंशों की श्रेणियाँ एवं प्रकृति

अंश, उस इकाई से संबंध रखते हैं, जिसमें कंपनी की कुल पूँजी बंटी होती है। इसलिए एक अंश, कंपनी की अंशपूँजी का वह भाग है जो कि कंपनी के स्वामित्व में हित रखने के आधार तैयार करता है। व्यक्ति, जो कि अंशों के द्वारा राशि का योगदान देते हैं कंपनी के **अंशधारी** कहलाते हैं।

अधिकृत पूँजी की राशि, अंशों की संख्या के साथ जिसमें की वह विभाजित है, सीमा पार्षद नियम दर्शाए जाते हैं, लेकिन अंशों की श्रेणियाँ जिसमें कि कंपनी की पूँजी विभाजित है, उसके अधिकार एवं कर्त्तव्यों के साथ, कंपनी के अंतर्नियमों में निर्धारित होते हैं। कंपनी अधिनियम के अनुसार एक कंपनी **दो** प्रकार के अंशों का निर्गमन कर सकती है– (1) पूर्वाधिकारी/अधिमानी अंश; (2) समता अंश (सामान्य अंश भी कहलाते हैं)

1.4.1 अधिमानी अंश

कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 43 के अंर्तगत, एक अधिमान अंश वह होता है, जो कि दी गई शर्तों की पूर्ति करता है।

(अ) अधिमानी अंशधारियों को एक निश्चित राशि का लाभांश पाने का अथवा प्रत्येक अंश के अंकित मूल्य पर निश्चित दर से परिकलित किए गए लाभांश पाने, समता अंशधारियों को लाभांश भुगतान से पूर्व, का अधिकार होता है।

(ब) पूँजी के संबंध में यह कंपनी के समापन पर इस अंश की पूँजी वापस प्राप्त करने का अधिकार समता अंश से पूर्व होता है।

यद्यपि उपरोक्त दो शर्तों में, अधिमान अंशधारी कंपनी के आधिक्यों में पूर्ण रूप से या किसी सीमा तक भाग लेने का अधिकार रखते हैं जो कि कंपनी के सीमा नियमों अथवा अंतर्नियमों में पहले से वर्णित होता है। अतः अधिमान अंश भागी और गैर–भागी हो सकते हैं। इसी प्रकार यह अंश **संचयी** और **असंचयी** भी हो सकते हैं और **शोध्य** तथा **अशोध्य** भी हो सकते हैं।

1.4.2 समता अंश

कंपनी अधिनियम की 2013 की धारा 43 के अनुसार एक समता अंश, वह अंश है जो अधिमान अंश नहीं हैं। दूसरे शब्दों में वह अंश जो कि लाभांश के भुगतान या पूँजी के पुनः भुगतान के संबंध में कोई अधिकार नहीं रखता **समता अंश** कहलाता है। समता अंशधारी, कंपनी के लाभों में से उनका भाग, अधिमान अंशधारकों को लाभांश के अधिकार के पश्चात् लेने के अधिकारी होते हैं। समता अंशों पर लाभांश निश्चित नहीं है, यह वर्ष प्रतिवर्ष बदलता रहता है, जो कि उपलब्ध लाभ में से वितरण की राशि पर निर्भर करता है। समता अंशपूँजी हो सकती है– (1) मताधिकार सहित; (2) मताधिकार हेतु विभेदक अधिकार, लाभांश अथवा कंपनी अंर्तनियमों में निर्धारित की गई परिस्थितियों के अनुसार हो सकती है।

Reprint 2026-27

स्वयं जाँचिए-1

बताइये कि निम्न में से कौन-सा कथन सत्य है–

(i) कंपनी एक कृत्रिम व्यक्ति है।
(ii) एक कंपनी के अंशधारी, कंपनी के लिए कार्य करने के लिए उत्तरदायी हैं।
(iii) कंपनी का प्रत्येक सदस्य, प्रबंध में भाग लेने का अधिकारी है।
(iv) सामान्यत: कंपनी के अंश हस्तांतरणीय होते हैं
(v) अंश आवेदन खाता एक व्यक्तिगत खाता है।
(vi) कंपनी के संचालक को अंशधारी होना आवश्यक है।
(vii) प्रदत्त पूँजी, याचित पूँजी से अधिक हो सकती है।
(viii) पूँजी संचय का निर्माण, पूँजी लाभों में से किया जाता है।
(ix) अंशों के निर्गमन के समय, प्रतिभूति प्रीमियम की अधिकतम राशि **10%** होगी।
(x) पूँजी का वह भाग जो कि समापन के समय माँगा गया है, आरक्षित पूँजी कहलाता है।
(xi) हरण किए गए अंशों का बट्टे पर निर्गमन नहीं किया जा सकता।
(xii) मूल रूप से बट्टे पर निर्गमित किए गए अंशों को प्रीमियम पर पुन: निर्गमित किया जा सकता है।

1.5 अंशों का निर्गमन

कंपनी की पूँजी की विशेषता यह है कि अंशों की राशि को आसान किश्तों पर एकत्रित किया जा सकता है जो कि समय के व्यतीत होने के साथ-साथ वित्तीय आवश्यकताओं पर एकत्रित किया जाता है जिसे **आवेदन राशि** कहते हैं, तत्पश्चात् श्रेणी को **आबंटन** (आबंटन राशि) कहते हैं और शेष किश्त जो कि **प्रथम माँग** और इसी प्रकार **द्वितीय माँग** कहलाती है। अंतिम किश्त के आगे अंतिम माँग का प्रयोग होगा यद्यपि, यह अंशों के आवेदन के समय कंपनी द्वारा पूर्ण राशि की माँग के अधिकार को रोकने का कोई तरीका नहीं है।

अंश निर्गमन की प्रक्रिया के अंतर्गत महत्त्वपूर्ण चरण निम्न हैं।

- *विवरण-पत्रिका का निर्गमन*– कंपनी सर्वप्रथम जनता में प्रविवरण पत्र जारी करती है। विवरण-पत्रिका जनता को एक आमंत्रण होता है कि एक नई कंपनी अस्तित्व में आ चुकी है और इसको व्यवसाय करने के लिए कोषों की आवश्यकता है। इसमें कंपनी के संबंध में पूर्ण जानकारियाँ और भावी निवेशकर्ताओं से एकत्रित की जाने वाली राशि के तरीके लिखे होते हैं।
- *आवेदन पत्रों की प्राप्ति*– जब जनता में विवरण-पत्रिका को निर्गमित कर दिया जाता है तो भावी निवेशकर्ता अंशपूँजी में अभिदान के लिए अपेक्षा करते हैं तथा आवेदन के साथ-साथ आवेदन राशि प्रविवरण में विशिष्टीकृत किए गए अनुसूचित बैंक में जमा कराते हैं। कंपनी को प्रविवरण पत्र जारी करने के 120 दिन के भीतर न्यूनतम अभिदान प्राप्त करना होगा। यदि कंपनी दी गई समयावधि में उपरोक्त राशि प्राप्त करने में विफ़ल/असमर्थ रहती है, तो कंपनी आबंटन की प्रक्रिया नहीं कर सकेगी तथा प्रविवरण जारी करने के 130 दिन के भीतर आवेदन राशि लौटानी होगी।

© NCERT not to be republished

- *अंशों का आबंटन*– यदि न्यूनतम अभिदान प्राप्त हो चुका है, तो एक कंपनी अब कानूनी औपचारिकताओं को पूरा करने के पश्चात् अंशों को आबंटित करने की प्रक्रिया को पूरा कर सकती है। जिन व्यक्तियों को अंश आबंटित किए जाने हैं उन्हें आबंटन पत्र भेजा जाता है तथा जिन्हें कोई अंश आबंटित नहीं किया जाना उन्हें खेदपत्र भेजा जाता है। जब आबंटन किया जाता है तो कंपनी तथा आवेदकों, जो कि अब कंपनी के अंशधारी हैं, के बीच एक वैध अनुबंध हो जाता है।

न्यूनतम अभिदान

इससे आशय है, वह न्यूनतम राशि जो कि संचालकों की राय में व्यापारिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक है, जो कि संबंधित हैं–

- किसी भी परिसंपत्ति का क्रय मूल्य, या जो क्रय की गई या क्रय की जानी है जो कि पूर्ण या आंशिक रूप से अंशों की राशि से भुगतान किया जाना है।
- कंपनी के द्वारा प्रारंभिक व्ययों को देय होना या अंशों के निर्गमन के संबंध में किसी प्रकार का कमीशन देय।
- उपरोक्त दो परिस्थितियों में कंपनी द्वारा किसी प्रकार की उधार ली गई राशि का पुनर्भुगतान।
- कार्यशील पूँजी;
- व्यावसायिक क्रियाकलापों को पूरा करने के लिए कोई अन्य खर्च।

यह स्मरणीय है कि **सेबी** दिशानिर्देश, 2000 [6.3.8.1 और 6.3.8.2] के अनुसार न्यूनतम अभिदान जारी की गई राशि का 90% से कम नहीं होना चाहिये। यदि यह शर्त पूर्ण नहीं होती तो कंपनी आवेदन पर प्राप्त समस्त राशि को लौटाने के लिए बाध्य होती हैं। अभिदान के बंद होने की तिथि के 8 दिनों के विलंब की स्थिति में कंपनी उस राशि पर 15% ब्याज देने के लिए बाध्य होगी [धारा 73(2)]।

अंशों को सममूल्य या अधिलाभ पर निर्गमित किया जा सकता है। अंशों का सममूल्य पर निर्गमन कहलाता है यदि उनकी निर्गमित राशि, दिए गए नियम व शर्तों के अनुसार अंकित मूल्य के बराबर हो जब कंपनी द्वारा निर्गमित अंशों का मूल्य अंकित मूल्य से अधिक हो तो यह अधिमूल्य पर निर्गमन है। इस तथ्य के अनुसार यदि अंशों को सममूल्य और अधिलाभ पर निर्गमित किया जाता है तो कंपनी की अंशपूँजी जैसी कि पहले वर्णित है, को किश्तों के अंतर्गत प्राप्त किया जाता है जो कि भिन्न-भिन्न चरणों पर देय होती है।

1.6 लेखांकन व्यवहार

आवेदन पर– विभिन्न किश्तों के साथ भुगतान की गई राशि अंशपूँजी में अभिदान को दर्शाती है जो कि अंततः अंशपूँजी खाते में जमा की जाएगी हालाँकि सुविधा के लिए प्रत्येक किश्त के लिए अलग खाता खोला जाता है आवेदन के साथ प्राप्त राशि को इस उद्देश्य के लिए अधिसूचित बैंक में एक अलग खाता खोलकर जमा की जाएगी। रोज़नामचा प्रविष्टि निम्न प्रकार होगी–

बैंक खाता नाम
अंश आवेदन खाते से
(– अंशों पर ________ प्रति अंश आवेदन पर प्राप्त राशि)

आबंटन पर– जब न्यूनतम अभिदान प्राप्त होगा तब कुछ कानूनी औपचारिकताओं को पूर्ण करने के साथ, कंपनी के निर्देशक अंशों का आबंटन करेंगे।

अंशों का आबंटन, कंपनी और आवेदकों, जो कि अंशों के आबंटी हैं और अंशधारक सदस्य माने जाते है, के बीच अनुबंध निहितार्थ है।

अंशों का आबंटन
(लेखांकन की दृष्टि से निहितार्थ)

- यह प्रथा है कि कुछ राशि जो कि आबंटन राशि कहलाती है। अंशों के आंबटियों से आबंटन करने के साथ ही माँग ली जाती है।
- आवेदकों से आमंत्रण की स्वीकृति मिलने पर यह राशि जो कि आवेदन पर प्राप्त हुई है, को उस पूँजी खाते में हस्तांतरण किया जाएगा, क्योंकि औपचारिक रूप से यह उस का भाग होती है।
- रदद् किए गए आवेदन पत्र प्राप्त–राशि पूरी तरह आवेदकों को कानून सेबी द्वारा निर्धारित अवधि के भीतर लौटानी होगी।
- यदि कम अंशों का आबंटन किया गया है तो आवेदन से अधिक राशि को आबंटियों पर आबंटन के देय होने पर समायोजित की जाएगी।
- अंशपूँजी के संबंध में बाद वाली 2 चरण अंश आवेदन खाते को बंद करेंगे जो कि अंशपूँजी लेनदेनों का एक अस्थायी खाता है।

अंशों के आबंटन के संबंध में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ निम्न प्रकार होंगी–

1. *आवेदन पर प्राप्त राशि का हस्तांतरण*
   अंश आवेदन खाता नाम
   अंशपूँजी खाते से
   (–अंशों पर आवेदन राशि का अंशपूँजी से हस्तांतरण)
2. *अस्वीकृत आवेदनों की राशि को वापस करने पर*
   अंश आवेदन खाता नाम
   बैंक खाते से
   (–अंशों पर अस्वीकृत आवेदनों पर राशि की वापसी पर)
3. *आबंटन पर देय राशि के लिए*
   अंश आबंटन खाता नाम
   अंशपूँजी खाते से
4. *अधिक आवेदन राशि के समायोजन के लिए*
   अंश आवेदन पर खाता नाम
   अंश आबंटन खाते से
   (–अंशों पर आवेदन राशि को आबंटन देय राशि में समायोजन)

© NCERT not to be republished

5. *आबंटन राशि के प्राप्त होने पर–*
   बैंक खाता नाम
   अंश आबंटन खाते से
   (–अंशों पर- प्रति अंश की दर से प्राप्त आबंटन राशि)

व्यवहार (2) और (4) को संयुक्त रूप में इस प्रकार भी लिखा जा सकता है
   अंश आवेदन खाता नाम
   बैंक खाते से
   अंश आबंटन खाते से
   (–अंशों पर अस्वीकृत आवेदनों पर राशि की वापसी और आवेदन राशि को आबंटन देय राशि में समायोजन)

कभी–कभी कंपनी की पुस्तकों में अंश आवेदन और अंश आबंटन खाता संयुक्त रूप से खोला जाता है जो **अंश आवेदन** और **आबंटन खाता** कहलाता है। संयुक्त खाता इस कारण पर आधारित है कि "आबंटन बिना आवेदन के असंभव है जबकि आवेदन बिना आबंटन के अर्थविहीन है"। अंशपूँजी की इन दो परिस्थितियों में घनिष्ठ अंतर्संबंध है जब खाता संयुक्त रखा जाता है तब रोज़नामचा प्रविष्टियों को निम्न प्रकार प्रलेखन किया जाएगा–

1. *आवेदन और आबंटन राशि प्राप्त हाने पर*
   बैंक खाता नाम
   अंश आवेदन और आबंटन खाते से
   (–अंशों पर ______ की दर से प्राप्त आवेदन और आबंटन राशि)
2. *आवेदन और आबंटन राशि के हस्तांतरण पर*
   अंश आवेदन और आबंटन खाता नाम
   अंशपूँजी खाते से
   (अंश आवेदन और आबंटन राशि का अंशपूँजी खाते में हस्तांतरण)
3. *अस्वीकृत आवेदनों की राशि की वापसी पर–*
   अंश आवेदन और आबंटन खाता नाम
   बैंक खाते से
   (–अंशों के असफ़ल आवेदकों की आवेदन राशि की वापसी)
4. *शेष आबंटन राशि की प्राप्ति पर*
   बैंक खाता नाम
   अंश आवेदन और आबंटन खाते से
   (शेष आबंटन राशि की प्राप्ति पर)

अवरुद्ध राशि द्वारा समर्थित आवेदन (ए.एस.बी.ए.)

प्रतिभूतियों (अंशों, ऋणपत्र या अन्य वित्तीय साधनों) के आरंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव और अधिकार मुद्दे आदि को बैंकिंग इंस्ट्रूमेंट (चेक, पे ऑर्डर/ड्राफ्ट, डेबिट टू बैंक अकाउंट या अवरुद्ध राशि द्वारा समर्थित आवेदन) के द्वारा आवेदन राशि का भुगतान करके अभिदान किया जा सकता है। ए.एस.बी.ए. आवेदन राशि के भुगतान के तरीकों में से एक है।

ए.एस.बी.ए. भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) द्वारा विकसित एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रतिभूतियों के आई.पी.ओ. और आधिकारिक निर्गम के अभिदान के लिए आवेदन किया जाता है। इस विधि के तहत, आवेदक इस निर्गम के अभिदान के लिए बैंक को आवेदन राशि के लिए अपने बैंक खाते को अवरुद्ध करने के लिए अधिकृत करता है। बैंक आवेदक के खाते में आवेदन का पैसा तभी नामे करता है, जब उसे आवंटित प्रतिभूतियों पर देय राशि के लिए प्रतिभूतियाँ आवंटित की गई हैं (अंश/ऋणपत्र आदि)। यदि प्रतिभूतियाँ आवंटित नहीं की जाती हैं, तो बैंक राशि से अवरोध (ग्रहणाधिकार) हटा देता है।

ए.एस.बी.ए. आधारित आवेदनों के अंतर्गत, आवेदन की गई प्रतिभूतियों पर देय आवेदन राशि बैंक द्वारा अवरुद्ध की जाती है, यानी, यह आवेदन की गई प्रतिभूति की राशि पर एक ग्रहणाधिकार के रूप में देय होती है। कंपनी द्वारा प्रतिभूतियाँ आवंटित करने के बाद, बैंक आवंटित प्रतिभूतियों पर देय राशि से आवेदक के बैंक खाते को नामे करता है और शेष राशि से ग्रहणाधिकार हटाता है।

माँग पर– अंशों को पूर्ण भुगतान प्राप्त करने में और अंशधारकों से अंशों की पूर्ण राशि वसूल करने में माँग एक आवश्यक भूमिका निभाती है। आबंटन की पूर्णअवधि तक, अंशों के पूर्ण रूप से भुगतान ना माँगे जाने की स्थिति में, निदेशक अंशों पर शेष राशि को किसी भी समय आवश्यकतानुसार माँगे जाने का निर्णय लेने का अधिकार रखते हैं। यह भी संभव है कि अंशधारियों द्वारा माँग भुगतान का समय अंशों के निर्गमन के समय दिया गया हो या विवरण–पत्र में इसका उल्लेख किया गया हो।

अंशों पर माँग के संबंध में दो महत्त्वपूर्ण बिंदु हैं प्रथम कोई भी माँग राशि अंशों के अंकित मूल्य से 25% से अधिक नहीं होगी। द्वितीय दो माँग के मध्य में कम से कम एक माह का अंतराल होना चाहिए या जैसा की कंपनी के सीमा अंतर्नियम में प्रावधान किया गया हो।

अंशों पर माँग राशि प्राप्त होने पर निम्नवत् रोज़नामचा प्रावष्टि की जाती है–

1. *माँग राशि देय होने पर*

   अंश माँग खाता   नाम

       अंशपूँजी खाते से

   (– अंशों पर ______ रु. की दर से माँग राशि देय)

2. *माँग राशि प्राप्त हाने पर*

   बैंक खाता   नाम

       अंश माँग खाते से

   (माँग राशि प्राप्त)

प्रथम, द्वितीय अथवा तृतीय शब्दों का प्रयोग अंश माँग खाता में अंश और माँग खाता में अंश, और माँग के मध्य किया जाना आवश्यक है ताकि माँग की श्रेणी की पहचान की जा सके। उदाहरण के लिए प्रथम माँग की स्थिति में अंश प्रथम माँग खाता, द्वितीय माँग की दशा में अंश द्वितीय माँग खाता कहलाएगा। यहाँ ध्यान योग्य है कि शब्द 'और अंतिम' को भी जोड़ा जाता है यदि यह अंतिम माँग है जैसे यदि द्वितीय माँग अंतिम माँग है तो यह द्वितीय और अंतिम माँग कहलाएगी और यदि तृतीय माँग अंतिम माँग है तो इसे तृतीय व अंतिम माँग कहेंगे। यह भी संभव है कि कंपनी आबंटन के बाद संपूर्ण शेष राशि एक ही माँग में एकत्रित करे। ऐसी स्थिति में **प्रथम माँग** ही प्रथम और **अंतिम माँग** कहलाएगी।

जनता में अभिदान के लिए जब अंशों को निर्गमित किया जाता है तो निम्न बातों को ध्यान में रखा जाएगा–

1. आवेदन राशि, अंशों के अंकित मूल्य का कम से कम 5% होनी चाहिए।
2. माँग को सीमा अंतर्नियम के प्रावधान के अनुसार ही माँगा जाएगा।
3. वहाँ, जहाँ पर कोई अंतर्नियम नहीं है तो "सारणी–अ" में दिए गए निम्न प्रावधान लागू होंगे।
   - (अ) दो माँगों के मध्य एक महीने का अंतराल होगा।
   - (ब) माँगी गई राशि अंशों के अंकित मूल्य का 25% से ज़्यादा नहीं होगा।
   - (स) अंशधारियों को राशि के भुगतान के लिए कम से कम 14 दिनों का नोटिस दिया जाना चाहिए।
   - (द) समान श्रेणी के सभी अंशों पर माँग को एक समान आधार से माँगा जाएगा।

टिप्पणी– समता अंश तथा अधिमान अंश दोनों के लिए लेखांकन की प्रक्रिया समान है, दोनों में मध्य अंतर (भेद) के लिए प्रत्येक किशत से पहले 'समता' और 'अधिमान' शब्दों का प्रयोग किया जाएगा।

उदाहरण 1

मोना अर्थ मूवर लिमिटेड ने 100 रुपये वाले 12,000 अंश निर्गमित किए। इन पर देय राशियाँ निम्नानुसार हैं– 30 रुपये आवेदन पर, 40 रुपये आबंटन पर, 20 रुपये प्रथम माँग पर और शेष द्वितीय तथा अंतिम माँग पर। 13,000 अंशों के लिए आवेदन पत्र स्वीकार किए गए। निदेशकों ने 1,000 अंशों के लिए आवेदन को अस्वीकार कर दिया तथा उनकी समस्त राशि लौटा दी गई। सभी अंशों पर आबंटन राशि को स्वीकार किया गया और 100 अंशों को छोड़कर सभी देय राशि को प्राप्त किया गया। मोना अर्थ मूवर लिमिटेड की पुस्तकों में लेन–देन प्रलेखित करें।

हल

मोना अर्थ मूवर लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. स.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाते से (13,000 अंशों पर 30 रु. प्रति अंश आवेदन राशि प्राप्त की गई)		3,90,000	3,90,000
	अंश आवेदन खाता नाम अंशपूँजी खाते से (आवेदन राशि को अंशपूँजी में हस्तांतरित करने पर)		3,60,000	3,60,000

	अंश आवेदन खाता नाम बैंक खाते से (1,000 अंशों पर आवेदन राशि रदद् करने पर)		30,000	30,000
	अंश आबंटन खाता नाम अंशपूँजी खाते से (12,000 अंशों पर 40 रुपये प्रति अंश आबंटन पर देय राशि)		4,80,000	4,80,000
	बेंक खाता नाम अंश आबंटन खाते से (12,000 अंशों पर 40 रुपये प्रत्येक आबंटन राशि प्राप्त करने पर)		4,80,000	4,80,000
	अंश प्रथम माँग खाता नाम अंशपूँजी खाते से (प्रथम माँग पर 12,000 अंशों पर 20 रुपये प्रति अंश देय राशि)		2,40,000	2,40,000
	बैंक खाता नाम अंश प्रथम माँग खाते से (100 अंशों को छोड़कर सभी अंशों पर प्रथम माँग राशि प्राप्त करने पर)		2,38,000	2,38,000
	अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाता नाम अंशपूँजी खाते से (12,000 अंशों पर 10 रु. प्रति अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग राशि देय)		1,20,000	1,20,000
	बैंक खाता नाम अंश द्वितीय और अंतिम माँग खाते से (100 अंशों के सिवाय द्वितीय और अंतिम माँग राशि प्राप्त हाने पर)		1,19,000	1,19,000

उदाहरण 2

ईस्टर्न कंपनी लिमिटेड ने 10 रुपये प्रत्येक की राशि के 40,000 अंश जनता के अंशपूँजी के लिए निगर्मित किए। इन पर देय राशियाँ निम्नानुसार हैं। आवेदन पर 4 रुपये, आबंटन पर 3 रुपये और शेष प्रथम तथा अंतिम माँग पर। 40,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त किए गए। कंपनी ने आवेदकों को समस्त आबंटन कर दिया। आबंटन तथा प्रथम और अंतिम माँग पर देय राशि को प्राप्त कर लिया गया। कंपनी की पुस्तकों में रोज़नामचा में लेन–देन प्रलेखित करें।

© NCERT not to be republished

ईस्टर्न कंपनी लिमिटेड की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रुपये)	जमा राशि (रुपये)
	बैंक खाता	नाम		1,60,000	
	अंश आवेदन खाते से				1,60,000
	(40,000 अंशों पर 4 रु. प्रति अंश आवेदन राशि प्राप्त करने पर)				
	अंश आवेदन खाता	नाम		1,60,000	
	अंशपूँजी खाते से				1,60,000
	(आवेदन राशि को अंश खाते में हस्तांतरित करने पर)				
	अंश आबंटन खाता	नाम		1,20,000	
	अंशपूँजी खाते से				1,20,000
	(40,000 अंशों पर 3 रुपये प्रति अंश आबंटन पर देय राशि)				
	बैंक खाता	नाम		1,20,000	
	अंश आबंटन खाते से				1,20,000
	(40,000 अंशों पर 3 रुपये प्रति अंश आबंटन की राशि प्राप्त हाने पर पर)				
	अंश प्रथम एवं अंतिम माँग खाता	नाम		1,20,000	
	अंशपूँजी खाते से				1,20,000
	(40,000 अंशों पर 3 रुपये प्रत्येक अंश प्रथम एवं अंतिम माँग पर देय राशि)				
	बैंक खाता	नाम		1,20,000	
	अंश प्रथम एवं अंतिम खाते से				1,20,000
	(प्रथम और अंतिम माँग पर माँगी गई राशि की प्राप्ति पर)				

स्वयं करें

1. 1 अप्रैल 2014 को एक लिमिटेड कंपनी को 40ए000 रुपये की अधिकृत पूँजी वाले 10 रुपये प्रत्येक अंश के साथ निगमित (सम्मिलित) किया गया। कंपनी ने जनता में अभिदान के लिए 3,000 अंशों को निर्गमित किया, जिन पर देय राशियाँ हैं–

© NCERT not to be republished

आवेदन पर	3 रुपये प्रति अंश
आबंटन पर	2 रुपये प्रति अंश
प्रथम माँग पर (आबंटन के 1 महीने पश्चात्)	2.50 रुपये प्रति अंश
द्वितीय और अंतिम माँग पर	2.50 रुपये प्रति अंश

जनता द्वारा समस्त अंशों का अभिदान किया गया तथा आवेदन राशि को 15 अप्रैल 2014 को प्राप्त किया गया। संचालकों ने 1 मई 2014 को आबंटन किया।

आप अंश पूँजी के लेन-देन को एक कंपनी की पुस्तकों में किस प्रकार प्रलेखित करेंगे यदि कंपनी ने समस्त देय राशि को प्राप्त कर लिया गया है और कंपनी संयुक्त आवेदन तथा आबंटन के खाते बनाती है।

2. हर्षा लिमिटेड को 25,00,000 रुपये की अधिकृत पूँजी, 10 रुपये प्रत्येक के 2,50,000 समता अंशों में विभाजित, के साथ पंजीकृत किया गया था। कंपनी के प्रवर्तकों ने कंपनी के संस्थापन पर 10 रुपये प्रत्येक के 25,000 समता अंशों की सदस्यता लेने का दायित्व लिया था। इस राशि का कंपनी के प्रवर्तकों द्वारा भुगतान किया गया था और कंपनी द्वारा प्राप्त किया गया था।

कंपनी ने बाद में जन साधारण में अभिदान के लिए 2,00,000 अंश ए.एस.बी.ए. और भौतिक रूप से जारी किए। इसने 1,80,000 समता अंशों के लिए आवेदन प्राप्त किए। सभी आवेदकों को अंश आवंटित किए गए थे।

अधिकृत अंश पूँजी, निर्गमित अंश पूँजी और हर्ष लिमिटेड की अभिदान की गई अंश पूँजी का निर्धारण करें।

1.6.1 बकाया माँग

समान्यत: यह पाया गया है कि माँगी गई पूँजी का भाग अंशधारियों द्वारा देय तिथि तक चुकाया नहीं जाता। जब कोई अंशधारी माँगी गई आबंटन की राशि या माँग राशि का भाग देय तिथि तक नहीं चुका पाता तो इस राशि को यद्यपि, बकाया माँग कहते हैं। माँग राशि, सभी माँग खातों का नाम शेष दर्शाती है तथा इस राशि को खातों की टिप्पणी में प्रदर्शित किया जाएगा तथा इसको चुकता पूँजी में से घटाकर तुलन-पत्र के दायित्व पक्ष में दर्शाया जाता है। जहाँ एक कंपनी 'बकाया माँग खाता' तैयार करती है, तो ऐसी स्थिति में अतिरिक्त रोज़नामचा प्रविष्टी की जाएगी। यद्यपि ऐसा करना आवश्यक नहीं है।

बकाया माँग खाता नाम
  अंश प्रथम माँग खाते से
  अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाते से
(बकाया माँग राशि को लेखों में ले जाते हुए)

कंपनी की सीमा अंतर्नियम– सामान्यत: कंपनी के संचालकों को बकाया माँग राशि पर ब्याज की राशि के निर्दिष्ट दर से परिवर्तन करने का अधिकार देते हैं, इस प्रकार की स्थिति में यदि अंतर्नियम इसका खुलासा नहीं करते तो 'सारणी-एफ' में दिए गए नियम के अनुसार ब्याज लगाया जाएगा जो कि यह दर्शाता

है कि ब्याज दर 10% से अधिक नहीं हो सकती है। भुगतान किए जाने वाले ब्याज की गणना निर्धारित तिथि तथा अंशधारी द्वारा वास्तविक भुगतान की तिथि के मध्य की समयावधि के लिए की जाएगी।

माँग राशि के ब्याज सहित प्राप्ति पर, ब्याज की राशि को ब्याज खाते में जबकि माँग राशि को क्रमशः माँग खाते अथवा बकाया माँग खाते में जमा किया जाएगा। जब अंशधारी बकाया माँग राशि का ब्याज सहित भुगतान करता है तो इस संबंध में प्रविष्टि निम्न प्रकार से होगी।

बैंक खाता नाम
 बकाया माँग खाते से
 बकाया माँग पर ब्याज खाते से
 (ब्याज सहित बाकाया माँग राशि प्राप्त होने पर)

यदि कुछ भी वर्णित नहीं है, तो यहां माँग पर ब्याज की राशि को लेखे में ले जाने तथा उपरोक्त प्रविष्टि करने की आवश्यकता नहीं है।

उदाहरण 3

क्रोनिक लिमिटेड ने 10,000 समता अंश जो कि 10 रुपये प्रत्येक है, निर्गमित किए। इन पर देय राशियाँ इस प्रकार हैं–

आवेदन पर 2.50 रुपये; आबंटन पर 3 रुपये; प्रथम माँग पर 2 रुपये तथा *शेष द्वितीय एंव अंतिम माँग पर*। सभी अंशों पर पूर्ण रूप से अभिदान स्वीकार किया गया सिवाय एक अंशधारी के, जिसने 100 अंशों के लिए आवेदन किया लेकिन द्वितीय एंव अंतिम माँग राशि का भुगतान नहीं किया। इस लेन–देन के संदर्भ में रोज़नामचा प्रविष्टि करें।

हल

क्रोनिक लिमिटेड
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ.स.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	बैंक खाता नाम समता अंश आवेदन खाते से (10,000 अंशों पर 2.50 रु. प्रति अंश आवेदन राशि स्वीकार की गई)		25,000	25,000
	समता अंश आवेदन खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (आवेदन राशि को अंशपूँजी में हस्तांतरित करने पर)		25,000	25,000

© NCERT not to be republished

	समता अंश आबंटन खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (10,000 अंशों पर 3 रुपये प्रति अंश आबंटन राशि देय होने पर)		30,000	30,000
	बैंक खाता नाम समता अंश आबंटन खाते से (आबंटन राशि की प्राप्ति पर)		30,000	30,000
	अंश प्रथम माँग खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (10,000 अंशों पर 2 रुपये प्रति अंश प्रथम माँग राशि देय)		20,000	20,000
	बैंक खाता नाम समता अंश प्रथम माँग खाते से (प्रथम माँग राशि की पाप्ति होने पर)		20,000	20,000
	अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (अंतिम माँग राशि देय)		25,000	25,000
	बैंक खाता नाम बकाया माँग खाते से नाम समता अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाते से (100 अंशों के अतिरिक्त अंतिम माँग राशि की प्राप्ति होने पर)		24,750 250	25,000

1.6.2 अग्रिम माँग खाता

कभी-कभी कुछ अंशधारी कंपनी के अंशों पर प्राप्त राशि का कुछ भुगतान या समस्त भुगतान, माँग से पूर्व ही कर देते हैं। अंशधारियों से प्राप्त इस राशि को **अग्रिम माँग राशि** कहते हैं। अग्रिम माँग राशि एक कंपनी के लिए **देयधन** है और इसे अग्रिम माँग खाते में जमा किया जाता है। प्राप्त राशि को माँग राशि के देय होने की तिथि के साथ ही समायोजित किया जाता है। कंपनी अधिनियम की 'सारणी संबंध एफ' में अग्रिम माँग के संबंध में ब्याज की राशि पर 12% की दर से ज़्यादा का प्रावधान नहीं दर्शाती।

अग्रिम माँग की प्राप्ति पर रोज़नामचा प्रविष्टि की जाएगी–

बैंक खाता नाम
  अग्रिम माँग खाते से
(अग्रिम माँग राशि की प्राप्ति पर)

जब वास्तव में माँग राशि देय होती है तो अग्रिम माँग राशि के संबंध में निम्न रोज़नामचा प्रविष्टि की जाएगी।

© NCERT not to be republished

अग्रिम माँग खाता नाम
संबंधित माँग खाते से
(अग्रिम माँग राशि को माँग राशि के देय के साथ समायोजित करने पर)

अग्रिम माँग खाते का शेष कंपनी के तुलन–पत्र में उपशीर्ष अन्य चालू दायित्व जो शीर्ष चालू दायित्व के अंतर्गत शीर्षक समता एवं देयताओं में दर्शाया जाता है। लेकिन चुकता पूँजी की राशि में नहीं जोड़ा जाएगा।

जैसे कि अग्रिम माँग एक कंपनी के लिए दायित्व है, यह कंपनी का कर्त्तव्य है, कि इस प्रकार की राशि की प्राप्ति पर, प्राप्ति की तिथि से वास्तविक देय तिथि तक ब्याज का भुगतान करे। समान्यत: अग्रिम माँग खाते पर देय ब्याज की दर का उल्लेख किसी भी कंपनी के पार्षद अंतर्नियम में किया जाता है।

यदि अंतर्नियमों में इस संबंध में कोई प्रावधान नहीं है, तो अग्रिम माँग के संबंध में 'सारणी एफ' लागू होगी जो कि यह दर्शाती है कि ब्याज की दर 12% प्रतिवर्ष से ज़्यादा नहीं होगी। अग्रिम माँग के संबंध में ब्याज की राशि का लेखांकन व्यवहार होगा–

1. *ब्याज की राशि के भुगतान पर*
अग्रिम माँग पर ब्याज खाता नाम
बैंक खाते से
(अग्रिम माँग पर प्राप्त ब्याज के भुगतान पर)

अथवा

2.*(क) ब्याज देय होने पर*
अग्रिम माँग पर ब्याज खाता नाम
विविध अंशधारियों के खाते से
(अग्रिम माँग पर ब्याज)

2.*(ख) ब्याज की राशि के भुगतान पर*
विविध अंशधारियों के खातों में नाम
बैंक खाते से
(अग्रिम माँग पर ब्याज के भुगतान पर)

उदाहरण 4

कोनिका लिमिटेड 2,00,000 रुपये की अधिकृत समता पूँजी जो कि 2,000 अंशों 100 रुपये प्रत्येक में विभाजित है, साथ ही पूँजीकृत है, ने अभिदान के लिए 1,000 अंश निर्गमित किए, जिन पर 25 रुपये आवेदन राशि; 30 रुपये आबंटन राशि; 20 रुपये प्रथम माँग पर; और शेष आवश्यकतानुसार माँगे जाने पर।

1,000 अंशों के लिए आवेदन स्वीकार किए गए और आबंटन किया गया। आबंटन की राशि पूर्ण रूप से प्राप्त की गई, लेकिन जब प्रथम माँग राशि माँगी गई तो एक अंशधारी जिसे 100 अंश आबंटित किए गए थे, माँग राशि चुकाने में असमर्थ था तथा एक अन्य अंशधारी ने 50 अंशों के लिए संपूर्ण राशि का भुगतान कर दिया। कंपनी ने कोई अन्य माँग नहीं की।

कंपनी की पुस्तकों में अंशपूँजी के लेनदेन से संबंधित आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

© NCERT not to be republished

हल

कोनिका लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. स.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	बैंक खाता नाम समता अंश आवेदन खाते से (1,000 अंशों पर पर 25 रु. प्रति अंश आवेदन राशि प्राप्ति पर)		25,000	25,000
	समता अंश आवेदन खाता नाम अंशपूँजी खाते से (आवेदन राशि को अंशपूँजी में हस्तांतरित करने पर)		25,000	25,000
	समता अंश आबंटन खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (1,000 अंशों पर 30 रुपये प्रति अंश आबंटन राशि देय)		30,000	30,000
	बैंक खाता नाम समता अंश आबंटन खाते से (आबंटन राशि की प्राप्ति पर)		30,000	30,000
	समता अंश प्रथम माँग खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (1,000 अंशों पर 20 रुपये प्रति अंश प्रथम माँग देय)		20,000	20,000
	बैंक खाता नाम बकाया माँग खाते नाम समता अंश प्रथम माँग खाता अग्रिम माँग खाते से (900 अंशों पर प्रथम माँग राशि की प्राप्ति तथा 50 अंशों पर अग्रिम माँग राशि 25 रुपये प्रति अंश)		19,250 2,000	 20,000 1,250

व्यवहार में समस्त प्राप्त राशि को रोकड़ बही में प्रलेखित किया जाएगा, रोज़नामचों में नहीं (देखें उदाहरण 5)।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 5

यूनीक पिक्चर्स लिमिटेड का पंजीकरण 5,00,000 रुपये की अधिकृत पूँजी जिसको 20,000 रुपये 5% अधिमान (पूर्वाधिकार अंश) 10 रुपये प्रत्येक अंश तथा 30,000 समता अंश, 10 रुपये प्रत्येक अंश में बाँटा गया। कंपनी ने 10,000 पूर्वाधिकार तथा 15,000 समता अंशों का अभिदान प्राप्ति हेतु जनता में निर्गमन किया। अंशों पर देय राशि निम्न प्रकार है–

	समता अंश (रुपये)	*अधिमान अंश (रुपये)*
आवेदन	2	2
आबंटन	3	3
प्रथम माँग	2.50	2.50
द्वितीय और अंतिम माँग	2.50	2.50

सभी अंशों पर पूर्ण रूप से अभिदान स्वीकार किया गया। द्वितीय और अंतिम माँग 100 समता अंशों तथा 200 अधिमानी अंशों के अतिरिक्त सभी देय राशियाँ प्राप्त की गईं। उपरोक्त लेनदेन को रोज़नामचा में प्रलेखित करें। साथ ही रोकड़ पुस्तक और तुलन-पत्र भी तैयार करें।

हल

यूनीक पिक्चर्स लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	समता अंश आवेदन खाता नाम		30,000	
	5% अधिमानी अंश आवेदन खाता नाम		20,000	
	समता अंशपूँजी खाते से			30,000
	5% अधिमानी अंशपूँजी खाते से			20,000
	(आबंटन राशि देय)			
	समता अंश आबंटन खाता नाम		45,000	
	5% अधिमानी अंश आबंटन खाता नाम		30,000	
	समता अंशपूँजी खाते से			45,000
	5% अधिमानी अंशपूँजी खाते से			30,000
	(आबंटन राशि देय)			
	समता अंश प्रथम माँग खाता नाम		37,500	
	5% अधिमानी प्रथम माँग खाता नाम		25,000	
	समता अंशपूँजी खाते से			37,500
	5% अधिमानी अंशपूँजी खाते से			25,000
	(प्रथम माँग राशि देय)			

	समता अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाता नाम		37,500	
	5% अधिमानी अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग माँग खाता नाम		25,000	
	समता अंशपूँजी खाते से			37,500
	5% अधिमानी अंशपूँजी खाते से			25,000
	(द्वितीय एवं अंतिम माँग माँग खाता)			
	बकाया माँग खाता नाम		750	
	समता अंश द्वितीय एंव अंतिम माँग खाते से			250
	5% अधिमानी अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाते से			500
	(बकाया माँग के लिए)			

रोकड़ पुस्तक (बैंक स्तंभ)

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
	समता अंश आवेदन खाता		30,000		शेष आ/ले		2,49,250
	5% पूर्वाधिकार अंश आवेदन खाता		20,000				
	समता अंश आबंटन		45,000				
	5% पूर्वाधिकार अंश आबंटन खाता		30,000				
	समता अंश प्रथम माँग खाता		37,500				
	5% अधिमानी अंश प्रथम माँग खाता		25,000				
	समता अंश द्वितीय एंव अंतिम माँग खाता		37,250				
	5% अधिमानी अंश द्वितीय एंव अंतिम माँग खाता		24,500				
			2,49,250				**2,49,250**

यूनीक पिक्चर्स लिमिटेड का तुलन-पत्र

विवरण	*नोट संख्या*	*2013 (रु.)*
I. समता एवं देयताएँ		
1. अंशधारक कोष		
(क) अंशपूँजी	1	2,49,250
योग		**2,49,250**

© NCERT not to be republished

II. परिसंपत्तियाँ		
1. चालू परिसंपत्तियाँ		
(क) नकद एवं नकद तुल्यांक	2	2,49,250
योग		**2,49,250**

खातों की टिप्पणियाँ–

विवरण	*(रु.)*	*(रु.)*
अंशपूँजी		
अधिकृत पूँजी		
30,000 समता अंश, 10 रुपये प्रत्येक		3,00,000
20,000 5% अधिमानी अंश, 10 रुपये प्रत्येक		2,00,000
		5,00,000
निर्गमित पूँजी		
15,000 रु. समता अंश, 10 रुपये प्रत्येक		1,50,000
10,000 रु. 5% अधिमानी अंश, 10 रुपये प्रत्येक		1,00,000
		2,50,000
अभिदत्त पूँजी		
अभिदत्त एंव पूर्ण प्रदत्त		
14,900 रु. समता अंश, 10 रुपये प्रत्येक	1,49,000	
9,800 रु. 5% अधिमानी अंश, 10 रुपये प्रत्येक	98,000	2,47,000
अभिदत्त परंतु पूर्ण प्रदत्त नहीं		
100 रु. समता अंश, 10 रुपये प्रत्येक	1,000	
घटाया– बकाया माँग राशि	(250)	750
200 रु. 5% अधिमानी अंश, 10 रुपये प्रत्येक	2,000	
घटाया– बकाया माँग राशि	500	1,500
		2,49,250

उदाहरण 6

रोहित एंड कंपनी ने 30,000 अंश 10 रुपये प्रत्येक अंश निर्गमित किए, जिस पर 3 रुपये आवेदन पर; 3 रुपये आबंटन; और 2 रुपये प्रथम माँग 2 महीने के पश्चात् देय है। आबंटन राशि को छोड़कर सभी देय राशि प्राप्त हुई लेकिन प्रथम माँग पर एक अंशधारी जिसके पास 400 अंश थे प्रथम माँग राशि का भुगतान नहीं किया और एक अन्य अंशधारी जिसके पास 300 अंश थे, ने द्वितीय और अंतिम माँग जो कि 2 रुपये है अभी माँगी नहीं गई का भुगतान कर दिया। कंपनी की पुस्तकों में आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

हल

रोहित एंड कंपनी की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाते से (30,000 अंशों पर पर 3 रु. प्रति आवेदन राशि की प्राप्ति पर)		90,000	 90,000
	अंश आवेदन खाता नाम अंशपूँजी खाते से (आवेदन राशि को अंशपूँजी में हस्तांतरित करने पर)		90,000	 90,000
	अंश आबंटन खाता नाम अंशपूँजी खाते से (30,000 अंशों पर 3 रुपये प्रति अंश आबंटन राशि देय होने पर)		90,000	 90,000
	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाते से (आबंटन राशि की प्राप्ति होने पर)		90,000	 90,000
	अंश प्रथम माँग खाता नाम अंशपूँजी खाते से (30,000 अंशों पर 2 रुपये प्रति अंश प्रथम माँग राशि देय होने पर)		60,000	 60,000
	बैंक खाता नाम बकाया माँग खाता नाम अंश प्रथम माँग खाते से अग्रिम माँग खाते से (300 अंशों पर 2 रुपये प्रत्येक अग्रिम प्राप्ति तथा 400 अंशों पर 2 रुपये प्रत्येक प्रथम माँग राशि प्राप्त नहीं होने पर)		59,800 800	 60,000 600

© NCERT not to be republished

स्वयं करें

1. एक कंपनी ने 20,000 समता अंश 10 रुपये प्रत्येक जो कि 3 रुपये आवेदन; 3 रुपये आबंटन; 2 रुपये प्रथम माँग; और 2 रुपये द्वितीय माँग और अंतिम माँग पर देय है, का निर्गमन किया। आबंटन राशि को 1 मई 2014 या उससे पहले भुगतान किया जा सकता है। प्रथम माँग, 1 अगस्त 2014 या उससे पहले और द्वितीय और अंतिम माँग 1 अक्तूबर 2014 या उससे पहले भुगतान किया जा सकता है। 'एक्स' जिसको 1,000 अंश आबंटित किए गए, ने आबंटन तथा माँग राशि का भुगतान नहीं किया; 'वाई' जिसको 600 अंश आबंटित किए गए थे, ने दोनों माँग राशि का भुगतान नहीं किया और 'ज़ेड' जिसके पास 400 अंश थे, ने अंतिम माँग का भुगतान नहीं किया। रोज़नामचा प्रविष्टियाँ कीजिए तथा 30 मार्च 2015 पर कंपनी का तुलन-पत्र तैयार करें।
2. अल्फा कंपनी लिमिटेड ने 10 रुपये प्रत्येक के 10,000 अंश, निर्गमित किए। इन पर देय राशियाँ इस प्रकार हैं। 3 रुपये आवेदन पर; 2 रुपये आबंटन पर और शेष दो समान किश्तों पर देय है। आबंटन की राशि 30 मार्च 2015 या उससे पहले; प्रथम माँग राशि 30 जुन 2015 या उससे पहले और अंतिम माँग राशि 31 अगस्त या उससे पहले देय है। मिस्टर 'अ' जिनको 600 अंशों का आबंटन किया गया था; ने अंशों के अंकित मूल्य का सभी शेष आबंटन के समय ही कर दिया। कंपनी की पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ प्रलेखित करें और इस तिथि पर कंपनी का स्थिति विवरण भी तैयार करें।

वैकल्पिक रूप से :

तिथि	विवरण		ब.पृ.स.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	बैंक खाता	नाम		59,200	
	बकाया मांग खाता	नाम		800	
	अंश प्रथम मांग खाते से				60,000
	(2 रू. प्रति अंश पर 400 अंशों पर बकाया मांग)				
	बैंक खाता	नाम		600	
	अग्रिम मांग खाते से				600
	(2 रू. प्रति अंश पर 300 अंशों पर बकाया मांग)				

1.6.3 अधि-अभिदान

कुछ स्थितियों में जब कंपनी को जनता में निर्गमित अंशों से अधिक अंशों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हो जाते हैं, जो कि अक्सर कंपनी की मजबूत/सुदृढ़ वित्तीय स्थिति एवं अच्छे प्रबंध के कारण होता है, **अधि-अभिदान** कहलाता है।

इस प्रकार की स्थिति में संचालकों के पास इसके व्यवहार के लिए तीन विकल्प मौजूद हैं– (1) कुछ आवेदनों को पूर्ण रूप से स्वीकार करके तथा शेष को पूर्ण रूप से मना कर दिया जाता है; (2) सभी आवेदकों

के अंशों का आबंटन आनुपातिक या समानुपात रूप में किया जा सकता है; तथा (3) उपरोक्त दोनों विधियों को संयुक्त रूप से लागू कर सकते हैं, जो कि व्यवहार में सबसे सामान्य विधि है।

अधि–अभिदान की समस्याओं का अंततः समाधान अंशों के आबंटन द्वारा किया जाता है। अतः लेखांकन के दृष्टिकोण से अधि–अभिदान की स्थिति को आवेदन और आबंटन के संपूर्ण ढाँचे के अंदर रखा जाता है। अर्थात् आवेदन राशि की प्राप्ति, आबंटन पर देय राशि और अंशधारकों से प्राप्ति तथा यह प्रविष्टियों के प्रतिरूप से प्रतिबिंबित हैं।

प्रथम विकल्प– जब संचालक कुछ आवेदन को पूर्ण रूप से स्वीकार करते हैं तथा अन्य को पूर्ण रूप से रदद् कर देते हैं, तो रदद् आवेदन से प्राप्त राशि को पूर्ण रूप से लौटा दिया जाता है। उदाहरण के लिए, एक कंपनी ने 20,000 अंशों के लिए आमंत्रण किया तथा 25,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त किए। संचालकों ने 5,000 अंशों के लिए किए गए आवेदन को बिलकुल रदद् कर दिया जो कि आवश्यक संख्या से अधिक थे और आवेदन राशि को पूर्ण रूप से वापस कर दिया गया। इस स्थिति में आवेदन और आबंटन पर रोज़नामचा प्रविष्टि की जाएगी–

आवेदन और आबंटन पर वैकल्पिक तौर पर रोज़नामचा प्रविष्टि निम्न प्रकार से की जाएगी–

1. बैंक खाता नाम
   अंश आवेदन खाते से
   (25,000 अंशों पर आवेदन राशि की प्राप्ति पर)
2. अंश आवेदन खाता नाम
   अंशपूँजी खाते से
   बैंक खाते से
   (25,000 अंशों पर आबंटन राशि के हस्तांतरण तथा रदद् किए गए अंशों को अंशपूँजी के हस्तांतरण करने पर)
3. अंश आबंटन खाता नाम
   अंशपूँजी खाते से
   (20,000 अंशों की आबंटन राशि के देय होने पर)
4. बैंक खाता नाम
   अंश आबंटन खाते से
   (आबंटन राशि के प्राप्त होने पर)

दूसरा विकल्प– जब संचालक सभी आवेदकों को आनुपातिक आबंटन करते हैं (*प्रो–राटा* आबंटन कहलाता है) आवेदन से प्राप्त अधिक राशि की प्राप्ति सामान्यतः देय आबंटन राशि के साथ समायोजित कर दी जाती है। ऐसी स्थिति में यद्यपि अंशों पर देय आबंटन राशि से अधिक राशि की प्राप्ति को या तो वापस कर दिया जाएगा या अग्रिम माँग में जमा कर दिया जाएगा।

उदाहरण के लिए, 20,000 अंशों के लिए आमंत्रण किए और 25,000 अंशों के लिए आवेदन आने की स्थिति में यह निर्णय लिया गया कि आवेदकों को अंशों का आबंटन 4 : 5 के अनुपात में किया जाए।

यह ***प्रो-राटा आबंटन*** की स्थिति कहलाती है और 5,000 अंशों पर प्राप्त अधिक राशि को 20,000 अंशों पर देय आबंटन की राशि के साथ समायोजित किया जाएगा। इस स्थिति में आवेदन और आबंटन की रोज़नामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी–

1.	बैंक खाता	नाम
	अंश आवेदन खाते से	
	(25,000 अंशों पर – रुपये प्रति आवेदन राशि की प्राप्ति होने पर)	
2.	अंश आवेदन खाता	नाम
	अंशपूँजी खाते से	
	अंश आबंटन खाते से	
	(आवेदन राशि को अंशपूँजी खाते में हस्तांतरित करने पर तथा 5,000 अंशों पर अधिक आवेदन राशि को अंश आबंटन में जमा करने पर)	
3.	अंश आबंटन खाता	नाम
	अंशपूँजी खाते से	
	(25,000 अंशों पर आबंटन राशि के देय होने पर)	
4.	बैंक खाता	नाम
	अंश आबंटन खाते से	
	(पहले से प्राप्त राशि को समायोजित करने तथा आबंटन राशि की प्राप्ति पर)	

तीसरा विकल्प– जब कुछ अंशों पर किए गए आवेदन को रदद् किया जाता है और शेष अंशों के लिए आनुपातिक आबंटन किया जाता है, तो रदद् किए गए आवेदनों की पूर्ण राशि को प्राप्ति होने पर जिन आवेदकों को आनुपातिक आबंटन किया गया है, को आबंटन राशि देय होने के साथ समायोजित किया जाएगा।

उदाहरण के लिए, एक कंपनी 10,000 अंशों के आवेदन के लिए आमंत्रण देती है और 15,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त किए गए। संचालकों ने 2,500 अंशों के लिए किए गए आवेदनों को रदद् कर दिया और शेष 12,500 अंशों के आवेदकों को 10,000 अंशों का आनुपातिक आबंटन किया गया। इस प्रकार प्रत्येक पाँच अंशों के आवेदन के लिए चार अंशों का आबंटन किया गया। इस स्थिति में 2,500 अंशों के लिए आवेदन को रदद् किया गया और प्राप्त राशि को पूर्ण रूप से लौटा दिया गया, और शेष बचे 2,500 अंशों (12,500 – 10,000) को 10,000 अंशों के लिए देय आबंटन राशि के साथ समायोजित किया जाएगा और आबंटन की रोज़नामचा प्रविष्टियाँ इस प्रकार होंगी।

1.	बैंक खाता	नाम
	अंश आवेदन खाते से	
	(15,000 अंशों पर प्राप्त – रुपये प्रति अंश, आवेदन राशि की प्राप्ति पर)	

© NCERT not to be republished

2. अंश आवेदन खाता नाम
    अंशपूँजी खाते से
    अंश आबंटन खाते से
    बैंक खाते से
   (आवेदन राशि को अंशपूँजी खाते के हस्तांतरित करने और आवेदन से अधिक प्राप्त राशि को अंशों के आबंटन के समय आनुपातिक आबंटन पर अंश आबंटन, खाते में जमा करने पर, तथा रद्द किए गए आवेदनों की राशि वापस करने पर)
3. अंश आबंटन खाता नाम
    अंशपूँजी खाते से
   (10,000 अंशों के लिए _ रुपये प्रति अंश आबंटन देय)
4. बैंक खाता नाम
    अंश आबंटन खाते से
   (आवेदन द्वारा पहले से प्राप्त राशि को, आबंटन राशि के साथ समायोजित करने पर)

उदाहरण 7

जनता पेपर्स लिमिटेड ने 25 रु. प्रत्येक वाले 1,00,000 समता अंशों को जारी करने का आमंत्रण दिया जिन पर देय राशि इस प्रकार थी–

आवेदन पर	5.00 रुपये प्रति अंश
आबंटन पर	7.50 रुपये प्रति अंश
प्रथम माँग पर	7.50 रुपये प्रति अंश
(आबंटन के दो महीने बाद देय)	
द्वितीय और अंतिम माँग पर	5.00 रुपये प्रति अंश
(दो महीने बाद देय)	

1 जनवरी 2017 को 4,00,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त किए गए और 1 फ़रवरी 2017 को आबंटन किया गया।

निम्न परिस्थितियों के अंश पूजी के लेन-देन के संबंध में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

1. संचालकों ने कुछ चुने हुए आवेदकों को 1,00,000 अंशों का आबंटन करने का निर्णय लिया तथा 3,00,000 अंशों को पूर्ण रूप से रदद् किया गया।
2. संचालकों द्वारा प्रत्येक आवेदनकर्ता को आवेदन किए गए अंशों का 25 प्रतिशत आनुपातिक आबंटन किया जाए; आवेदन राशि के शेष आबंटन के साथ समायोजित किया जाए; और तत्पश्चात् बचे हुए आवेदनों की राशि को वापस कर दिया जाए।
3. संचालकों द्वारा 2,00,000 अंशों के लिए किए गए आवेदनों को बिलकुल रद्द कर दिया। 80,000 अंशों के लिए पूर्ण आबंटन किया गया तथा 20,000 अंशों का शेष आवेदकों को

आनुपातिक आबंटन किया गया और आवेदन से अधिक प्राप्त राशि को आबंटन के साथ समायोजित किया गया तथा माँग को बनाया गया।

हल

जनता पेपर्स लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ.स.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
2017				
1 जनवरी	बैंक खाता नाम		20,00,000	
	समता अंश आवेदन खाते से			20,00,000
	(4,00,000 अंशों पर पर 5 रु. प्रति आवेदन राशि की प्राप्ति पर)			
1 फ़रवरी	समता अंश आवेदन खाता नाम		20,00,000	
	समता अंशपूँजी खाता			5,00,000
	बैंक खाते से			15,00,000
	(1,00,000 अंशों पर प्राप्त आवेदन राशि को अंशपूँजी खाते में हस्तांतरण तथा रद्द किए गए आवेदनों की राशि को वापस करने पर)			
1 फ़रवरी	समता अंश आबंटन खाता नाम		7,50,000	
	समता अंशपूँजी खाते से			7,50,000
	(1,00,000 अंशों पर 7.50 रुपये प्रति अंश आबंटन राशि के देय होने पर)			
	बैंक खाता नाम		7,50,000	
	समता अंश आबंटन खाते से			7,50,000
	(आबंटन राशि की प्राप्ति पर)			
1 अप्रैल	समता अंश प्रथम माँग खाता नाम		7,50,000	
	अंशपूँजी खाते से			7,50,000
	(1,00,000 अंशों पर 7.50 प्रति अंश प्रथम माँग के देय होने पर)			

1 अप्रैल	बैंक खाता नाम समता अंश प्रथम माँग खाते से (प्रथम माँग की प्राप्ति पर)		7,50,000	7,50,000
1 जून	समता अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (अंतिम माँग के 1,00,000 अंशों पर 5 रुपये प्रति अंश देय होने पर)		5,00,000	5,00,000
1 जून	बैंक खाता नाम समता अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाते से (अंतिम माँग की प्राप्ति पर)		5,00,000	5,00,000

दूसरा विकल्प

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
2017				
1 जनवरी	बैंक खाता नाम समता अंश आवेदन खाते से (4,00,000 अंशों पर 5 रुपये प्रति अंश आवेदन राशि की प्राप्ति पर)		20,00,000	20,00,000
1 फ़रवरी	समता अंश आवेदन खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से समता अंश आबंटन खाते से बैंक खाते से (अंशों के आबंटन पर आवेदन राशि को अंशपूँजी के हस्तांतरित करने तथा आवेदन से अधिक राशि को आबंटन खाते में जमा करने और अस्वीकृत अंशों की राशि को लौटाने पर)		20,00,000	 5,00,000 7,50,000 7,50,000
1 फ़रवरी	समता अंश आबंटन खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (1,00,000 अंशों पर 7.50 प्रति अंश आबंटन राशि के देय होने पर)		7,50,000	7,50,000

टिप्पणी – माँग से संबंधित प्रविष्टियाँ पिछली विधि के समान ही होंगी।

© NCERT not to be republished

तीसरा विकल्प

तिथि	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रुपये)	जमा राशि (रुपये)
2017 1 जनवरी	बैंक खाता समता अंश आवेदन खाते से (4,00,000 अंशों पर 5 रुपये प्रति अंश आवेदन राशि की प्राप्ति पर)	नाम		20,00,000	 20,00,000
1 फ़रवरी	समता अंश आवेदन खाता समता अंशपूँजी खाते से समता अंश आबंटन खाते से अग्रिम माँग खाते से बैंक खाते से (आवेदन राशि को अंशपूँजी खाते में हस्तांतरित करने तथा आवेदन से अधिक राशि को आबंटन खाते में जमा करने तथा रद्द किए गए आवेदनों की राशि लौटाने पर)	नाम		20,00,000	 5,00,000 1,50,000 2,50,000 11,00,000
1 फ़रवरी	समता अंश आबंटन खाता समता अंशपूँजी खाते से (1,00,000 अंशों पर 7.50 प्रति अंश आबंटन राशि के देय होने पर)	नाम		7,50,000	 7,50,000
1 फ़रवरी	बैंक खाता अंश आबंटन खाते से (आबंटन राशि की प्राप्ति पर)	नाम		6,00,000	 6,00,000
1 अप्रैल	समता अंश प्रथम माँग खाता समता अंशपूँजी खाते से (1,00,000 अंशों पर 7.50 प्रति अंश प्रथम माँग के देय होने पर)	नाम		7,50,000	 7,50,000
1 अप्रैल	बैंक खाता अग्रिम माँग खाता समता अंश प्रथम माँग खाते से (अग्रिम माँग राशि को प्रथम माँग के साथ समायोजित करने और शेष राशि को माँग की प्राप्ति हाने पर)	नाम नाम		6,00,000 1,50,000	 7,50,000

1 जून	समता अंश द्वितीय और अंतिम खाता	नाम		5,00,000	
	अंशपूँजी खाते से				5,00,000
	(अंतिम माँग के 1,00,000 अंशों, 5 रुपये प्रति अंश देय होने पर)				
1 जून	बैंक खाता	नाम		4,00,000	
	अग्रिम माँग खाते से	नाम		1,00,000	
	समता अंश द्वितीय और अंतिम माँग खाते से				5,00,000
	(अग्रिम माँग राशि को द्वितीय एवं अंतिम माँग में समायोजित करने तथा शेष राशि को माँग की प्राप्ति होने पर)				

टिप्पणी– यथानुपात आबंटन के परिणामस्वरूप अधिक आवेदन राशि के शेष को, आबंटित अंशों के संबंध में आबंटन राशि, और दोनों माँग राशियों के साथ रद्द किए आवेदनों को लौटा दी गई राशि की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपरोक्त रोज़नामचा प्रविष्टि 3 पर्याप्त है।

कार्यात्मक टिप्पणी–

	(रु.)	(रु.)
अधिक आवेदन राशि		15,00,000
घटाया हस्तांतरण–		
(i) अंश आबंटन – 20,000 अंश 7.50 रुपये प्रत्येक	(1,50,000)	
(ii) अंश माँग – 20,000 अंश 12.50 प्रत्येक	(2,50,000)	(4,00,000)
लौटाई गई राशि (रद्द किए गए आवेदन सहित)		11,00,000

1.6.4 अंशों का न्यून अभिदान

न्यून अभिदान एक ऐसी स्थिति है जब अभिदान के लिए आमंत्रित किए गए अंशों से कम अंशों पर आवेदन प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए, एक कंपनी ने जनता में अभिदान के लिए 2,00,000 अंशों का आमंत्रण दिया लेकिन 1,90,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। इस परिस्थिति में केवल 1,90,000 अंशों के लिए आबंटन निश्चित किया जाएगा और सभी प्रविष्टियाँ इसके अनुसार की जाएँगी। यद्यपि, जैसा कि पहले बताया गया है, यह निश्चित कर लेना आवश्यक है कि कंपनी ने कम से कम अभिदान प्राप्त कर लिए हैं।

1.6.5 अंशों का अधि-मूल्य पर निर्गमन

वित्तीय रूप से सुदृढ़ और अच्छे प्रबंधकीय नियंत्रण वाली कंपनियों के लिए यह सामान्य है कि वह अपने अंशों को प्रीमियम पर निर्गमन करें, जैसे कि अंशों के समता मूल्य से अधिक मूल्य पर। जब 100 रुपये की

राशि के अंश को 105 रुपये में निर्गमित किया जाता है, तो यह 5% प्रीमियम पर **निर्गमित** कहलाता है।

जब अंशों का अधिलाभ पर निर्गमन किया जाता है तो तकनीकी रूप से अधिलाभ की राशि को निर्गमन के किसी भी समय माँगा जा सकता है। यद्यपि, सामान्यत: अधिलाभ की राशि को आबंटन के समय माँगा जा सकता है लेकिन कभी–कभी माँग पर भी माँगा जा सकता है। अधिलाभ राशि को एक अलग खाते में जो कि "प्रतिभूति अधिलाभ खाता" कहलाता है, में जमा किया जाएगा और कंपनी के स्थिति विवरण में समता एवं दायित्व शीर्षक के अन्तर्गत "आरक्षित और आधिक्य" मद शीर्ष में दर्शाया जाएगा। अधिमूल्य का प्रयोग निम्न पाँच उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है –

(अ) पूर्ण भुगतान बोनस अंश के निर्गमन पर, जो कि इस संदर्भ में जारी न की गई अंशपूँजी से ज़्यादा न हो;

(ब) कंपनी के प्रारंभिक व्ययों का अभिलेखन;

(स) कंपनी के व्ययों को अपलिखित करना, या कमीशन का भुगतान, या प्रतिभूतियों पर बट्टा प्रदान या बट्टे को अपलिखित करना; और

(द) अधिमानी अंशों के मोचन पर अधिमूल्य का भुगतान और कंपनी के ऋणपत्रों के मोचन पर अधिमूल्य का भुगतान करना।

(ह) स्वयं के अंशों का क्रय (अर्थात अंशों का पुन: क्रय)

अधिमूल्य पर निर्गमित अंशों के संबंध में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ इस प्रकार होंगी;

1. *आवेदन राशि के साथ अधिमूल्य माँगे जाने पर*

(अ) बैंक खाता नाम

अंश आवेदन खाते से

(आवेदन अंश की राशि प्रीमियम सहित प्राप्त होने पर)

(ब) अंश आवेदन खाता नाम

अंशपूँजी खाते से

प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से

(आवेदन राशि की अंशपूँजी तथा प्रतिभूति प्रीमियम खाते में हस्तांतरित करने पर)

2. *जब अधिमूल्य को आबंटन राशि के साथ माँगा जाता है*

(अ) अंश आबंटन खाता नाम

अंशपूँजी खाते से

प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से

(अंशों पर – रुपये प्रति अंश प्रीमियम सहित आबंटन राशि के देय होने पर)

(ब) बैंक खाता नाम

अंश आबंटन खाते से

(प्रीमियम सहित आबंटन राशि की प्राप्ति होने पर)

© NCERT not to be republished

3. *जब अधिमूल्य को माँग राशि के साथ माँगा जाता है*

(अ) अंश माँग खाता नाम

अंशपूँजी खाते से

प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से

(अंशों पर – रुपये प्रति अंश प्रीमियम सहित माँग राशि के देय होने पर)

(ब) बैंक खाता नाम

अंश माँग खाते से

(प्रीमियम सहित माँग राशि की प्राप्ति होने पर)

उदाहरण 8

जुपीटर कंपनी लिमिटेड ने 10 रुपये प्रत्येक वाले 35,000 अंश 2 रुपये अधिलाभ पर जारी किए जिन पर देय राशियाँ निम्नवत् हैं–

आवेदन पर	3 रुपये
आबंटन पर	5 रुपये (अधिलाभ सहित)
शेष प्रथम एवं द्वितीय माँग पर	

अंशों का पूर्ण रूप से अभिदान किया तथा समस्त राशि को प्राप्त किया गया। कंपनी की पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

हल

जुपीटर लिमिटेड कंपनी की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. स.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	बैंक खाता नाम समता अंश आवेदन खाते से (35,000 अंशों पर पर 3 रु. प्रति अंश आवेदन राशि की प्राप्ति पर)		1,05,000	1,05,000
	समता अंश आवेदन खाता नाम अंशपूँजी खाते से (आबंटन पर आवेदन राशि के अंशपूँजी खाते में हस्तांतरित करने पर)		1,05,000	1,05,000

	समता अश आबटन खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित आरक्षित खाते से (35,000 अंशों पर 5 रुपये प्रति अंश अधिलाभ सहित आबंटन राशि के देय हाने पर)		1,75,000	 1,05,000 70,000
	बैंक खाता नाम समता अंश आबंटन खाते से (अधिलाभ सहित आबंटन राशि की प्राप्ति पर)		1,75,000	 1,75,000
	समता अंश प्रथम एवं अंतिम माँग खाता नाम अंशपूँजी खाते से (35,000 अंशों पर 4 रुपये प्रति अंश प्रथम एवं अंतिम माँग देय होने पर)		1,40,000	 1,40,000
	बैंक खाता नाम समता अंश प्रथम एवं अंतिम माँग खाते से (प्रथम एवं अंतिम माँग राशि की प्राप्ति पर)		1,40,000	 1,40,000

1.6.6 अंशों का बट्टे पर निर्गमन

कुछ स्थितियाँ ऐसी होती हैं जब कंपनी के अंशों को बट्टे पर निर्गमित किया जाता है, जैसा कि नाममात्र या अंशों के समता मूल्य से कम की राशि पर, नाममात्र कीमत और निर्गमित कीमत के मध्य अंतर, अंशों पर बट्टे की राशि को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, जब 100 रुपये की कीमत का कोई अंश 98 रुपये में जारी किया जाता है, तो यह अंशों का 2 प्रतिशत बट्टे पर निर्गमन कहलाएगा।

एक सामान्य नियम के अनुसार, एक कंपनी अपने अंशों को बट्टे पर निर्गमित नहीं कर सकती है। ऐसा केवल हरण किए गए अंशों के पुनः निर्गमन (जो कि आगे बताया जाएगा) और स्टेट इक्वेटी अंशों का निर्गमन कर सकती है।

1.6.7 रोकड़ के अतिरिक्त प्रतिफल में अंशों का निर्गमन

जहाँ कंपनी उन विक्रेताओं, जिनसे उसने परिसंपत्तियाँ क्रय की हैं, के साथ समझौता करती है तो भुगतान के रूप में कंपनी के पूर्ण प्रदत्त अंश लेने के लिए सहमत होते हैं। सामान्यतः, इन अंशों के निर्गमन के लिए किसी प्रकार का रोकड़ नहीं लिया जाता। इन अंशों को सममूल्य पर; अधिलाभ पर या बट्टे पर भी निर्गमित मूल्य जिस पर यह निर्गमित किए जाएँगे और विक्रेताओं को दिए राशि पर निर्भर करती है। इसलिए विक्रेताओं को निर्गमित अंशों की संख्या की गणना इस प्रकार की जाएगी–

$$\text{निर्गमन किए गए अंशों की संख्या} = \frac{\text{देय राशि}}{\text{निर्गमन मूल्य}}$$

उदाहरण के लिए, राहुल लिमिटेड ने हांडा लिमिटेड से 5,40,000 रु. में भवन का क्रय किया और इसका भुगतान 100 रु. प्रत्येक के अंशों को निर्गमित करके किया जाएगा। विभिन्न स्थितियों में निर्गमन किए गए अंशों की संख्या निम्न प्रकार ज्ञात होगी–

© NCERT not to be republished

(अ) *जब अंशों को सममूल्य पर निर्गमित किये गए अर्थात्* 100 रु. पर

$$\text{निर्गमन किए गए अंशों की संख्या} = \frac{\text{देय राशि}}{\text{निर्गमन मूल्य}}$$

$$= \frac{5,40,000 \text{ रु.}}{100 \text{ रु.}}$$

$$= 5,400 \text{ अंश}$$

(ब) *जब अंशों को 20% अधिमूल्य पर निर्गमित किया गया है अर्थात् 120 रु. (100 + 20)*

$$\text{निर्गमन किए गए अंशों की संख्या} = \frac{\text{देय राशि}}{\text{निर्गमन मूल्य}}$$

$$= \frac{5,40,000 \text{ रु.}}{120 \text{ रु.}}$$

$$= 4,500 \text{ अंश}$$

रोकड़ प्रतिफ़ल अतिरिक्त अंशों के निर्गमन की उपर्युक्त स्थिति में रोज़नामचा प्रविष्टियों का अभिलेखन इस प्रकार होगा–

राहुल लिमिटेड कंपनी की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*		*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	भवन खाता	नाम		5,40,000	
	हांडा लिमिटेड से				5,40,000
	(भवन का क्रय)				
(अ)	*जब अंशों का निर्गमन सममूल्य पर किया जाता है*				
	हांडा लिमिटेड	नाम		5,40,000	
	अंशपूँजी खाते से				5,40,000
	(5,400 अंशों का सममूल्य पर निर्गमन)				
(ब)	जब अंश 20% प्रीमियम पर निर्गमित किए गये				
	हांडा लिमिटेड	नाम		5,40,000	
	अंशपूँजी खाते से				4,50,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से				90,000
	(4,500 अंश 120 रु. प्रति अंश की दर पर निर्गमन किए गये)				

उदाहरण 9

जिंदल एंड कंपनी ने हाई–लाइफ़ मशीन लिमिटेड से 3,80,000 रु. में एक मशीन का क्रय किया। क्रय समझौते के अनुसार 20,000 रु. का नकद भुगतान और शेष राशि 100 रु. प्रत्येक के अंशों का निर्गमन करके किया जाएगा। क्या प्रविष्टि की जाएगी यदि अंशों का निर्गमन–

(अ) सममूल्य पर

(ब) 20% अधिमूल्य पर

हल

अंशों की संख्या की गणना इस प्रकार होगी–

(अ) जब अंशों का निर्गमन सममूल्य पर हो

$$\frac{3,60,000 \text{ रु.}}{100 \text{ रु.}} = 3,600 \text{ रु.}$$

(ब) जब अंशों का निर्गमन अधिमूल्य पर हो

$$\frac{3,60,000 \text{ रु.}}{120 \text{ रु.}} = 3,000 \text{ अंश}$$

जिंदल एवं लिमिटेड कंपनी की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ.स.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	मशीन खाता नाम		3,80,000	
	बैंक खाता			20,000
	हाई लाइफ़ मशीन लिमिटेड से			3,60,000
	(मशीन का क्रय और 20,000 रु. का रोकड़ भुगतान, शेष का भुगतान अंशों की निर्गमन द्वारा)			
(अ.)	*जब अंशों को सममूल्य पर निर्गमित किया जाता है*			
	हाई लाइफ़ मशीन लिमिटेड नाम		3,60,000	
	अंशपूँजी खाते से			3,60,000
	(3,600 अंशों का प्रत्येक 100 रु. पर निर्गमन)			
(ब.)	*जब अंशों को प्रीमियम पर निर्गमित किया गया*			
	हाई लाइफ़ मशीन लिमिटेड नाम		3,60,000	
	अंशपूँजी खाते से			3,00,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से			60,000
	(3,000 अंशों 120 रु. प्रति अंश की दर पर निर्गमन किए गए)			

© NCERT not to be republished

स्वयं जाँचिए 2

सही उत्तर का चुनाव करें

(अ) समता अंशधारी हैं–
- (i) कंपनी के लेनदार।
- (ii) कंपनी के स्वामी।
- (iii) कंपनी के ग्राहक।
- (iv) (i), (ii) और (iii)
- (v) इनमें से कोई नहीं।

(ब) अधिकृत अंशपूँजी है–
- (i) कंपनी द्वारा निर्गमित किया गया अधिकृत पूँजी का भाग है।
- (ii) पूँजी की राशि जो कि प्रस्तावित अंशधारियों द्वारा वास्तव में आवेदित की गई है।
- (iii) अंशपूँजी की यह अधिकतम राशि जो कि एक कंपनी द्वारा निर्गमन करने के लिए अधिकृत है।
- (iv) अंशधारियों द्वारा वास्तविक भुगतान की राशि।
- (v) केवल (iii)

(स) सारणी 'अ' के अनुसार बकाया माँग पर ब्याज को प्रभार किया जाएगा–
- (i) 10%
- (ii) 6%
- (iii) 8%
- (iv) 11%
- (v) इनमें में से कोई नहीं।

(द) संचालकों द्वारा वास्तव में माँगी गई राशि से पूर्व, अंशधारियों से प्राप्त अग्रिम राशि को–
- (i) अग्रिम माँग खाते के नाम पक्ष में दर्शाया जाता है।
- (ii) अग्रिम माँग खाते के जमा पक्ष में दर्शाया जाता है।
- (iii) माँग खाते के नाम पक्ष में दर्शाया जाता है।
- (iv) (i) और (iii)
- (v) इनमें से कोई नहीं।

(य) अंशों का हरण किया जा सकता है–
- (i) माँग राशि के भुगतान न करने पर
- (ii) सभा में उपस्थित न होने की स्थिति में
- (iii) बैंक ऋण में भुगतान की असमर्थता में
- (iv) प्रतिभूति के रूप में अंशों के बंधक होने पर
- (iv) सभी द्वारा

(र) हरण अंशों के पुनः निर्गमन का लाभ–
- (i) सामान्य आरक्षित (रिजर्व) में
- (ii) पूँजी शोधन आरक्षित (रिजर्व) में
- (iii) पूँजी आरक्षित (रिजर्व) में
- (iv) आगम आरक्षित (रिजर्व) में
- (v) किसी में नहीं

© NCERT not to be republished

(ल) अंश हरण खाते का शेष तुलन-पत्र में निम्न मद के अंतर्गत दर्शाया जाता है।

(i) चालू दायित्व

(ii) आरक्षित एवं अधिशेष

(iii) अंश पूँजी

(iv) असुरक्षित ऋण

(v) किसी मद के अंतर्गत नहीं

अंशों का निजी निर्गमन

कंपनी अधिनियम, 2013 (धारा 42) निजी निर्गमन का वर्णन एक प्रतिभूतियों के प्रस्ताव अथवा एक चयनित समूह को प्रतिभूतियों के अभिदान के निमंत्रण के लिए एक निजी निर्गमन प्रस्ताव पत्र जारी करने के माध्यम से करता है।

कर्मचारी पूँजी विकल्प योजना (ई.एस.ओ.पी.)

एक कंपनी अपने कर्मचारियों और कर्मचारी निदेशकों को भविष्य की किसी तारीख में अपने बाजार मूल्य या उचित मूल्य से कम पर कंपनी के अंशों के अभिदान का विकल्प दे सकती है। इसे कर्मचारी पूँजी विकल्प योजना के रूप में जाना जाता है। चूँकि यह कंपनी द्वारा दिया गया एक विकल्प है, अत: कोई कर्मचारी अभिदान के अधिकार का प्रयोग कर सकता है या नहीं भी कर सकता है।

1. उद्यम समता (स्वेट इक्विटी) की व्यापकता के कारण कर्मचारी पूँजी विकल्प योजना उद्यम समता की श्रेणी में आती है।

एक कंपनी जो विकल्प जारी करती है, उसे निम्नलिखित निर्धारित शर्तों को पूरा करना होता है–

(क) ये अंश पहले से जारी अंशों के वर्ग के ही हैं;

(ख) यह कंपनी द्वारा पारित एक विशेष प्रस्ताव द्वारा अधिकृत है;

(ग) यह प्रस्ताव अंशों की संख्या, वर्तमान बाजार मूल्य, अपवाद, यदि कोई हो और निदेशकों या कर्मचारियों के वर्ग या वर्गों को निर्दिष्ट करता है, जिनके लिए ऐसे समता अंश जारी किए जाने हैं;

(घ) इसे जारी करने की तिथि, जिस दिन कंपनी ने व्यवसाय शुरू किया था, उससे एक वर्ष से कम नहीं है; तथा

(ङ) ये अंश सेबी के नियमों के अनुसार जारी किए जाते हैं, यदि अंश सूचीबद्ध हैं।

कर्मचारी पूँजी विकल्प योजना की महत्वपूर्ण शब्दावली

अनुदान : अनुदान का अर्थ है, कर्मचारियों को पूर्व-निर्धारित मूल्य पर कंपनी के अंशों के अभिदान का एक विकल्प देना।

अनुदान तिथि : यह कर्मचारी और उसके कर्मचारियों के बीच कर्मचारी पूँजी विकल्प योजना की शर्तों के समझौते की तिथि है।

© NCERT not to be republished

निहित : कर्मचारियों को कंपनी के शेयरों के लिए आवेदन करने का अधिकार देने की प्रक्रिया।

निहित तिथि : यह वह तिथि होती है, जिस दिन कर्मचारी निहित शर्तों को पूरा करने के बाद अंशों के लिए आवेदन करने का अधिकारी बन जाता है।

निहित अवधि : अनुदान की तारीख और उस तारीख के बीच की अवधि जिस पर कर्मचारी पूँजी विकल्प योजना (ई.एस.ओ.पी.) की सभी निर्दिष्ट निहित शर्तों को संतुष्ट करेगा।

प्रयोग : इसका अर्थ है कि कर्मचारी द्वारा उसके निहित विकल्प के लिए अंश जारी करने के लिए आवेदन करना।

प्रयोग की अवधि : उस समय के बाद की अवधि जिसमें कर्मचारी को कर्मचारी पूँजी विकल्प योजना के अनुसरण में उसके द्वारा निहित विकल्प के लिए अंशों के लिए आवेदन करने के अधिकार का प्रयोग करना चाहिए।

प्रयोग मूल्य : कर्मचारी पूँजी विकल्प योजना के अनुसरण में दिए गए विकल्प का उपयोग करने के लिए कर्मचारी द्वारा देय मूल्य।

विकल्प का मूल्य : बाजार मूल्य और सुरक्षा के निर्गम मूल्य के बीच अंतर।

1.7 अंशों का हरण

ऐसा हो सकता है कि कुछ अंशधारक एक या अधिक किश्तों अर्थात् आबंटन राशि या माँग राशि का भुगतान करने में असफ़ल रहें। इस परिस्थिति में कंपनी अंतर्नियमों में उल्लेखित प्रावधान के अनुसार इन अंशों का हरण जैसाकि आबंटन को रद्द करके और प्राप्त राशि को ज़ब्त करके, कर सकती है। सामान्यत: यह प्रावधान सारणी अ पर आधारित होते हैं जो कि निदेशकों को माँग राशि का भुगतान न होने पर अंशों को हरण करने का अधिकार देते हैं इस उद्देश्य के लिए इस संबंध में दी गई प्रक्रिया का बड़ी सख्ती से पालन करना होगा।

जब अंशों का हरण किया जाता है तो हरण से संबंधित सभी प्रविष्टियाँ, अधिलाभ के अतिरिक्त, जो कि लेखों में पहले से ही प्रलेखित की जा चुकी हैं, की विपरीत प्रविष्टी की जाएगी। इसके अनुसार अंशपूँजी खाते को हरण किए गए अंशों के संबंध में माँगी गई राशि से नाम किया जाएगा और जमा करेंगे (1) इस संबंध में भुगतान किया गया माँग खाता या बकाया माँग खाता, न भुगतान की गई राशि जैसी भी स्थिति हो से, और (2) अंश हरण खाते में पहले से प्राप्त राशि से।

अत: रोज़नामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी–

सममूल्य पर निर्गमित किए गए अंशों का हरण

अंशपूँजी खाता	नाम
अंश हरण खाते से	
अंश आबंटन खाते से	
अंश माँग खाते से (व्यक्तिगत)	
(……… अंशों का हरण, आबंटन और माँग राशि के प्राप्त नहीं होने पर)	

टिप्पणी– यदि कंपनी द्वारा माँग की बकाया राशि का खाता रखा जा रहा है तो उपर्युक्त प्रविष्टि से अंश आबंटन और/या "अंश माँग या माँगें" खाता के बजाय माँग की बकाया राशि खाते में जमा होगी।

अंश हरण खाते का शेष अंशों के पुनः निर्गमित करने तक तुलन–पत्र के शीर्षक इक्विटी एवं देयताएँ दायित्व शीर्षक में "अंशपूँजी" के शीर्ष के अंतर्गत कुल "चुकता पूँजी" में जोड़कर के अतिरिक्त दर्शायी जाएँगी।

उदाहरण 10

होंडा लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 10,000 समता अंशों का निर्गमन किया। जो इस प्रकार देय थे– आवेदन पर 20 रु.; आबंटन पर 30 रु.; प्रथम माँग पर 20 रु. और द्वितीय और अंतिम माँग पर 30 रु.। 10,000 अंशों के लिए आवेदन और आबंटन हुआ। सुप्रिया द्वारा 300 अंशों पर देय दोनों माँगों को छोड़कर सभी देय राशि प्राप्त हुई। उसके अंशों का हरण किया गया। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

हल

होंडा लिमिटेड की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रुपये)*	*जमा राशि (रुपये)*
	बैंक खाता नाम समता अंश आवेदन खाते से (10,000 अंशों पर पर 20 रु. प्रति अंश की दर पर आवेदन राशि)		2,00,000	2,00,000
	अंश आवेदन खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (आवेदन राशि को अंशपूँजी में हस्तांतरित)		2,00,000	2,00,000
	अंश आबंटन खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (10,000 अंशों पर 30 रु. प्रति अंश की दर से आबंटन राशि देय)		3,00,000	3,00,000
	बैंक खाता नाम समता अंश आबंटन खाते से (10,000 अंशों पर 30 रु. प्रति अंश के दर से प्राप्त आबंटन राशि)		3,00,000	3,00,000
	अंश प्रथम माँग खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (10,000 अंशों पर 20 रु. प्रति अंश की दर से प्रथम माँग राशि देय)		2,00,000	2,00,000
	बैंक खाता नाम समता अंश प्रथम माँग खाते से (300 अंशों पर छोड़कर प्रथम माँग राशि प्राप्त होने पर)		1,94,000	1,94,000

	अंश द्वितीय और अंतिम माँग खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (द्वितीय और अंतिम माँग राशि 10,000 अंशों पर 30 रु. प्रति अंश की दर से देय होने पर)		3,00,000	3,00,000
	बैंक खाता नाम समता अंश द्वितीय और अंतिम माँग खाते से (300 अंशों के अतिरिक्त द्वितीय और अंतिम माँग राशि के प्राप्त होने पर)		2,91,000	2,91,000
	समता अंशपूँजी खाता नाम समता अंश प्रथम माँग खाते से समता अंश द्वितीय और अंतिम माँग खाते से समता अंश हरण खाते से (300 अंशों को हरण करने पर)		30,000	6,000 9,000 15,000

अधिमूल्य पर निर्गमित अंशों का हरण– जब अंशों को अधिलाभ पर निर्गमित किया जाता है और अधिलाभ राशि की पूर्ण रूप से वसूली कर ली जाती है, तथा बाद में कुछ अंशों की माँगी गई राशि के भुगतान न होने के कारण हरण कर लिया जाता है तो ज़ब्त अंशों का लेखांकन व्यवहार, सममूल्य पर निर्गमित अंशों की तरह ही होगा। इस संदर्भ में महत्वपूर्ण बात यह है कि अंश अधिलाभ खाते को, हरण के समय नाम नहीं किया जाएगा, यदि हरण किए गए अंशों के संबंध में अधिलाभ को प्राप्त कर लिया गया है।

इस स्थिति में यदि अधिलाभ राशि को आंशिक या पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं किया गया है तो हरण किए गए अंशों के संबंध में, अंश प्रीमियम आरक्षित खाते को भी अप्राप्त अधिलाभ राशि और अंशपूँजी खाते को अंशों के हरण के समय नाम किया जाएगा। आमतौर पर यह स्थिति आबंटन के समय देय राशि के प्राप्त न होने पर उत्पन्न होती है। अतः हरण किए गए अंशों को अधिलाभ पर निर्गमित; जिन पर अधिलाभ पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हुआ है को प्रलेखित करने के लिए रोज़नामचा प्रविष्टि होगी–

अंशपूँजी खाता नाम
प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाता नाम
 अंश हरण खाते से
 अंश आबंटन खाते से
 और/या
 अंश माँग खाते से (भिन्न-भिन्न)
(...... आबंटन और माँग राशि का भुगतान न होने पर अंशों का हरण)

टिप्पणी– जहाँ बकाया माँग खाता बनाया जाता है तो, बकाया माँग खाते को जमा करेंगे; अंश आबंटन या/अंश माँग या/माँग खाते को नहीं।

उदाहरण 11

साहिल, जिसके 1,000 अंश हैं जिनका निगर्मित मूल्य 120 रु. प्रति अंश (अंकित मूल्य 100 रु. प्रति अंश) हैं, ने द्वितीय एवं अंतिम माँग, जो कि 20 रु. प्रति अंश है, का भुगतान नहीं किया। कंपनी द्वारा इन अंशों का हरण कर लिया गया। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

तिथि	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रुपये)	जमा राशि (रुपये)
	अंश पूँजी खाता	नाम		1,00,000	
	द्वितीय एवं अंतिम माँग खाते से				20,000
	अंश हरण खाते से				80,000
	(द्वितीय एवं अंतिम माँग का भुगतान न होने पर 1,000 अंशों का हरण)				

उदाहरण 12

सुनैना, जिसके पास 10 रु. प्रत्येक के 500 अंश हैं उसने आबंटन राशि 4 रु. प्रति अंश (2 रु. अधिमूल्य सहित) और 3 रु. की प्रथम और अंतिम माँग राशि का भुगतान नहीं किया। उसके अंशों को प्रथम और अंतिम माँग के बाद हरण कर लिया गया। अंशों का हरण करने की रोज़नामचा प्रविष्टि करें।

हल

तिथि	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	अंशपूँजी खाता	नाम		5,000	
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाता		नाम		1,000
	अंश आबंटन खाते से				2,000
	अंश प्रथम और अंतिम माँग खाते से				1,500
	अंश हरण खाते से				2,500
	(500 अंशों का प्रथम और अंतिम माँग का भुगतान न करने पर हरण)				

उदाहरण 13

अशोक लिमिटेड ने 10 रु. प्रत्येक अंश के 3,00,000 समता अंशों को 2 रु. प्रति अंश के अधिलाभ पर जारी किया। आवेदन पर 3 रु. आबंटन पर 5 रु. (अधिमूल्य सहित) और शेष राशि दो समान राशि की माँगों पर देय है।

4,00,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। सब आवेदनों पर आनुपातिक आबंटन किया गया। आवेदन पर प्राप्त अतिरिक्त राशि आबंटन पर देय राशि में समायोजित की गई। मुकेश, जिन्हें 800 अंश आबंटित किए गए, दोनों माँग राशि का भुगतान करने में असफ़ल रहे और उनके अंशों का हरण द्वितीय माँग के पश्चात् किया गया।

अशोक लिमिटेड की पुस्तकों में आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियों का अभिलेखन करें और तुलन–पत्र में भी दर्शाएँ।

हल

अशोक लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	बैंक खाता	नाम		12,00,000	
	समता अंश आवेदन खाते से				12,00,000
	(4,00,000 अंशों पर आवेदन राशि प्राप्त)				
	समता अंश आवेदन खाता	नाम		12,00,000	
	समता अंशपूँजी खाते से				9,00,000
	समता अंश आबंटन खाते से				3,00,000
	(3,00,000 अंशों की आवेदन राशि का अंशपूँजी में हस्तांतरण और अतिरिक्त राशि का अंश आबंटन खाते में समायोजन)				
	समता अंश आबंटन खाता	नाम		15,00,000	
	समता अंशपूँजी खाते से				9,00,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से				6,00,000
	(3,00,000 अंशों पर आबंटन राशि देय)				
	बैंक खाता	नाम		12,00,000	
	समता अंश आबंटन खाते से				12,00,000
	(आवेदन पर अतिरिक्त राशि के समायोजन के पश्चात् अंशों पर आबंटन राशि प्राप्त)				
	समता अंश प्रथम माँग खाता	नाम		6,00,000	
	समता अंशपूँजी खाते से				6,00,000
	(3,00,000 अंशों पर प्रथम माँग राशि देय)				
	बैंक खाता	नाम		5,98,400	
	माँग बकाया राशि खाता	नाम		1,600	
	समता अंश प्रथम माँग खाते से				6,00,000
	(2,99,200 अंशों पर प्रथम माँग राशि प्राप्त)				
	समता अंश द्वितीय और अंतिम माँग खाता	नाम		6,00,000	
	समता अंशपूँजी खाते से				6,00,000
	(3,00,000 अंशों पर द्वितीय माँग राशि देय)				

© NCERT not to be republished

	बैंक खाता	नाम		5,98,400	
	बकाया माँग खाता	नाम		1,600	
	समता अंश द्वितीय और अंतिम माँग खाते से				6,00,000
	(2,99,200 अंशों पर द्वितीय माँग राशि प्राप्त)				
	समता अंशपूँजी खाता	नाम		8,000	
	अंश हरण खाते से				4,800
	बकाया माँग खाते से				3,200
	(800 अंशों का हरण)				

.... (तिथि) को अशोक लिमिटेड का तुलन-पत्र

विवरण	*नोट संख्या*	*(रु.)*
I. समता एवं देयताएँ		
1. अंशधारक निधि		
(अ) अंशपूँजी	1	29,96,800
(ब) आरक्षित एवं अधिशेष	2	6,00,000
योग		**35,96,800**
II. परिसंपत्तियाँ		
1. चालू परिसंपत्तियाँ		
(क) नकद एवं नकद तुल्यांक	3	35,96,800
योग		**35,96,800**

खातों की टिप्पणियाँ–

विवरण	*(रु.)*	*(रु.)*
अंशपूँजी		
अधिकृत पूँजी		
......समता अंश, 10 रु. प्रत्येक		
निर्गमित पूँजी		
3,00,000 रु. समता अंश, 10 रुपये प्रत्येक		30,00,000
अभिदत्त पूँजी		
अभिदत्त एंव पूर्ण प्रदत्त		
2,99,200 रु. समता अंश, 10 रुपये प्रत्येक		29,92,000
जमा– अंश हरण खाता		4,800
		29,96,800

© NCERT not to be republished

2. आरक्षित एवं अधिशेष प्रतिभूति प्रीमियम संचय		6,00,000
3. नकद एवं नकद समतुल्यांक बैंक में रोकड़		35,96,800

उदाहरण 14

हाई लाइट इंडिया लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक अंश के 30,000 अंशों को 20 रु. प्रति अंश अधिमूल्य के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किए जो निम्न प्रकार देय हैं–

	रु.
आवेदन पर	40 (10 रु. अधिमूल्य सहित)
आबंटन पर	30 (10 रु. अधिमूल्य सहित)
प्रथम माँग पर	30
द्वितीय और अंतिम माँग पर	20

40,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए और 35,000 अंशों के आवेदकों के, अंशों का अनुपातिक आबंटन किया गया। अतिरिक्त आवेदन राशि को आबंटन खाते में उपयोग किया गया।

रोहन, जिसको 600 अंशों का आबंटन प्राप्त हुआ था आबंटन राशि का भुगतान करने में असफ़ल रहा और उसके अंशों को आबंटन के पश्चात् हरण कर लिया गया।

अमन जिसने 1,050 अंशों के लिए आवेदन किया था प्रथम माँग राशि का भुगतान करने में असफ़ल रहा और उसके अंशों का प्रथम माँग के पश्चात् हरण कर लिया गया।

द्वितीय और अंतिम माँग माँगी गई और द्वितीय माँग पर देय सभी राशि प्राप्त हुई।

हरण किए गए अंशों में से 1,000 अंशों को 80 रु. प्रति अंश के पूर्ण भुगतान पर पुनः निगर्मित किया गया। जिसमें अमन के सारे अंश शामिल हैं।

हाई लाइट लिमिटेड की पुस्तकों में आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

© NCERT not to be republished

हल

हाई लाइट लिमिटेड की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	बैंक खाता	नाम		16,00,000	
	अंश आवेदन खाते से				16,00,000
	(40,000 अंशों पर आवेदन राशि प्राप्त)				
	अंश आवेदन खाता	नाम		14,00,000	
	अंशपूँजी खाते से				9,00,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से				3,00,000
	अंश आबंटन खाते से				2,00,000
	(आवेदन राशि का अंशपूँजी खाते, प्रतिभूति अधिमूल्य खाता और अतिरिक्त राशि का अंश आबंटन खाते में हस्तांतरण)				
	अंश आबंटन खाता	नाम		9,00,000	
	अंशपूँजी खाते से				6,00,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से				3,00,000
	(आबंटन पर देय राशि)				
	अंश आवेदन खाता	नाम		2,00,000	
	बैंक खाते से				2,00,000
	(500 अंशों की धनराशि वापस)				
	बैंक खाता	नाम		6,86,000	
	अंश आबंटन खाते से				6,86,000
	(आबंटन पर प्राप्त राशि)				
	अंशपूँजी खाता	नाम		30,000	
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाता		नाम		6,000
	अंश आबंटन खाते से				14,000
	अंश हरण खाते से				22,000
	(रोहन के 600 अंशों का हरण आबंटन राशि के प्राप्त न होने पर)				
	अंश प्रथम माँग खाता	नाम		8,82,000	
	अंशपूँजी खाते से				8,82,000
	(29,400 अंशों पर प्रथम माँग राशि देय)				

© NCERT not to be republished

	बैंक खाता नाम		8,55,000	
	अंश प्रथम माँग खाते से			8,55,000
	(28,500 अंशों पर प्रथम माँग राशि प्राप्त)			
	अंशपूँजी खाता नाम		72,000	
	अंश प्रथम माँग खाते से			27,000
	अंश हरण खाते से			45,000
	(अमन के 900 अंशों का हरण)			
	अंश द्वितीय और अंतिम माँग खाता नाम		5,70,000	
	अंशपूँजी खाते से			5,70,000
	(28,500 अंशों पर द्वितीय और अंतिम माँग राशि देय)			
	बैंक खाता नाम		5,70,000	
	अंश द्वितीय और अंतिम माँग खाते से			5,70,000
	(देय राशि प्राप्त)			
	बैंक खाता नाम		80,000	
	अंश हरण खाते से नाम		20,000	
	अंशपूँजी खाते से			1,00,000
	(1,000 हरण अंशों का पुनः निर्गमन)			
	अंश हरण खाता नाम		28,667	
	पूँजी आरक्षित से			28,667
	(1,000 अंशों के पुनः निर्गमन पर लाभ का पूँजी आरक्षित खाते में हस्तांतरण)			

कार्यकारी टिप्पणी–

(I) रोहन के आवेदन पर प्राप्त अतिरिक्त राशि

रोहन के आबंटित 600 अंश

उसने आवेदन किया $\frac{35,000 \text{ रु.}}{30,000 \text{ रु.}} \times 600 = 700$ अंश

		रु.
रोहन से प्राप्त राशि	= 700 40 रु.	28,000
आवेदन पर समायोजित राशि	= 600 40 रु.	(24,000)
आबंटन पर समायोजित राशि		**4,000**
आबंटन पर देय राशि	= 600 30 रु.	18,000
समायोजित राशि		(4,000)
आबंटन पर देय शेष राशि		**14,000**

© NCERT not to be republished

(II) आबंटन पर प्राप्त राशि

आबंटन पर कुल देय राशि	= 30,000 रु. 30 रु.	= 9,00,000
आवेदन पर प्राप्त राशि		(2,00,000)
		7,00,000
रोहन के अंशों पर राशि प्राप्त नहीं		(14,000)
आबंटन पर प्राप्त राशि		**6,86,000**

(III) प्रथम माँग पर प्राप्त राशि

29,400 अंशों पर प्रथम माँग राशि देय	29,400 30 रु. =	8,82,000
900 अंशों पर प्रथम माँग राशि प्राप्त नहीं	900 30 रु.	(27,000)
		8,55,000

(IV) 1,000 अंशों का पुनः निर्गमन, अमन के 900 अंश और शेष 100 अंश रोहन के सहित

		रु.
100 अंशों पर लाभ = $\frac{22,000}{600}$ 100	=	3,667
900 अंशों पर लाभ	=	45,000
		48,667
घटाया– 1,000 अंशों के पुनः निर्गमन पर हानि		(20,000)
		28,667

(V) अंश हरण खाते में 500 अंशों का शेष

$\frac{22,000}{600}$ 500 रु. = 18,333 रु.

स्वयं करें

1. एक कंपनी ने 10 रु. प्रत्येक के 100 समता अंशों को 20% प्रीमियम पर निर्गमित किया 5 रु. की अंतिम माँग राशि (प्रीमियम सहित) के भुगतान न करने पर हरण किया। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्ट दें।
2. एक कंपनी ने 10 रु. प्रत्येक के 800 समता अंशों, जिनको 10% बट्टे पर निर्गमित किया गया था प्रत्येक 2 रु. के प्रथम एवं अंतिम माँग का भुगतान प्राप्त न हाने पर हरण किया। कंपनी द्वारा हरण की गई राशि की गणना करें और अंशों का हरण करने की रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 15

एक्स लिमिटेड ने 10 रु. प्रति अंश के 40,000 समता अंशों को 2 रु. प्रति अंश प्रीमियम पर सार्वजनिक अभिदान हेतु निम्नलिखित शर्तों पर निर्गमन किया–

आवेदन पर	4 रु. प्रति अंश
आबंटन पर	5 रु. प्रति अंश (प्रीमियम शामिल है)
माँग पर	3 रु. प्रति अंश

60,000 अंशों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए। 48,000 अंशों के आवेदकों को आनुपातिक आबंटन किया गया, शेष आवेदनों को अस्वीकार कर दिया गया। आवेदन पर प्राप्त अतिरिक्त राशि आबंटन पर देय राशि के प्रति समायोजित की गई।

श्री चिटनिस, जिन्हें 1,600 अंश आबंटित किए गए, आबंटन राशि का भुगतान करने में असफ़ल रहे और श्री जगदले, जिन्हें 2,000 अंशों का आबंटन किया गया, माँग राशि का भुगतान न कर सके। इन अंशों का हरण कर लिया गया।

उपर्युक्त लेन-देन का कंपनी की पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

हल

एक्स लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	बैंक खाता नाम		2,40,000	
	समता अंश आवेदन खाते से			2,40,000
	(60,000 अंशों पर आवेदन राशि)			
	समता अंश आवेदन खाता नाम		2,40,000	
	समता अंशपूँजी खाते से			1,60,000
	समता अंश आबंटन खाते से			32,000
	बैंक खाते से			48,000
	(आवेदन राशि का अंशपूँजी में हस्तांतरण, अतिरिक्त आवेदन राशि का अंश आबंटन खाते में समायोजन, और अस्वीकृत आवेदन राशि की वापसी)			
	समता अंश आबंटन खाता नाम		2,00,000	
	समता अंशपूँजी खाते से			1,20,000
	प्रतिभूति प्रीमियम खाते से			80,000
	(40,000 अंशों पर 5 रु. प्रीमियम सहित प्रति अंश की दर से आबंटन राशि देय)			

© NCERT not to be republished

	बैंक खाता नाम		1,61,280	
	बकाया माँग खाता नाम		6,720	
	समता अंश आबंटन खाते से			1,68,000
	(आंबटन राशि प्राप्त की)			
	समता अंश माँग खाता नाम		1,20,000	
	समता अंशपूँजी खाते से			1,20,000
	(40,000 अंशों पर 3 रु. प्रति अंश की दर से प्रथम माँग राशि देय)			
	बैंक खाता नाम		1,09,200	
	बकाया माँग खाता नाम		10,800	
	समता अंश माँग खाते से			1,20,000
	(अंशों पर प्रथम माँग राशि प्राप्त)			
	समता अंशपूँजी खाता नाम		36,000	
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाता	नाम		3,200
	अंश हरण खाते से			21,680
	बकाया माँग खाते से			17,520
	(3,600 अंशों का हरण)			

कार्यकारी टिप्पणी–

I. आबंटन पर प्राप्त राशि

(क)	आबंटन पर देय राशि	रु.
	(40,000 अंश पर प्रति अंश 5 रु.)	2,00,000
(ख)	आबंटन पर वास्तविक देय राशि	2,00,000
	घटाया–अधिक आवेदन राशि	(32,000)
	आबंटन पर देय राशि	**1,68,000**
(ग)	चिटनिस के अंशों पर देय आबंटन राशि	
	1600 अंश 5 रु. प्रति अंश	8.000
	घटाया– आनुपातिक वितरण के कारण प्राप्त अतिरिक्त आवेदन राशि	
	(1920 अंश – 1600 अंश) 4	(1,280)
	श्री चिटनिस से देय आबंटन राशि	6,720

1,600 अंशों के आबंटन के लिए आनुपातिक वितरण के अनुपात के अनुसार (40,000 : 48,000 अंश) चिटनिस ने 1,920 अंशों के लिए (1,600 अंश 6/5) आवेदन किया होगा।

© NCERT not to be republished

(घ) आबंटन पर प्राप्त राशि–	
आबंटन पर वास्तविक देय राशि	1,68,000
घटाया– चिटनिस द्वारा भुगतान न की गई राशि	(6,720)
प्राप्त राशि	1,61,280

II. हरण किए गए अंश खाते का शेष

चिटनिस द्वारा दी गई राशि	
1,920 अंशों के आवेदन 4 रु. प्रति अंश	7,680
जगदले द्वारा दी गई राशि	14,000
2,000 अंश (4 + 3) रु.	
कुल राशि	21,680

टिप्पणी– जगदले के अंशों पर प्रीमियम को लेखे में नहीं लिया जाएगा, क्योंकि यह कंपनी द्वारा पूर्णतः प्राप्त कर लिया गया है।

1.7.1 हरण किए गए अंशों का पुनः निर्गमन

संचालक हरण किए गए अंशों को रद्द या पुन:निर्गमित कर सकते हैं। अधिकतर स्थितियों में हालाँकि, वह विशिष्ट अंशों को जो कि सममूल्य; अधिलाभ (प्रीमियम) या बट्टे पर पुनः निर्गमित कर सकते हैं, सामान्यतः हरण किए गए अंशों का निर्गम पूर्ण भुगतान प्राप्त या बट्टे पर किया जाता है। इस संदर्भ में यह स्मरणीय है कि बट्टा की राशि, हरण किए गए अंशों की वास्तविक प्राप्त राशि से अधिक नहीं होगी और हरण किए गए अंशों के पुनः निर्गमन पर प्रदान बट्टे को अंश हरण खाते में नाम किया जाएगा और यदि पुन:निर्गमित अंशों से संबंधित अंश हरण खाते में कोई शेष हो तो इसे पूँजीगत लाभ माना जाएगा और इसे पूँजी आरक्षित खाते में हस्तांतरित किया जाएगा।

उदाहरण के लिए, यदि एक कंपनी 10 प्रत्येक के 200 अंशों का हरण करती है जिस पर 600 रु. प्राप्त हैं, इन अंशों के पुनः निर्गमन पर अधिकतम 600 रु. का बट्टा दिया जा सकता है मान लें कि कंपनी ने इन अंशों का पुनः निर्गमन 1,800 रु. में पूर्ण भुगतान प्राप्त में किया है। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी।

बैंक खाता	नाम	1,800	
अंश हरण खाता	नाम	200	
अंशपूँजी खाते से			2,000
(200 हरण किए गए अंशों का पुनः निर्गमन 9 रु. प्रति अंश के पूर्ण भुगतान पर)			
अंश हरण खाता	नाम	400	
पूँजी आरक्षित खाते से			400
(हरण किए गए अंशों पर लाभ का हस्तांतरण)			

© NCERT not to be republished

इस संदर्भ में एक अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि पूँजीगत् लाभ केवल हरण किए गए अंशों के पुनः निर्गमन पर ही उत्पन्न होता है, सभी हरण किए गए अंशों पर नहीं। इसलिए जब हरण किए गए अंशों का कोई भाग पुनः निर्गमित किया जाता है तो अंश हरण खाते की सम्पूर्ण राशि को पूँजी खाते में हस्तांतरित नहीं किया जा सकता। इस प्रकार की स्थिति में हरण किए गए अंशों के पुनः निर्गमन से संबंधित आनुपतिक शेष को पूँजी आरक्षित खाते में हस्तांतरित किया जाएगा) यह निश्चित करते हुए कि अंश हरण खाते का बचा हुआ शेष, हरण किए गए अंशों, जो कि अभी जारी नहीं किए गए हैं की राशि के बराबर होगी।

उदाहरण 16

पोली प्लास्टिक लिमिटेड के संचालकों ने 100 रु. प्रत्येक के 200 समता अंशों को द्वितीय और अंतिम माँग 30 रु. प्रति अंश का भुगतान न होने पर ज़ब्त करने का निर्णय लिया। इन अंशों में से 150 अंश मोहित को 60 रु. प्रति अंश पर पुनः निर्गमित किए गए।

आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

हल

पोली प्लास्टिक लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*		*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	अंशपूँजी खाता	नाम		20,000	
	अंश हरण खाते से				14,000
	अंश द्वितीय और अंतिम माँग खाते से				6,000
	(200 अंशों का द्वितीय और अंतिम माँग 30 रु. प्रति अंश भुगतान न हाने पर हरण)				
	बैंक खाता	नाम		9,000	
	अंश हरण खाता	नाम		6,000	
	अंशपूँजी खाते से				15,000
	(100 रु. प्रत्येक के 150 अंशों का 60 रु. प्रत्येक पूर्ण भुगतान पर पुनः निर्गमन)				
	अंश हरण खाता	नाम		4,500	
	पूँजी आरक्षित खाते से				4,500
	(150 पुनः निर्गमित अंशों पर लाभ का पूँजी आरक्षित में हस्तांतरण)				

© NCERT not to be republished

कार्यकारी टिप्पणी–

	रु.	
200 अंशों पर जब्त कुल राशि	= 14,000	(200 70 रु.)
150 अंशों पर जब्त राशि	= 10,500	(150 70 रु.)
150 अंशों के पुर्ननिर्गमन पर हानि की राशि	= 6,000	(150 40 रु.)
पुर्ननिर्गमित अंशों पर लाभ राशि		
आरक्षित पूँजी को हस्तांतरित	= 4,500	(10,500 रु.– 6,000 रु.)
50 अंशों पर जब्त राशि	= 3,500	(50 70 रु.)
हरण अंश खाते में बकाया राशि	= 3,500	(14,000 रु. – 6,000 रु. – 4500 रु.)
(50 अंशों पर जब्त राशि के बराबर)		

उदाहरण 17

1 जनवरी 2014 को एक्स लिमिटेड के संचालकों ने 50,000 अंशों को 10 रु. प्रति अंश के, मूल्य के अंशों को प्रति अंश 12 रु. पर जनता को क्रय करने के लिए जारी किए, जो इस प्रकार देय हैं–

आवेदन पर 5 रुपए (प्रीमियम सहित), आबंटन पर 4 रुपए और शेष 1 मई 2014 को माँग करने पर।

10 फ़रवरी 2014 को अभिदान सूची बंद कर दी गई, इस दिन तक 70,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। प्राप्त राशि में से 40,000 रु. वापस कर दिए गए और 60,000 रु. आबंटन पर देय राशि के साथ समायोजन हेतु रख दिए, जिसकी शेष रकम 16 फ़रवरी 2014 को भुगतान कर दी गई।

सिवाय 500 अंशों के आबंटियों के सभी अंशधारकों ने एक मई, 2014 को देय माँग राशि का भुगतान कर दिया।

इन अंशों को 29 सितंबर 2014 को ज़ब्त कर लिया गया और 1 नवंबर 2014 को प्रति अंश 8 रु. पर पूर्ण प्रदत्त मानते हुए पुन: निर्गमन किया गया।

कंपनी नीति के अनुसार कंपनी माँग की बकाया राशि का खाता नहीं रखती।

कंपनी की बहियों में अंशपूँजी लेन-देन रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

हल

एक्स लिमिटेड की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि *2014*	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रुपये)*	*जमा राशि (रुपये)*
फर. 10	बैंक खाता नाम समता अंश आवेदन खाते से (70,000 अंशों पर 5 रु. प्रति अंश की दर से प्राप्त आवेदन राशि)		3,50,000	3,50,000

© NCERT not to be republished

फ़र. 16	समता अंश आवेदन खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से (आबंटन 50,000 अंशों पर आवेदन राशि का अंश पूँजी व अधि–लाभ खाते में हस्तांतरण)		2,50,000	 1,50,000 1,00,000
फ़र. 16	समता अंश आवेदन खाता नाम बैंक खाते से समता अंश आबंटन खाते से (आधिक्य राशि की वापसी व समता अंश आबंटन खाते में हस्तांतरण)		1,00,000	 40,000 60,000
फ़र. 16	समता अंश आवेदन व आबंटन खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (प्रति अंश 4 रु. की दर से 50,000 अंशों के आबंटन पर देय राशि)		2,00,000	 2,00,000
फ़र. 16	बैंक खाता नाम समता अंश आबंटन खाते से (आबंटन राशि प्राप्त)		1,40,000	 1,40,000
मई 1	समता अंश प्रथम एवं अंतिम माँग खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (प्रथम एवं अंतिम माँग देय)		1,50,000	 1,50,000
मई 1	बैंक खाता नाम प्रथम व अंतिम माँग खाते से (प्रथम एवं अंतिम माँग प्राप्त)		1,48,500	 1,48,500
सित. 29	समता अंशपूँजी खाता नाम अंश हरण खाते से समता अंश प्रथम व अंतिम माँग खाते से (माँग राशि भुगतान न करने पर 500 अंशों का हरण)		5,000	 3,500 1,500
नव. 1	बैंक खाता नाम अंश हरण खाता नाम समता अंशपूँजी खाते से (प्रति अंश 8 रु. पर पूर्ण प्रदत्त की तरह 500 हरण किए गए अंशों का पुनः निर्गमन)		4,000 1,000	 5,000
नव. 1	अंश हरण खाता नाम पूँजी आरक्षित खाते से (हरण किए गए अंशों के पुनः निर्गमन का लाभ पूँजी आरक्षित में हस्तांतरित)		2,500	 2,500

© NCERT not to be republished

उदाहरण:18

ओ लिमिटेड ने 2 रु. प्रति अंश के प्रीमियम पर, 10 रु. के 2,00,000 समता मूल्य अंशों को प्रस्तावित करते हुए विवरण पत्र निर्गमित किया, जो निम्न प्रकार देय है:

आवेदन पर 2.50 रु. प्रति अंश

आवंटन पर 4.50 रु. प्रति अंश (प्रीमियम सहित)

प्रथम माँग पर (आवंटन के तीन महीने पश्चात्) 2.50 रु. प्रति अंश

द्वितीय माँग पर (प्रथम माँग के तीन महीने पश्चात्) 2.50 रु. प्रति अंश

23 अप्रैल, 2017 को 3,17,000 अंशों हेतु अभिदान प्राप्त हुआ और 30 अप्रैल को आवंटन हुआ, जो इस प्रकार था:

	आवंटित अंश
अ. पूर्णत: आवंटन (दो आवंटनकर्त्ताओं ने 4,000 आवंटित अंशों पर पूर्ण भुगतान किया)	38,000
ब. प्रत्येक तीन आवेदित अंशों पर दो अशों का आवंटन	1,60,000
स. प्रत्येक चार आवेदित अंशों पर एक अंश का आवंटन	2,000

06 मई, 2017 को 77,500 की नगद राशि आवेदकों को वापस की गयी (यह 31,000 अंशों पर वही आवेदन राशि है जिन अंशों का आवंटन नहीं किया गया):

देय तिथियों पर पर 100 अंशों पर अंतिम माँग को छोड़कर सभी आवंटित अंशों पर धनराशि प्राप्त की गयी। 15 नवंबर, 2017 को इन अंशों को जब्त कर लिया गया और 16 नवंबर को 9 रु. प्रति अंश के भुगतान पर अमन को पुर्ननिर्गमित किया गया :

ओ लिमिटेड की पुस्तकों में रोकड़ प्रविष्टियों के अतिरिक्त सभी रोज़नामचा प्रविष्टियों को अभिलेखित करें और 31 अक्तूबर, 2017 को कंपनी द्वारा भुगतान किए गये देय ब्याज से संबंधित लेन-देन को तुलनपत्र में दर्शाऐं।

हल

ओ लिमिटेड कंपनी की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
2017 30 अप्रैल	अंश आवेदन खाता नाम		7,92,500	
	समता अंश पूँजी खाते से			5,00,000
	बैंक से			77,500
	समता अंश आवंटन खाते से			2,09,000
	अग्रिम माँग से			6,000
	(आवंटन के पश्चात् अंश पूँजी को आवेदन धनराशि का हस्तांतरण और अंश आवेदन एवं अग्रिम माँग में जमा 86,000 अंशों पर प्रो-डाटा के कारण आधिक्य धनराशि)			

	समता अंश आवंटन खाता नाम		9,00,000	
	समता अंश पूँजी खाते से			5,00,000
30 अ.	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से			4,00,000
	(प्रतिभूति शामिल करके 4.50 रु. प्रति अंश की दर से 2,00,000 अंशों पर देय आवंटन राशि)			
31 जु.	समता अंश प्रथम माँग खाता नाम		5,00,000	
	समता अंश पूँजी खाते से			5,00,000
	(2.50 रु. प्रति अंश की दर से 2,00,000 अंशों पर देय प्रथम माँग धनराशि)			
31 अ.	समता अंश द्वितीय एवं अन्तिम माँग खाता नाम		5,00,000	
	समता अंश पूँजी खाते से			5,00,000
	(2.50 रु. प्रति अंश की दर से 2,00,000 अंशों पर देय द्वितीय माँग धनराशि)			
31 जु.	अग्रिम माँग खाता नाम		25,000	
	समता प्रथम माँग खाते से			25,000
	(अग्रिम माँग का समायोजन)			
31 अ.	अग्रिम माँग खाता नाम		21,000	
	बकाया माँग खाता		250	
	समता अंश द्वितीय एवं अन्तिम माँग खाता			
	(8,000 अंशों पर अग्रिम माँग को देय द्वितीय माँग राशि के साथ समायोजित किया गया)			21,250
15 नव.	समता अंश पूँजी खाता नाम		1,000	
	बकाया खाते में माँग से			250
	अंश हरण खाते से			750
	(माँग राशि के भुगतान न होने पर 100 अंश ज़ब्त किए गए)			
16 नव.	हरण अंश खाता नाम		100	
	समता अंश पूँजी खाते से			100
	(नौ रुपये प्रति अंश से पूर्ण भुगतान पर 100 अंशों के पुर्ननिर्गमन से देय राशि)			
16 नव.	हरण अंश खाता नाम		650	
	पूँजी आरक्षित खाते से			650
	(आरक्षित पूँजी को हस्तांतरित जब्त अंश के पुर्ननिर्गमन पर लाभ)			

रोकड़

नाम

प्राप्तियाँ	राशि (रु.)	भुगतान	राशि (रु.)
समता अंश आवेदन	7,92,500	समता अंश आवेदन	77,500
समता अंश आवंटन	6,91,000		24,00,650
अग्रिम माँग	40,000		
समता अंश प्रथम माँग	4,75,000		

© NCERT not to be republished

समता अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग समता अंश पूँजी	4,78,750 900		
	24,78,150		24,78,150

अत: वापस की गई आवेदन राशि = 3,17,000 रु. – 2,86,000 रु. 2.50 रु.

= 77,500 रु.

प्राप्त आवेदन राशि = 7,15,000 रु.
(2,86,000 अंश 2.50 की दर से)

आवेदन राशि देय = 5,00,000 रु.
(2,00,000 अंश 2.50 की दर से)

अतिरिक्त आवेदन राशि = 2,15,000 रु.

2. अग्रिम माँग राशि
दो आबंटी प्रत्येक के पास 4,000 अंश, ने आबंटन पर पूर्ण राशि का भुगतान किया–
अत: अग्रिम माँग राशि = 8000 अंश (2.50 रु. + 2.50 रु.)
= 40,000 रु.

अंशों का पुन: क्रय–

जब कंपनी अपने अंशों का क्रय करती है, यह अंशों का **पुन: क्रय** कहलाता है कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 68 में कंपनी को यह सुविधा है कि कंपनी अपने अंशों का पुन: क्रय निम्न में से किसी प्रकार भी कर सकती है–

(अ) आनुपातिक आधार पर वर्तमान समता अंश धारकों से
(ब) खुले बाज़ार से
(स) न्यून खेप अंश धारकों द्वारा
(द) कंपनी के कर्मचारियों से

कंपनी अपने अंशों का पुन: क्रय मुक्त आरक्षित प्रमियम (अधिमूल्य) या अंशों या अन्य निर्धारित प्रतिभूतियों से प्राप्त धनराशि में से कर सकती है। मुक्त आरक्षित में से अंशों का पुन: क्रय करने की स्थिति में, कंपनी को क्रय किए गए अंशों के वास्तविक मूल्य की राशि के बराबर राशि "पूँजी शोधन आरक्षित खाते" में हस्तांतरित करनी होगी।

अंशों को पुन: क्रय करने के संबंध में निम्न प्रक्रिया लागू होगी–

(i) अंशों का पुन: क्रय अंतर्नियमों द्वारा अधिकृत होना चाहिए।
(ii) अंश धारकों की सामान्य सभा में विशेष संकल्प द्वारा पारित किया जाना चाहिए।
(iii) किसी भी एक वित्तिय वर्ष में अंशों का पुन: क्रय प्रदत्त पूँजी और मुक्त आरक्षित के 25% से अधिक नहीं हो सकता है।
(iv) अंशों के पुन: क्रय के पश्चात् ऋण समता अनुपात 2:1 से अधिक नहीं होना चाहिए।
(v) अंशों के पुन: क्रय हेतु समस्त अंश पूर्णत: प्रदत्त होने चाहिए।
(vi) विशेष संकल्प पारित होने की तिथि से 12 माह की अवधि के भीतर अंशों का पुन: क्रय हो जाना चाहिए।
(vii) कंपनी को रजिस्ट्रार और SEBI के पास शोधन समता अधिघोषणा, जिसे कम से कम दो निदेशकों ने हस्ताक्षरित किया हो, भेजी जानी चाहिए।

not to be republished © NCERT

उदाहरण 19

गरिमा लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक अंश के 3,000 अंशों को 20 रु. प्रीमियम पर आवेदन आमंत्रित करने के लिए विवरण-पत्र जारी किया जो कि निम्न प्रकार देय है–

	रु.
आवेदन पर	20 प्रति अंश
आबंटन पर	50 प्रति अंश (प्रीमियम सहित)
प्रथम माँग पर	20 प्रति अंश
द्वितीय माँग पर	30 प्रति अंश

4,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। 3,600 अंशों के आवेदकों को आनुपातिक आबंटन किया गया, शेष आवेदनों को अस्वीकार कर दिया गया। आवेदन पर प्राप्त अतिरिक्त राशि आबंटन पर देय राशि के प्रति समायोजित की गई।

रेणुका, जिसे 360 अंश आबंटित किए गए, आबंटन और माँग राशि का भुगतान करने में असफ़ल रही और इनके अंशों को ज़ब्त कर लिया गया।

कनिका, जो कि 200 अंशों की आवेदक है दो माँग राशि का भुगतान करने में असफ़ल रही। इनके अंशों को ज़ब्त कर लिया गया। यह सभी अंश नमन को 80 रु. प्रति अंश पूर्ण भुगतान प्राप्त में बेच दिए गए।

कंपनी की पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टयाँ दें।

हल

गरिमा लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	बैंक खाता नाम		80,000	
	अंश आवेदन खाते से			80,000
	(4,000 अंशों पर आवेदन की राशि 20 रु. प्रति अंश प्राप्त)			
	अंश आवेदन खाता नाम		80,000	
	अंशपूँजी खाते से			60,000
	अंश आबंटन खाते से			12,000
	बैंक खाते से			8,000
	(3,000 अंशों की आवेदन राशि का अंशपूँजी खाते में, 600 अंशों की राशि की अंश आबंटन खाते में, 400 अंशों की राशि वापस में हस्तांतरण)			
	अंश आबंटन खाता नाम		1,50,000	
	अंशपूँजी खाते से			90,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से			60,000
	(3,000 अंशों पर 50 रु. प्रति अंश से आबंटन राशि 20 रु. अधिलाभ सहित देय)			

© NCERT not to be republished

	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाते से (अंश आबंटन पर प्राप्त राशि)		1,21,440	1,21,440
	अंश प्रथम माँग खाता नाम अंशपूँजी खाते से (3,000 अंशों पर 20 रु. प्रति अंश माँग राशि देय)		60,000	60,000
	बैंक खाता नाम अंश प्रथम माँग खाते से (2,440 अंशों पर प्रथम माँग राशि प्राप्त)		48,800	48,800
	अंश द्वितीय और अंतिम माँग खाता नाम अंशपूँजी खाते से (3,000 अंशों पर 30 रु. प्रति अंश माँग राशि देय)		90,000	90,000
	बैंक खाता नाम अंश द्वितीय और अंतिम माँग खाते से (2,440 अंशों पर द्वितीय और अंतिम माँग राशि प्राप्त)		73,200	73,200
	अंशपूँजी खाता नाम प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाता नाम अंश आबंटन खाते से अंश प्रथम माँग खाते से अंश द्वितीय और अंतिम माँग खाते से अंश हरण खाते से (560 अंशों का हरण)		56,000 7,200	 16,560 11,200 16,800 18,640
	बैंक खाता नाम अंश हरण खाता नाम अंशपूँजी खाते से (560 हरण किए गए अंशों का पुनः निर्गमन)		44,800 11,200	 56,000
	अंश हरण खाता नाम पूँजी आरक्षित खाते से (560 हरण किए गए अंशों का पुननिर्गमन पर लाभ पूँजी आरक्षित में हस्तांतरण)		7,440	7,440

कार्यकारी टिप्पणी–

आबंटन पर प्राप्त राशि की गणना निम्न प्रकार है–

		(रु.)
	आबंटन पर देय कुल राशि (प्रीमियम सहित)	1,50,000
घटाया–	600 अंशों पर प्राप्त आवेदन राशि का आबंटन खाते में समायोजन	(12,000)
	3,000 अंशों पर शुद्ध आबंटन राशि देय	1,38,000

© NCERT not to be republished

घटाया– रेणुका को आबंटित 360 अंशों पर अप्राप्त राशि

$\frac{360}{3,000}$ 1,38,000 (16,560)

2,640 अंशों पर प्राप्त निवल राशि 1,21,440

जब आबंटन में जिसमें प्रतिभूति प्रीमियम के 20 रु. प्रति अंश सम्मिलित हैं, प्राप्त नहीं हुए हैं, रेणुका द्वारा लिए गए 360 अंशों (हरण किए गए) के लिए प्रतिभूति प्रीमियम खाता नियम के अनुसार नाम किया जाएगा। हरण की राशि निम्न प्रकार ज्ञात की जाएगी–

रेणुका से प्राप्त आवेदन राशि– 360 $\frac{3,600}{3,000}$ = 432 20 =	8,640 रु.
कनिका से 200 अंशों पर प्राप्त आवेदन और आबंटन राशि	10,000
अंशों के हरण से प्राप्त कुल राशि	18,640

स्वयं करें

ऐक्सल कंपनी लिमिटेड ने 10 रु. प्रत्येक के 1,00,000 समता अंशों का निर्गमन किया, जो कि निम्न प्रकार देय है–

	रु.
आवेदन पर	2.50 प्रति अंश
आबंटन पर	2.50 प्रति अंश
प्रथम और अंतिम माँग पर	5.00 प्रति अंश

एक्स, जिसके पास 400 अंश थे ने माँग राशि का भुगतान नहीं किया और उसके अंशों को हरण कर लिया गया। हरण किए गए अंशों में से 200 अंशों को 8 रु. प्रति अंश पूर्ण प्रदत्त पर पुनः निर्गमन किया गया। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें और कंपनी की पुस्तकों में अंशपूँजी और अंश हरण खाता तैयार करें।

स्वयं जाँचिए 3

(अ) यदि 10 रु. के अंश पर माँग राशि 8 रु. है और 6 रु. भुगतान प्राप्त है। अंशों को हरण कर लिया जाता है। बताइये कि अंशपूँजी खाते में कौन-सी राशि नाम की जाएगी

(ब) यदि 10 रु. के अंश पर 6 रु. भुगतान प्राप्त हैं अंशों को ज़ब्त कर लिया गया है, तब अंशों का पुनः निर्गमन किस न्यूनतम राशि में किया जा सकता है।

(स) अहलूवालिया लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 1,000 समता अंशों को संयंत्र और मशीनरी क्रय मूल्य 1,00,000 रु. के क्रय समझौते के लिए निर्गमित किया।
कंपनी के रोज़नामचे में किस प्रविष्टि को अभिलेखित किया जाएगा।

उदाहरण 20

सनराईज़ कंपनी लिमिटेड ने 10 रु. प्रत्येक 10,000 अंशों को 11 रु. प्रति अंश पर जनता में अभिदान के लिए निर्गमित किया। राशि निम्न प्रकार है–

3 रु. आवेदन पर
4 रु. आबंटन पर (प्रीमियम सहित)
4 रु. प्रथम और अंतिम माँग पर

© NCERT not to be republished

12,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए और संचालकों ने आनुपातिक आबंटन किया।

श्री अहमद, 120 अंशों के आवेदक व आबंटन और माँग राशि का भुगतान करने में असफ़ल रहे और श्री बासू जिनके पास 200 अंश थे माँग राशि का भुगतान करने में असफ़ल रहे। इन सभी अंशों को ज़ब्त (हरण) कर लिया गया।

ज़ब्त किए गए अंशों में से 150 अंशों (श्री अहमद के सभी अंशों सहित) को 8 रु. प्रति अंश में निर्गमित किया।

उपरोक्त व्यवहारों की रोज़नामचा प्रविष्टियों का अभिलेखन करें और अंश हरण खाता बनाइए।

हल

सनराईज़ लिमिटेड की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*		*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रुपये)*	*जमा राशि (रुपये)*
	बैंक खाता	नाम		36,000	
	अंश आवेदन खाते से				36,000
	(12,000 अंशों पर 3 रु. प्रति अंश की दर से आवेदन राशि प्राप्त)				
	अंश आवेदन खाता	नाम		36,000	
	अंशपूँजी खाते से				30,000
	अंश आबंटन खाते से				6,000
	(10,000 अंशों की आवेदन राशि का पूँजी खाते में और शेष को आबंटन खाते में हस्तांतरण)				
	अंश आबंटन खाता	नाम		40,000	
	अंशपूँजी खाते से				30,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से				10,000
	(10,000 अंशों पर 4 प्रति अंश की दर से, 1 रु. प्रीमियम सहित आबंटन राशि देय)				
	बैंक खाता	नाम		33,660	
	अंश आबंटन खाते से				33,660
	(अंश आबंटन पर प्राप्त राशि देखें टिप्पणी 1)				
	अंश प्रथम और अंतिम माँग खाता	नाम		40,000	
	अंशपूँजी खाते से				40,000
	(10,000 अंशों पर 4 रु. प्रति अंश की दर से माँग राशि देय)				

© NCERT not to be republished

	बैंक खाता	नाम		38,800	
	अंश प्रथम और अंतिम माँग खाते से				38,800
	(9,700 अंशों पर प्राप्त माँग राशि)				
	अंशपूँजी खाता	नाम		3,000	
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाता (देखें टिप्पणी 2)	नाम		100	
	अंश आबंटन खाते से				340
	अंश प्रथम और अंतिम माँग खाते से				1,200
	अंश हरण खाते से (देखें टिप्पणी 3)				1,560
	(300 अंशों का हरण)				
	बैंक खाता	नाम		1,200	
	अंश हरण खाता	नाम		300	
	अंशपूँजी खाते से				1500
	(300 अंशों का हरण)				
	अंश हरण खाता	नाम		360	
	पूँजी आरक्षित खाते से				360
	(150 हरण किए गए अंशों के पुन: निर्गमन पर लाभ का पूँजी आरक्षित खाते में हस्तांतरण)				

अंश हरण खाता

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*ब.पृ. स.*	*राशि (रु.)*
	अंशपूँजी		300		अंश पूँजी		1,560
	पूँजी आरक्षित		360				
	शेष आ/ले		900				
			1,560				**1,560**

कार्यकारी टिप्पणियाँ–

1. आबंटन पर प्राप्त राशि की गणना निम्न प्रकार की जाएगी–

		(रु.)
	10,000 अंशों पर 4 रु. प्रति अंश से देय कुल आबंटन राशि	40,000
घटाया–	2,000 अंशों पर प्राप्त आवेदन राशि का आबंटन राशि में समायोजन	(6,000)
	आबंटन पर निवल राशि देय	34,000
घटाया–	120 अंशों के आवेदक से देय राशि, जिनको 100 अंशों का आबंटन किया गया $\frac{100}{10,000}$ 34,000	(340)
	आबंटन पर प्राप्त राशि	33,660

2. प्रतिभूति प्रीमियम खाते को केवल 100 रु. नाम लिखे गए हैं, जोकि श्री अहमद के 100 अंशों के आबंटन से संबंधित हैं जिनसे आबंटन राशि (प्रीमियम सहित) नहीं प्राप्त हुई है।
3. अंश हरण खाता, हरण किए गए अंशों पर प्राप्त राशि प्रतिभूति प्रीमियम को छोड़ कर दर्शाता है इस की गणना निम्न प्रकार की जाएगी–

श्री अहमद 120 अंशों पर 3 रु. प्रति अंश की दर से आवेदन राशि का भुगतान किया	360
श्री बासू ने 200 अंशों पर 6 रु. प्रति अंश की दर से भुगतान किया (आवेदन और आबंटन राशि प्रीमियम के अतिरिक्त)	1200
कुल प्राप्त राशि	1560

4.

श्री अहमद के हरण किए गए 100 अंशों पर प्राप्त राशि	360
श्री बासू के पुनः निर्गमित 50 अंशों के हरण की प्राप्त राशि $\frac{50}{200}$ 1,200 रु.	300
150 हरण किए गए अंशों पर प्राप्त कुल राशि जो कि पुनः निर्गमित किए गए	660
घटाया– हरण किए गए अंशों के पुनः निर्गमन पर बट्टा (150 2 रु.)	300
पूँजी लाभ की राशि का पूँजी आरक्षित खाते में हस्तांतरण	360

उदाहरण 21

देवम लिमिटेड ने 4 रु. प्रति अंश के प्रीमियम पर प्रत्येक 10 रु. के 30,000 समता मूल्य अंशों के लिए आवेदन आमंत्रित करते हुए एक विवरण पत्र निर्गमित किया, जो इस प्रकार देय है:

आवेदन के साथ (1 रु. प्रीमियम शामिल करके)	3 रु.
आवंटन पर (1 रु. प्रीमियम शामिल करके)	4 रु.
प्रथम माँग पर (1 रु. प्रीमियम शामिल करके)	4 रु.
द्वितीय एवं अंतिम माँग पर	शेष बकाया

45,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए जिनमें से 20: को अस्वीकृत करते हुए उनकी धनराशि वापस कर दी गयी। बचे हुए आवेदकों को *प्रो–राटा* आधार पर अंशों को आवंटित किया गया।

सुधीर जिन्होंने 600 अंशों हेतु आवेदन किया था, आवंटित धनराशि के भुगतान में असफल हुए और उनके अंशों को उसके बाद तत्काल प्रभाव से ज़ब्त कर लिया गया।

मुस्कान जिनकों 750 अंश आवंटित हुए थे, प्रथम माँग के भुगतान में असफल रहीं और इसलिए उनके अंश ज़ब्त कर लिए गये। सुधीर से ज़ब्त किए गये अंशों को 8 रूपये प्रति अंश से पूर्ण भुगतान पर पुनः निर्गमित किया गया।

बचे हुए आवेदको से देय अंतिम माँग की गई और अमित के 1,000 अंशों को छोड़कर प्राप्त हुई। इन अंशों को ज़ब्त कर लिया गया।

ज़ब्त अंशों में से अमित के सारे अंशों को शामिल करके 12 रु. प्रति अंश के पूर्ण भुगतान पर 1,500 अंश देविका को पुर्ननिर्गमित किए गए।

© NCERT not to be republished

हल

देवम लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तथि	विवरण	ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	बैंक खाता नाम		1,35,000	
	समता अंश आवेदन खाते से			1,35,000
	(45,000 अंशों पर आवेदन धनराशि प्राप्त की गई)			
	समता अंश आवेदन खाता नाम		1,35,000	
	समता अंश पूँजी खाते से			60,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से			30,000
	समता अंश आबंटन खाता			18,000
	बैंक खाते से			27,000
	(30,000 अंशों पर प्राप्त आवेदन राशि को अंश पूँजी और प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते में हस्तांतरित किया गया और आवेदन पर प्राप्त अधिक राशि को अंश आबंटन खाते में समायोजित किया गया और 9,000 अंशों पर प्राप्त आवेदन राशि को वापस कर दिया गया)			
	समता अंश आबंटन खाता नाम		1,20,000	
	समता अंश पूँजी खाते से			90,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाता			30,000
	(प्रीमियम को शामिल करके 4 रु. प्रति अंश की दर से 30,000 अंशों पर देय आबंटन राशि)			
	बैंक खाता नाम		1,00,300	
	अंश आबंटन खाते से			1,00,300
	(सुधीर के अंशों को छोड़कर आवेदन पर प्राप्त अधिक धनराशि को समायोजित करने के बाद प्राप्त आवंटन राशि)			
	समता अंश पूँजी खाता नाम		2,500	
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाता		500	
	समता अंश पूँजी खाते से			1,700
	अंश हरण खाते से			1,300
	(सुधीर के 500 अंश ज़ब्त हुए)			
	समता अंश प्रथम माँग खाता नाम		1,18,000	
	समता अंश पूँजी खाते से			88,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से			29,500
	(29,500 अंशों पर देय प्रथम माँग राशि)			

© NCERT not to be republished

	बैंक खाता नाम		1,15,000	
	समता अंश प्रथम माँग खाते से			1,15,000
	(28,750 अंशों पर प्राप्त प्रथम माँग राशि)			
	समता अंश पूँजी खाता नाम		6,000	
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाता			750
	समता अंश प्रथम माँग खाते से			3,000
	अंश हरण खाते से			3,750
	(मुस्कान के 750 अंश जब्त)			
	बैंक खाता नाम		4,000	
	अंश हरण खाता		1,000	
	समता अंश पूँजी खाते से			5,000
	(सुधीर के जब्त हुए 500 अंशों का पुनर्निर्गमन)			
	अंश हरण खाता नाम		300	
	पूँजी आरक्षित खाते से			300
	(आरक्षित पूँजी खाते को हस्तांतरित पुनर्निगमित अंशों पर लाभ)			
	समता अंश द्वितीय एवं अंतिम खाता नाम		86,250	
	समता अंश पूँजी खाते से			57,500
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से			28,750
	(28,750 अंशों पर द्वितीय एवं अंतिम माँग धनराशि)			
	बैंक खाता नाम		83,250	
	समता अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाते से			83,250
	(27,750 अंशों पर प्राप्त द्वितीय एवं अंतिम माँग राशि)			
	समता अंश पूँजी खाता नाम		10,000	
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाता		1,000	
	समता अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाते से			3,000
	अंश हरण खाते से			8,000
	(अमित के 1,000 अंश जब्त)			
	बैंक खाता नाम		18,000	
	समता अंश पूँजी खाते से			15,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से			3,000
	(मुस्कान के 500 अंश और लक्ष्य के 1,000 अंश को शामि करके 1,500 ज़ब्त अंशों का पुनर्निर्गमन)			
	अंश हरण खाता नाम		10,500	
	पूँजी आरिक्षत खाते से			10,500
	(आरक्षित पूँजी खाते को हस्तांतरित 1,500 पुनर्निर्गमित अंशों पर लाभ)			

© NCERT not to be republished

कार्यकारी टिप्पणी–

1. आबंटन पर प्राप्त राशि — रु.

अ. आबंटन पर देय राशि

30,000 अंश × 4 रु. प्रति अंश	1,20,000

ब. आबंटन पर वास्तव में देय धनराशि

आबंटन पर देय धनराशि	1,20,000
घटाया: आबंटन के लिए प्रयुक्त आधिक्य आवेदन राशि	18,000
वास्तव में देय राशि	1,02,000

स. सुधीर से देय आबंटन राशि

सुधीर द्वारा आबंटित अंश = 600

सुधीर को आबंटित अंश = $\frac{30,000}{36,000} \times 600 = 500$

सुधीर से देय आबंटन राशि 500 अंश × 4 रु. प्रति अंश	2,000
घटाया: भुगतान की अधिक्य आवेदन धनराशि (600 अंश – 500 अंश) × 4 रु.	300
सुधीर से देय आबंटन राशि	1,700

द.

आबंटन पर देय वास्तविक राशि	1,02,000
घटाया: सुधीर के द्वारा भुगतान की गई राशि	1,700
आबंटन पर प्राप्त राशि	1,00,300

2. मुस्कान के शेष 500 अंश एवं अमित के 1,000 अंशों को शामिल करके 1,500 अंश को पुनर्निर्गमित किए गए

अमित के 1,000 अंशों पर लाभ	8,000
मुस्कान के 500 अंशों पर लाभ = $\frac{3,750}{750} \times 500 =$	2,500
	10,500

3. मुस्कान के 250 अंशों के अंश हरण खाते में बची शेष राशि = $\frac{3,750}{750} \times 250 = 1250$

स्वयं करें

निम्न की रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें–

(अ) कंपनी के निदेशकों ने 10 रु. प्रत्येक 200 समता अंशों को हरण किया, जिन पर 800 रु. भुगतान प्राप्त था। इन अंशों को 1,500 रु. के भुगतान पर पुन: निर्गमित किया गया।

(ब) अ 10 रु. प्रत्येक के 100 अंशों का धारक है, जिस पर आवेदन राशि 1 रु. का भुगतान किया गया है। ब 10 रु. प्रत्येक के 200 अंशों का धारक है जिस पर आवेदन राशि 1 रु. और आबंटन राशि 2

रु. का भुगतान किया गया है। स 10 रु. प्रत्येक के 300 अंशों का धारक है जिस पर 1 रु. आवेदन, 2 रु. आबंटन और 3 रु. प्रथम माँग का भुगतान किया गया है ये सभी बकाया राशि और द्वितीय माँग राशि 4 रु. प्रति अंश का भुगतान करने में असफ़ल रहे। अ, ब और स के सभी अंशों को ज़ब्त (हरण) कर लिया गया और 11 रु. प्रति अंश पूर्ण प्रदत्त में पुन: निर्गमित किया गया।

इस अध्याय में प्रयुक्त शब्द

1. संयुक्त पूँजी कंपनी
2. अंशपूँजी
3. अधिकृत पूँजी
4. निर्गमित पूँजी
5. अनिर्गमित पूँजी
6. अभिदत्त पूँजी
7. अभिदत्त एवं पूर्ण प्रदत्त
8. अभिदत्त परंतु पूर्ण प्रदत्त नहीं
9. चुकता पूँजी
10. आरक्षित पूँजी
11. अंश
12. अधिमानी अंश
13. अमोचनीय पूर्वाधिकार अंश
14. समता अंश
15. रोकड़ के अतिरिक्त प्रतिफ़ल के लिए अंशों का निर्गमन
16. अंशों पर प्रीमियम (अधिलाभ)
17. आवेदन राशि
18. न्यूनतम अभिदान
19. अंशों पर माँग राशि
20. माँग की बकाया राशि
21. अग्रिम प्राप्त माँग
22. अधि अभिदान
23. न्यून अभिदान
24. अंशों का हरण
25. हरण किए गए अंशों का पुन: निर्गम
26. अंशों का पुन: क्रय

सारांश

कंपनी– एक संगठन जो उन व्यक्तियों से मिलकर बनता है "जो अंश धारक कहलाते हैं क्योंकि उनके पास कंपनी के अंश हैं तथा वह चुने हुए निदेशक मंडल के माध्यम से व्यवसाय के लिए वैधानिक व्यक्ति के रूप में कार्य कर सकते हैं।"

अंश– एक पूँजी का एक भिन्नात्मक भाग होता है जो कंपनी में स्वामित्व का आधार बनाता है **कंपनी अधिनियम 2013** के प्रावधानों के अनुसार सामान्यत: अंश **दो** प्रकार के होते हैं अर्थात् समता अंश और पूर्वाधिकार अंश। पूर्वाधिकार अंश पुन: भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं जो उनको दिए गए अधिकारों की भिन्नता पर आधारित हैं। कंपनी की अंशपूँजी चयन किए गए व्यक्तियों के समूह द्वारा निजी व्यवस्था या जनता द्वारा अभिदान से अंशों का निर्गमन करके एकत्र की जाती है। अत: अंशों का निर्गमन रोकड़ द्वारा या रोकड़ प्रतिफ़ल के अतिरिक्त जिसमें पहला सामान्य है, किया जाता है। जब कंपनी व्यापार क्रय या कुछ संपत्ति/परिसंपत्तियाँ करती है और बेचने वाला पक्ष भुगतान के रूप में कंपनी के पूर्ण भुगतान प्राप्त अंशों को लेने के लिए सहमत होगा तब अंशों का निर्गमन रोकड़ प्रतिफ़ल के अतिरिक्त कहा जाएगा।

अंशों के निर्गमन की अवस्थाएँ– रोकड़ के लिए अंशों का निर्गमन, "इसके लिए कानून द्वारा निर्धारित कार्यविधि के सर्वथा अनुरूप जारी करने की अपेक्षा की जाती है।" जब अंश रोकड़ के लिए जारी किए जाते हैं तो उन पर निम्नलिखित एक या इससे अधिक अवस्थाओं में राशि इकट्ठी की जा सकती है–

© NCERT not to be republished

(i) अंशों के आवेदन पर

(ii) अंशों के आबंटन पर

(iii) अंशों पर माँग/माँगों पर

बकाया माँग– कभी-कभी आबंटन पर माँगी गई पूर्ण राशि और/या माँग (माँगों) की धनराशि आबंटियों/अंशधारकों से प्राप्त नहीं हो पाती है, इस प्रकार प्राप्त नहीं हुई राशि को **संचयी** तौर पर **'अदत्त माँग'** या **माँग की बकाया राशि** कहते हैं हालाँकि किसी कंपनी के लिए माँग की बकाया राशि का अलग खाता रखना अनिवार्य नहीं है। ऐसे भी दृष्टांत हैं जहाँ कुछ अंशधारक उनको आबंटित अंशों पर अभी तक माँगी गई आंतरिक या पूर्ण राशि का भुगतान करना विवेकपूर्ण मानते हैं। अंश धारक द्वारा आबंटन/माँग/(माँगों) पर उनसे प्राप्त राशि से अधिक किया गया भुगतान **माँग की अग्रिम राशि** के नाम से जाना जाता है जिसके लिए एक अलग खाता रखा जाता है कंपनी को अपने अंतर्नियमों के अनुसार माँग की बकाया राशियों पर ब्याज लगाने की शक्ति है और यदि यह इनको स्वीकार करती है तो अग्रिम माँग की राशि पर ब्याज का भुगतान करने का दायित्व भी होता है।

अधि अभिदान– कुछ कंपनियों के अंशों के संबंध में यह संभव है कि अधि अभिदान की स्थिति उपन्न हो, जिसका अर्थ है विवरण-पत्रिका के माध्यम से प्रस्तावित अंशों से अधिक अंशों के लिए आवेदन प्राप्त किए हैं ऐसी स्थिति में संचालकों के पास निम्नलिखित विकल्प रहते हैं–

(i) वे कुछ आवेदनों को पूर्णत: स्वीकार कर सकते हैं और अन्य को पूरी तरह अस्वीकर कर सकते हैं।

(ii) उनके द्वारा यथानुपात वितरण किया जा सकता है।

(iii) उपयुक्त दोनों विकल्पों को मिला-जुलाकर अपनाया जा सकता है।

यदि अभिदान की राशि का 90% तक न्यूनतम राशि प्राप्त नहीं होगी तब निर्गमन रद्द होगा। इस स्थिति में जनता को प्रस्तावित अंशों पर कम आवेदन प्राप्त होगा। इस निर्गमन को **अल्प अभिदान** कहेंगे।

प्रीमियम पर अंशों का निर्गमन– इस बात पर विचार किए बिना कि अंश रोकड़ से भिन्न प्रतिफ़ल के लिए या रोकड़ के लिए निर्गमित किए गए हैं, वे या तो सममूल्य पर या अधिमूल्य पर जारी किए जा सकते हैं सममूल्य पर निर्गमित अंशों का अर्थ है कि 'अंश अपने अंकित या सामान्य/सममूल्य के लिए जारी किए गए हैं।' यदि अंश प्रीमियम पर अर्थात् अंकित मूल्य या सममूल्य से अधिक राशि पर निर्गमित किए गए हैं तो प्रीमियम की राशि अंश अधिलाभ खाते (अंश प्रीमियम आरक्षित खाते) के नाम से एक अलग खाते में जमा की जाती है जिसका उपयोग सर्वथा कानून के अनुसार ही किया जाता है।

बट्टे पर अंशों का निर्गमन– अंश बट्टे पर अर्थात् अंकित मूल्य या सममूल्य से कम राशि पर जारी किए जा सकते हैं, बशर्ते कंपनी इसके संबंध में कानून द्वारा निर्धारित प्रावधानों का पूर्णरूपेण अनुपालन करती हो। इस अनुपालन के अलावा कंपनी के अंश साधारणत– बट्टे पर जारी नहीं किए जा सकते। जब अंश बट्टे पर जारी किए जाते हैं तो बट्टे की राशि अंश निर्गमन पर बट्टा खाते के नाम पक्ष में लिखी जाती है जो कंपनी के लिए पूँजी हानि की प्रकृति की तरह होती है। कंपनी अधिनियम 2013 के अनुसार केवल स्टेट इक्वेटी अंश व बट्टे पर जारी किये जा सकते हैं।

अंशों का हरण– कभी कभी अंशधारक आबंटित अंशों पर एक या अधिक किश्तों का भुगतान नहीं कर पाए तो ऐसी स्थिति में कंपनी के पास चूककर्ताओं के अंशों को हरण करने का अधिकार होता है इसे **अंशों का हरण** कहते

हैं। हरण का अर्थ 'अनुबंध भंग होने के कारण आबंटन का निरस्तीकरण और अंशों पर प्राप्त राशि को अंश हरण राशि के रूप में मानते हैं।' अंश हरण का संक्षिप्त लेखांकन उन शर्तों पर निर्भर करता है जिन पर से अंश जारी किए गए हैं सममूल्य पर अधिमूल्य पर या बट्टे पर। सामान्यत: यूँ कहें कि हरण पर लेखांकन हरण की अवस्था तक पारित प्रविष्टियों को विपरीत करना है अंशों पर पहले प्राप्त हो चुकी राशि हरण किए गए अंश खाते में जमा कर दी जाएगी।

अंशों का पुन: निर्गमन– कंपनी के प्रबंधन में इसके द्वारा एक बार हरण कर लिए अंशों को पुन: जारी करने की शक्ति निहित होती है बशर्ते कि संस्था के अंतर्नियमों में इससे संबंधित शर्तों और निबंधनों में ऐसा प्रावधान हो। ये अंश बट्टे पर भी पुन: जारी किए जा सकते हैं बशर्ते अनुमानत– बट्टे की राशि पुन: जारी किए जाने वाले अंश से संबंधित अंश हरण खाते के जमा शेष से अधिक न हों। अत: हरण किए गए अंशों को पुन: जारी किए जाने पर दिया गया बट्टा अंश हरण खाते के नाम लिखा जाता है।

एक बार जब हरण किए गए अंशों का पुन: निर्गमन किया जाएगा अंश हरण खाते के जमा शेष को पूँजी आरक्षित खाते में हस्तांतरित करेंगे जोकि हरण किए गए अंशों पर लाभ को दर्शाता है। सभी हरण किए गए अंशों को पुन: निर्गमन नहीं करने की स्थिति में अंशों पर हरण खाते में जमा राशि को पुन: निर्गमित न किए गए अंशों से संबंधित राशि को आगे ले जाया जाएगा और खाते में केवल शेष राशि को पूँजी आरक्षित खाते में जमा करेंगे।

अभ्यास के लिए प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सार्वजनिक कंपनी क्या है?
2. निजी कंपनी क्या है?
3. अंशों का हरण कब किया जा सकता है?
4. बकाया माँग से क्या अभिप्राय है?
5. एक सूचीबद्ध कंपनी से क्या अभिप्राय है?
6. प्रतिभूति प्रीमियम का प्रयोग कहाँ किया जा सकता है?
7. अग्रिम माँग से क्या अभिप्राय है?
8. न्यूनतम अभिदान पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कंपनी शब्द का क्या अर्थ है? इसकी विशेषताओं का वर्णन करें।
2. उन मुख्य श्रेणियों का संक्षिप्त में वर्णन करें जिनमें कंपनी की अंशपूँजी वर्गीकृत की जाती है।
3. आप अंश से क्या समझते हैं? कंपनी अधिनियम 2013 संशोधित के अनुसार अंशों की श्रेणियों को स्पष्ट करें।
4. अधि-अभिदान की स्थिति में कंपनी के अंशों के आबंटन की प्रक्रिया का वर्णन करें।
5. अधिमानी अंश क्या हैं? विभिन्न प्रकार के अधिमानी अंशों का वर्णन करें।
6. माँग की बकाया राशि और माँग की अग्रिम राशि से संबंधित विधि के प्रावधानों का वर्णन करें।
7. अधि अभिदान और अल्प (न्यून) अभिदान शब्दों को स्पष्ट करें। लेखा पुस्तकों में इसका लेखा किस प्रकार किया जाता है?

© NCERT not to be republished

8. उन उद्देश्यों का वर्णन करें जिनके लिए कंपनी प्रतिभूति प्रीमियम की राशि का प्रयोग कर सकती है।
9. उन परिस्थितियों का स्पष्ट रूप से वर्णन करें जिसके अंतर्गत कंपनी बट्टे पर अंशों का निर्गमन कर सकती है।
10. अंशों का हरण शब्द की व्याख्या करें और हरण की लेखा विधि को बताएँ।

संख्यात्मक प्रश्न

1. अनीश लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 30,000 समता अंशों का निर्गमित किया जो 30 रु. आवेदन पर, 50 रु. आबंटन पर, और 20 रु. प्रथम और अंतिम माँग पर देय हैं। सभी राशि विधिवत प्राप्त की गईं। इन व्यवहारों को कंपनी के रोज़नामचे में अभिलेखित करें।
2. आदर्श कंट्रोल डिवाईस लिमिटेड की 3,00,000 रु. की अधिकृत पूँजी, जो कि 10 रु. प्रत्येक अंश के 30,000 अंशों में विभाजित है, से पंजीकृत है। जनता को आंमत्रित की गई जिस पर 3 रु. प्रति अंश आवेदन पर; 4 रु. प्रति अंश आबंटन पर; 3 रु. प्रति अंश प्रथम एवं अंतिम माँग पर देय हैं। इन अंशों पर पूर्ण अभिदान प्राप्त हुआ और सभी राशियाँ प्राप्त की गईं। रोज़नामचा और रोकड़ पुस्तक तैयार करें।
3. सॉफ़्टवेयर सोल्यूशन इंडिया लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक अंश के 20,000 समता अंशों के लिए आवेदन आमंत्रित किए, जिन पर 40 रु. आवेदन पर; 30 रु. आबंटन पर; और 30 रु. प्रथम और अंतिम माँग पर देय हैं कंपनी ने 32,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त किया। 2,000 अंशों के आवेदकों को राशि वापस लौटा दी गई। 10,000 अंशों के आवेदनों को पूर्ण स्वीकार कर लिया गया और 20,000 अंशों के आवेदकों को आवेदन किए गए अंशों के आधे अंश आबंटित किए गए और आधिक्य राशि को आबंटन में समायोजित कर लिया गया। आबंटन और देय सभी राशि प्राप्त की गई। रोज़नामचा और रोकड़ पुस्तक तैयार करें।
4. रूपक लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 10,000 अंशों का निर्गमन किया, जिन पर 20 रु. प्रति अंश आवेदन पर, 30 रु. प्रति अंश आबंटन पर और 25 रु. प्रति अंश की दो माँग में देय है। आवेदन और आबंटन राशि प्राप्त कर ली गई। प्रथम माँग पर एक सदस्य के अतिरिक्त जिसके पास 200 अंश हैं, सभी सदस्यों ने अपनी देय राशि का भुगतान किया जबकि एक अन्य सदस्य जिसके पास 500 अंश हैं शेष देय राशि का पूर्ण भुगतान कर दिया। अंतिम माँग अभी माँगी नहीं गई है। रोज़नामचा और रोकड़ पुस्तक तैयार करें।
5. मोहित ग्लास लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 20,000 अंशों का 110 रु. प्रति अंश में निर्गमन किया। जिन पर 30 रु. आवेदन पर; 40 रु. आबंटन पर (प्रमियम) 20 रु. प्रथम माँग पर; और 20 रु. अंतिम माँग पर देय है। 24,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए और 20,000 अंशों का आबंटन किया गया और 4,000 अंशों को अस्वीकार करके उन पर प्राप्त राशि लौटा दी गई। सभी राशि प्राप्त की गई। रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।
6. एक लिमिटेड कंपनी ने 10 रु. प्रत्येक के 1,00,000 पर समता अंशों को 2 रु. प्रति अंश प्रीमियम पर; 10 रु. प्रत्येक के 2,00,000; 10% अधिमान अंशों सममूल्य के लिए अभिदान अमंत्रित किया। अंशों पर देय राशि निम्न प्रकार है।

	समता अंश	अधिमान अंश
आवेदन पर	3 रु. प्रति अंश	3 रु. प्रति अंश
आबंटन पर	5 रु. प्रति अंश (प्रीमियम सहित)	4 रु. प्रति अंश
प्रथम माँग पर	4 रु. प्रति अंश	3 रु. प्रति अंश

सभी अशों पर पूर्ण अभिदान प्राप्त हुआ, माँगी गई राशि प्राप्त हुई। कंपनी की पुस्तकों में निम्न व्यवहारों को रोज़नामचा और रोकड़ पुस्तक में अभिलेखन करें।

7. ईस्टर्न कंपनी लिमिटेड, जिसकी अधिकृत पूँजी 10,00,000 रु. है जो कि 10 रु. प्रति समता अंश में विभाजित हैं। कंपनी ने 50,000 अंश 3 रु. प्रति अंश प्रमियम पर निर्गमित किए जो इस प्रकार देय हैं–

आवेदन पर	3 रु. प्रति अंश
आबंटन पर (प्रीमियम सहित)	5 रु. प्रति अंश
प्रथम माँग पर (आबंटन के तीन महीने बाद देय)	3 रु. प्रति अंश

और शेष राशि आवश्यकता पड़ने पर 60,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए एवं निदेशकों ने निम्न प्रकार अंशों का आबंटन किया–

(अ) 40,000 अंशों के आवेदको को पूर्ण

(ब) 15,000 अंशों के आवेदको को 8,000 अंश आबंटित हुए

(स) 5000 अंशों के आवदेको को 2000 अंशो का आंबटन हुआ। अतिरिक्त राशि वापस कर दी गई।

आबंटन पर देय सभी राशियाँ प्राप्त कर ली गईं।

यथाविधि प्रथम माँग की गई और 100 अंशों पर देय माँग के छोड़ कर राशि प्राप्त कर ली गई।

कंपनी के इन व्यवहारों को रोज़नामचा एवं रोकड़ बही में लिखें। और कंपनी का तुलन-पत्र भी तैयार करें।

8. सुमित मशीन लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 50,000 अंशों को 5% प्रीमियम पर निर्गमन किया। अंशों पर 25 रु. आवेदन पर, 50 रु. आबंटन पर 30 रु. प्रथम और अंतिम माँग पर देय हैं निगर्मन पर पूर्ण अभिदान प्राप्त हुआ और 400 अंशों पर अंतिम माँग के अतिरिक्त संपूर्ण राशि प्राप्त की गई। प्रीमियम को आबंटन पर समायोजित किया जाएगा। रोज़नामचा प्रविष्टियाँ और तुलन-पत्र तैयार करें।

9. कुमार लिमिटेड ने भानू आयल लिमिटेड से 6,30,000 रु. की परिसंपत्तियों का क्रय किया। कुमार लिमिटेड ने समझौते के अनुसार 100 रु. प्रत्येक के पूर्ण प्रदत्त अंशों का निर्गमन किया। कौन-सी रोज़नामचा प्रविष्टियाँ की जाएँगी यदि अंशों का निर्गमन (अ) सममूल्य पर; और 20% प्रीमियम पर हो।

(**उत्तर–** निर्गमित अंशों की संख्या (अ) 6,300 : 5,250)

10. बंसल हैवी मशीन लिमिटेड ने हाण्डा ट्रैडर्स से 3,80,000 रु. मूल्य की मशीन का क्रय किया। 50,000रु. का रोकड़ भुगतान किया गया और शेष राशि के लिए 100 रु. प्रत्येक के अंशों का 110 रु. निर्गम मूल्य पर किया गया।

उपयुर्क्त व्यवहारों की रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

(उत्तर– निर्गमित अंशों की संख्या– 3,000 अंश)

11. नमन लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 20,000 अंशों का निर्गमन किया। जिस पर 25 रु. आवेदन पर, 30 रु. आबंटन पर, 25 रु. प्रथम माँग पर; और शेष अंतिम माँग पर देय हैं। अनुभा, जिसके पास 200 अंश हैं, ने आबंटन राशि और माँग राशि का भुगतान नहीं किया और कुमकुम जिसके पास 100 अंश हैं ने दोनों माँगों का भुगतान नहीं किया, के अतिरिक्त संपूर्ण राशि प्राप्त हुई। संचालकों ने अनुभा और कुमकुम के अंशों का हरण कर लिया। रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

12. कृष्णा लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक अंश के 15,000 अंशों का 10 रु. प्रति अंश प्रीमियम पर निर्गमन किया। जो इस प्रकार देय हैं–

आवेदन पर	30 रु.
आबंटन पर	50 रु. (प्रीमियम सहित)
प्रथम और अंतिम माँग पर	30 रु.

सभी अंशों पर अभिदान प्राप्त हुआ और कंपनी ने सभी देय राशि 150 अंशों पर आबंटन और माँग राशि के अतिरिक्त प्राप्त की इन अंशों का हरण किया गया और नेहा को 12 रु. प्रत्येक के पूर्ण प्रदत्त अंशों में पुनः निर्गमन पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

(**उत्तर–** पूँजी आरक्षित 4,500 रु.)

13. आरूषी कंप्यूटर लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 10,000 समता अंशों का 10% प्रीमियम पर निर्गमन किया। जिन पर निवल राशि इस प्रकार देय है–

आवेदन पर	20 रु.
आबंटन पर	50 रु. (40+10 रु. प्रीमियम)
प्रथम माँग पर	30 रु.
अंतिम माँग पर	10 रु.

एक अंशधारी जिसके पास 200 अंश हैं ने अंतिम माँग का भुगतान नहीं किया। इसके अंशों का हरण कर लिया गया। इन अंशों में से 150 अंशों को सोनिया को 75 रु. प्रति अंश पर पुनः निर्गमित किया गया। कंपनी की पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

(**उत्तर–** पूँजी आरक्षित 9,750 रु.)

14. रौनक काटन लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 6,000 समता अंशों के 20 रु. प्रति अंश प्रीमियम पर निर्गमन के लिए विवरण पत्रिका से जारी करके आवेदन माँगे। जो निम्न प्रकार देय हैं।

आवेदन पर	20 रु.
आबंटन पर	50 रु. (प्रीमियम सहित)
प्रथम माँग पर	30 रु.
अंतिम माँग पर	20 रु.

10,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए और 8,000 अंशों के आवेदकों को यथानुपात आबंटन किया गया तथा शेष आवेदकों को वापस कर दिया गया और आवेदन पर प्राप्त अधिक राशि को आबंटन पर देय राशि में समायोजित किया जाएगा।

रोहित जिसको 300 अंशों का आबंटन किया गया था आबंटन और माँग राशि का भुगतान करने में असफ़ल रहा और उसके अंशों का हरण कर लिया गया। ईतिका जिसने 600 अंशों के लिए आवेदन किया था माँग राशि का भुगतान करने में असफ़ल रही उसके अंशों का भी हरण कर लिया गया। इन सभी अंशों का कार्तिक को 80 रु. पूर्ण प्रदत्त में विक्रय किया गया।

कंपनी की पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

(**उत्तर–** पूँजी आरक्षित 15,500 रु.)

15. हिमालय कंपनी लिमिटेड ने 10 रु. प्रत्येक के 1,20,000 समता अंश 2 रु. प्रीमियम पर जनता में अभिदान के लिए निर्गमित किए जो निम्न प्रकार देय हैं–

आवेदन पर	3 रु. प्रति अंश
आबंटन पर (प्रीमियम सहित)	5 रु. प्रति अंश
प्रथम माँग पर	2 रु. प्रति अंश
द्वितीय और अंतिम माँग पर	2 रु. प्रति अंश

1,60,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। यथानुपात आधार पर आबंटन किया गया। आवेदन पर प्राप्त अधिक राशि को आबंटन पर देय राशि में समायोजित किया गया।

रोहन जिसको 4,800 अंशों का आबंटन किया गया था दोनों माँग राशि देने में असफ़ल रहा। इन अंशों को द्वितीय माँग राशि के बाद हरण कर लिया गया। सभी हरण किए गए अंशों को रीना को 7 रु. प्रति अंश में पुनः निर्गमन किया गया।

कंपनी की पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें और अंशपूँजी से संबंधित व्यवहारों को कंपनी के तुलन–पत्र में दर्शाएँ।

(**उत्तर–** पूँजी आरक्षित 14,400 रु.)

16. प्रिंस लिमिटेड ने 10 रु. प्रत्येक अंश के 20,000 समता अंशों को 3 रु. प्रीमियम पर निर्गमन करने के लिए विवरण–पत्र पर आमंत्रित किया जो निम्न प्रकार देय हैं–

आवेदन पर	2 रु.
आबंटन पर (प्रीमियम सहित)	5 रु.
प्रथम माँग पर	3 रु.
द्वितीय माँग पर	3 रु.

30,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए और आबंटन अनुपातिक आधार पर किया गया। आवेदन पर प्राप्त अधिक राशि को आबंटन पर देय राशि में समायोजित किया जाएगा।

श्री मोहित जिनको 400 अंश आबंटित किए गए थे, आबंटन और प्रथम माँग राशि का भुगतान करने में असफ़ल रहे और प्रथम माँग के पश्चात् उनके अंशों का हरण कर लिया गया। श्री जौली जिनको 600 अंशों का आबंटन हुआ था दोनों माँग राशि का भुगतान करने में असफ़ल रहे अतः इनके अंशों का हरण कर लिया गया।

हरण किए गए अंशों में से 800 अंशों का पुनः निर्गमन सुप्रिया को 9 रु. प्रति अंश पूर्ण भुगतान प्राप्त में किया गया, जिसमें श्री मोहित के सभी अंश सम्मिलित हैं।

कंपनी की पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें और तुलन–पत्र तैयार करें।

(**उत्तर**– पूँजी आरक्षित 2,000 रु.)

17. लाईफ़ मशीन टूल्स लिमिटेड ने 10 रु. प्रत्येक के 50,000 समता अंशों को 12 रु. प्रति अंश पर निर्गमन किया। आवेदन पर 5 रु. (प्रीमियम सहित), आबंटन पर 4 रु. और शेष प्रथम और अंतिम माँग पर देय हैं। 70,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। प्राप्त रोकड़ ऐसे मे से 40,000 रु. वापस किए गए और

© NCERT not to be republished

60,000 रु. को आबंटन पर देय राशि में समायोजित किया गया। 500 अंशों के एक अंशधारक को छोड़कर सभी अंशधारकों ने माँग देय राशि का भुगतान किया। इन अंशों का हरण कर लिया गया और 8 रु. प्रति अंश पूर्ण भुगतान प्राप्त पर निर्गमन किया। व्यवहारों की रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

(**उत्तर–** पूँजी आरक्षित 2,500 रु.)

18. ओरिएंट कंपनी लिमिटेड ने जनता में अभिदान के लिए 10 रु. प्रत्येक अंश के 20,000 समता अंशों को 10% प्रीमियम पर निर्गमन किया जिन पर आवेदन पर 2 रु., आबंटन पर प्रीमियम सहित 4 रु., प्रथम माँग पर 3 रु., और द्वितीय और अंतिम माँग 2 रु. देय हैं। 26,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। 4,000 अंशों के आवेदन को अस्वीकृत कर दिया गया। शेष आवेदकों को आनुपातिक आबंटन किया गया दोनों माँगों की माँग की गई और 500 अंशों पर अंतिम माँग को छोड़कर सभी माँग राशि प्राप्त की गईं। इन अंशों का हरण कर लिया गया। हरण किए गए में से 300 अंशों को 9 रु. प्रति अंश पर पुनः निर्गमन किया गया। रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें और तुलन–पत्र तैयार करें।

(**उत्तर–** पूँजी आरक्षित 2,100 रु.)

19. अलफ़ा लिमिटेड ने 10 रु. प्रत्येक के 4,00,000 समता अंशों के लिए निम्न शर्तों पर आवेदन आमंत्रित किए–

आवेदन पर देय	5 रु. प्रति अंश
आबंटन पर देय	3 रु. प्रति अंश
प्रथम और अंतिम माँग पर देय	2 रु. प्रति अंश

5,00,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। यह निर्णय लिया गया–

(अ) 20,000 अंशों के आवेदकों को आबंटन अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

(ब) 80,000 अंशों के आवेदकों को पूर्ण आबंटन किया जाएगा

(स) शेष बचे अंशों को अन्य आवेदकों के बीच अनुपातिक आधार पर आबंटन किया जाएगा।

(द) अधिक आवेदन राशि को आबंटन राशि के भुगतान में उपयोग किया जाएगा।

एक आवेदक जिसको अनुपातिक आधार पर आबंटन किया गया जिसने आबंटन और माँग राशि का भुगतान नहीं किया और उसके 400 अंशों का हरण कर लिया गया। इन अंशों का पुनः निर्गमन 9 रु. प्रति अंश पर किया गया।

रोज़नामचा प्रविष्टियों को दर्शाएँ और उपरोक्त का अभिलेखन करने के लिए रोकड़ पुस्तक तैयार करें।

(**उत्तर–** पूँजी आरक्षित 2,100 रु.)

20. अशोका लिमिटेड कंपनी ने 20 रु. प्रत्येक के समता अंशों का 2 रु. प्रीमियम पर निर्गमित किया जिसमें से 1,000 अंशों का हरण 4 रु. अंतिम माँग के भुगतान न करने पर किया। हरण किए गए 400 अंशों को 14 रु. प्रति अंश पर पुनः निर्गमित किया गया। शेष अंशों में से 200 अंशों को 20 रु. प्रति अंश पर निर्गमित किया गया। अंशों के हरण और पुनः निर्गमन की रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें और पूँजी आरक्षित में हस्तांतरित की गई राशि और अंश हरण खाते में शेष राशि को दर्शाएँ।

(**उत्तर–** पूँजी आरक्षित 6,800 रु. अंश हरण खाते का शेष 5,600 रु.)

21. अमित के पास 10 रु. प्रत्येक के 100 अंश हैं जिस पर उसने 1 रु. प्रति अंश आवेदन राशि का भुगतान किया है। विमल के पास 10 रु. प्रत्येक के 200 अंश हैं जिस पर उसने 1 रु. और 2 रु. प्रति अंश क्रमश: आवेदन और आबंटन राशि का भुगतान किया हुआ है। चेतन के पास 10 रु. प्रत्येक के 300 अंश हैं जिस पर उसने 1 रु. आवेदन पर, 2 रु. आबंटन पर 3 रु. प्रथम माँग पर भुगतान किया है। ये सभी बकाया राशि और द्वितीय माँग 2 रु. का भुगतान करने में असफ़ल रहे। निदेशकों ने इनके अंशों का हरण कर लिया। इन अंशों का पुन: निर्गमन 11 रु. प्रति अंश पूर्ण भुगतान प्राप्त में किया गया। व्यवहारों की रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

(**उत्तर–** पूँजी आरक्षित 2,500 रु.)

22. अंजता लिमिटेड की सामान्य पूँजी 3,00,000 रु. है जो 10 रु. प्रत्येक के अंशों में विभाजित है जनता को 20,000 अंशों के अभिदान के लिए आमंत्रित करती है, जो आवेदन पर 2 रु., आबंटन पर 3 रु., और शेष 2.50 की दो माँगों में देय हैं। कंपनी को 24,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। 20,000 अंशों के आवेदनों को पूर्ण स्वीकार किया गया और अंश आबंटित किए गए। शेष अंशों के आवेदन को अस्वीकार कर दिया गया और आवेदन राशि वापस कर दी गई।

600 अंशों पर अंतिम माँग छोड़कर सभी देय राशि प्राप्त कर ली गई जो कि कानूनी औपचारिकताओं को पूर्ण करने के पश्चात् हरण कर लिए गए। हरण किए गए अंशों में से 400 अंशों को 9 रु. प्रति अंश पर पुन: निर्गमित कर दिया गया।

आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियों का प्रलेखन करें और पूँजी आरक्षित में हस्तांतरित राशि और अंश हरण खाते का शेष दर्शाते हुए तुलन-पत्र तैयार करें।

(**उत्तर–** पूँजी आरक्षित में हस्तांतरित राशि 2,600 रु.)

23. निम्न व्यवहारों की रोज़नामचा प्रविष्टियाँ भूषण आयल लिमिटेड की पुस्तकों में करें–

(अ) 100 रु. प्रत्येक के 200 अंशों का 10 रु. प्रीमियम पर निर्गमन किया गया इनका हरण 50 रु. प्रति अंश आबंटन राशि का भुगतान न करने पर किया गया। प्रथम और अंतिम माँग राशि 20 रु. प्रति अंश की माँग इन अंशों पर नहीं की गईं। हरण किए गए अंशों को 60 रु. प्रति अंश पूर्ण भुगतान प्राप्त में निर्गमित किया गया।

(ब) 10 रु. प्रत्येक के 150 अंशों को 4 रु. प्रीमियम जो कि आबंटन पर देय हैं का हरण आबंटन राशि 8 रु. प्रति अंश प्रीमियम सहित का भुगतान न होने पर किया गया। प्रथम और अंतिम माँग राशि 4 रु. प्रति अंश अभी माँगी नहीं गईं हैं। हरण किए गए अंशों का पुन: निर्गमन 15 रु. प्रति अंश पूर्ण भुगतान प्राप्त में किया गया।

(स) 50 रु. प्रत्येक सममूल्य पर निर्गमित किए गए 400 अंशों का हरण 10 रु. प्रति अंश अंतिम माँग का भुगतान न करने पर किया गया। इन अंशों का पुन: निर्गमन 45 रु. प्रति अंश पूर्ण भुगतान प्राप्त में किया गया।

(**उत्तर–** पूँजी आरक्षित– (अ) शून्य (ब) 300 रु. (स) 14,000 रु.

24. अमीशा लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 40,000 अंशों को 20 रु. प्रति अंश प्रीमियम पर निर्गमन करने के लिए आवेदन आमंत्रित किए जिस पर 40 रु. आवेदन पर; 40 रु. आबंटन पर (प्रीमियम सहित) 25 रु. प्रथम माँग पर; 15 रु. द्वितीय और अंतिम माँग पर देय हैं।

    50,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए और आनुपातिक आधार पर आबंटन किया गया। अधिक आवेदन राशि को आबंटन पर देय राशि में समायोजित किया जाएगा।

    रोहित जिसको 600 अंशों का आबंटन किया गया था आबंटन राशि का भुगतान करने में असफ़ल रहे इनके अंशों का आबंटन के पश्चात् हरण कर लिया गया। अस्मिता, जिसने 1,000 अंशों के लिए आवेदन किया था दोनों माँगों का भुगतान करने में असफ़ल रही इनके अंशों का हरण द्वितीय माँग के पश्चात् किया गया हरण किए गए अंशों में से 1,200 अंशों का विक्रय कपिल को 85 रु. प्रति अंश पूर्ण भुगतान प्राप्त में किया गया। जिसमें रोहित के सभी अंश सम्मिलित हैं।

    आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

    (**उत्तर–** पूँजी आरक्षित 48,000 रु., अंश हरण खाते का शेष 12,000 रु.)

स्वयं जाँचने हेतु जाँच सूची

स्वयं जाँचिए–1

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य (iv) सत्य (v) सत्य (vi) सत्य (vii) असत्य (viii) सत्य (ix) असत्य (x) सत्य (xi) असत्य (xii) सत्य

स्वयं जाँचिए–2

(अ) (ii) (ब) (iii) (स) (i) (द) (ii) (य) (i) (र) (iii) (ल) (iii)

स्वयं जाँचिए–3

(अ) 8 रुपये (ब) 4 रुपये (स) विक्रेता नाम 1,00,000 अंश पूँजी खाते से 1,00,000

© NCERT not to be republished

12129CH02

ऋणपत्रों का निर्गम एवं मोचन

2

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के उपरांत आप–

- *ऋणपत्र से आशय तथा ऋणपत्र एवं अंशों के बीच अंतर बता सकेंगे।*
- *विभिन्न प्रकार के ऋणपत्रों का विवेचन कर सकेंगे।*
- *ऋणपत्र के सममूल्य, बट्टा तथा प्रीमियम पर निर्गमन की रोज़नामचा प्रविष्टियाँ कर सकेंगे।*
- *नकदी के अलावा किसी अन्य प्रतिफल के बदले ऋणपत्रों के निर्गमन की संकल्पना की व्याख्या और लेखांकन कर सकेंगे।*
- *समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में ऋणपत्र के निर्गम की संकल्पना की व्याख्या और लेखांकन कर सकेंगे।*
- *ऋणपत्र के निर्गम को निर्गम की विभिन्न स्थितियों तथा मोचन की अवधियों के साथ रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित कर सकेंगे।*
- *कंपनी के तुलन-पत्र में ऋणपत्र के निर्गम से संबंधित मद को दर्शा सकेंगे।*
- *ऋणपत्र निर्गमन पर बट्टा/हानि के अपलेखन की विधियों की व्याख्या कर सकेंगे।*
- *ऋणपत्र के मोचन की विधियों की व्याख्या और लेखांकन कर सकेंगे।*
- *निक्षेप निधि की संकल्पना ऋणपत्रों के मोचन में इसके उपयोग की व्याख्या और लेखांकन कर सकेंगे।*

एक कंपनी अपनी पूँजी अंशों के निर्गम द्वारा निर्मित करती है। लेकिन अंश निर्गम द्वारा उगाहे गए फंड कभी-कभी कंपनी की दीर्घकालिक वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं होते हैं। इसीलिए अधिकतर कंपनियाँ ऋणपत्रों के माध्यम से दीर्घकालिक फंड का निर्माण करती हैं जो कि या तो निजी व्यवस्था का रास्ता अपनाती हैं या फिर उसे सार्वजनिक रूप से जनता से प्राप्त करती हैं। ऋणपत्रों के माध्यम से उगाहा गया वित्त दीर्घकालिक ऋण के नाम से भी जाना जाता है। यह अध्याय ऋणपत्रों के निर्गम एवं मोचन और अन्य संबंधित पहलुओं पर विचारों का विश्लेषण करता है।

उपखंड *1*

2.1 ऋणपत्र का आशय

ऋणपत्र– 'ऋणपत्र' (डिबेंचर) शब्द लैटिन भाषा के 'डिबेयर' शब्द से लिया गया है जिसका तात्पर्य कर्ज़ लेना है। "ऋणपत्र एक लिखित विपत्र है जो कंपनी की सामान्य मोहर के अंतर्गत एक ऋण का अभिज्ञान कराता है।" इसमें एक विशिष्टीकृत अवधि के बाद या एक मध्यावधि पर या कंपनी के एक विकल्प पर परिशोधन और एक स्थिर दर पर ब्याज चुकौती के लिए जोकि सामायन्तः अर्द्धवार्षिक या वार्षिक तिथि पर देय होता है, एक अनुबंध समाहित रहता है।

कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 2(30) के अनुसार 'ऋणपत्र' (डिबेंचर) के अंतर्गत ऋणपत्र स्टॉक, बाँड (बंध-पत्र) तथा एक कंपनी की अन्य प्रतिभूतियाँ शामिल होती हैं जोकि कंपनी की परिसंपत्तियों पर एक प्रभार संघटित कर सकती हैं अथवा नहीं।

© NCERT not to be republished

बाँड– *बाँड* भी एक लिखित प्रपत्र है 'जो ऋण का अभिज्ञान करता है।' परंपरागत रूप मे बाँड केवल सरकार द्वारा निर्गमित किए जाते है। किंतु अब अर्ध–सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाओं द्वारा ऋण के, प्रमाण के रूप में जारी किए जाते हैं। 'ऋणपत्र' और 'बाँड' अब, शब्दों का प्रयोग अंतर्बदल किया जा रहा है।

2.2 अंश और ऋणपत्र के बीच अंतर

स्वामित्व– एक अंश धारक कंपनी का स्वामी होता है जबकि ऋणपत्र धारक केवल एक ऋणदाता (लेनदार) होता है। अंश स्वामित्व पूँजी का एक अंग है जबकि ऋणपत्र एक कर्ज़ प्राप्त पूँजी का हिस्सा है।

प्रतिफल– अंश पर प्रत्याय को लाभांश के नाम से जाना जाता है जबकि ऋणपत्र पर प्रत्याय को ब्याज के नाम से जानते हैं। अंश पर प्राप्त होने वाले प्रतिफल की दर भिन्न वर्षों में विभिन्नता पूर्ण हो सकती है जोकि कंपनी के लाभ पर निर्भर करती है जबकि ऋणपत्रों पर ब्याज की दर स्थिर होती है। लाभांश का भुगतान लाभ का एक विनियोजन होता है जबकि ब्याज का भुगतान लाभ पर एक प्रभार है और इसे तब भी चुकाया जाना होता है चाहे कंपनी में कोई भी लाभ नहीं हुआ हो।

परिशोधन या चुकौती– सामान्यत: अंश की राशि की वापसी/परिशोधन कंपनी में जीवन भर नहीं होती है जबकि ऋणपत्र का निर्गम एक विशिष्ट अवधि के लिए होता है और ऋणपत्र उस अवधि के बाद शोध्य होते हैं।

मतदान अधिकार– अंश धारकों को मतदान का अधिकार होता है जबकि ऋणपत्र धारक प्राय: किसी भी तरह के मतदान अधिकार का लाभ नहीं उठा पाते हैं।

सुरक्षा– अंश किसी भी प्रकार से सुरक्षित नहीं होता है जबकि ऋणपत्र प्राय: सुरक्षित होता है और कंपनी की परिसंपत्तियों के ऊपर एक स्थिर या चल प्रभार का वहन करता है।

परिवर्तनीयता– अंश को ऋणपत्र के रूप में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है जबकि ऋणपत्र को अंश में परिवर्तित किया जा सकता है, बशर्ते कि निर्गम के नियम ऐसी व्यवस्था रखते हों और तब ऐसे मामले में इन्हें परिवर्तनीय ऋणपत्र के नाम से जाना जाता है।

2.3 ऋणपत्रों के प्रकार

एक कंपनी विभिन्न प्रकार के ऋणपत्र जारी कर सकती है, जिन्हें निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है–

2.3.1 सुरक्षा के दृष्टिकोण से

(क) ***रक्षित ऋणपत्र***– रक्षित ऋणपत्रों का आशय उन ऋणपत्रों से है "जहाँ भुगतान की अदायगी न कर पाने की स्थिति के उद्देश्य से कंपनी की परिसंपत्तियों पर एक प्रभार स्थापित किया जाता है।" यह

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

प्रभार स्थिर या चल हो सकता है। एक स्थिर प्रभार एक विशिष्ट परिसंपत्ति पर स्थापित किया जाता है जबकि चल प्रभार कंपनी की सामान्य परिसंपत्तियों पर स्थापित किया जाता है। स्थिर प्रभार उन परिसंपत्तियों के प्रति स्थापित किया जाता है जो कि कंपनी के द्वारा प्रचालन के लिए धारित होते है न कि बिक्री के आशय के लिए जबकि चल प्रभारों के अंतर्गत वे सभी परिसंपत्तियाँ शामिल होती हैं जो सुरक्षित लेनदारों हेतु निर्दिष्ट होने से बहिष्कृत हैं।

(ख) ***अरक्षित ऋणपत्र–*** अरक्षित ऋणपत्रों का कंपनी की परिसंपत्तियों पर एक विशिष्ट प्रभार नहीं होता है। हालाँकि, इन ऋणों पर स्वत: ही एक चल प्रभार स्थापित किया जा सकता है। सामान्यत: इस प्रकार के ऋणपत्र जारी नहीं किए जाते हैं।

2.3.2. अवधि के दृष्टिकोण से

(क) **मोचनीय ऋणपत्र–** मोचनीय ऋणपत्र वे होते हैं जो एक विशिष्ट अवधि की समाप्ति पर एकमुश्त राशि के रूप में या कंपनी के जीवन के दौरान किस्तों में देय होते हैं। इन ऋणपत्रों को सममूल्य पर या अधिलाभ राशि पर मोचित किया जा सकता हैं।

(ख) **अमोचनीय ऋणपत्र–** अमोचनीय ऋणपत्रों को 'स्थायी' ऋणपत्र के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि कंपनी इस प्रकार के ऋणपत्रों के निर्गम द्वारा उधार प्राप्त द्रव्य के परिशोधन के लिए भी वचन नहीं देती है। ये ऋणपत्र कंपनी की समाप्ति पर या एक दीर्घकालिक अवधि की समाप्ति पर शोधनीय होते हैं।

2.3.3 परिवर्तनीयता के दृष्टिकोण से

(क) ***परिवर्तनीय ऋणपत्र–*** ये वे ऋणपत्र हैं जो समता अंश में परिवर्तनीय होते हैं या फिर किसी भी अन्य प्रतिभूति में या तो कंपनी के विकल्प पर या ऋणपत्र धारक के विकल्प पर परिवर्तित होते हैं, इन्हें परिवर्तनीय ऋणपत्र कहते हैं। ये ऋणपत्र पूर्णत: परिवर्तनीय हो सकते हैं या आंशिक परिवर्तनीय हो सकते हैं।

(ख) ***अपरिवर्तनीय ऋणपत्र–*** ये वे ऋणपत्र हैं जिन्हें अंश में परिवर्तित नहीं किया जा सकता या किसी अन्य प्रतिभूति में नहीं बदला जा सकते हैं। इन्हें अपरिवर्तनीय ऋणपत्र कहते हैं। कंपनियों द्वारा निर्गमित किए जाने वाले अधिकतर ऋणपत्र इसी श्रेणी में आते हैं।

2.3.4 कूपन दर के दृष्टिकोण से

(क) ***विशिष्ट कूपन दर ऋणपत्र–*** ये ऋणपत्र विशिष्ट ब्याज दर पर जारी किए जाते हैं जिसे 'कूपन दर' कहा जाता है। ये विशिष्ट दरें या तो स्थिर हो सकती हैं या चल (अस्थिर)। चल ब्याज दरों को प्राय: बैंक की दर के साथ जोड़ा जाता है।

© NCERT not to be republished

(ख) ***शून्य कूपन दर ऋणपत्र–*** ये ऋणपत्र ब्याज की कोई विशिष्ट दर वहन नहीं करते हैं। निवेशकों की क्षतिपूर्ति करने की दृष्टि से इस प्रकार के ऋणपत्र पर्याप्त बट्टे (छूट) के साथ जारी किए जाते हैं और सांकेतिक मूल्य तथा निर्गम मूल्य के बीच अंतर को ब्याज की राशि के रूप में निरूपित किया जाता है जो ऋणपत्र की कालावधि से संबंधित होती है।

2.3.5 पंजीकरण के दृष्टिकोण से

(क) ***पंजीकृत ऋणपत्र–*** पंजीकृत ऋणपत्र वे ऋणपत्र हैं जिन्हें कंपनी द्वारा रखे गए एक रजिस्टर में नाम, पता तथा ऋणपत्र धारकता की विशिष्टताओं के सभी विवरणों सहित प्रविष्ट किया जाता है। ऐसे ऋणपत्रों का हस्तांतरण केवल एक नियमित हस्तांतरण विलेख के कार्यान्वयन द्वारा किया जा सकता है।

(ख) ***वाहक ऋणपत्र–*** वाहक ऋणपत्र वे ऋणपत्र हैं जो डिलीवरी या सुपुर्दगी के द्वारा हस्तांतरित किए जा सकते हैं और कंपनी ऋणपत्रों का कोई रिकॉर्ड नहीं रखती है। ऋणपत्रों पर ब्याज का भुगतान उस व्यक्ति को किया जाता है जो इस प्रकार के ऋणपत्रों में संलग्न ब्याज कूपन को प्रस्तुत करता है।

ऋणपत्रों/बाँड के प्रकार

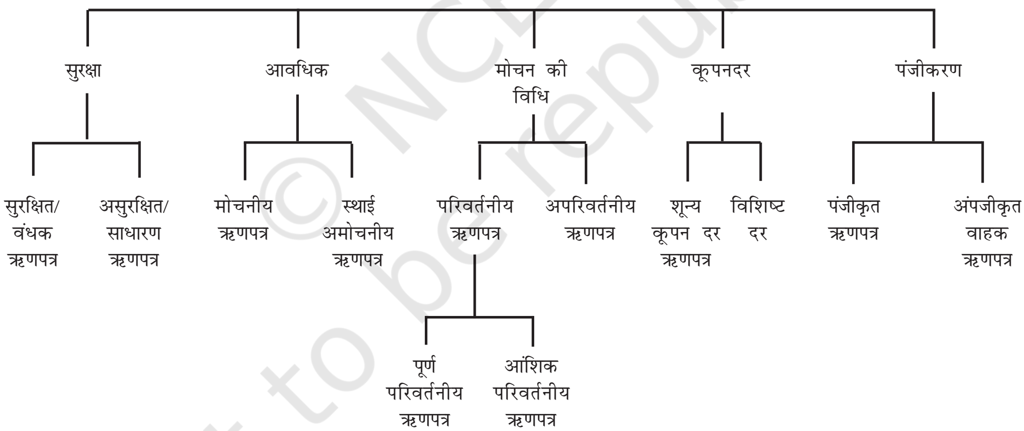

2.4 ऋणपत्रों का निर्गम

ऋणपत्रों के निर्गम की प्रक्रिया ठीक वैसी ही होती है जैसी कि अंशों के निर्गम पर होती है। भावी या अभिप्रेरित निवेशक कंपनी द्वारा जारी किए गए विवरण–पत्र के आधार पर ऋणपत्र के लिए आवेदन करता है। इसके लिए कंपनी या तो पूरी राशि को आवेदन पत्र के साथ माँग लेती है या फिर आवेदन पत्र पर किस्तों के रूप में तथा आबंटन के समय तथा विविध माँगों पर राशि ली जाती है। ऋणपत्रों को सममूल्य पर, प्रीमियम के साथ या बट्टे पर जारी किया जाता है। इन्हें रोकड़ के अतिरिक्त प्रतिफल या संपार्श्विक प्रतिभूति के लिए भी किया जा सकता है।

2.4.1 रोकड़ के लिए ऋणपत्र का निर्गम

ऋणपत्रों का सममूल्य पर तब निर्गम किया जाता है जब उनका निर्गम मूल्य अंकित मूल्य के बराबर हो। ऐसे निर्गम हेतु रोज़नामचा प्रविष्टि निम्नानुसार अभिलिखित की जाती है।

(क) *यदि पूरी राशि एक किस्त में ली जाती है–*

(i) आवेदन पत्र पर नकद की प्राप्ति पर
बैंक खाता नाम
ऋणपत्र आवेदन व आबंटन खाते से

(ii) आबंटन करने पर
ऋणपत्र आवेदन व आबंटन खाता नाम
ऋणपत्र खाते से

(ख) *यदि ऋणपत्र राशि दो किस्तों में प्राप्त की जाती है–*

(i) आवेदन राशि की प्राप्ति पर
बैंक खाता नाम
ऋणपत्र आवेदन खाते से

(ii) आवेदन राशि को आबंटन पर समायोजित करने के लिए
ऋणपत्र आवेदन खाता नाम
ऋणपत्र खाते से

(iii) शेष राशि के लिए आबंटन
ऋणपत्र आबंटन खाता नाम
ऋणपत्र खाते से

(iv) आबंटन राशि के प्रप्ति पर
बैंक खाता नाम
ऋणपत्र आबंटन खाते से

(ग) यदि ऋणपत्र राशि को दो से अधिक किस्तों में प्राप्त किया गया है तो अतिरिक्त प्रविष्टियाँ–

(i) पहले माँग
ऋणपत्र प्रथम माँग पर नाम
ऋणपत्र खाते से

(ii) पहले माँग की प्राप्ति पर
बैंक खाता नाम
ऋणपत्र प्रथम माँग खाते से

टिप्पणी– ठीक इसी प्रकार की प्रविष्टियाँ द्वितीय या तृतीय माँग पर की जाती हैं। सामान्यतः, पूरी राशि आवेदन के साथ या दो किस्तों में ली जाती है अर्थात् आवेदन पत्र एवं आबंटन पर ली जाती है।

उदाहरण 1

एबीसी लिमिटेड ने प्रति ऋणपत्र 100 रु. के 10,000 ऋणपत्र जारी किए जिसमें आवेदन पर 30 रु. और आबंटन पर शेष राशि देय है। जनता ने 9,000 रु. के ऋणपत्रों के लिए आवेदन किया जो पूर्णतः आबंटित थे और उपयुक्त अपेक्षित राशि प्राप्त की गई। एबीसी लिमिटेड के खातों (पुस्तकों) में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ तथा तुलन–पत्र तैयार करें।

हल–

एबीसी लिमिटेड की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	विवरण	ब.पृ सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	बैंक खाता नाम 12% ऋणपत्र आवेदन खाते से (9,000 ऋणपत्रों पर ओवदन राशि प्राप्त की गई)		2,70,000	2,70,000
	12% ऋणपत्र आवेदन खाता नाम 12% ऋणपत्र खाते से (आवेदन राशि को ऋणपत्र खाते में हस्तांतरित किया गया)		2,70,000	2,70,000
	12% ऋणपत्र आबंटन खाता नाम 12% ऋणपत्र खाते से (9,000 आबंटित ऋणपत्रों पर बकाया @ 70 प्रति ऋणपत्र)		6,30,000	6,30,000
	बैंक खाता नाम 12% ऋणपत्र आबंटन खाते से (आबंटन पर प्राप्त की गई राशि)		6,30,000	6,30,000

एबीसी लिमिटड का तुलन-पत्र

विवरण	नोट संख्या	राशि रु.
I. समता एवं देयताएँ		
गैर चालू दायित्व		
दीर्घकालीन ऋण	1	9,00,000
II. परिसंपत्तियाँ		
चालू परिसंपत्तियाँ		
रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	2	9,00,000

* केवल संबंधित आंकड़े

© NCERT not to be republished

खातों की टिप्पणी–

विवरण	राशि रु.
1. दीर्घकालीन ऋण 9,000, 12% ऋणपत्र रु. 100 प्रत्येक	9,00,000
2. रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक बैंक में रोकड़	9,00,000

2.4.2 बट्टे पर ऋणपत्र का निर्गमन

जब ऋणपत्रों का निर्गमन उसके अंकित मूल्यों पर किया जाता है तब उसे बट्टे पर निर्गम कहते हैं। उदाहरण के लिए यदि 100 रु. प्रति ऋणपत्रों का निर्गमन 95 रु. प्रति ऋणपत्र पर किया जाय तो बकाया 5 रु. बट्टे की राशि कहलाएगी। ऋणपत्रों के निर्गम पर बट्टे की राशि को ऋणपत्रों के जीवनकाल में ही प्रतिभूति अधिलाभ (प्रीमियम) संचय में से अपलिखित किया जाता है।

ऋणपत्र निर्गम पर बट्टे की राशि की राशि को तुलन पत्र तिथि से लेकर 12 माह की अवधि के भीतर अपलिखित किया जा सकता है अथवा 'अन्य चालू परिसम्पत्तियाँ' के अन्तर्गत प्रचालन चक्र की अवधि के भीतर अपलिखित किया जा सकता है। यदि बट्टे की राशि का अपलेखन तुलन पत्र तिथि के 12 माह के पश्चात् किया जाना है तो इसे 'अन्य गैर चालू सम्पत्तियाँ' शीर्ष के अन्तर्गत दर्शाया जाएगा।

कंपनी अधिनियम, 2013 के अनुसार ऋणपत्रों को बट्टे पर निर्गमित करने के लिए कोई भी प्रतिबंध नहीं लगाता है।

उदाहरण 2

टी वी कंपोनेंटस लिमिटेड ने प्रति ऋणपत्र 100 रु. पर 10,000, 12% ऋणपत्रों को 5% के बट्टे पर निर्गमित किए जो निम्नवत् देय हैं–

आवेदन पर 40 रु.

आबंटन पर 55 रु.

इसकी रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें तथा यह मानकर चलें कि इसकी सभी किश्तें यथानुसार प्राप्त हुई हैं। इसके साथ ही तुलन–पत्र का उपयुक्त भाग भी दर्शाएँ।

हल

टीवी कंपोनेंट्स लि. की खाता पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	विवरण	ब.पृ.स.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	बैंक खाता नाम 12% ऋणपत्र आवेदन खाते से (30% आवेदन राशि प्रति ऋणपत्र से प्राप्त)		4,00,000	4,00,000

	12% ऋणपत्र आवेदन खाता 12% ऋणपत्र खाते से (आवेदन राशि से ऋणपत्र खाते में हस्तांतरण)	नाम		4,00,000	4,00,000
	12% ऋणपत्र आबंटन खाता ऋणपत्र के निर्गम पर बट्टा खाता 12% ऋणपत्र (ऋणपत्र) खाते से (ऋणपत्र पर बकाया आबंटन राशि)	नाम नाम		5,50,000 50,000	6,00,000
	बैंक खाता 12% ऋणपत्र आबंटन खाते (ऋणपत्र पर आबंटन राशि की प्राप्ति)	नाम		5,50,000	5,50,000
	प्रतिभूति प्रीमियम संचय/लाभ व हानि का विवरण ऋणपत्र निर्गम पर बट्टा खाते से (ऋणपत्रों पर बट्टे का अपलेखन)	नाम		50,000	50,000

टीवी कंपोनेंट्स लि. का तुलन-पत्र*

विवरण	*नोट संख्या*	*राशि रु.*
I. समता एवं देयताएँ		
1. अंशधारक निधि		
संचय एवं अधिशेष	1	
गैर चालू दायित्व		
दीर्घकालीन ऋण	2	**9,50,000**
II. परिसंपत्तियाँ		
1. गैर चालू परिसंपत्तियाँ		
(क) अन्य गैर चालू परिसंपत्तियाँ		
2. चालू परिसंपत्तियाँ		
(क) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		9,50,000
(ख) अन्य चालू परिसंपत्तियाँ	4	
		9,50,000

* केवल संबंधित आंकड़े

© NCERT not to be republished

खातों की टिप्पणी–

विवरण	*राशि* *रु.*
संचय एवं अधिशेष	(50,000)
अधिशेष (लाभ व हानि विवरण का शेष)	
1. दीर्घकालीन ऋण	
10,000, 12% रक्षित ऋणपत्र रु. 100 प्रत्येक	10,00,000
2. रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	
बैंक में रोकड़	**9,50,000**

टिप्पणी–

1. यह माना गया कि ऋणपत्र 10 वर्षों के बाद मोचनीय है।

* केवल संबधित आंकड़े

2.4.3 प्रीमियम पर निर्गमित ऋणपत्र

प्रीमियम पर निर्गमित ऋणपत्र उसे कहा जाता है जब इसका मूल्य साधारण मूल्य से अधिक प्रभारित होता है। उदाहरण के लिए 100 रु. के ऋणपत्र निर्गम पर 110 रु. माँगे जाएँ (यहाँ पर 10 रु. प्रीमियम है)। प्रीमियम की राशि के लिए खाते से प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते में जमा किया जाता है और तुलन–पत्र के समता एवं देयताओं के पक्ष में निधि एवं अधिशेष के अंतर्गत दर्शाया जाता है।

उदाहरण 3

एक्स वाई ज़ेड इंडस्ट्रीज़ लि. ने प्रति ऋणपत्र 100 रु. पर 2,000, 10% ऋणपत्रों को 10 रु. प्रीमियम पर निर्गमित किया जो निम्नानुसार देय हैं

आवेदन पर 50 रु.

आबंटन पर 60 रु.

सभी ऋणपत्र पूर्णतः अभिदत्त हुए और संपूर्ण राशि यथोचित प्राप्त हुई। कंपनी की खाता पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें साथ ही तुलन–पत्र भी तैयार करें।

हल

एक्स वाई ज़ेड इंडस्ट्रीज़ लि. की खाता पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि*	*जमा राशि*
			(रु.)	*(रु.)*
	बैंक खाता नाम		1,00,000	
	10% ऋणपत्र आवेदन खाते से			
	(10% ऋणपत्र 50 रु. प्रति ऋणपत्र पर प्राप्त आवेदन राशि से)			1,00,000

© NCERT not to be republished

	10% ऋणपत्र आवेदन खाता नाम 10% ऋणपत्र खाते से (ऋणपत्रों पर आवेदन राशि का हस्तांतरण)		1,00,000	 1,00,000
	10% ऋणपत्र आबंटन खाता नाम 10% ऋणपत्र खाते से प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से (प्रीमियम सहित ऋणपत्र पर बकाया आबंटन राशि)		1,20,000	 1,00,000 20,000
	बैंक खाता नाम 10% ऋणपत्र आबंटन खाते से (आबंटन राशि प्राप्त)		1,20,000	 1,20,000

एक्स वाई ज़ेड इंडस्ट्रीज़ लि. का तुलन-पत्र

विवरण	*नोट संख्या*	*राशि रु.*
I. समता एवं देयताएँ		
1. अंशधारक निधि		
आरक्षित एवं अधिशेष	1	20,000
2. गैर चालू दायित्व		
दीर्घकालीन ऋण	2	2,00,000
		2,20,000
II. परिसंपत्तियाँ		
चालू परिसंपत्तियाँ		
रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		**2,20,000**

खातों की टिप्पणी–

विवरण	*राशि रु.*
1. आरक्षित एवं अधिशेष	
प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित	**20,000**
2. दीर्घकालीन ऋण	
2,000, 10% ऋणपत्रों रु. 100 प्रत्येक	**2,00,000**
3. रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	
बैंक में रोकड़	**2,20,000**

© NCERT not to be republished

उदाहरण 4

ए. लिमिटेड ने प्रति ऋणपत्र 100 रु. पर 5,000, 10% ऋणपत्र 10 रु. के प्रति ऋणपत्र प्रीमियम पर निर्गमित किए, जो निम्नानुसार देय हैं।

आवेदन पत्र	25 रु.
आबंटन पत्र	45 रु. (प्रीमियम सहित)
प्रथम एवं अंतिम माँग पर	40 रु.

सभी ऋणपत्र पूर्णतः अभिदत्त हुए और समस्त राशि यथानुसार प्राप्त हुई। कंपनी की खाता पुस्तकों में सभी आवश्यक प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें। यह भी दिखाएँ कि तुलन–पत्र में राशि कैसे दर्शाएँगे।

हल

ए लिमिटेड की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	बैंक खाता नाम		1,25,000	
	10% ऋणपत्र आवेदन खाते से			
	(10% ऋणपत्रों पर आवेदन राशि प्राप्त हुई)			1,25,000
	10% ऋणपत्र आवेदन खाता नाम		1,25,000	
	10% ऋणपत्र खाते से			1,25,000
	(आवेदन पर आवेदन राशि का हस्तांतरण)			
	10% ऋणपत्र का आबंटन खाता नाम		2,25,000	
	10% ऋणपत्र खाते से			1,75,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से			50,000
	(ऋणपत्रों पर बकाया आबंटन राशि, प्रीमियम सहित)			
	बैंक खाता नाम		2,25,000	
	10% ऋणपत्र आबंटन खाते से			2,25,000
	(आबंटन राशि प्राप्त)			
	10% ऋणपत्र प्रथम एवं अंतिम माँग खाता नाम		2,00,000	
	10% ऋणपत्र खाते से			2,00,000
	(ऋणपत्रों पर बकाया प्रथम व अंतिम माँग राशि)			
	बैंक खाता नाम		2,00,000	
	10% ऋणपत्र प्रथम एवं अंतिम माँग खाते से			2,00,000
	(प्रथम व अंतिम माँग राशि प्राप्त)			

© NCERT not to be republished

ए लिमिटेड का तुलन-पत्र

विवरण	*नोट संख्या*	*राशि रु.*
I. समता एवं देयताएँ		
1. अंश धारक निधि		
(क) आरक्षित एवं अधिशेष	1	50,000
2. गैर-चालू दायित्व		
(क) दीर्घकालीन ऋण	2	5,00,000
योग		**5,50,000**
II. परिसंपत्तियाँ		
1. चालू परिसंपत्तियाँ		
(क) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		**5,50,000**

खातों की टिप्पणी–

विवरण	*राशि रु.*
1. आरक्षित एवं अधिशेष	
प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित	**50,000**
2. दीर्घकालीन ऋण	
5,000, 10% ऋणपत्र रु. 100 प्रत्येक	**5,00,000**

2.5 अधि-अभिदान

जब जनता को प्रस्तावित किए गए ऋणपत्रों से अधिक (संख्या में ऋणपत्रों) के लिए आवेदन किए जाते हैं तब इस निर्गम को अधि-अभिदान कहते हैं। एक कंपनी हालाँकि उस मात्रा (संख्या) से अधिक ऋणपत्र आबंटित नहीं कर सकती, जिन्हें अभिदान आमंत्रित किया गया है। हालाँकि अधि-अभिदान पर प्राप्त की गई अधिकतम राशि यद्यपि आबंटन में समायोजन के लिए रोकी जा सकती है और संबंधित माँग की जा सकती है। लेकिन आवेदक से प्राप्त की गई वह राशि, जिस पर ऋणपत्र आबंटित नहीं किए गए, उन्हें वापिस की जाएगी।

उदाहरण 5

एक्स लिमिटेड ने 40 रु. आवेदन पर तथा 60 रु. आबंटन पर देय रखते हुए प्रति ऋणपत्र 100 रु. पर 10,000, 10% ऋणपत्रों को निर्गमित किया। जनता ने 14,000 ऋणपत्रों के लिए आवेदन किए। 9,000 ऋणपत्रों के लिए पूर्ण आवेदन स्वीकृत किए गए। 2,000 ऋणपत्रों के लिए आवेदनों पर 1,000 ऋणपत्र आबंटित किए गए। शेष आवेदनों को अस्वीकार्य कर दिया गया।

सारी राशि यथानुसार प्राप्त हुई थी। इन लेनदेनों की रोज़नामचा में प्रविष्टियाँ दें।

© NCERT not to be republished

हल

एक्स लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	विवरण	ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	बैंक खाता 12% ऋणपत्र आवेदन खाते से (14,000 ऋणपत्रों पर प्राप्त आवेदन राशि)	नाम	5,60,000	 5,60,000
	12% ऋणपत्र आवेदन खाता नाम 12% ऋणपत्र खाते से 12% ऋणपत्र आबंटन खाते से बैंक खाते से (ऋणपत्र आवेदन राशि का ऋणपत्र खाते मे हस्तान्तरण, अतिरिक्त आवेदन राशि को ऋणपत्र आवेदन खाते में जमा एवं अस्वीकृत आवेदनो की राशि की वापसी) राशि का हस्तांतरण)		5,60,000	 4,00,000 40,000 1,20,000
	12% ऋणपत्र आबंटन खाता 12% ऋणपत्र खाते से (10,000 ऋणपत्रों के आबंटन पर बकाया राशि)		6,00,000	 6,00,000
	बैंक खाता नाम ऋणपत्र आबंटन खाते से (आबंटन राशि प्राप्त)		5,60,000	 5,60,000

2.6 रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफ़ल पर ऋणपत्रों का निर्गमन

कभी-कभी कंपनी विक्रेताओं से परिसंपत्तियाँ खरीदती है और रोकड़ भुगतान करने की अपेक्षा प्रतिफ़ल के लिए ऋणपत्र जारी कर देती है। इस प्रकार के ऋणपत्र निर्गमन को रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफ़ल पर निर्गमित ऋणपत्र कहते हैं। इन मामलों में ऋणपत्र के सममूल्य पर या प्रीमियम राशि पर या बट्टे पर जारी किए जा सकते हैं। इसके बाद ऐसी स्थितियों में डाली गई प्रविष्टियाँ ठीक वैसे ही होती हैं जो कि रोकड़ के अलावा अन्य प्रतिफ़ल हेतु अंशों के लिए की जाती हैं, जो कि निम्नलिखित होती हैं–

1. *परिसंपत्तियों के क्रय पर*

    विविध परिसंपत्तियाँ खाता नाम
    विक्रेता से

2. *ऋणपत्रों के निर्गमन पर*

    (क) *सममूल्य पर*

    विक्रेता खाता नाम
    ऋणपत्र खाते से

(ख) *प्रीमियम पर*

विक्रेता खाता नाम

ऋणपत्र खाते से

प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से

(ग) *बट्टे पर*

विक्रेता खाता नाम

बट्टे पर निर्गमित ऋणपत्र खाता नाम

ऋणपत्र खाते से

उदाहरण 6

आशीर्वाद कंपनी लिमिटेड ने अन्य कंपनी से 2,00,000 रु. पुस्तक मूल्य की परिसंपत्तियाँ खरीदीं और यह सहमति बनी कि क्रय प्रतिफ़ल का भुगतान, प्रति ऋणपत्र 100 रु. पर 2,000 10% ऋणपत्रों के निर्गम द्वारा किया जाएगा। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें।

हल

आशीर्वाद कंपनी लिमिटेड की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	विविध परिसंपत्तियाँ खाता नाम विक्रेता से (विक्रेता से परिसंपत्तियों की खरीद पर)		2,00,000	2,00,000
	विक्रेता नाम 10% ऋणपत्र खाते से (क्रय प्रतिफ़ल के साथ में विक्रेता को ऋणपत्रों का आबंटन)		2,00,000	2,00,000

उदाहरण 7

राय कंपनी ने एक अन्य कंपनी से 2,20,000 रु. पुस्तक मूल्य की परिसंपत्तियाँ खरीदीं और यह सहमति बनी कि इस क्रय प्रतिफ़ल के, भुगतान के रूप में प्रति ऋणपत्र 100 रु. के 2,000, 10% प्रीमियम के साथ जारी करने के द्वारा होगा।

आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें।

© NCERT not to be republished

हल

राय कंपनी लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	विविध परिसंपत्तियाँ खाता	नाम		2,20,000	
	विक्रेता से				2,20,000
	(विक्रेता से परिसंपत्ति खरीद पर)				
	विक्रेता	नाम		2,20,000	
	10% ऋणपत्र खाते से				2,00,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से				20,000
	(100 रु. प्रति 2,000 ऋणपत्रों का 10% के प्रीमियम पर क्रय प्रतिफ़ल के रूप में आबंटन)				

उदाहरण 8

नेशनल पैकेजिंग कंपनी ने एक अन्य कंपनी से 1,90,000 रु. की परिसंपत्तियाँ खरीदीं और क्रय प्रतिफ़ल की भुगतान सहमति के हिसाब से 100 रु. प्रति ऋणपत्र से 2,000, 10% ऋणपत्र 5% बट्टे के हिसाब से जारी किए गए।

आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें।

हल

नेशनल पैकेजिंग लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	विविध परिसंपत्ति खाता	नाम		1,90,000	
	विक्रेता से				1,90,000
	(विक्रताओं से खरीदीं गई परिसंपत्तियाँ)				
	विक्रेता	नाम		1,90,000	
	ऋणपत्र निर्गमन पर बट्टा खाता	नाम		10,000	
	10% ऋणपत्र खाते से				2,00,000
	(100 रु. प्रत्येक ऋणपत्र के हिसाब से 200 ऋणपत्र 5% बट्टे के साथ क्रय प्रतिफ़ल के रूप में आबंटित)				

© NCERT not to be republished

उदाहरण 9

जी एस राय कंपनी ने 99,000 रु. पुस्तक मूल्य की परिसंपत्तियाँ एक फ़र्म से खरीदीं। यह सहमति बनी कि क्रय प्रतिफ़ल का भुगतान 100 रु. प्रत्येक ऋणपत्र से 10% ऋणपत्रों को निर्गम के द्वारा किया जाएगा।

1. सममूल्य पर
2. 10% के बट्टे पर
3. 10% के प्रीमियम पर

आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें।

हल

जी एस राय कंपनी लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	(i) विविध परिसंपत्तियाँ खाता ... नाम		99,000	
	विक्रेता से			99,000
	(विक्रेता से खरीदीं गईं परिसंपत्तियाँ)			
पहले संदर्भ में	(ii) विक्रेता ... नाम		99,000	
	10% ऋणपत्र खाते से			99,000
	(खरीद प्रतिफ़ल के रूप में विक्रेता को ऋणपत्रों का आबंटन)			
दूसरे संदर्भ में	विक्रेता ... नाम		99,000	
	ऋणपत्र निर्गमन पर बट्टा खाता ... नाम		11,000	
	10% ऋणपत्र खाते से			1,10,000
	(100 रु. के 10% के ऋणपत्र विक्रेता को 1,100 ऋणपत्र निर्गमित किए गए)			
तीसरे संदर्भ में	विक्रेता ... नाम		99,000	
	10% ऋणपत्र खाते से			90,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से			9,000
	(10% प्रीमियम पर विक्रेता को 100 रु. प्रत्येक के 900 ऋणपत्र जारी किए गए)			

© NCERT not to be republished

कई बार कुछ कंपनियाँ दूसरी कंपनियों से परिसंपत्तियों को खरीदने के साथ-साथ उनकी देनदारी को भी हाथ में ले लेती हैं। ऐसा प्रायः तब होता है, जब दूसरी कंपनी का पूरा व्यवसाय खरीद लिया जाता है। ऐसी स्थिति में, खरीद (क्रय) प्रतिफ़ल निवल परिसंपत्तियाँ-देनदारी के मूल्य के समान होती हैं। यदि संपूर्ण प्रतिफल राशि का भुगतान ऋणपत्र निर्गम से किया जाता है तो प्रविष्टि निम्नवत् होगी-

विविध परिसंपत्ति खाता नाम
 विविध दायित्व खाते से
 विक्रेता से (विक्रेताओं के व्यवसाय की खरीद)

उदाहरण 10

रोमी लिमिटेड ने कपिल इंटरप्राइजेज से 20 लाख रु. की परिसंपत्तियाँ खरीदीं तथा उसकी 2 लाख रु. की लेनदारी भी ग्रहण की। रोमी ने क्रय प्रतिफ़ल के रूप में 100 रु. प्रति ऋणपत्र से 8% ऋणपत्र जारी किए। रोमी लिमिटेड की खाता पुस्तकों में आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें।

हल

रोमी लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	विविध परिसंपत्तियाँ खाता नाम		20,00,000	
	कपिल इंटरप्राइज़ेज से			18,00,000
	विविध लेनदार खाते से			2,00,000
	(व्यवसाय की खरीद)			
	कपिल इंटरप्राइज़ेज़क नाम		18,00,000	
	8% ऋणपत्र खाते से			18,00,000
	(100 रु. प्रति के 18,000, 8% ऋणपत्रों का निर्गमन)			

यदि किसी स्थिति में, संपूर्ण व्यवसाय को अधिग्रहित किया जाता है और यदि निवल परिसंपत्ति खरीद राशि से अधिक राशि के ऋणपत्र जारी किए जाते हैं तो इसके अंतर (आधिक्य) को ख्याति के मूल्य के रूप में निरूपित किया जाएगा और इसके साथ ही इसी राशि को विक्रेता के व्यवसाय खरीद के लिए रोज़नामचा प्रविष्टि में डालते समय नामित किया जाएगा। (उदाहरण 11 देखिए) लेकिन यदि इसका उल्टा होता है अर्थात् जहाँ ऋणपत्र का मूल्य ली गई निवल परिसंपत्ति के मूल्य से कम होता है, वहाँ इस अंतर को पूँजी आरक्षित (संचय) खाते में जमा किया जाएगा। (देखिए उदाहरण 12)

उदाहरण 11

ब्लू प्रिंट लिमिटेड ने 1,50,000 रु. मूल्य का भवन तथा 1,40,000 रु. मूल्य की मशीनरी तथा 10,000 रु. मूल्य का फर्नीचर एक्स वाई ज़ेड कंपनी से खरीदा। इसके साथ ही 20,000 रु. की दायित्व को भी ग्रहित किया और इस का क्रय प्रतिफ़ल 3,15,000 रु. तय हुआ। ब्लू प्रिंट लिमिटेड ने कुछ प्रतिफ़ल का भुगतान 100 रु. प्रति ऋणपत्र से 12% ऋणपत्रों को 5% प्रीमियम के साथ जारी किया। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें।

हल

ब्लू प्रिंट्स लिमिटेड की खाता पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*		*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	भवन खाता	नाम		1,50,000	
	संयंत्र एवं मशीनरी	नाम		1,40,000	
	फ़र्नीचर खाता	नाम		10,000	
	ख्याति खाता[1]	नाम		35,000	
	विविध देनदारियों से				20,000
	एक्स वाई ज़ेड कं. खाते से				3,15,000
	(एक्स वाई ज़ेड की परिसंपत्ति खरीदना एवं दायित्व ग्रहित करना)				
	एक्स वाई ज़ेड कं. खाता	नाम		3,15,000	
	12% ऋणपत्र खाते से				3,00,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से				15,000
	(5% प्रीमियम पर 3,000 ऋणपत्र जारी)				

सूचना– 1. चूँकि क्रय प्रतिफ़ल अधिकार में ली गई परिसंपत्तियों से अधिक है अतएव दोनों के बीच के अंतर को ख्याति खाते में नाम किया गया है।

2. निर्गमित ऋणपत्रों की संख्या $= \dfrac{\text{क्रय प्रतिफ़ल}}{\text{एक ऋणपत्र की निर्गम मूल्य}}$

$$= \frac{3,15,000 \text{ रु.}}{105} = 3,000$$

उदाहरण 12

ए लिमिटेड ने बी एंड कंपनी से 3,00,000 रु. की परिसंपत्तियाँ तथा 10,000 रु. के दायित्व अपने अधिकार में इस सहमति पर प्राप्त किए कि क्रय प्रतिफ़ल 2,70,000 रु. का भुगतान 100 रु. प्रति ऋणपत्र से 15% ऋणपत्रों को 20% प्रीमियम पर निर्गम किया जाएगा। ए लिमिटेड की खाता पुस्तकों हेतु रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दर्शाएँ।

हल

ए लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	विविध परिसंपत्ति खाता नाम		3,00,000	
	विविध देनदारी खाता			10,000
	बी एंड कं. से			2,70,000
	पूँजी आरक्षित से			20,000
	(बी एंड कंपनी से परिसंपत्ति व देनदारियों की खरीद)			
	बी एंड कंपनी खाता नाम		2,70,000	
	15% ऋणपत्र खाते से			2,25,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से			45,000
	(100 रु. प्रति ऋणपत्र 20% प्रीमियम पर 2,250 ऋणपत्र जारी)			

स्वयं करें

1. अमृत कंपनी लिमिटेड ने अन्य कंपनी से 2,20,000 रु. की परिसंपत्तियाँ खरीदीं और सहमति के अनुसार क्रय प्रतिफ़ल का भुगतान 100 रु. प्रति ऋणपत्र के 10% प्रीमियम पर 2,000, 10% ऋणपत्र निर्गमित किए गए। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।
2. एक कंपनी ने 1,90,000 रु. मूल्य की परिसंपत्तियाँ दूसरी कंपनी से खरीदीं गईं और खरीद प्रतिफ़ल के भुगतान हेतु सहमति हुई कि प्रतिशत बट्टे पर 100 रु. प्रत्येक पर 2,000, 10% ऋणपत्र निर्गमन द्वारा किया जाए। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।
3. रोज़ बाँड लिमिटेड ने 22,00,000 रु. में एक व्यवसाय खरीदा। खरीद का भुगतान 6% ऋणपत्र द्वारा किया गया। इस उद्देश्य से 20,00,000 रु. के ऋणपत्रों को 10% प्रीमियम पर जारी किया गया। आवश्यक प्रविष्टियाँ करें।
4. निखिल एंड अश्विन लिमिटेड ने अग्रवाल लिमिटेड का व्यवसाय खरीदा, जिसमें 3,00,000 रु. की विविध परिसंपत्तियाँ, विविध लेनदारी 1,00,000 रु. शामिल थे, जो 3,07,200 रु. प्रतिफ़ल पर खरीदीं गईं इसने क्रय प्रतिफ़ल के चुकाने हेतु 4% बट्टे पर 100 रु. प्रति के हिसाब से 14% ऋणपत्र जारी किए। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 13

सुविधा लिमिटेड ने सप्लायर्स लिमिटेड से 1,98,000 रु. के मूल्य की मशीनरी क्रय की। इसका भुगतान 100 रु. प्रत्येक पर 12% ऋणपत्र जारी करके किया गया।

मशीनरी की खरीद के लिए आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें और यदि–

(1) ऋणपत्रों का निर्गमन सममूल्य पर किया गया है।

(2) ऋणपत्रों का निर्गमन 10% बट्टे पर किया गया है।

(3) ऋणपत्रों का निर्गमन 10% प्रीमियम पर किया गया है।

हल

सुविधा लिमिटेड की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*		*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	मशीनरी खाता	नाम		1,98,000	
	सप्लायर्स लिमिटेड खाते से				1,98,000
	(मशीनरी खरीदीं गई)				
केस (i)	जब ऋण सममूल्य पर निर्गमित हों–				
	सप्लायर्स लि. खाता	नाम		1,98,000	
	12% ऋणपत्र खाते से				1,98,000
	(12% ऋणपत्र सप्लायर्स लि. हेतु निर्गमित हुए)				
केस (ii)	जब ऋणपत्रों को 10% बट्टे पर निर्गम किया गया है–				
	सप्लायर्स लि. खाता	नाम		1,98,000	
	ऋणपत्र के निर्गम पर बट्टा खाता	नाम		22,000	
	12% ऋणपत्र खाते से				2,20,000
	(10% बट्टे पर सप्लायर्स को 12% ऋणपत्र निर्गमित किए गए)				
केस (iii)	जब 10% प्रीमियम पर ऋणपत्रों को निर्गमित किया गया–				
	सप्लायर्स लि. खाता	नाम		1,98,000	
	12% ऋणपत्र खाते से				1,80,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से				18,000
	(10% प्रीमियम पर सप्लायर्स लिमिटेड को 12% ऋणपत्र निर्गमित किए गए।				

© NCERT not to be republished

कार्यकारी टिप्पणी–

(क)

	(रु.)
एक ऋणपत्र का अंकित मूल्य	100
घटाया– 10% बट्टा	(10)
एक ऋणपत्र का मूल्य जिस पर निर्गम हुआ	90

10% बट्टे के मामले में निर्गमित ऋणपत्रों की संख्या $\frac{1,98,000 \text{ रु.}}{90}$ = 2,200 ऋणपत्र

(ख)

	(रु.)
एक ऋणपत्र का अंकित मूल्य	100
जोड़ा– प्रीमियम 10%	10
एक ऋणपत्र का मूल्य जिस पर निर्गम हुआ	110

10% प्रीमियम के मामले में निर्गमित ऋणपत्रों की संख्या $\frac{1,98,000 \text{ रु.}}{110}$ = 1,800 ऋणपत्र

2.7 ऋणपत्रों का संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमन

जब एक कंपनी बैंक अथवा वित्तीय संस्था से ऋण या अधिविकर्ष प्राप्त करती है तो ऐसी स्थिति में संपार्श्विक प्रतिभूति को प्राथमिक प्रतिभूति की तुलना में सहायक अथवा अतिरिक्त प्रतिभूति के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसके लिए कंपनी अपनी कुछ परिसंपत्तियों को उपयुक्त ऋण प्राप्ति हेतु रक्षित ऋण के रूप में बंधक अथवा गिरवी रख सकती है। किंतु ऋणदाता संस्थाएँ संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में अधिक परिसंपत्तियों के लिए आग्रह कर सकती हैं ताकि ऋण की राशि की पूर्णतः वसूली हो सके यदि प्राथमिक प्रतिभूति के विक्रय से ऋण की राशि का पूर्ण भुगतान संभव नहीं है तो ऐसी स्थिति में कंपनी स्वयं के ऋणपत्रों का निर्गमन पहले से बंधक परिसंपत्तियों सहित ऋणदाता को करती है। ऐसे निर्गमन को संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में **ऋणपत्रों का निर्गमन** कहते हैं।

यदि कंपनी ब्याज सहित ऋण या कर्ज़ को चुका पाने में असफ़ल रहती है तो ऋणदाता प्राथमिक प्रतिभूति को बेचकर ऋण वसूल पाने के लिए स्वतंत्र होता है और यदि प्राथमिक प्रतिभूति की बिक्री पर प्राप्त राशि ऋण राशि को पूरा कर पाने में कम पड़ जाती है तो ऋणदाता को इस बात का अधिकार है कि वह संपार्श्विक प्रतिभूति को भुना सकता है जिसके लिए ऋणपत्रों को मोचन के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है या खुले बाज़ार में बेचा जा सकता है।

संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमित ऋणपत्रों को कंपनी के खाता पुस्तकों में दो विधियों से दर्शाया जा सकता है–

© NCERT not to be republished

प्रथम विधि

खाता पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं होती चूँकि इस प्रकार के निर्गम से कोई भी दायित्व उत्पन्न नहीं होता है। हालाँकि तुलन–पत्र ऋण के, मद के नीचे इस प्रभाव के साथ एक टिप्पणी संलग्न करते हैं कि एक संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में ऋणपत्रों के निर्गम द्वारा इसे सुरक्षित किया गया है। उदाहरण के लिए एक्स कंपनी ने एक बैंक से प्राप्त 10,00,000 हेतु 100 रु. प्रति ऋणपत्र से 10,000, 9% ऋणपत्रों को जारी किया है। इस तथ्य को तुलन–पत्र में निम्नवत प्रदर्शित किया जा सकता है।

एक्स कंपनी का तुलन–पत्र

विवरण	*नोट संख्या*	*राशि रु.*
I. समता एवं देयताएँ		
1. गैर–चालू दायित्व		
(क) दीर्घकालीन ऋण	1	**10,00,000**

खातों की टिप्पणी–

विवरण	*राशि रु.*
1. दीर्घकालीन ऋण	
रक्षित बैंक कर्ज़	
(10,000, 10% ऋणपत्र प्रति रु. 100 का	**10,00,000**
संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप मे निर्गमन)	

द्वितीय विधि

संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में ऋणपत्रों के निर्गमन का अभिलेखन निम्न रोज़नामचा प्रविष्टियों के माध्यम से किया जाता है।

रोज़नामचा प्रविष्टियाँ

I. *10,00,000 रु. के बैंक कर्ज़ हेतु संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में 100 रु. प्रति से 10,000, 9% ऋणपत्रों का निर्गम हुआ।*

ऋणपत्र उचंती खाता	*नाम*	*10,00,000*	
9% ऋणपत्र खाते से			*10,00,000*

II. *बैंक ऋण के पूर्ण भुगतान पर 9% ऋणपत्रों का संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में रद्दीकरण हेतु ऋणपत्र उचंती खाता ऋणपत्रों की कटौती के रूप में तुलन–पत्र की दीर्घकालीन देयताओं की टिप्पणी में लिखा जाएगा। ऋण के भुगतान पर उपरोक्त प्रविष्टि को विपरीत प्रविष्टि द्वारा निरस्त (रद्द) किया जाता है।*

9% ऋणपत्र खाता	*नाम*	*10,00,000*	
ऋणपत्र उचंती खाते से			*10,00,000*

© NCERT not to be republished

....................को एक्स कंपनी का तुलन-पत्र (सारांश)

विवरण	*नोट संख्या*	*राशि* रु.
I. समता एवं देयताएँ		
1. गैर-चालू दायित्व		
दीर्घकालीन ऋण	1	10,00,000

खातों की टिप्पणी–

विवरण	रु.	*राशि* रु.
1. दीर्घकालीन ऋण		10,00,000
रक्षित बैंक कर्ज़		
(10,000, 9% ऋण		
प्रति 100 रु.	10,00,000	
घटाया– ऋणपत्र उचंती खाता)	10,00,000	—
		10,00,000

उदाहरण 14

एक कंपनी पंजाब नेशनल बैंक से 10,00,000 रु. का ऋण प्राप्त करती है और संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में 12,00,000 रु. के 100 रु. प्रति से 10% ऋणपत्रों को जारी करती है। बताएँ कि कंपनी की खाता पुस्तकों में ऋणपत्र का निर्गम व्यवहार किस प्रकार होगा।

हल

प्रथम विधि

तुलन-पत्र (सारांश)

विवरण	*नोट संख्या*	*राशि* रु.
I. समता एवं देयताएँ		
1. गैर-चालू दायित्व		
दीर्घकालीन ऋण	1	10,00,000

खातों की टिप्पणी–

विवरण	*राशि* रु.
1. दीर्घकालीन ऋण रक्षित बैंक कर्ज़ (12,000 10% ऋण प्रति 100 रु. का संपार्शिषक प्रतिभूति के रूप में निगर्मन)	10,00,000

द्वितीय विधि

रोज़नामचा प्रविष्टियाँ

तिथि	विवरण	ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	ऋणपत्र उचंती खाता नाम 10% ऋणपत्र खातों से		12,00,000	 12,00,000

तुलन-पत्र (सारांश)

विवरण	नोट संख्या	राशि रु.
I. समता एवं देयताएँ		
1. गैर-चालू दायित्व		
(क) दीर्घकालीन ऋण	1	10,00,000

खातों की टिप्पणी–

विवरण	रु.	राशि रु.
1. दीर्घकालीन ऋण		
पी.एन.बी. से रक्षित ऋण	12,00,000	10,00,000
12,000, 10% 100 रु. प्रति ऋणपत्र		
घटाया– ऋणपत्र उचंती खाता	12,00,000	—
		10,00,000

स्वयं करें

1. रघुबीर लिमिटेड ने 10,00,000 8% ऋणपत्र जारी किए जिन्हें निम्नानुसार निर्गमित किया गया–
   (1) 90% नकद पर विविध अभिकर्ताओं को 5,50,000
   (2) 2,00,000 रु. की मशीनरी के विक्रेता को उनके दावों की पुष्टि पर 2,00,000
   (3) 20,00,000 रु. के बैंक ऋणों हेतु प्राथमिक प्रतिभूति के रूप में 2,50,000
   जिसपर 22,50,000 मूल्य का व्यवसायिक परिसर रखा गया है।
   प्रथम (1) एवं द्वितीय (2) निर्गम 10 वर्ष की अवधि में सममूल्य पर मोचनीय हैं। आप बताएँ कि कंपनी के तुलन-पत्र को तैयार करते समय ऋणपत्र का निपटान कैसे करेंगे।
2. हसन लिमिटेड ने 40,00,000 रु. की प्राथमिक प्रतिभूति के विरुद्ध 30,00,000 ऋण प्राप्त किया और इसके साथ ही एक संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में 100 रु. प्रत्येक से 4,000, 6% ऋणपत्र जारी किए। इसके बाद कंपनी ने एक वर्ष बाद पुनः बैंक से प्राथमिक प्रतिभूति के रूप में संयंत्र के विरुद्ध

© NCERT not to be republished

50,00,000 रु. का ऋण प्राप्त किया और संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में 100 रु. प्रत्येक के 6,000, 6% ऋणपत्रों को जमा किया। कंपनी का तुलन-पत्र तैयार करें तथा आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

3. मेघनाथ लिमिटेड ने बैंक से 1,20,000 रु. ऋण के रूप में प्राप्त किए और 2 लाख रु. प्राथमिक प्रतिभूति की सुरक्षा के अतिरिक्त 100 रु. प्रत्येक के 1,400, 8% ऋणपत्रों के संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में जमा किया। दो माह बाद कंपनी ने पुन: 80,000 रु. का ऋण प्राप्त किया और संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में 100 रु. प्रत्येक के 1,000 8% ऋणपत्र जमा किए। रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें तथा कंपनी का ऋणपत्र तैयार करें।

2.8 ऋणपत्रों को निर्गमित करने की शर्तें

जब एक कंपनी ऋणपत्रों का निर्गमन करती है तो इनमें प्राय: वे शर्तें निहित होती हैं, जिन पर परिपवक्ता के समय ऋणपत्र मोचित किए गए। ऋणपत्रों के मोचन से आशय 'ऋणपत्र धारक को ऋणपत्र का परिशोध न करने के द्वारा ऋणपत्र खाते से दायित्व मुक्ति होती है।' ऋणपत्रों को सममूल्य पर या प्रीमियम पर मोचित किया जा सकता है।

निर्गम एवं मोचन के नियम एवं शर्तों को देखते हुए निम्नलिखित 6 परिस्थितियाँ समान्यत: व्यवहार में देखी जाती हैं–

(i) सममूल्य पर निर्गम एवं सममूल्य पर मोचनीय
(ii) बट्टे पर निर्गम एवं सममूल्य पर मोचनीय
(iii) प्रीमियम पर निर्गम एवं सममूल्य पर मोचनीय
(iv) सममूल्य पर निर्गम एवं प्रीमियम पर मोचनीय
(v) बट्टे पर निर्गम एवं प्रीमियम पर मोचनीय
(vi) प्रीमियम पर निर्गम एवं प्रीमियम पर मोचनीय

उपर्युक्त छह मामलों में ऋणपत्रों के निर्गम के लिए रोज़नामचा प्रविष्टियाँ निम्नवत् की जाएँगी–

1. सममूल्य पर निर्गम एवं सममूल्य पर मोचनीय

(क) बैंक खाता नाम
ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाते से
(आवेदन राशि की प्राप्ति)

(ख) ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाता नाम
ऋणपत्र खाते से
(ऋणपत्र के आबंटन)

2. बट्टे पर निर्गम एवं सममूल्य पर मोचनीय

(क) बैंक खाता नाम
ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाते से
(आवेदन राशि की प्राप्ति)

(ख) ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाता नाम
ऋणपत्रों के निर्गम पर बट्टा खाता नाम
ऋणपत्र खाते से
(बट्टे पर ऋणपत्र का आबंटन)

3. प्रीमियम पर निर्गम एवं सममूल्य पर मोचनीय

(क) बैंक खाता

ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाते से

(आवेदन राशि की प्राप्ति)

(ख) ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाता नाम

ऋणपत्र खाते से

प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से

(प्रीमियम पर ऋणपत्र का आबंटन)

4. सममूल्य पर जारी एवं प्रीमियम पर मोचनीय

(क) बैंक खाता नाम

ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाते से

(आवेदन राशि की प्राप्ति)

(ख) ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाता नाम

ऋणपत्रों के निर्गम पर हानि खाता नाम (ऋणपत्रों पर प्रीमियम सहित)

ऋणपत्र खाते से (ऋणपत्रों के अंकित मूल्य सहित)

ऋणपत्र के मोचन पर प्रीमियम खाते से (मोचन पर प्रीमियम सहित)

(ऋणपत्र पर ऋणपत्रों का आबंटन और प्रीमियम पर मोचन)

5. बट्टे पर निर्गम और प्रीमियम पर मोचन

बैंक खाता नाम

ऋणपत्र आवेदन और आबंटन खाते से

(आवेदन राशि प्राप्त)

ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाता नाम

ऋणपत्र के निर्गम पर हानि खाता नाम (निर्गम पर बट्टे और शोधन पर प्रीमियम)

ऋणपत्र खाते से (ऋणपत्र पर अंकित मूल्य सहित)

ऋणपत्र के मोचन पर प्रीमियम खाते से (मोचन पर प्रीमियम)

(ऋणपत्रों का बट्टे पर आबंटन और प्रीमियम पर मोचन)

6. प्रीमियम पर निर्गम तथा प्रीमियम पर मोचन

बैंक खाता नाम

ऋणपत्र आवेदन तथा आबंटन खाते से

(आवेदन राशि प्राप्त)

ऋणपत्र आवेदन तथा आबंटन खाता नाम

ऋणपत्र निर्गम पर हानि खाता नाम (मोचन पर प्रीमियम के साथ)

ऋणपत्र खाते से साधारण मूल्य के साथ ऋणपत्र

प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से (प्रीमियम के साथ निर्गम)

ऋणपत्र के मोचन पर प्रीमियम खाते से (प्रीमियम के साथ मोचन)

टिप्पणी– (1) जब ऋणपत्रों का प्रीमियम पर मोचन किया जाता है तो देय प्रीमियम की राशि को ऋणपत्र निर्गम पर हानि खाते के नाम पक्ष की ओर लिखते है। यहाँ पर ध्यान दिया जा सकता है कि जब ऋणपत्रों को बट्टे पर निर्गम एवं प्रीमियम के साथ मोचित किया जाता है, तब बट्टे की राशि को भी 'ऋणपत्र के निर्गम पर हानि' खाता के नाम पक्ष की ओर लिखा जाता है। यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य है कि जब ऋणपत्रों का निर्गम बट्टे पर किया जाता है तथा सममूल्य पर मोचित किया जाता है तब राशि सामान्यत: 'ऋणपत्र निर्गम पर बट्टा खाता' के नाम पक्ष की ओर लिखा जाता है।

(2) मोचन पर प्रीमियम कंपनी की भविष्य में देय देनदारी होती है। यह एक प्रावधान है और इसे शीर्षक "गैर-चालू दायित्व" में उप-शीर्षक "दीर्घकालीन ऋण" के अंतर्गत तब तक दर्शाया जाता है जब तक कि ऋणपत्रों को मोचन नहीं हो जाता है।

उदाहरण 15

निम्नलिखित के लिए रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दीजिए–

1. 100 रु. प्रत्येक पर 1,00,000 रु. के 9% ऋणपत्र सममूल्य पर निर्गमित एवं सममूल्य पर मोचनीय।
2. 100 रु. प्रत्येक पर 1,00,000 रु. के 9% ऋणपत्र 5% प्रीमियम पर निर्गमित एवं सममूल्य पर मोचनीय।
3. 100 रु. प्रत्येक पर 1,00,000 रु. के 9% ऋणपत्र 5% बट्टे पर निर्गमित एवं सममूल्य पर मोचनीय।
4. 100 रु. प्रत्येक पर 1,00,000 रु. के 9% ऋणपत्र सममूल्य पर निर्गमित एवं 5% प्रीमियम पर मोचनीय।
5. 100 रु. प्रत्येक पर 1,00,000 रु. के 9% ऋणपत्र 5% बट्टे पर निर्गमित तथा 5% प्रीमियम पर मोचनीय।
6. 100 रु. प्रत्येक पर 1,00,000 रु. के 9% ऋणपत्र 5% प्रीमियम पर निर्गमित एवं 5% प्रीमियम पर मोचनीय।

हल

रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
1	बैंक खाता नाम 9% ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाते से (ऋणपत्र आवेदन राशि प्राप्त की गई)		1,00,000	1,00,000
	ऋणपत्र आवेदन तथा आबंटन खाता नाम 9% ऋणपत्र खाते से (आवेदन राशि ऋणपत्र खाता में हस्तांतरित)		1,00,000	1,00,000

2	बैंक खाता नाम		1,05,000	
	9% ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाते से			1,05,000
	(ऋणपत्र आवेदन राशि प्राप्त की गई)			
	ऋणपत्र आवेदन तथा आबंटन खाता नाम		1,05,000	
	9% ऋणपत्र खाते से			1,00,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से			5,000
	(ऋणपत्र आवेदन राशि को ऋणपत्र एवं प्रतिभूति प्रीमियम खाते में हस्तांतरित किया गया)			
3	बैंक खाता नाम		95,000	
	9% ऋणपत्र आवेदन तथा आबंटन खाते से			95,000
	(ऋणपत्र आवेदन राशि प्राप्त की गई)			
	9% ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाता नाम		95,000	
	ऋणपत्र निर्गम पर बट्टा खाता नाम		5,000	
	9% ऋणपत्र खाते			1,00,000
	(ऋणपत्र आवेदन राशि का ऋणपत्र खाता में हस्तांतरण)			
4	बैंक खाता नाम		1,00,000	
	9% ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाते से			1,00,000
	(ऋणपत्र आवेदन तथा राशि प्राप्त की)			
	ऋणपत्र आवेदन तथा आबंटन खाता नाम		1,00,000	
	ऋणपत्र के निर्गम पर हानि खाता नाम		5,000	
	9% ऋणपत्र खाते से			1,00,000
	ऋणपत्र के मोचन पर प्रीमियम खाते से			5,000
	(ऋणपत्र आवेदन राशि का ऋणपत्र खाते में हस्तांतरण)			
5	बैंक खाता नाम		95,000	
	9% ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाते से			95,000
	(ऋणपत्र आबंटन राशि प्राप्त की गई)			
	ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाता नाम		95,000	
	ऋणपत्र के निर्गम पर हानि खाता नाम		10,000	
	9% ऋणपत्र खाते से			1,00,000
	ऋणपत्र के मोचन पर प्रीमियम खाते से			5,000
	(ऋणपत्र आबंटन राशि का ऋणपत्र प्रीमियम पर ऋणपत्र खाते में हस्तांतरण)			
6	बैंक खाता नाम		1,05,000	
	9% ऋणपत्र आवेदन तथा आबंटन खाते से			1,05,000
	(ऋणपत्र आवेदन राशि प्राप्त की गई)			

© NCERT not to be republished

	ऋणपत्र आवेदन तथा आबंटन खाता नाम		1,05,000	
	ऋणपत्र के निर्गम पर हानि खाता नाम		5,000	
	9% ऋणपत्र खाते से			1,00,000
	ऋणपत्र मोचन पर प्रीमियम खाते से			5,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते से			5,000
	(ऋणपत्र आवेदन राशि का ऋणपत्र खाते में हस्तांतरण)			

उदाहरण 16

एक्स लिमिटेड की खाता पुस्तकों में ऋणपत्र के निर्गम से संबंधित रोज़नामचा प्रविष्टियाँ कीजिए और यह भी दर्शाएँ कि निम्न मामले तुलन-पत्र में किस प्रकार दर्शाए जाएँगे।

(क) 1000 रु. प्रत्येक के120, 8% ऋणपत्र 5% बट्टे पर निर्गमित एवं सममूल्य पर मोचनीय है। प्रतिभूति प्रीमियम संचय का शेष 10,000 रु. है।

(ख) 1000 रु. प्रत्येक के 150, 7% ऋणपत्र 5% बट्टे पर निर्गमित तथा 10% प्रीमियम पर मोचनीय प्रतिभूति प्रीमियम संचय का शेष 20,000 रु. है।

(ग) 1000 रु. प्रत्येक के 80, 9% ऋणपत्र का 5% प्रीमियम पर निर्गमन।

(घ) 100 रु. प्रत्येक के अन्य 400, 8% ऋणपत्र संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में 40,000 ऋण पर निर्गमित।

हल

(क)

एक्स लिमिटेड की पुस्तकों में
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	बैंक खाता नाम		1,14,000	
	ऋणपत्र आवेदन और आबंटन खाते से			1,14,000
	(ऋणपत्र आवेदन राशि प्राप्त की गई)			
	ऋणपत्र आवेदन एवं आवंटन खाता नाम		1,14,000	
	ऋणपत्र निर्गम पर बट्टा खाता		6,000	
	8% ऋणपत्र खाते से			1,20,000
	(ऋणपत्र आवेदन धनराशि ऋणपत्र आवेदन खाते में हस्तांतरित)			
	प्रतिभूति प्रीमियम संचय नाम		8,000	
	ऋणपत्र निर्गम पर हानि खाते से			8,000
	(ऋणपत्र पर हानि का अपलेखन)			

© NCERT not to be republished

खातों की टिप्पणी–

विवरण	राशि रु.
1. दीर्घकालीन ऋण 120, 8% ऋणपत्र 1,000 रु. प्रत्येक	***1,20,000***
2. अन्य गैर–चालू परिसंपत्तियाँ ऋणपत्र के निर्गम पर बट्टा	***48,000***
3. रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक बैंक में रोकड़	***1,14,000***
4. अन्य चालू परिसंपत्तियाँ ऋणपत्रों के निर्गम पर बट्टा	***1,200***

टिप्पणी– ऋणपत्रों के निर्गम पर बट्टे को 5 वर्षों में घटाया जाएगा ये मानते हुए कि ऋणपत्र पाँच वर्षों के बाद शोधनीय हैं।

(ख)

एक्स लिमिटेड की पुस्तकों में
रोज़नामचा

तिथि	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	बैंक खाता	नाम		1,42,500	
	ऋणपत्र आवेदन और आबंटन खाते से				1,42,500
	(ऋणपत्र आवेदन धनराशि प्राप्त की गई)				
	ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाता	नाम		1,42,500	
	ऋणपत्र निर्गम पर हानि खाता	नाम		22,500	
	8% ऋणपत्र खाते से				1,50,00
	ऋणपत्र मोचन पर प्रीमियम खाते से				15,000
	(ऋणपत्र आवेदन धनराशि ऋणपत्र आवेदन खाते में हस्तांतरित)				
	प्रतिभूति प्रीमियम संचय	नाम		20,000	
	लाभ व हानि का विवरण	नाम		2,5000	
	ऋणपत्र निर्गम पर हानि खाते से				22,500

(ग)

एक्स लिमिटेड की पुस्तकों में
रोज़नामचा

तिथि	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	बैंक खाता	नाम		84,000	
	ऋणपत्र आवेदन और आबंटन खाते से				84,000
	(ऋणपत्र आवेदन धनराशि प्राप्त की गई)				
	ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाता	नाम		84,000	
	8% ऋणपत्र खाते से				80,000
	प्रतिभूति आरक्षित खाते से				4,000
	(ऋणपत्र आवेदन धनराशि ऋणपत्र खाते और प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते में हस्तांतरित)				

(घ)

रोज़नामचा

तिथि	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	ऋणपत्र उचंती खाता	नाम		40,000	
	8% ऋणपत्र खाते से				40,000
	100 रु. प्रत्येक पर 400, 8% ऋणपत्रों का निर्गम 40,000 रु. ऋण के विपरीत संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में)				

स्वयं करें

1. निम्नलिखित स्थितियों के आधार पर **नीना लिमिटेड** ने 100 रु. प्रत्येक से 50,000, 10% ऋण निर्गमित किए–
   क. ऋणपत्रों का सममूल्य पर निर्गम एवं सममूल्य पर मोचनीय।
   ख. 5% बट्टे पर निर्गमित ऋणपत्र तथा सममूल्य पर मोचनीय।
   ग. ऋणपत्रों का 10% प्रीमियम पर निर्गमन तथा सममूल्य पर मोचनीय।
   घ. ऋणपत्रों का सममूल्य पर निर्गमन तथा 10% प्रीमियम पर मोचनीय।
   च. ऋणपत्रों का 5% बट्टे पर निर्गमन तथा 10% की प्रीमियम पर मोचनीय।
   छ. 6% प्रीमियम पर ऋणपत्रों का निर्गमन तथा 4% प्रीमियम पर मोचनीय।
   उपर्युक्त प्रकरण के लिए ऋणपत्र के **निर्गमन** व **मोचन** के समय आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें।

© NCERT not to be republished

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रकरण के लिए आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें–
   क. 100 रु. प्रत्येक 27,000, 7% ऋणपत्र निर्गमित हुए जो सममूल्य पर मोचनीय हैं।
   ख. 100 रु. प्रत्येक के 25,000, 7% ऋणपत्र निर्गमित हुए जो 4% प्रीमियम पर मोचनीय हैं।
   ग. 100 रु. के 20,000, 7% ऋणपत्र 5% बट्टे पर निर्गमित हुए और सममूल्य पर मोचनीय हैं।
   घ. 100 रु. प्रत्येक के 30,000,7% ऋणपत्र 5% बट्टे पर निर्गमित हुए तथा 2½µ प्रीमियम पर मोचनीय हैं।
   च. 100 रु. प्रत्येक के 35,000,7% ऋणपत्र 4% प्रीमियम पर निर्गमित हुए एवं 5% प्रीमियम पर ही मोचनीय है।

2.9 ऋणपत्रों पर ब्याज

जब एक कंपनी ऋणपत्र निर्गमित करती है तो वह एक बाध्यता के अंतर्गत आती है कि आवधिक तौर पर (जैसे अर्द्ध–वार्षिक) स्थिर ब्याज का भुगतान करती रहे, बशर्ते कि ऋणपत्र का शोधन न हो। यह प्रतिशत उस ऋणपत्र के नाम का हिस्सा होते हैं जैसे कि 8% ऋणपत्र, 10% ऋणपत्र आदि और देय ब्याज का परिकलन ऋणपत्र के साधारण मूल्य पर होता है।

ऋणपत्रों में दिए जाने वाला ब्याज कंपनी के लाभ के प्रति प्रभार होता है और उसे निश्चित रूप से चुकाया जाता है फिर चाहे कंपनी को लाभ हुआ है या नहीं। आयकर अधिनियम 1961 के अनुसार "एक कंपनी को निश्चित रूप से ऋणपत्रों पर देय ब्याज से आयकर काटना चाहिए यदि वह निर्धारित सीमा से अधिक बनता है।" इसे स्रोत पर आय की कटौती अर्थात 'टी डी एस' (TDS) कहा जाता है और इसे कर प्राधिकरण के पास जमा कराया जाता है। बेशक ऋणपत्र धारक उस राशि को अपने बकाया करों के विरुद्ध समायोजित कर सकते हैं।

2.9.1 लेखांकन व्यवहार

ऋणपत्रों के ब्याज के संबंध में एक कंपनी की खाता पुस्तकों में निम्नवत् रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित की जाती हैं–

1. *जब ब्याज बकाया हो*
   ऋणपत्र ब्याज खाता — नाम
   आयकर देय खाते से
   ऋणपत्र धारक खाते से
   (ऋणपत्रों पर बकाया ब्याज एवं स्रोत पर कर की कटौती)
2. *ऋणपत्र धारकों हेतु ब्याज के भुगतान के लिए*
   ऋण पत्र धारक खाता — नाम
   बैंक खाते से
   (अंश धारकों को ब्याज भुगतान की राशि)
3. *लाभ एवं हानि में ऋणपत्र ब्याज खाते का हस्तांतरण*
   लाभ एवं हानि विवरण — नाम
   ऋणपत्र ब्याज खाते से
   (लाभ व हानि विविरण ऋणपत्र ब्याज का हस्तांतरण)

Reprint 2026-27

4. *कर की कटौती और भुगतान पर*

आयकर देय खाता नाम

बैंक खाते से

(ऋणपत्र के ब्याज पर कर का भुगतान)

उदाहरण 17

1 अप्रैल , 2016 को ए लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 2,000,10% ऋणपत्र 10% बट्टे पर निर्गमित किए जो 10% प्रीमियम पर मोचनीय थे।

ऋणपत्र के निर्गमन तथा 31 मार्च, 2017 की समाप्त अवधि के लिए ऋणपत्र ब्याज से संबंधित रोज़नामचा की प्रविष्टियों को यह मानकर दर्शाएँ कि ब्याज अर्ध-वार्षिक प्रदत्त किया गया, जिसमें आधे का भुगतान 30 सितंबर, 2016 को तथा शेष 31 मार्च, 2017 को किया गया। यहाँ कर की दर 10% थी। ए लिमिटेड अपने लेखांकन वर्ष हेतु कैलेंडर वर्ष का अनुपालन करती है।

हल

एक्स लिमिटेड की पुस्तकों में
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
2016 1 अप्रैल	बैंक खाता नाम 10% ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाते से (2,000, 10% ऋणपत्रों पर आवेदन राशि प्राप्त की गई)		1,80,000	 1,80,000
1 अप्रैल	10% ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाता नाम ऋणपत्र के निर्गम पर हानि खाता नाम 10% ऋणपत्र खाते से ऋणपत्र के मोचन पर प्रीमियम खाते से (10% बट्टे पर ऋणपत्र का आबंटन तथा 10% के प्रीमियम पर मोचनीय)		1,80,000 40,000	 2,00,000 20,000
30 सितं.	10% ऋणपत्र ब्याज खाता नाम ऋणपत्र धारक खाते से आयकर देय खाते से (6 माह के लिए ब्याज बकाया तथा स्रोत पर आयकर की कटौती)		10,000	 9,000 1,000
30 सितं.	आयकर देय खाता नाम बैंक खाते से (स्रोत पर आयकर का भुगतान)		1,000	 100

2017 30 सितं.	ऋणपत्र अंश धारक खाता नाम बैंक खाते से (ब्याज का भुगतान)		9,000	 9,000
31 मार्च	ऋणपत्र ब्याज खाता नाम ऋणपत्र धारक खाते से आयकर देय खाते से (6 माह का ब्याज बकाया एवं कर स्रोत पर काटा गया)		10,000	 9,000 1,000
31 मार्च	ऋणपत्र धारक खाता नाम बैंक खाते से (ब्याज का भुगतान)		9,000	 9,000
31 मार्च	आयकर देय खाता नाम बैंक खाते से (सरकार के लिए स्रोत पर काटे गए कर का भुगतान)		1,000	 1,000
31 मार्च	लाभ व हानि विवरण नाम ऋणपत्र ब्याज खाते से (ऋणपत्र ब्याज लाभ व हानि विवरण में हस्तांतरित)		20,000	 20,000

स्वयं करें

1. दिवाकर इंटरप्राइज़ेज़ ने 1 अप्रैल 2016 को 10,00,000, 6% ऋणपत्रों को निर्गमित किया। ब्याज का भुगतान 30 सितंबर 2016 तथा 31 मार्च 2017 को किया गया।
   यह मानकर आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें कि ब्याज राशि पर कर की कटौती (टीडीएस) 10% की दर से की गई।
2. लेज़र इंडिया ने 100 रु. प्रति ऋणपत्र पर 7,00,000, 8% ऋणपत्र निर्गमित किए। इन ऋणपत्रों हेतु ब्याज अर्धवार्षिक 30 सितंबर तथा 31 मार्च को प्रतिवर्ष के हिसाब से दिया। यह मानकर आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें कि ब्याज राशि पर कर की कटौती (टी डी एस) 10% की दर से की गई।

2.10 ऋण पत्र निर्गम पर बट्टा/हानि का अपलेखन

ऋणपत्र निर्गम पर बट्टा अथवा हानि एक पूंजीगत् हानि है और इस राशि को निर्गम वर्ष के दौरान ही अपलिखित किया जाना आवश्यक है। इस प्रकार के बट्टे अथवा हानि का अपलेखन प्रतिभूति प्रीमियम संचय से किया जाता है (खण्ड-52 (2))। यदि पूंजीगत लाभ विद्यमान नहीं है या पर्याप्त नहीं हैं तो ऐसी स्थिति में वर्ष के आगम लाभों में से अपलेखन किया जाता है। रोजनामचा प्रविष्टी इस प्रकार है :

प्रतिभूति प्रीमियम संचय खाता नाम (यदि शेष उपलब्ध है)
लाभ व हानि विवरण नाम
ऋणपत्रों पर बट्टा/हानि खाते से
(ऋणपत्र निर्गम पर बट्टा/हानि का अपलेखन)

© NCERT not to be republished

उदाहरण के लिए, जुलाई 01, 2019 को कंपनी ने 15,000, 9% ऋणपत्र 100 रु. प्रति ऋणपत्र को 10% बट्टे पर निर्गमित किया। प्रतिभूति प्रीमियम संचय का शेष 1,00,000 रु. है। 1,50,000 रु. की बट्टे की राशि के अपलेखन के लिए रोजनामचा प्रविष्टी इस प्रकार होगी :

प्रतिभूति प्रीमियम संचय	नाम	1,00,000	
लाभ व हानि विवरण	नाम	50,000	
ऋणपत्र निर्गम पर बट्टा खाते से			1,50,000
(ऋण निर्गम पर बट्टा अपलिखित)			

उदाहरण 18

रोहित लिमिटेड ने 01, जुलाई 2019, 100 रु. प्रति ऋणपत्र पर 50,000, 8% ऋणपत्र 9% बट्टे पर निर्गमित किये। प्रतिभूति प्रीमियम संचय का शेष 5,00,000 रु. है। यदि ऋणपत्र 5 वर्ष पश्चात् 7% प्रीमियम पर शोधनीय है तो बट्टा/हानि को अपलिखित करते हुए ऋणपत्र निर्गम संबंधी रोजनामचा प्रविष्टियां दें।

हल

रोज़नामचा

तिथि 2019	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
जुलाई 1	बैंक खाता नाम		45,50,000	
	ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाते से			45,50,000
	(ऋण पत्र आवेदन राशि प्राप्त की गई)			
जुलाई 1	ऋणपत्र आवेदन और आबंटन खाता नाम		45,50,000	
	ऋणपत्र निर्गम पर हानि खाता नाम		8,00,000	
	8% ऋणपत्र खाते से			50,00,000
	ऋणपत्र शोधन पर प्रीमियम खाते से			3,50,000
	(आबंटन पर ऋणपत्र आवेदन राशि हस्तांतरित)			
जुलाई 1	प्रतिभूति प्रीमियम संचय नाम		5,00,000	
	लाभ व हानि विवरण		3,00,000	
	(ऋणपत्र निर्गम पर हानि अपलिखित)			8,00,000

उदाहरण–19

01, अक्टूबर 2019 को फिज़ा लिमिटेड ने 20 रु. प्रति ऋणपत्र के 9% ऋणपत्रों को 6 रु. बट्टे पर निर्गमित किया। प्रतिभूति प्रीमियम संचय खाते का शेष 1,00,000 रु. है। ऋणपत्र निर्गम पर बट्टे की राशि को अपलिखित करने के लिए रोजनामचा प्रविष्टि दें।

हल

रोज़नामचा

तिथि 2019	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
अक्टूबर 01	बैंक खाता	नाम		14,10,000	
	ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाते से				14,10,000
	(ऋण पत्र आवेदन राष्ठि प्राप्त की गई)				
अक्टूबर 01	ऋणपत्र आवेदन और आबंटन खाता	नाम		14,10,000	
	ऋणपत्र निर्गम पर बट्टा खाता	नाम		90,000	
	9% ऋणपत्र खाते से				15,00,000
	(ऋणपत्र आवेदन राशि का हस्तांतरण)				
अक्टूबर 01	प्रतिभूति प्रीमियम संचय खाता	नाम		90,000	
	ऋणपत्र निर्गम पर बट्टा खाते से				90,000
	(ऋणपत्र निर्गम पर बट्टे का अपलेखन)				

उदाहरण 20

01, मई 2019 को अमृत लिमिटेड ने 100 रु. प्रति ऋणपत्र के 8: ऋणपत्रों को 6 रु. बट्टे पर निर्गम 10: बट्टे पर किया जो 10: प्रीमियम पर शोधनीय थे। सभी ऋणपत्र पूर्णत: अभिदत्त रहे और संपूर्ण राशि प्राप्त की गई। कंपनी के प्रतिभूति प्रीमियम संचय में 70,000 रु. का शेष उपलब्ध था। जनवरी 01, 2020 को कंपनी ने 10 रु. प्रति अंश के 1,00,000 समता अंशों का निर्गम 1 रु. प्रति अंश प्रीमियम पर किया। आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियां दें।

हल

रोज़नामचा

तिथि 2019	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
मई 01	बैंक खाता	नाम		9,00,000	
	ऋणपत्र आवेदन एवं आबंटन खाते से				9,00,000
	(ऋण पत्र आवेदन राशि प्राप्त की गई)				

© NCERT not to be republished

	ऋणपत्र आवेदन और आबंटन खाता	नाम		9,00,000	
	ऋणपत्र निर्गम पर हानि खाता	नाम		2,00,000	
	8% ऋणपत्र खाते से				10,00,000
	ऋणपत्र शोधन प्रमियम खाते से				1,00,000
	(ऋणपत्रों का आबंटन और समस्त राशि का हस्तांतरण)				
जनवरी 01	बैंक खाता	नाम		11,00,000	
	अंश आवेदन एवं आवंटन खाते से				11,00,000
	(अंश आवेदन राशि प्राप्त की गई)				
	अंश आवेदन और आबंटन खाता	नाम		11,00,000	
	अंश पूंजी खाते से				10,00,000
	प्रतिभूति प्रीमियम संचय से				1,00,000
	(अंशों का आवंटन और प्राप्त धनराशि का समायोजन)				
मार्च 01	प्रतिभूति प्रीमियम संचय	नाम		1,70,000	
	लाभ व हानि विवरण			30,000	
	ऋणपत्र निर्गम पर हानि खाते से				2,00,000
	(प्रतिभूति प्रीमियम संचय और लाभ व हानि विवरण से हानि का अपलेखन)				

स्वयं करें

1. एक्स लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 2,000, 10% ऋणपत्रों को 8% बट्टे पर 1 अप्रैल, 2014 को निर्गमित किए जो सममूल्य पर चार वर्षों में प्रतिवर्ष आहरण के द्वारा मोचनीय थे। कंपनी के पास प्रतिभूति प्रीमियम का 30,000 रु. शेष उपलब्ध हैं। प्रतिभूति प्रीमियम संचय से अपलिखित की गई राशि ज्ञात करें।
2. ज़ेड लिमिटेड ने 50 रु. प्रत्येक के 15,00,000, 10% ऋणपत्र निर्गमित किए जिन्हें 10% प्रीमियम के साथ 20 रु. आवेदन पर तथा शेष राशि आबंटन पर भुगतान करनी थी। यह ऋणपत्र 6 वर्ष बाद मोचनीय है। सभी बकाया राशि की माँग की गई और यथावत सभी राशि प्राप्त की गई। आवश्यक प्रविष्टियाँ अभिलेखित करें जबकि प्रीमियम राशि भी सम्मिलित हो
   (i) आवेदन राशि में
   (ii) आबंटन राशि में
3. ज़ेड लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 5,000, 10% ऋणपत्रों को 10% बट्टे के साथ 1.1.2014 में निर्गमित किए। ऋणपत्रों को प्रतिवर्ष लॉटरी प्रक्रिया द्वारा मोचित किया जाना था। प्रतिवर्ष, 31.03.2015 के प्रारंभ से 1,000 ऋणपत्र मोचित करने थे। आवश्यक प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें तथा उसमें ऋणपत्रों के ब्याज के भुगतान एवं बट्टे को अपलिखित को भी शामिल करें। ब्याज का भुगतान प्रति वर्ष 30 सितंबर तथा 31 मार्च को करना है। ज़ेड लि. का पुस्तक खाता 31 मार्च को बंद होता है।

© NCERT not to be republished

4. एम लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 10,000, 8% ऋणपत्रों को 10% प्रीमियम पर 1.1.2016 को निर्गमित किए। इसने 2,50,000 रु. की विविध परिसंपत्तियाँ खरीदीं तथा 60,000 देनदारियों को भी हाथ में लिया तथा इसके लिए विक्रेता ने के 8% ऋणपत्रों को 5% बट्टे पर निर्गमित किया। इसी तिथि पर बैंक से 1,00,000 रु का ऋण लिया एवं 8% ऋणपत्र संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में जारी किए। एम लिमिटेड की खाता पुस्तकों हेतु रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें तथा 31.03.2017 को तुलन-पत्र तैयार करें तथा ब्याज की उपेक्षा करें।

5. 1.4.2016 को फ़ास्ट कंप्यूटर ने 100 रु. प्रत्येक के 20,00,000, 6% ऋणपत्रों को 4% बट्टे के साथ जारी किया जो तीन वर्ष बाद 5% प्रीमियम पर मोचनीय हैं। राशि का भुगतान निम्नवत् देय है–
आवेदन पर 50 रु. प्रति ऋणपत्र।
शेष आबंटन पर देय
ऋणपत्र निर्गम पर आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलेखित करें।

6. 1.4.2016 को डी लिमिटेड ने 2,00,00 रु. मूल्य की ई लिमिटेड से मशीनरी खरीदीं। उसे 50,000रु. का तत्काल भुगतान किया गया शेष राशि के लिए डी लिमिटेड ने 1,60,000 रु. के 12% ऋणपत्र जारी किए। डी लिमिडेड की खाता पुस्तकों में डालने के लिए लेन देन के बारे में आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलेखित करें।

स्वयं जाँचिए 1

बताएँ कि निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत

1. ऋणपत्र स्वामित्व पूँजी का एक हिस्सा है।
2. ऋणपत्रों पर दिए जाने वाले ब्याज का भुगतान कंपनी के लाभ से किया जाता है।
3. ऋणपत्रों को अंकित मूल्य के 10% से अधिक बट्टे के साथ निर्गमित नहीं किया जा सकता है।
4. मोचनीय ऋणपत्र वे ऋणपत्र हैं जो कि एक विशिष्ट अवधि की समाप्ति पर देय होते हैं।
5. स्थायी ऋणपत्रों को अमोचनीय ऋणपत्रों के नाम से भी जानते हैं।
6. ऋणपत्रों को अंशों में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।
7. ऋणपत्रों को एक प्रीमियम के साथ निर्गमित नहीं किया जा सकता है।
8. एक संपार्श्विक प्रतिभूति एक सहायक प्रतिभूति होती है।
9. ऋणपत्रों को प्रीमियम पर निर्गमित एवं सममूल्य पर मोचित नहीं कर सकते हैं।
10. ऋणपत्र निर्गम में हानि (खाता) एक आगम हानि है।
11. ऋणपत्र मोचन पर प्रीमियम खाता, तुलन-पत्र में प्रतिभूति प्रीमियम के अंतर्गत दर्शाया जाता है।

स्वयं करें

1. एक्स लिमिटेड ने 1 अपैल 2016 को 8,000, 10% ऋणपत्र रु. 100 प्रत्येक को 5% प्रीमियम पर मोचन करने का निर्णय किया। लाभ-हानि विवरण मे 9,00,000 रु. अधिशेष हैं। कंपनी हर वर्ष 31 मार्च को अपनी पुस्तक खाता बंद करती है। उपरोक्त ऋणपत्रों के मोचन की क्या रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित की जाएँगी।

© NCERT not to be republished

2. जी लिमिटेड ने 1 अप्रैल 2013 को 5,00,000, 12% ऋणपत्र रु. 100 प्रत्येक को सममूल्य पर निगर्मित किए जो कि 1 जुलाई 2017 को मोचनीय हैं। कंपनी को 6,00,000 ऋणपत्र के आवेदन प्राप्त हुए और सभी प्रार्थनाकर्ताओं को आनुपातिक आधार पर आबंटन किया गया। देय तिथि पर ऋणपत्रों का मोचन किया गया। मोचन से पूर्व कितनी राशि से ऋणपत्र मोचन आरक्षित खाता बनाया जाएगा। ऋणपत्रों के निर्गम एवं मोचन से संबधित रोज़नामचा प्रविष्टियाँ कीजिए। स्रोत पर कर कटौती पर ध्यान नहीं देना है।

इस अध्याय में प्रयुक्त शब्द

1. ऋणपत्र
2. बंध-पत्र
3. बंधक ऋणपत्र
4. स्थायी ऋणपत्र
5. शून्य कूपन दर ऋणपत्र
6. विशिष्ट कूपन दर ऋणपत्र
7. पंजीकृत ऋणपत्र
8. वाहक ऋणपत्र
9. प्रभार
10. स्थिर प्रभार
21. चल प्रभार
22. प्रथम प्रभार
23. परिपक्वता तिथि
11. मूल/मूल्य
12. ऋणपत्र निर्गम पर हानि बट्टा
13. क्रय प्रतिफल
14. ऋणपत्र का मोचन
15. लाटरी द्वारा निकालने पर
16. स्वयं के ऋणपत्र
17. पूँजी में से मोचन
18. लाभों से मोचन
19. परिवर्तनीय ऋणपत्रों का मोचन
20. ऋणपत्र निक्षेप निधि
24. संपार्श्विक प्रतिभूति
25. द्वितीय प्रभार
26. खुले बाज़ार से ऋणपत्रों का क्रय

सारांश

ऋणपत्र– "ऋणपत्र कर्ज़ या ऋण की अभिस्वीकृति या अभिज्ञापन है। यह एक ऋण पूँजी है जो कंपनी द्वारा जनता से उगाही जाती है। ऐसी लिखित स्वीकृति के धारक को ऋणपत्र धारक कहा जाता है।"

बंध-पत्र (बॉड)– बंधपत्र विषय-वस्तु एवं प्रकृति में ऋणपत्र के समान ही होता है इन दोनों के बीच अंतर केवल इतना है कि इनके निर्मम की स्थितियाँ निम्न हैं अर्थात् बंध-पत्रों को बिना किसी पूर्व निर्धारित ब्याज करके निर्गमित किया जा सकता है जैसा कि डीप डिस्काउंट बंध-पत्रों के मामले में होता है।

प्रभार– "प्रभार न्यास विलेख के अंतर्गत देनदारियों को पूरित एक ऋण भार होता है जिसके तहत् कंपनी किसी विशिष्ट भाग को बंधक रखने पर सहमत होती है।" प्रथम प्रभार में ऋण की वापसी परिसंपत्तियों की निवल मूल्य पर वसूली जाती है। प्रथम प्रभार धारकों के भुगतान के पश्चात् ही द्वितीय प्रभार धारकों को भुगतान दिया जाता है।

ऋणपत्र के प्रकार– ऋणपत्र विभिन्न प्रकार के होते हैं जैसे कि 'सुरक्षित एवं असुरक्षित' ऋणपत्र, 'मोचनीय एवं स्थायी' ऋणपत्र, 'परिवर्तनीय एवं अपरिवर्तनीय' ऋणपत्र, 'शून्य दर एवं विशिष्ट' कूपन पर, 'पंजीकृत एवं वाहक' ऋणपत्र।

ऋणपत्रों का निर्गमन– सममूल्य पर निर्गमित ऋणपत्र उन्हें कहा जाता है "जब उन पर संकलित की गई राशि अंकित मूल्य के समान होती है।" यदि निर्गम मूल्य साधारण या अंकित मूल्य से अधिक होती है। इसे एक 'प्रीमियम पर निर्गम' कहा जाता है। यदि निर्गम का मूल्य साधारण या अंकित मूल्य से कम होता है तो उसे 'बट्टे पर निर्गमन' कहा जाता

है। प्रीमियम के रूप में प्राप्त की गई राशि 'प्रतिभूति प्रीमियम खाते' में जमा की जाती है जबकि बट्टे की राशि को "निर्गम पर बट्टे/हानि" में नामे किया जाता है जिसे एक समयावधि के दौरान अपलिखित किया जाता है।

रोकड़ के अतिरिक्त ऋणपत्र का निर्गम– कई बार एक ऋणपत्र को विक्रेता या स्वताधिकार एकस्व के आपूरक या बैंकिंक संपदा अधिकारों के हस्तारंण पर रोकड़ के रूप में राशि प्राप्त किए बिना ही अधिमान आधार पर ऋणपत्र निर्गमित किए जाते हैं।

क्रय प्रतिफल– क्रय प्रतिफल राशि है "जो एक कंपनी प्रतिफ़ल के रूप में परिसंपत्ति/व्यवसायिक फर्म के क्रय पर विक्रेता/विक्रय कंपनी को देती है।"

संपार्श्विक प्रतिभूति– प्राथमिक प्रतिभूति के अलावा कोई अतिरिक्त या सहायक प्रतिभूति 'संपाश्र्विक प्रतिभूति' कहलाती है।

ऋणपत्र का मोचन– इसका तात्पर्य है कि "ऋणपत्र धारकों को ऋणपत्र के परिशोधन (भुगतान वापसी) द्वारा ऋणपत्र/बंध–पत्र के खातों पर देनदारियों से छुटकारा या मुक्ति प्राप्त होती है।" सामान्यतः ऋणपत्र का मोचन अवधि की समाप्ति पर होता है जिन पर उन्हें निर्गमित किया गया था। (वैसे यह निर्गम के नियम एवं शर्तों पर निर्भर होता है।)

अभ्यास हेतु प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. एक ऋणपत्र से क्या तात्पर्य है?
2. एक वाहक ऋणपत्र से आप क्या समझते हैं?
3. 'एक संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमित' ऋणपत्र का अर्थ बताइए।
4. 'रोकड़ के अलावा प्रतिफ़ल हेतु ऋणपत्र का निर्गम' से क्या तात्पर्य है?
5. 'बट्टे पर ऋणपत्र का निर्गम तथा प्रीमियम पर मोचनीय' से क्या तात्पर्य है?
6. पूँजी आरक्षित क्या है?
7. 'अमोचनीय ऋणपत्र' से क्या तात्पर्य है?
8. 'परिवर्तनीय ऋणपत्र' क्या है?
9. 'बंधक ऋणपत्र' से क्या तात्पर्य है?
10. 'ऋणपत्र के निर्गम पर बट्टा' क्या होता है?
11. 'ऋणपत्र के मोचन पर प्रीमियम' का क्या अर्थ है?
12. 'ऋणपत्र' पत्र 'अंश' से भिन्न क्यों होते हैं, दो अंतर बताइए?
13. 'ऋणपत्र का मोचन' से क्या तात्पर्य है?
14. 'परिवर्तनीयता के आधार ऋणपत्र का मोचन' से क्या तात्पर्य है?
15. 'ऋणपत्र के मोचन पर प्रीमियम' से आप कैसे निपटान करेंगे?
16. 'खुले बाज़ार से क्रय' द्वारा ऋणपत्र के मोचन से क्या तात्पर्य है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. एक ऋणपत्र से क्या तात्पर्य है? विभिन्न प्रकार के ऋणपत्रों की व्याख्या कीजिए?
2. ऋणपत्र एवं अंश के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए। ऋणपत्र को एक कर्ज़ के रूप में क्यों जाना जाता है, व्याख्या कीजिए।

© NCERT not to be republished

3. 'संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमित ऋणपत्र' के तात्पर्य का वर्णन कीजिए। खाता पुस्तकों में ऋणपत्र के निर्गम हेतु लेखांकन व्यवहार बताएँ।
4. ऋणपत्रों के मोचन को ध्यान में रखते हुए ऋणपत्र निर्गम की विभिन्न शर्तों की व्याख्या कीजिए।?
5. क्या कंपनी खुले बाज़ार से स्वयं के ऋणपत्र क्रय कर सकती है? व्याख्या कीजिए।
6. ऋणपत्र की परिवर्तनीयता' से क्या तात्पर्य है, ऐसी परिवर्तनीयता की विधियों का वर्णन कीजिए।

संख्यात्मक प्रश्न

1. जी लिमिटेड ने 50 रु. प्रत्येक के 75,00,000, 5% ऋणों को सममूल्य पर निर्गमित किया जिसमें 15 रु. आवेदन पत्र पर शेष 35 रु. आबंटन पर देय हैं। यह निर्गम की तिथि से सात वर्ष बाद मोचनीय है। कंपनी की खाता पुस्तकों के लिए आवश्यक प्रविष्टियाँ अभिलिखित करें।
2. वाई लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 2,000, 5% ऋणपत्र निर्गमित किए जिनका निम्नवत भुगतान करना है– 25 रु. आवेदन के साथ, 50 रु. आबंटन पर, तथा 25 रु. प्रथम व अंतिम माँग पर देय हैं। प्रविष्टियाँ तैयार करें।
3. ए लिमिटेड ने 5% प्रीमियम पर 100 रु. प्रत्येक के 10,000, 10% ऋणपत्र निम्नवत भुगतान पर निर्गमित किए– 10 रु. आवेदन पर; 20 रु. आबंटन पर प्रीमियम के साथ; तथा शेष राशि पहली एवं अंतिम माँग पर देय है। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें। सभी ऋणपत्र पूर्णतः अभिदत्त रहें और समस्त धनराशि प्राप्त की गई। तुलनपत्र में इस राशि को कैसे दर्शाया जाएगा।
4. ए. लिमिटेड ने 8% के बट्टे पर 50 रु. प्रत्येक के 90,00,000, 9% ऋणपत्र पर जारी किए जो 9 वर्ष बाद सममूल्य पर मोचनीय हैं। ए लिमिटेड की खाता पुस्तकों हेतु आवश्यक प्रविष्टियाँ करें।
5. ए लिमिटेड ने निम्नलिखित शर्तों पर 100 रु. प्रत्येक के 4,000, 9% ऋणपत्र जारी किए–

   20 रु. आवेदन पर
   20 रु. आबंटन पर
   30 रु. प्रथम माँग पर, और
   30 रु. अंतिम माँग पर

   जनता ने 4,800 ऋणपत्रों के लिए आवेदन दिए। 3,600 आवेदनों को पूणतः स्वीकार किया गया। 800 आवेदनों के लिए 400 ऋणपत्र आंवटित किए गए तथा शेष 400 आवेदनों को अस्वीकृत कर दिया गया। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें।
6. टी लिमिटेड ने 30 जून 2014 को 10% प्रीमियम पर रु. 500 प्रत्येक के 20,0,000, 8% ऋणपत्रों को निर्गमित किया जिसमें 200 रु. आबंटन पर (प्रीमियम सहित); और शेष आबंटन पर देय था तथा 8 वर्षों में मोचनीय था। लेकिन उन्हें 3,00,000 ऋणपत्रों हेतु आवेदन प्राप्त हुए तथा समानुपात आधार पर आबंटन किया गया। आवेदन और आबंटन की बकाया राशि यथानुसार प्राप्त हुई। ऋणपत्र निर्गम से संबंधित सभी आवश्यक प्रविष्टियाँ अभिलिखित कीजिए।
7. एक्स लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक 10,000, 14% ऋणपत्र निर्गमित किए जिसमें 20 रु. आवेदन पर, 60 रु. आबंटन पर, तथा शेष माँग पर देने थे। कंपनी ने 13,500 ऋणपत्रों के आवेदन प्राप्त किए। इनमें से 8,000 को ऋणपत्र दिए गए जबकि 5,000 को 40% मात्र दिए गए और शेष को अस्वीकृत कर दिया गया अंशतः आबंटित आवेदनों पर प्राप्त आधिक्य का आंबटन पर प्रयोग किया गया। सभी बकाया राशियों को यथानुसार प्राप्त किया गया। आवश्यक प्रविष्टियाँ बताइए।

© NCERT not to be republished

8. आर लिमिटेड ने 200 रु. प्रत्येक 20,00,000, 10% ऋणपत्र 7% बट्टे के साथ निर्गमित किए जो 9 वर्षों के बाद 8% प्रीमियम के साथ मोचनीय थे। आर लिमिटेड की खाता पुस्तकों में आवश्यक प्रविष्टियाँ दें।
9. एम लिमिटेड ने एस लिमिटेड से 9,00,00,000 रु. की परिसंपत्तियाँ खरीदीं तथा 70,00,000 की देनदारियों को ज़िम्मेदारी भी ली और 100 रु. प्रत्येक के 8% ऋणपत्र जारी किए। एम लिमिटेड की खाता पुस्तकों में आवश्यक प्रविष्टियाँ दें।
10. बी लिमिटेड ने मोहन ब्रदर्स से 4,00,000 रु. की खाता-मूल्य वाली परिसंपत्तियाँ खरीदीं और 50,000 की देनदारियों की ज़िम्मेदारियों भी प्राप्त की। यह तय हुआ कि खरीद प्रतिफ़ल के रूप में 3,80,000 रु. का भुगतान 100 रु. प्रत्येक के ऋणपत्र द्वारा किया जाएगा।
इन तीन प्रकरणों में क्या रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलिखित की जाएँगी यदि ऋणपत्रों का निर्गमन (क) सममूल्य पर (ख) बट्टे पर तथा (ग)10% प्रीमियम पर किया गया है।
यह भी तय हुआ कि ऋणपत्रों में किसी भी प्रकार की भिन्नता आने पर इनका रोकड़ में भुगतान कर दिया जाएगा।
(टिप्पणी– ख्याति 30,000 रु.)

(उत्तर: ऋणपत्रों की संख्या (अ) 3800 (ब) 4222 (स) 3454)
11. एक्स लिमिटेड ने वाई लिमिटेड से क्रय प्रतिफ़ल के रूप में 4,40,000 की एक मशीनरी खरीद की सहमति बनाई और यह तय हुआ कि भुगतान 100 रु. प्रत्येक के 12% ऋणपत्रों द्वारा प्रति ऋणपत्र 10 रु. प्रीमियम के साथ चुकता किया जाएगा। लेन-देन की रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें।
(उत्तर: ऋणपत्रों की संख्या 4000)
12. एक्स लिमिटेड ने 15,000, 10% ऋणपत्रों को 100 रु. प्रत्येक के अनुसार निर्गमित किया, निम्न मामलों में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ एवं तुलन-पत्र बनाइए-
(i) ऋणपत्रों का निर्गमन 10% प्रीमियम पर हुआ।
(ii) ऋणपत्रों को 5% बट्टे पर जारी किया गया।
(iii) ऋणपत्रों को बैंक के 12,00,000 रु. पर प्राप्त ऋण हेतु संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमित किया।
(iv) 13,50,000 की मशीनरी खरीद पर विक्रेता को ऋणपत्र जारी किए गए।
13. निम्न की रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें-
(i) एक 100 रु. के ऋणपत्र को 95 रु. में जारी किया गया।
(ii) एक ऋणपत्र को 95 रु. के निर्गम किया गया जिसका मोचन 105 रु. हुआ।
(iii) एक ऋणपत्र 100 रु. में निर्गमित हुआ तथा 105 रु. में परिशोधित हुआ।
उपर्युक्त प्रत्येक मामले में ऋणपत्र का अंकित मूल्य 100 रु. था।
14. ए लिमिटेड ने 1 अप्रैल 2009 को 100 रु. प्रत्येक के 50,00,000, 8% ऋणपत्र 6 बट्टे के साथ जारी किए जो 4% प्रीमियम पर लॉटरी के द्वारा मोचनीय हैं–
(i) 20,00,000 ऋणपत्र मार्च 2020 में
(ii) 10,00,000 ऋणपत्र मार्च 2021 में
(iii) 20,00,000 ऋणपत्र मार्च 2022 में
आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ दें। ऋणपत्रों के निर्गम पर बट्टा हानि खाता तैयार करें।

© NCERT not to be republished

15. एक कंपनी ने निम्नानुसार ऋणपत्र निर्गमित किए–
    (i) 100 रु. ग्राहक प्रत्येक के 10,000, 12% ऋणपत्र सममूल्य पर निर्गमित तथा 5 वर्ष पश्चात् 5% प्रीमियम पर मोचनीय।
    (ii) 100 रु. प्रत्येक के 10,000, 12% ऋणपत्रों को 10% बट्टे के साथ निर्गमित किए पर 5 वर्ष बाद सममूल्य पर मोचनीय थे।
    (iii) 100 रु. प्रत्येक के 5,000, 12% ऋणपत्रों को 5% प्रीमियम पर निर्गमित किया तथा 5 वर्ष बाद सममूल्य पर मोचनीय है।
    (iv) 100 रु. प्रत्येक के 1,000, 12% ऋणपत्र एक मशीन विक्रेता को 95,000 रु. की मशीन खरीद हेतु निर्गम किए गए। ऋण 5 वर्ष बाद मोचनीय है।
    (v) पाँच वर्ष की अवधि के लिए बैंक से 25,000 रु. के ऋण हेतु कंपनी ने 100 रु. प्रत्येक के 300, 12% ऋणपत्र संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमित किए।

    (क) ऋण का निर्गम, (ख) दी गई अवधि के बाद ऋणपत्रों का परीशोधन हेतु रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें।
16. एक कंपनी ने 1 अप्रैल 2012 के 6% बट्टे के साथ 5,00,000 रुपये के अंकित मूल्य के ऋणपत्र जारी किए। यह ऋणपत्र 1,00,000 रु. वार्षिक आहरणों पर प्रतिवर्ष 31 मार्च को मोचनीय है। ऋणपत्र निर्गम से संबंधित रोजनामचा प्रविष्टियाँ दें।
17. एक कंपनी ने 1 अप्रैल 2011 को 6% बट्टे पर 1,20,000 अंकित मूल्य के 10% ऋणपत्र निर्गमित किए। ऋणपत्रों का भुगतान 40,000 रु. के वार्षिक आहरणों में किया जाना है जो तीसरे वर्ष की समाप्ति पर शुरू होता है। आप ऋणपत्रों के बट्टे का निपटान कैसे करेंगे। रोजनामचा प्रविष्टियाँ दें।

    कंपनी की खाता पुस्तकों में ऋणपत्र बट्टा खाता ऋणपत्र की अवधि के दौरान दिखाएँ। यह मानकर चलें कि कंपनी के खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च को बंद होते हैं।
18. बी लिमिटेड ने 1 अप्रैल 2011 को 4,00,000 रु. के लिए 94% पर ऋणपत्र जारी किए जो 80,000 प्रतिवर्ष के अनुसार बराबर किस्तों में मोचनीय हैं। कंपनी अपने अंतिम खाते हर वर्ष 31 मार्च को तैयार करती है। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें।
19. बी लिमिटेड ने 1 अप्रैल 2014 को 5% बट्टे पर 100 रु. प्रत्येक के 1,000, 12% ऋणपत्र निर्गमित किए जो परिपक्वता अवधि पर 10% प्रीमियम के साथ मोचनीय हैं।

    ऋणपत्र के निर्गम से संबंधित रोज़नामचा प्रविष्टियाँ तैयार करें तथा 31 मार्च 2015 की समाप्त अवधि से ऋणपत्र पर ब्याज यह मानकर परिकलित करें कि अर्धवार्षिक (30 सितंबर व 31 मार्च को) ब्याज देय है तथा स्रोत पर 10% टी डी एस कटौती होती है।

    इन मामलों हेतु क्या रोज़नामचा प्रविष्टियाँ की जाएँगी जहाँ कंपनी ऋणपत्र अवधि पूरी होने पर सूचना भेज कर ऋणपत्र मोचित करती है- (क) ऋणपत्रों को सममूल्य पर इस शर्त में जारी किया कि मोचन प्रीमियम के साथ होगा; (ख) जब ऋणपत्रों को इस शर्त के साथ प्रीमियम के साथ जारी किया गया कि मोचन सममूल्य पर होगा; और (ग) जब ऋणपत्रों को बट्टे पर जारी किया गया तथा प्रीमियम के साथ मोचन किया गया।
20. जे.के. लिमिटेड ने 100 रु. प्रति ऋणपत्र पर 60,000, 12% ऋणपत्र निर्गमित किये जो 5 वर्ष पश्चात् 20% प्रीमियम पर शोधनीय हैं। निर्गम की तिथि पर 5,00,000 रु. की राशि प्रतिभूति प्रीमियम संचय में विद्यमान है। निम्न के संदर्भ में रोजनामचा प्रविष्टियाँ दें यदि ऋणपत्रों का शोधन देय तिथि पर हुआ है:

(i) ऋणपत्रों का निर्गम।
(ii) ऋणपत्र निर्गम पर हानि।
(iii) वर्ष 2015-16 के लिए ऋणपत्रों पर भुगतान किया गया। वार्षिक ब्याज और 10: कराधान।
(iv) ऋणपत्रों का शोधन।

21. जनवरी 01, 2020 को मधुर लिमिटेड के पास 5,00,000, 9% ऋणपत्र हैं। सभी ऋणपत्रों का शोधन देय तिथि पर हुआ। रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें और आवश्यक खाते तैयार करें।

22. एम.के. लिमिटेड के पास 100 रु. प्रति ऋणपत्र के 30,000, 11% ऋणपत्र है जो 10% प्रीमियम पर इस प्रकार शोधनीय है:

31 मार्च, 2018	10,000 ऋणपत्र
31 मार्च, 2019	12,000 ऋणपत्र
31 मार्च, 2020	शेष ऋणपत्र

आवश्यक रोजनामचा दें।

23. एक्स वाई जेड लिमिटेड ने अप्रैल 1, 2014 को 50 रू. प्रति ऋणपत्र के 6,000, 12% ऋणपत्रों निर्गमित किया। इन ऋणपत्रों पर प्रत्येक वर्ष मार्च 31 को वार्षिक ब्याज देय है। इन ऋणपत्रों को चार समान किस्तों पर तीसरे, चौथे, पाँचवे और छठे वर्ष में शोधन किया जाएगा। निम्न के संदर्भ में आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ दें।
1. ऋणपत्रों का समूल्य पर निर्गम व शोधन
2. ऋणपत्रों का 10% प्रीमियम पर निर्गम व समूल्य पर शोधन
3. ऋणपत्रों का 10% बट्टे पर निर्गम व समूल्य पर शोधन
4. ऋणपत्रों का 10% समूल्य पर निर्गम व 10% प्रीमियम पर शोधन
5. ऋणपत्रों का 10% प्रीमियम पर निर्गम और 10% प्रीमियम पर शोधन
6. ऋणपत्रों का 10% बट्टे पर निर्गम और 10% प्रीमियम पर शोधन

स्वयं जाँचने हेतु जाँच सूची

स्वयं जाँचिए-1

1. असत्य, 2. सत्य, 3. असत्य, 4. सत्य, 5. सत्य, 6. असत्य, 7. असत्य, 8. सत्य, 9. असत्य, 10. असत्य, 11. असत्य

स्वयं जाँचिए-2

1. (ग), 2. (ख), 3. (क), 4. (क), 5. (ख), 6. (ग), 7. (ख), 8. (ख), 9. (क), 10. (ग), 11. (ग), 12. (ख), 13. (क), 14. (ग), 15. (ग)

स्वयं जाचिए-3

I. 1. विक्रेता (विक्रीयी) खाता, 2. लाभ व हानि विवरण के शेष से खाता, 3. ऋणपत्र मोचन निधि खाता, 4. स्वयं ऋणपत्र खाता, 5. लाभ व हानि विवरण,

II. 1. ऋणपत्र खाता, 2. निक्षेप निधि खाता, 3. सामान्य आरक्षित खाता, 4. निक्षेप निधि खाता, 5. ऋणपत्र निर्गम पर हानि खाता

© NCERT not to be republished

12129CH03

कंपनी के वित्तीय विवरण

3

यह समझने के बाद कि एक कंपनी वित्त कैसे अर्जित करती है, इस अध्याय में हम वित्तीय विवरणों की प्रकृति, उद्देश्यों को समझने के साथ-साथ वित्तीय विवरणों के प्रकार, उसके स्वरूप एवं विषय-वस्तु तथा उसके उपयोग एवं सीमाओं के संबंध में अध्ययन करेंगे। वित्तीय विवरण तैयार करना लेखांकन प्रक्रिया का अंतिम चरण है। इनका निर्माण उन समांतर संगत लेखांकन नितियों, मानक परिकल्पनाओं, सिद्धांतों और वैधानिक वातावरण के आधार पर होता है, जिनके अंतर्गत व्यावसायिक संगठन अपनी क्रियाकलापों का प्रचालन करता है। ये विवरण लेखांकन प्रक्रिया के संक्षिप्तिकरण का सुखद परिणाम हैं। अतः ये सूचनाओं के स्रोत हैं जो किसी संगठन की लाभप्रदता और वित्तीय स्थिति संबंधी निष्कर्ष निकालने हेतु सहायक होते हैं। इनका व्यवस्थित ढंग से प्रारूप तैयार किया जाता है जोकि **अंशधारक** और **उपयोगकर्त्ता** सरलतापूर्वक समझ सकें और अर्थपूर्ण आर्थिक निर्णयों में प्रयोग कर सकें।

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के उपरांत आप– इस योग्य हो जाएँगे कि–

- *कंपनी के वित्तीय विवरणों के उद्देश्यों एवं प्रकृति की व्याख्या कर सकेंगे।*
- *लाभ व हानि विवरण के प्रारूप एवं विषय-वस्तु का विवेचन अनुसूची III के अनुसार कर सकेंगे।*
- *अनुसूची III के अनुसार तुलन-पत्र के प्रारूप एवं विषय- वस्तु का विवेचन कर सकेंगे।*
- *वित्तीय विवरणों के महत्त्व एवं सीमाओं की व्याख्या कर सकेंगे।*
- *वित्तीय विवरणों को भली-भाँति तैयार कर सकेंगे।*

3.1 वित्तीय विवरणों का अर्थ

वित्तीय विवरण आधारभूत एवं औपचारिक साधन होते हैं जिनके माध्यम से निगम (कंपनी) प्रबंध स्वामियों तथा अन्य विभिन्न बाहय उपयोगकर्ताओं, जिनमें निवेशक, कराधान अधिकारी, सरकार, कर्मचारी आदि सम्मिलित हैं, को वित्तीय सूचनाएँ संचारित करता है। यह कंपनी के लेखांकन अवधि के अंत के तुलन-पत्र, लाभ व हानि विवरण और रोकण प्रवाह विवरण है।

© NCERT not to be republished

3.2 वित्तीय विवरणों की प्रकृति

परिघटनाओं के तथ्यों का कालक्रमानुसार अभिलेखन जो कि एक स्पष्ट निश्चित अवधि के लिए मौद्रिक शब्दावली में व्यक्त किए जाएँ, वित्तीय विवरणों की आवधिक तैयारी के लिए आधार होते हैं जोकि एक अवधि के दौरान प्राप्त किए गए वित्तीय परिणामों के आधाार पर एक विशिष्ट तिथि पर व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को प्रकट करते हैं।

अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ सर्टिफ़ाइड पब्लिक एकाउंटेंटस *(AICPA)* वित्तीय विवरणों की प्रकृति को इस प्रकार व्यक्त करता है– "वित्तीय विवरणों को एक आवधिक समीक्षा प्रस्तुत करने के लिए या प्रबंध द्वारा की गई प्रगति की रिपोर्ट को दर्शाने के उद्देश्य के लिए तैयार किया जाता है तथा ये व्यवसाय में निवेश की स्थिति से संबंध रखते हैं और समीक्षा अवधि के दौरान उपलब्धि के परिणामों को प्रकट करते हैं। ये अभिलिखित तथ्यों, लेखांकन सिद्धांतों तथा वैयक्तिक निर्णयों के एक संयोजन को प्रतिबिंबित करते हैं।"

निम्नलिखित बिंदु वित्तीय विवरणों की प्रकृति की स्पष्ट व्याख्या करते हैं–

1. **अभिलिखित तथ्य**– वित्तीय विवरण खाता पुस्तकों में लागत आँकड़ों के रूप में अभिलिखित तथ्यों के आधार पर तैयार किए जाते हैं। मूल लागत या ऐतिहासिक लागत अभिलिखित लेन-देनों का आधार होती है। विभिन्न खातों की राशियाँ जैसे कि हस्तस्थ रोकड़, बैंकस्थ रोकड़, व्यापारिक प्राप्य, स्थाई परिसंपत्तियाँ आदि को खाता पुस्तकों में अभिलिखित राशियों के अनुसार लिया जाता है। भिन्न-भिन्न समयों पर भिन्न मूल्यों पर क्रय की गई परिसंपत्तियों को उनके लागत मूल्य को दर्शाते हुए एक साथ रखा जाता है। चूँकि अभिलिखित तथ्य बाज़ार मूल्य पर आधारित नहीं होते हैं। अतः वित्तीय विवरण संबंद्ध वस्तु की वर्तमान वित्तीय स्थिति को नहीं दर्शाते हैं।
2. **लेखांकन परंपराएँ**– वित्तीय विवरण तैयार करते समय कुछ निश्चित लेखांकन परंपराओं का अनुपालन किया जाता है। लागत या बाज़ार मूल्य, जो भी कम हो, पर माल मूल्यांकन की परंपरा अपनाई जाती है। एक परिसंपति को लागत से कम करने हेतु, तुलन-पत्र के लिए, मूल्यह्रास को अनुपालित किया जाता है। छोटी मदों जैसे कि पेंसिल, पेन, पोस्टेज स्टैम्प आदि के लेन-देन हेतु सारता की परंपरा का अनुपालन किया जाता है। ऐसी मदों को उस वर्ष के व्यय के रूप में प्रदर्शित किया जाता है जिसमें वे खरीदी गईं थीं, भले ही वे प्रकृति में परिसंपत्तियाँ हैं। लेखन सामग्री को लागत पर मूल्यांकित किया जाता है न कि लागत या बाज़ार मूल्य पर, जो भी न्यूनतम हो के आधार पर। **लेखांकन परंपराओं** के उपयोग से वित्तीय विवरण तुलनात्मक, सरल एवं वास्तविकता पूर्ण बन जाते हैं।
3. **अभिधारणाएँ**– वित्तीय विवरण कुछ निश्चित मूलभूत संकल्पनाओं या पूर्वानुमानों पर तैयार किए जाते हैं जिन्हें हम अभिधारणाओं के नाम से जानते हैं जैसे सतत् व्यापार, मुद्रा मापन, आगम प्राप्ति आदि। सतत् व्यापार अवधारणा के अनुसार ऐसा माना जाता है कि व्यवसाय लंबे समय तक चलेगा। अतः, परिसंपत्तियाँ ऐतिहासिक लागत आधार पर दर्शायी जाती हैं। मुद्रा मापन अवधारणा के अनुसार "मुद्रा का मूल्य विभिन्न समयावधियों पर समान रहेगा।" हालाँकि मुद्रा की क्रय क्षमता में प्रबल परिवर्तन आया है और विभिन्न समयाविधियों में क्रय की गई परिसंपत्तियों को उनके क्रय-मूल्य पर ही दर्शाया जाता है। लाभ व हानि विवरण तैयार करते समय आगम को विक्रय के वर्ष में ही

दर्शाया जाएगा। हालाँकि हो सकता है कि विक्रय मूल्य की वसूली एक लंबी अवधि तक होती रहे। इस अवधारणा को आगम प्राप्ति अवधारणा कहते हैं।

4. **वैयक्तिक निर्णय**– कई बार वित्तीय विवरणों में प्रस्तुत किए गए तथ्य एवं राशियाँ व्यक्तिगत राय, अनुमानों तथा निर्णयों पर आधारित होती हैं। परिसंपत्ति के ह्रास का निर्धारण स्थिर परिसंपत्तियों के आर्थिक जीवन की उपयोगिता को ध्यान में रखकर होता है। संदिग्घ ऋणों के लिए प्रावधान वैयक्तिक अनुमानों एवं निर्णयों पर बनाया जाता है। माल के मूल्यांकन में, लागत या बाज़ार मूल्य, जो भी न्यूनतम है, अपनाया जाता है। जब किसी माल की लागत या फिर बाज़ार मूल्य का निर्णय लेना होता है, तब कुछ निश्चित विचारों के आधार पर अनेक वैयक्तिक निर्णय लेने पड़ते हैं। जब वित्तीय विवरणों को तैयार किया जाता है तो व्यक्तिगत राय, निर्णय तथा अनुमान लगाए जाते हैं ताकि परिसंपत्तियों, देयताओं, आय एवं व्ययों के आधिक्य की संभावना से बचा जा सके और इसमें रूढ़िवाद की परंपरा को ध्यान में रखा जाता है।

इस प्रकार से "वित्तीय विवरण अभिलिखित तथ्यों की संक्षिप्त रिपोर्ट होते हैं तथा लेखांकन अवधारणा, परंपरा, लेखांकन नितियाँ, मानक एवं कानून की अपेक्षाओं का अनुपालन करते हुए तैयार किए जाते हैं।"

3.3 वित्तीय विवरणों के उद्देश्य

वित्तीय विवरण अंशधारकों और बाहरी पक्षों द्वारा किसी संस्था की लाभप्रदता और वित्तीय स्थिति को समझने हेतु संबंधित सूचनाओं के आधारभूत स्रोत हैं। ये एक विशिष्ट समयावधि के दौरान संपत्तियों एवं देयताओं के संदर्भ में व्यवसाय के परिणामों के बारे में सूचनाएँ उपलब्ध कराते हैं जो निर्णय लेने का आधार प्रदान करते हैं। अतः वित्तीय विवरणों का प्राथमिक उद्देश्य उपयोगकर्ताओं को निर्णय लेने में सहायता करना है। विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं–

1. ***एक व्यवसाय के आर्थिक संसाधनों एवं दायित्वों के संदर्भ में सूचना उपलब्ध कराना***– इन्हें इसलिए तैयार किया जाता है ताकि एक व्यावसायिक फ़र्म के निवेशकों एवं बाहरी पक्षों, जिनका सीमित प्राधिकार, सक्षमता अथवा सूचना प्राप्ति के सीमित संसाधन होते हैं, के लिए उसके आर्थिक संसाधनों एवं दायित्वों के बारे में पर्याप्त, विश्वसनीय तथा आवधिक सूचना उपलब्ध कराई जा सके।
2. ***व्यवसाय की अर्जन क्षमता के बारे में सूचना उपलब्ध कराना***– वित्तीय विवरण उपयोगी वित्तीय सूचनाएँ प्रदान करते हैं जो कि एक व्यावसायिक फ़र्म की अर्जन क्षमता के पूर्वानुमान, तुलना तथा पुनर्मूल्यांकन के लिए लाभप्रद ढंग से उपयोग में लाई जा सकती है।
3. ***रोकड़ प्रवाह के संदर्भ में सूचना उपलब्ध कराना***– यह एक व्यवसाय के बारे में, उसके निवेशकों तथा ऋणदाताओं को उपयोगी जानकारी उपलब्ध कराते हैं ताकि वे राशि, समयबद्धता तथा संबंधित अनिश्चितताओं के परिप्रेक्ष्य में रोकड़ प्रवाह का पूर्वानुमान, तुलना, मूल्यांकन तथा सक्षमता को जान सकें।
4. ***प्रबंध की प्रभावशीलता को आँकलित करना***– वित्तीय विवरण एक व्यवसाय की प्रबंधन क्षमता को आंकलित करने के लिए उपयोगी जानकारी देते हैं ताकि वे व्यवसाय के संसाधनों को प्रभावशाली तरीके से उपयोग कर सकें।

© NCERT not to be republished

5. ***समाज को प्रभावित करने वाली व्यावसायिक गतिविधियों के संदर्भ में सूचना***– ये समाज पर प्रभाव डालने वाली व्यवसाय की उन गतिविधियों के बारे में रिपोर्ट देते हैं, जो निर्धारित एवं मापी जा सकती हैं तथा व्यवसाय के सामाजिक वातावरण में महत्त्वपूर्ण होती हैं।
6. ***लेखांकन नीतियों को प्रकट करना***– ये रिपोर्टें महत्त्वपूर्ण नीतियों एवं अवधारणाओं के संदर्भ में जानकारी देती हैं जिन्हें लेखांकन प्रक्रिया में अनुपालित किया गया होता है और वर्ष के दौरान हुए परिवर्तनों की सूचना भी देती हैं ताकि इन विवरणों को बेहतर ढंग से समझा जा सके।

3.4 वित्तीय विवरणों के प्रकार

वित्तीय विवरणों में सामान्यत: दो प्रकार के विवरण सम्मिलित होते हैं– तुलन-पत्र और लाभ व हानि विवरण, जोकि बाह्य प्रतिवेदनों और प्रबंध की आंतरिक आवश्यकताओं जैसे नियोजन, निर्णयन और नियंत्रण के लिए आवश्यक हैं।

इन दो मूलभूत वित्तीय विवरणों के अतिरिक्त, निधियों के संचालन के बारे में तथा कंपनी की वित्तीय स्थितियों में बदलावों के बारे में जानने की भी आवश्यकता होती है। इसके लिए रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार किए जाते हैं।

3.4.1 तुलन-पत्र का प्रारूप एवं विषय-सामग्री– कंपनी अधिनियम 2013 के अंतर्गत प्रत्येक पंजीकृत कंपनी अपना तुलन-पत्र, लाभ व हानि विवरण एवं खातों की टिप्पणियाँ, अनुसूची III में निर्दिष्ट रीति के अनुसार लेखांकन मानकों की प्रकटन आवश्यकताओं से सामंजस्य तथा नये सुधारों के साथ तैयार करेगी।

तुलन-पत्र
वर्षांत 31 मार्च 20........को

विवरण	*नोट संख्या*	*वर्तमान प्रतिवेदन अवधि के अंत में यथास्थित आंकड़े*	*पिछली प्रतिवेदन अवधि के अंत में यथास्थित आंकड़े*
I. समता एवं देयताएँ			
1. अंशधारक की निधि			
(क) अंश पूँजी			
(ख) आरक्षितियाँ और अधिशेष			
(ग) अंश वारंटों के प्रति प्राप्त धन			
2. आबंटन लंबित रहने के दौरान अंश आवेदन धन			

3. गैर चालू दायित्व			
(क) दीर्घकालिक ऋण			
(ख) आस्थगित कर दायित्व (निवल)			
(ग) अन्य दीर्घकालिक दायित्व			
(घ) दीर्घकालिक उपबंध			
4. चालू दायित्व			
(क) अल्पकालिक ऋण			
(ख) व्यापार देय			
(ग) अन्य चालू दायित्व			
(घ) अल्पकालिक उपबंध			
योग			
II. परिसंपत्तियाँ			
1. गैर चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) स्थाई परिसंपत्तियाँ			
(i) मूर्त परिसंपत्तियाँ			
(ii) अमूर्त परिसंपत्तियाँ			
(iii) चालू पूँजी संकर्म			
(vi) विकासाधीन अमूर्त परिसंपत्तियाँ			
(ख) गैर चालू निवेश			
(ग) आस्थगित कर परिसंपत्तियाँ (निवल)			
(घ) दीर्घकालिक ऋण और अग्रिम			
(ङ) अन्य गैर-चालू परिसंपत्तियाँ			
2. चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) चालू निवेश			
(ख) रहतिया			
(ग) व्यापार प्राप्य			
(घ) रोकड़ और रोकड़ तुल्यांक			
(ङ) अल्पकालिक ऋण और अग्रिम			
(च) अन्य चालू परिसंपत्तियाँ			
योग			
वित्तीय विवरणों के साथ लगी टिप्पणियाँ देखें।			

प्रदर्श 3.1– तुलन-पत्र का उध्र्वाकार प्रारूप

© NCERT not to be republished

3.4.2. प्रकटन की प्रमुख विशेषताएँ

1. यह कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के अनुसार भारतीय कंपनियों द्वारा तैयार किए जाने वाले वित्तीय विवरणों पर लागू होता है।
2. यह, (i) बीमा अथवा बैंकिग कंपनी, (ii) ऐसी कंपनी जिसके तुलन-पत्र अथवा आय विवरण का प्रारूप किसी अन्य अधिनियम में निर्धारित हो, पर लागू नहीं होता है।
3. लेखांकन मानक, कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III पर अभिभावी होंगें।
4. वित्तीय विवरणों या टिप्पणियों में प्रकटीकरण अनिवार्य तथा अपरिहार्य है।
5. संशोधित अनुसूची III में प्रयुक्त शब्दों का वही अर्थ लिया जाएगा जो लागू लेखांकन मानकों में परिभाषित है।
6. वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्त्ताओं की सहायता न करने वाले ब्यौरे की अधिकता तथा महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्रदान न कराने में साम्य स्थापित किया जाना है।
7. परिसंपत्तियों एंव देयतायों का चालू व गैर चालू में विभाजीकरण लागू होगा।
8. पूर्णांकन आवश्यकताएँ अपरिहार्य (देखें बॉक्स 1)

बाक्स 1

वित्तीय विवरणों के प्रस्तुतीकरण में अंकों के पूर्णांकन के नियम

वित्तीय विवरणों में प्रतिवेदित किए जाने वाले अंकों का पूर्णांकन आवर्त्त (विक्रय) पर आधारित है

1. आवर्त्त (विक्रय) < रु. 100 करोड़ – सेकड़ों, हज़ारो, लाखों या उनके दशमलव के निकटतम।
2. आवर्त्त (विक्रय) > रु. 100 करोड़ – लाखों या दशमलव के निकटतम।

9. वित्तीय विवरण का प्रस्तुतीकरण उर्ध्वाकार प्रारूप में निर्धारित किया गया है (देखें प्रदर्श 3.1 में)
10. लाभ-हानि विवरण का नाम शेष शीर्ष 'अधिशेष' के अर्न्तगत ऋणात्मक अंक की तरह दर्शाया जाएगा।
11. आबंटन लंबित रहने के दौरान अंश आवेदन राशि का प्रकटीकरण आवश्यक है।
12. 'विविध देनदारों' एवं 'विविध लेनदारों' को 'व्यापारिक प्राप्यों एवं 'व्यापारिक देय' से प्रतिस्थापित किया गया है।

© NCERT not to be republished

3.4.3. अंशधारक निधियाँ –

तुलन–पत्र में अंशधारक निधियों को उप–विभाजित किया गया है

(अ) अंश पूँजी

(ब) आरक्षितियाँ एवं अधिशेष

(स) अंश वारंटों के प्रति प्राप्त धन

अंशपूँजी

(अ) अंशों के प्रत्येक वर्ग के लिए, प्रतिवेदन अवधि के प्रारंभ एवं अंत पर बकाया अंशों की संख्या की पहचान अनिवार्य है।

(ब) अंशों के प्रत्येक वर्ग से जुड़े अधिकार, अधिमानताएँ और प्रतिबंध, जिनके अंतर्गत लाभांश के वितरण और पूँजी के प्रतिदाय पर प्रतिबंध भी सम्मिलित हैं।

(स) कंपनी के अंततोगत्वा स्वामियों की पहचान में स्पष्टता के लिए–

(i) धारक कंपनी या अंततोगत्वा धारक कंपनी द्वारा कंपनी में प्रत्येक वर्ग के संबध में धारक अंश, जिनके अंतर्गत धारक कंपनी या अंततोगत्वा धारक की अनुषंगी या सहबद्ध कंपनियों द्वारा सकल रूप में धारित अंश भी हैं;

(ii) 5 प्रतिशत से अधिक अंश धारण करने वाले अंशधारक द्वारा कंपनी में धारित अंश, धारित अंशों की संख्या विनिर्दिष्ट करते हुए;

(iii) उस तारीख से, जिसको तुलन–पत्र तैयार किया जाता है, तुरंत पूर्ववर्ती पाँच वर्ष की अवधि के लिए;

- नकद में बिना संदाय के संविदा (संविदाओं) के अनुसरण में प्राप्त किए जाने वाले पूर्ण समादत्त के रूप में आबंटित अंशों की कुल संख्या और वर्ग,
- बोनस अंशों के माध्यम से पूर्ण समादत्त के रूप में आबंटित अंशों की कुल संख्या और वर्ग,
- वापस क्रय किए गए अंशों की कुल संख्या और वर्ग,

यह ध्यान देने योग्य है कि अंशधारक निधि की सूचना वित्तीय विवरणों में विस्तृत एव महत्त्वपूर्ण मदों तक सीमित हैं, इनका ब्यौरा खातों की टिप्पणियों में दिया जाता है ।

(द) अंश पूँजी के प्रत्येक वर्ग के लिए–

(क) प्राधिकृत अंशों की संख्या और राशि;

(ख) निर्गम किए गए, अभिदत्त पूर्ण प्रदत्त और अभिदत्त किंतु पूर्ण प्रदत्त अंश नहीं हैं, के अंशों की संख्या

(ग) सम मूल्य प्रति अंश;
(घ) लेखांकन अवधि के प्रारंभ और अंत पर बकाया अंशों की संख्या का मिलान,
(ड़) अंशों के प्रत्येक वर्ग से जुड़े अधिकार, अधिमानताएँ और प्रतिबंध जिनके अंतर्गत लाभांश के वितरण और पूँजी के प्रतिदाय पर प्रतिबंध भी सम्मिलित हैं;
(च) धारक कंपनी या अतंतोगत्वा धारक कंपनी द्वारा कंपनी में प्रत्येक वर्ग के संबंध में धारित अंश, जिनके अंतर्गत धारक कंपनी या अंततोगत्वा धारक कंपनी की अनुषंगी या सहबद्ध कंपनियों द्वारा सकल रूप में धारित अंश भी हैं;
(छ) अंशों के विक्रय/विनिवेश के लिए विकल्पों और संविदाओं/प्रतिबद्धताओं के अधीन निर्गम के लिए आरक्षित अंश;
(ज) उस तारीख से, जिसको तुलन-पत्र तैयार किया जाता है, तुरंत पूर्ववर्ती 5 वर्ष की अवधि के लिए–
   (क) संविदाओं/प्रतिबद्धताओं के अधीन आरक्षित अंश
   (ख) वापस क्रय किए गए अंशों की कुल संख्या और वर्ग;
   (ग) रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफ़ल के बदले निर्गमित अंश तथा बोनस अंशों की संख्या तथा वर्ग।
(झ) संपरिवर्तन की पूर्वतम तारीख के साथ निर्गमित समता/पूर्वाधिकारी अंशों में संपरिवर्तनीय प्रतिभूतियों के प्रतिबंध, सबसे बाद की तारीख से आरंभ करते हुए अवरोही अनुक्रम में;
(ञ) असंदत्त माँगे (समग्र);
(ट) ज़ब्त अंश (मूल रूप में समादत्त रकम)

आरक्षितियाँ और अधिशेष

आरक्षितियों और अधिशेष को निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत किया जाएगा–

(i) पूँजी आरक्षितियाँ;
(ii) पूँजी विमोचन आरक्षितियाँ;
(iii) प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षिती;
(iv) ऋणपत्र विमोचन आरक्षिती;
(v) पुन– मुल्यांकन आरक्षिती;
(vi) अंश विकल्प बकाया खाता;
(vii) अन्य आरक्षितियाँ - (प्रत्येक आरक्षिती की प्रकृति और प्रयोजन विनिर्दिष्ट करें);
(viii) अधिशेष लाभ-हानि के विवरण में अतिशेष। लाभांश, बोनस अंश और आरक्षितियों को/से अंतरण आदि जैसे आबंटनों और विनियोजनों को प्रकट करता है।

आरक्षितियों और अधिशेषों के प्रकटीकरण के सबंध में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन या संशोधन इस प्रकार हैं–

(अ) उद्दिष्ट निवेशों द्वारा विनिर्दिष्ट रूप से दर्शित किसी आरक्षिती को एक 'निधि' कहा जाएगा।
(ब) लाभ और हानि विवरण के डेबिट अतिशेष को 'अधिशेष' शीर्ष के अधीन ऋणात्मक आंकड़े के रूप में दर्शित किया जाएगा।

© NCERT not to be republished

(स) इसी प्रकार, 'आरक्षितियों और अधिशेष' के अतिशेष को अधिशेष के ऋणात्मक अतिशेष, यदि कोई है, का समायोजन करने के पश्चात् दर्शित किया जाएगा, तब भी जब परिणामिक आंकड़े ऋणात्मक होंगे।

(द) शीर्ष "आरक्षित और अधिशेष" के अंतर्गत बकाया अंश विकल्प खाते को एक अलग मद के रूप में मान्यता दी गई है। कर्मचारी अंश– आधारित भुगतानों के लेखांकन के लिए ICAI के मार्गदर्शक नोट के अनुसार बकाया अंश विकल्प खाते के जमा शेष को तुलन–पत्र में 'अंश धारक निधि' के अंतर्गत एक अलग शीर्ष के रूप में दर्शाया जाएगा।

अंश वारंट के प्रति प्राप्त धन

यह किसी एक विशिष्ट तिथि को एक निर्धारित दर पर अंश परिवर्तन के लिए प्राप्त हुई धनराशि है। इस संदर्भ में जो प्रपल जारी होता है उसे अंश वारंट कहते हैं। अंशधारक निधि के अंतर्गत 'अंश वारटों के प्रति प्राप्त धन' को एक अलग शीर्षक के रूप में दर्शाया जाएगा

उदाहरण 1

दिनकर लिमिटेड की अधिकृत पूँजी 50,00,000 रु. है जो 100 रु. प्रति समता अंश में विभाजित है। कंपनी ने 40,000 अंशों के लिए आवेदन आमंत्रित करे जबकि 36,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। समस्त माँगे माँग ली गईं और प्राप्त की गईं सिवाय 500 अंशों के, जिन पर 20 रु. की अंतिम माँग प्राप्त नहीं हुई थी। कंपनी के तुलन–पत्र में अंश पूँजी कैसे दर्शाई जाएगी, इसके लिए 'खातों की टिप्पणियाँ' भी तैयार करें।

हल

दिनकर लिमिटेड की पुस्तकों में

.........(तिथि) को तुलन-पत्र

विवरण	*नोट संख्या*	*राशि (रु.)*
समता एवं देयताएँ		
1.अंशधारकों की निधि		
(अं) अंश पूँजी	1	**35,90,000**

खातो की टिप्पणियाँ

विवरण	*राशि (रु)*	*राशि (रु)*
1. अंश पूँजी		
अधिकृत अंशपूँजी		
50,000 समता अंश 100 रु. प्रत्येक		**50,00,000**

© NCERT not to be republished

निर्गमित पूँजी		
40,000 समता अंश 100 रु. प्रत्येक		40,00,000
अभिदत्त एवं पूर्णतः समादत्त पूँजी		
35,500 समता अंश 100 रु. प्रत्येक		
पूर्णतः प्रदत्त		35,50,000
अभिदत्त किंतु पूर्णतः प्रदत्त नहीं		
300 समता अंश 100 रु. प्रत्येक		
पूर्णतः माँगी गई	30,000	
घटाया– बकाया माँग (300 × 20)	(6,000)	
	24,000	
जोड़ा– ज़ब्त अंश खाता (200 अंश × रु. 80)	16,000	40,000
		35,90,000

चालू एवं गैर चालू वर्गीकरण

तुलन-पत्र के संदर्भ में 'चालू व गैर-चालू परिसंपत्तियों' तथा 'चालू व गैर-चालू देयताओं' को प्रस्तुत किया है।

चालू परिसंपत्तियों और देयताओं को परिभषित करने के मानदंड गैर-चालू परिसंपत्तियों ओर देयताओं को अवशिष्ट मदों के रूप में स्पष्ट किया गया है।

चालू/ गैर-चालू में विभेद

एक मद 'चालू' के रूप में वर्गीकृत की जाती है–

- यदि वह ईकाई के सामान्य प्रचालन चक्र में शामिल है; या
- यह आशा की जाती है कि उसे बारह मास के भीतर वसूल/निपटान किया जाएगा; या
- उसे मुख्यतः व्यापार के प्रयोजन के लिए धारित किया जाता है; या
- रोकड़ तथा रोकड़ तुल्यांक है; या
- उसका उपयोग रिपोर्टिंग तारीख के पश्चात् कम से कम बारह मास के लिए किसी दायित्व के निपटान में किया जाता है;

  अन्य परिसंपत्तियाँ एव देयताएँ गैर-चालू हैं।

उदाहरण 2

अम्बा लिमिटेड के 31 मार्च 2017 के तुलन-पत्र में निम्नलिखित मदों को दर्शाएँ–

	रु.
8% ऋणपत्र	10,00,000
समता अंश पूँजी	50,00,000
प्रतिभूति प्रीमियम	20,000
प्रारंभिक व्यय	40,000
लाभ व हानि विवरण (जमा)	1,50,000
8% ऋणपत्रों के निर्गम पर अनुमानित बट्टा	40,000
(आगामी 4 वर्षों में अपलेखित की जाने वाली अनुमानित राशि)	
खुले औज़ार	20,000
बैंक शेष	60,000
हस्तस्थ रोकड़	38,000

हल

अम्बा लिमिटेड की पुस्तकों में
***तुलन-पत्र 31 मार्च 2017 को**

विवरण	*नोट संख्या*	*राशि (रु.)*
I. समता और देयताएँ		
1. अंशधारक निधि		
(अ) अंश पूँजी		50,00,000
(ब) आरक्षित और अधिशेष	1	1,30,000
2. गैर-चालू देयताएँ		
(अ) दीर्घकालीन ऋण	2	10,00,000
II. परिसंपत्तियाँ		
चालू परिसंपत्तियाँ		
(अ) रहतिया	3	20,000
(ब) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	4	98,000
(स) अन्य चालू परिसंपत्तियाँ	5	10,000

* केवल संबंधित मदें

© NCERT not to be republished

खातों की टिप्पणियाँ

विवरण		नोट (रु.)	राशि (रु.)
1. आरक्षित और अधिशेष			
प्रतिभूति प्रीमियम	20,000		
घटाया– प्रारंभिक व्यय	(40,000)		
		(20,000)	
लाभ और हानि विवरण		1,50,000	**1,30,000**
2. दीर्घकालीन ऋण			
8% ऋणपत्र			10,00,000
3. रहतिया			
खुले औज़ार			20,000
4. रोकड़ और रोकड़ तुल्यांक			
बैंक शेष		60,000	
हस्तस्थ रोकड़		38,000	**98,000**
5. अन्य चालू परिसंपत्तियाँ			
8% ऋणपत्र के निर्गम पर छूट			**10,000**
(रु. 40,000 का ¼)			

महत्त्वपूर्ण बिंदु

- प्रारंभिक व्यय जिस वर्ष में हुए हैं उसी वर्ष में पूर्ण रूप से अपलिखित किए जाते हैं। ये प्रथमतः प्रतिभूति प्रीमियम से तथा शेष, यदि कुछ है, को लाभ–हानि विवरण से अपलिखित किए जाने चाहिए।
- ऋण लागतें, जैसे ऋणपत्रों के निर्गम पर बट्टा, को निगम वर्ष मे ही अपलिखित किया जाता है।

अंश आवेदन राशि बकाया आबंटन

वापस न किए जाने वाली योग्य आवेदन राशि, प्रदत्त पूँजी से अधिक नहीं, को गैर–चालू के रूप में वर्गीकृत करना आवश्यक है। यह तुलन–पत्र में 'आवेदन लंबित रहने के दौरान अंश आवेदन राशि' शीर्ष के रूप में दर्शाया जाएगा।

ऋण

कुल ऋणों को दीर्घकालीन ऋण, अल्पकालीन ऋणों तथा दीर्घकालीन ऋण की चालू परिपक्वता में वर्गीकृत किया गया है।

(i) 12 मास अथवा प्रचालन चक्र के पश्चात् भुगतान योग्य ऋण, तुलन–पत्र के मुख पर दीर्घकालीन ऋणों के रूप में वर्गीकृत किए जाते हैं।

(ii) ऐसे ऋण जो माँग पर देय हों या जिनकी वास्तविक समय अवधि या प्रचालन चक्र 12 मास से अधिक न हो, तुलन-पत्र के मुख पर अल्पकालीन ऋण के रूप में वर्गीकृत किए जाते हैं।

(iii) दीर्घकालीन ऋण की चालू परिपक्वताओं में, 12 मास अथवा प्रचालन चक्र के अंतर्गत, भुगतान योग्य राशि शामिल हैं। जो अन्य चालू देयताओं के अंतर्गत खातों पर टिप्पणियों के साथ दर्शाई जाती हैं।

अस्थगित कर परिसंपत्तियाँ अथवा देयताएँ सदैव गैर चालू होती हैं। इनका लेखांकन व्यव्हार कंपनी अधिनियम 2013 की अनुसूची III के अनुसार किया जाता है।

व्यापार देय

विविध लेनदारों को व्यापार देय मद से प्रतिस्थापित कर दिया गया है तथा चालू एवं गैर-चालू में वर्गीकृत किया गया है। ऐसे व्यापार देयों, जो पहचान की तिथि से प्रारंभ करते हुए प्रचालन चक्र के बाद अथवा रिपोर्टिंग तिथि के 12 माह के बाद जिनका भुगतान किया जाना है, को खातों की टिप्पणियों में 'अन्य दीर्घकालीन देयताओं' के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाएगा। उदाहरण के लिए, व्यवसाय के सामान्य क्रियाकलापों में वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय/तुलन-पत्र में व्यापार देयों को चालू देयताओं में वर्गीकृत किया जाता है।

प्रस्तावित लाभांश

प्रस्तावित लाभांश को निदेशक मंडल द्वारा प्रस्तावित किया जाता है और शेयरधारकों द्वारा उनकी वार्षिक आम बैठक में घोषित (अनुमोदित) किया जाता है। निदेशक मंडल वर्ष के लिए वार्षिक लेखा तैयार होने के बाद लाभांश का प्रस्ताव करता है। इसके बाद शेयरधारकों की वार्षिक आम बैठक अगले वित्त वर्ष में आयोजित की जाती है।

शेयरधारक प्रस्तावित लाभांश की मात्र को कम कर सकते हैं लेकिन इसे बढ़ा नहीं सकते। चूंकि प्रस्तावित (अंतिम) लाभांश की घोषणा शेयरधारकों की मंजूरी पर आकस्मिक है, प्रस्तावित लाभांश को आकस्मिक देयता के रूप में दिखाया गया है।

ले.मा. 4, तुलन-पत्र दिनांक के बाद होने वाली आकस्मिकताएं और घटनाएँ बताती हैं कि प्रस्तावित लाभांश को खातों में खातों में दिखाया जाएगा। शेयरधारकों द्वारा प्रस्तावित लाभांश घोषित किए जाने के बाद, यह कंपनी के लिए एक दायित्व बन जाता है और पुस्तकों में इसका हिसाब होता है। परिणामस्वरूप, पिछले वर्ष के प्रस्तावित लाभांश को चालू वर्ष में शेयरधारकों द्वारा घोषित (अनुमोदित) किया जाएगा और इस घोषित (अनुमोदित) प्रस्तावित लाभांश का हिसाब चालू वर्ष के लिए प्रस्तावित लाभांश अगले वित्तीय वर्ष के लिए प्रासंगिक होगा।

संक्षेप में, पिछले वर्ष के प्रस्तावित लाभांश का हिसाब चालू वर्ष में किया जाएगा, क्योंकि यह उनकी वार्षिक आम बैठक में शेयरधारकों द्वारा घोषित (अनुमोदित) है।

प्रावधान

पहचान की तारीख से प्रचालन चक्र के भीतर अथवा तुलन-पत्र की तिथि के 12 मास के भीतर, निपटान की गई प्रावधान राशि को अल्पकालीन प्रावधान के रूप में वर्गीकृत किया जाता है तथा तुलन-पत्र में, चालू

© NCERT not to be republished

देयताओं के अंतर्गत दर्शाया जाता है। अन्यों को गैर–चालू देयताओं के अंतर्गत दीर्घकालीन प्रावधान के रूप में दर्शाया जाता है।

स्थायी परिसंपत्तियाँ

स्थायी परिसंपत्तियों के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं है। मूर्त एवं अमूर्त परिसंपत्तियाँ गैर–चालू हैं। यह उल्लेखनीय है कि यदि परिसंपत्ति का उपयोगी जीवन 12 महीने से कम है तब भी यह गैर–चालू शीर्ष के अंतर्गत ही आएगी।

निवेश

निवेश को भी **चालू** और **गैर–चालू** वर्गों में वर्गीकृत किया गया है। ऐसे निवेश जिनकी वसूली बारह माह में होनी है, चालू परिसंपत्तियों में चालू निवेश के अंतर्गत माने जाएँगे। अन्य निवेशों को गैर–चालू परिसंपत्तियों के अंतर्गत गैर–चालू निवेश के रूप में वर्गीकृत किया जाता है तथा दोनो को ही तुलन–पत्र में दर्शाया जाता है।

रहतिया

रहतिया सदैव चालू माने जाते हैं।

व्यापारिक प्राप्य

ऐसे व्यापारिक प्राप्यों, जो पहचान की तारीख से प्रारंभ करते हुए प्रचालन चक्र के बाद अथवा रिपोर्टिंग तारीख/ के बारह मास के पश्चात् वसूल किए जाएँगे, को खातों की टिप्पणियों में "गैर–चालू परिसंपत्तियों" के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाएगा। उदाहरण के लिए, व्यवसाय के सामान्य क्रियाकलापों में वस्तुओं का विक्रय अथवा प्रदान की गई सेवाएँ। अन्यों को चालू परिसंपत्तियों में वर्गीकृत किया जाता है और तुलन–पत्र में ही दर्शाया जाता है।

रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक

भारतीय लेखांकन मानक–3 के अनुसार ऐसी राशियाँ, जो रोकड़ एव रोकड़ तुल्यांकों से संबंधित होती हैं, सदैव चालू मानी जाती हैं। पुरानी अनुसूची III में रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांकों के प्रति रोकड़ एवं बैंक शेषों को तुलन–पत्र में शामिल किया जाता है। लेखांकन मानक की अनुसूची III पर सर्वोच्चता को स्वीकारते हुए, लेखांकन मानक–3 के अनुसार रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांकों में दर्शाया जाता हैं।

उदाहरण 3

सनफ़िल लिमिटेड के 31 मार्च 2017 के तुलन–पत्र में निम्नलिखित मदों को दर्शाइए।

विवरण	*राशि (रु.)*
सामान्य संचय (31 मार्च 2016 से)	5,00,000
लाभ एवं हानि विवरण (नाम शेष) 2016–17 के लिए	(3,00,000)

© NCERT not to be republished

हल

सनफ़िल लिमिटेड की पुस्तकें
31 मार्च 2013 को तुलन-पत्र

विवरण	*नोट संख्या*	*31 मार्च 2016 (रु.)*	*31 मार्च 2017 (रु.)*
I. समता एवं देयताएँ			
1. अंशधारक निधि			
आरक्षित एवं अधिशेष	1	2,00,000	5,00,000

खातों की टिप्पणियाँ

विवरण	*राशि (रु.)*
1. आरक्षित एवं अधिशेष	
सामान्य संचय (1 अप्रैल 2016)	5,00,000
घटाया– लाभ एवं हानि विवरण (नाम शेष)	(3,00,000)
	2,00,000

उदाहरण 4

मार्च 31, 2017 को एवलोन लिमिटेड के तुलन-पत्र में निम्नलिखित मदों को दर्शाएँ–

	रु. *(लाख में)*
सामान्य संचय (31 मार्च 2016 से)	5
लाभ एवं हानि विवरण (नाम शेष) 2016-17 के लिए	(8)

हल

एवलोन लिमिटेड की पुस्तकों में
तुलन-पत्र 31 मार्च, 2013 को

विवरण	*नोट संख्या*	*राशि (रु.)*
I. समता एवं देयताएँ		
1. अंशधारक निधि		
(अ) आरक्षित ओर अधिशेष	1	(3,00,000)

© NCERT not to be republished

खातों की टिप्पणियाँ

विवरण	*राशि (रु.)*
1. आरक्षित और अधिशेष	
i) सामान्य संचय (1 अप्रैल 2012)	**5,00,000**
ii) घटाया– लाभ और हानि विवरण	**(8,00,000)**
(नाम शेष)	(3,00,000)

उदाहरण 5

अरूषि लिमिटेड ने 5,000, 10% ऋणपत्र रु. 100 प्रत्येक, का सममूल्य पर निर्गम किया जो 5 वर्ष पश्चात् 5% प्रीमियम पर शोधित होने हैं। इन मदों को कंपनी के तुलनपत्र में दर्शाएँ।

विवरण		*नोट संख्या*	*राशि (रु.)*
I. समता एवं देयताएँ			
1. अंशधारक निधि			
1. संचय एवं अधिशेष			(25,000)
(अ) दीर्घकालिक देयताएँ		2	
(ब) अन्य दीर्घकालिक देयताएँ		3	5,00,000
			25,000
कुल योग			**5,00,000**
II. परिसंपत्तियाँ			
1. चालू परिसंपत्तियाँ			
(अ) नकद एवं नकद समतुल्य			5,00,000
कुल योग			**5,00,000**

खातों पर टिप्पणी

विवरण	*राशि (रु.)*
1 संचय एवं अधिशेष (लाभ व हानि विवरण का शेष)	(25,000)
2 दीर्घकालीन देयताएँ	
5,000, 100 रू. प्रति ऋणपत्र के 10% ऋणपत्र	5,00,000
3 अन्य दीर्घकालीन देयताएं	
ऋणपत्र शोधन पर प्रीमियम	25,000
4 नकद बैंक और नकद समतुल्य	5,00,000

स्वयं करें

निम्नलिखित मदों को मुख्य शीर्ष और उप-शीर्ष में वर्गीकृत करें।

क्रमांक	मदें	मुख्य शीर्ष	उप-शीर्ष (यदि कोई है)
1.	ख्याति		
2.	ज़ब्त अंश		
3.	स्वीकृतियाँ		
4.	प्रारंभिक व्यय		
5.	पूँजी आरक्षित/संचय		
6.	बैंकों से ऋण		
7.	अंशों व ऋणपत्रों में निवेश		
8.	ऋणपत्रों पर उपार्जित एवं देय ब्याज		
9.	रक्षित ऋणों पर उपार्जित परंतु देय नहीं ब्याज		
10.	आरक्षित ऋणों पर उपार्जित परंतु ब्याज देय नहीं		
11.	निवेशों पर उपार्जित ब्याज		
12.	अधिशेष		
13.	प्रतिभूति प्रीमियम संचय		
14.	खुले औज़ार		
15.	कराधान के लिए प्रावधान		
16.	अभिगापन कमीशन		
17.	विनिमय विपत्र		
18.	अदावाकृत लाभांश		
19.	अल्पकालिक ऋण एवं अग्रिम		
20.	पशुधन		
21.	अदत्त/बकाया माँगें		
22.	अपूर्ण प्रदत्त अंशों पर न माँगी गईं देयताएँ		
23.	पूर्वदत्त बीमा		
24.	भंडार एवं अतिरिक्त पुर्ज़े		
25.	ग्राहकों से अग्रिम		
26.	ऋणपत्र मोचन संचय		
27.	ऋणपत्रों के मोचन पर प्रीमियम		
28.	ऋणपत्रों के निर्गम पर हानि		
29.	ऋणपत्र मोचन निधि		
30.	ऋणपत्र मोचन निधि निवेश		
31.	वाहन		

© NCERT not to be republished

32.	पूर्तिकर्त्ताओं को अग्रिम		
33.	पेटेंट्स, व्यापारिक चिह्न, डिज़ाइन		
34.	अग्रिम माँग		
35.	कस्टम अधिकारियों के पास जमा		
36.	स्थाई संचयी लाभांश का बकाया		
37.	फ़र्नीचर और फ़िटिंग्स		
38.	अंशों के निर्गम पर दलाली		
39.	लाभ और हानि विवरण (नाम)		
40.	चालू पूँजी संकर्म		
41.	संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान		
42.	लाभ और हानि विवरण (जमा)		
43.	अपूर्ण प्रदत्त अंशों पर न माँगी गई देयताएँ निवेश के रूप में धारिता		
44.	ऋण के रूप में, कंपनी के प्रति न अभिस्वीकृत किए गए दावे		
45.	पूँजी शोधन संचय		
46.	सार्वजनिक जमा		
47.	अधिकृत पूँजी		

उदाहरण 6

शाइन एवं ब्राईट लिमिटेड कंपनी के दिए गए विवरणों से 31 मार्च 2017 का तुलन-पत्र अनुसूची III के अनुसार तैयार कीजिए।

विवरण	*राशि* रु.	*विवरण*	*राशि* रु.
प्रारंभिक व्यय	2,40,000	ख्याति	30,000
		खुले औज़ार	12,000
10% ऋणपत्र	2,00,000	मोटर वाहन	4,75,000
व्यापारिक रहतिया	1,40,000	कर के लिए प्रावधान	16,000
बैंक में रोकड़	1,35,000		
प्राप्य विपत्र	1,20,000		

© NCERT not to be republished

हल

शाईन और ब्राईट लिमिटेड की पुस्तकों में
तुलन-पत्र 31 मार्च 2015

विवरण	*नोट संख्या*	*वर्तमान प्रतिवेदन अवधि के अंत में यथास्थित आंकड़े*	*पिछली प्रतिवेदन अवधि के अंत में यथास्थित आंकड़े*
I. समता एवं देयताएँ			
1. गैर-चालू दायित्व			
(अ) दीर्घकालीन ऋण	1	2,00,000	
2. चालू दायित्व			
(अ) अल्पकालीन प्रावधान	2	6,000	
II. परिसंपत्तियाँ			
1. गैर-चालू परिसंपत्तियाँ			
(अ) स्थायी परिसंपत्तियाँ	3		
मूर्त परिसंपत्तियाँ		4,75,000	
अमूर्त परिसंपत्तियाँ		30,000	
2. अन्य गैर-चालू परिसंपत्तियाँ *	4	2,60,000	
चालू परिसंपत्तियाँ			
(अ) रहतिया	5	1,52,000	
(ब) व्यापारिक प्राप्य	6	12,000	
(स) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	7	1,35,000	

खातों की टिप्पणियाँ

विवरण		*राशि रु.*
1. दीर्घकालीन ऋण		
10% ऋणपत्र		2,00,000
2. अल्पकालीन प्रावधान		
कराधान के लिए प्रावधान		16,000
3. स्थाई परिसंपत्तियाँ		
(i) मूर्त परिसंपत्तियाँ		
मोटर वाहन		4,75,000
(ii) अमूर्त परिसंपत्तियाँ		
ख्याति		30,000

© NCERT not to be republished

4. अन्य गैर-चालू परिसंपत्तियाँ		
प्रारंभिक व्यय	2,40,000	
		2,40,000
5. रहतिया		
व्यापरिक स्कंध	1,40,000	
खुले औज़ार	12,000	1,52,000
6. व्यापारिक प्राप्य		
प्राप्य विपत्र		12,000
7. रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		
बैंक में रोकड़		1,35,000

* यह मानते हुए कि ऋणपत्रों के निर्गम पर बट्टे को रिपोर्टिंग अवधि के आगामी 12 मास में अपलिखित नहीं किया जाएगा।

3.4.2 लाभ हानि विवरण का प्रारूप एवं विषय सामग्री

विवरण	*नोट संख्या*	*वर्तमान रिपोर्टिंग अवधि के अंत में यथास्थित आंकड़े*	*पिछली रिपोर्टिंग अवधि के अंत में यथास्थित आंकड़े*
I प्रचालन से आय			
II अन्य आय			
III कुल आय (I+II)			
IV व्यय			
उपभोग की गई सामग्री की लागत			
व्यापारिक रहतिए का क्रय			
तैयार माल, चालू संकर्म और			
व्यापारिक रहतिए में परिवर्तन			
कर्मचारी हित व्यय			
वित्तीय लागतें			
ह्रास और अपलेखन व्यय			
अन्य व्यय			
कुल व्यय			
V अपवादिक एवं असाधारण मदों और कर से पूर्व लाभ (III-IV)			
VI अपवादिक मदें			

© NCERT not to be republished

VII	असाधारण मदों और कर से पूर्व लाभ (V-VI)			
VIII	असाधारण मदें			
IX	कर से पूर्व लाभ (VII-VIII)			
X	कर व्यय			
	(1) वर्तमान कर			
	(2) अस्थगित कर			
XI	सतत् प्रचालनों से अवधि का लाभ/(हानि) (IX-X)			
XII	रोक दिए गए प्रचालनों से लाभ/(हानि)			
XIII	रोक दिए गए प्रचालनों के कर संबंधी व्यय			
XIV	रोक दिए गए प्रचालनों से लाभ/(हानि) (कर के पश्चात्) (XII-XIII)			
XV	अवधि के लिए लाभ/(हानि) (XI+XIV)			
XVI	उपार्जन प्रति समता अंश			
	(1) आधारिक			
	(2) तनुकृत			

प्रदर्श. 3.2 लाभ एवं हानि के विवरण का प्रारूप

लाभ व हानि विवरण की मदें निम्न वर्णित हैं–

1. प्रचालनों से आगम

   इसमें सम्मिलित हैं–

   (i) उत्पादों के विक्रय

   (ii) सेवाओं के विक्रय

   (iii) अन्य प्रचालन आगम

वित्तीय कंपनी के संबध में, प्रचालन से आय में ब्याज, लाभांश तथा अन्य वित्तीय सेवाओं से आय को सम्मिलित किया जाता है।

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त प्रत्येक के अंतर्गत, शीर्षों को, लागू प्रसार तक, खातों की टिप्पणियों में अलग–अलग दर्शाया जाएगा।

2. अन्य आय

   (i) ब्याज आय (गैर–वित्तीय कंपनी की स्थिति में)

   (ii) लाभांश आय,

   (iii) निवेशों के विक्रय पर निवल लाभ/(हानि)

   (vi) अन्य गैर–प्रचालन आय (ऐसी आय से प्रत्यक्षत: सबंधित व्ययों के बाद निवल)

© NCERT not to be republished

3. व्यय

आय कमाने के लिए विभिन्न शीर्षों के अंतर्गत दर्शाए गए व्यय निम्न वर्णित हैं।	
(अ) सामग्री की लागत	यह उत्पादन कंपनियों पर लागू होता है। इसमें वस्तुओं के उत्पादन में प्रयुक्त कच्चा माल तथा अन्य समाग्री को सम्मिलित किया जाता है।
(ब) व्यापारिक रहतिए का क्रय	इसका अभिप्राय व्यापार के उद्देश्य से क्रय की गई वस्तुओं से है।
(स) निर्मित माल, संकर्म चालू तथा व्यापारिक रहतिए में परिवर्तन	यह निर्मित माल, संकर्म चालू तथा व्यापारिक रहतिए के प्रारंभिक व अंतिम रहतिए में अंतर है।
(य) कर्मचारी हित व्यय	इस शीर्ष में कर्मचारियों से संबधित व्यय, जैसे वेतन, मज़दूरी, छुट्टियों का नकदीकरण, स्टाफ़ हित आदि, दर्शाए जाते हैं। कर्मचारी हित व्ययों को आगे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष व्ययों में वर्गीकृत किया जा सकता है।
(र) वित्तीय लागत	यह ऋणों पर वर्ष के दौरान ब्याज खर्चों के व्यय हैं। इस शीर्ष में केवल ब्याज को ही दर्शाया जाता है। अन्य वित्तीय व्यय, जैसे कि बैंक खर्च, "अन्य व्ययों" में दर्शाए जाते हैं।
(ल) ह्रास	ह्रास स्थायी परिसंपत्तियों मे घटाव है जबकि अपलेखन अमूर्त संपत्तियों की राशि में कमी है
(व) अन्य व्यय	अन्य सभी व्यय जो उपरोक्त वर्गों में नहीं आते, उन्हें अन्य व्ययों के अंतर्गत दर्शाया जाएगा। अन्य व्ययों को आगे प्रत्यक्ष व्यय, अप्रत्यक्ष व्यय तथा गैर-प्रचालन व्ययों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

उदाहरण 8

निम्नलिखित विवरणों से वर्षान्त 31 मार्च 2015 के लिए लाभ व हानि विवरण तैयार करें–

शेष	रु.	रु.
संयत्र एवं मशीनरी	1,60,000	
भूमि	6,74,000	
संयत्र एवं मशीनरी पर ह्रास	16,000	
क्रय (समायोजित)	4,00,000	
अंतिम रहतिया	1,50,000	
मजदूरी	1,20,000	
विक्रय (निवल)		10,00,000
वेतन	80,000	
बैंक अधिविकर्ष		2,00,000
10% ऋणपत्र(1 अप्रैल 2012 को निर्गम)		1,00,000
समता अंश पूँजी रु. 100 प्रति अंश (पूर्ण प्रदत्त)		2,00,000
अधिमानी अंश पूँजी 1,000, 6% अंश रु. 100 प्रत्येक (पूर्ण प्रदत्त)		1,00,000
	16,00,000	**16,00,000**

अतिरिक्त सूचनाएँ

(i) प्रदत्त पूँजी पर 10% समता लाभांश घोषित किया गया।
(ii) अधिमानी अंश पूँजी पर लाभांश का पूर्ण भुगतान किया गया।
(iii) सामान्य संचय में रु. 2,00,000 हस्तांतरित किए गए।

हल

लाभ एवं हानि विवरण
वर्षान्त 31 मार्च 2017 के लिए

विवरण	*नोट संख्या*	*रशि (रु.)*
I. आय		
प्रचालनों (विक्रय) से आगम		10,00,000
योग		10,00,000
II. व्यय		
उपभोग की गई सामग्री की लागत (समायोजित क्रय)		4,00,000
कर्मचारी हित व्यय	1	2,00,000
वित्तीय लागत		10,000
ह्रास और अपलेखन		16,000
योग		6,26,000
कर से पूर्व लाभ (I-II)		**3,74,000**

खातों की टिप्पणियाँ

विवरण	*(रु.)*	*(रु.)*
1. कर्मचारी हित व्यय		
मज़दूरी	1,20,000	
वेतन	80,000	
		2,00,000

3.5 वित्तीय विवरणों की उपयोगिता एवं महत्त्व

वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ताओं में **प्रबंध, निवेशक, अंशधारक, लेनदार, सरकार, बैंकर, कर्मचारी** और **लोक जन** सम्मिलित हैं। वित्तीय विवरण इन सभी पक्षों को प्रबंध के निष्पादन संबंधी आवश्यक सूचनाएँ उपलब्ध कराते हैं और उपयुक्त आर्थिक निर्णय लेने में सहायक होते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि वित्तीय विवरण वार्षिक रिपोर्ट का अनिवार्य भाग है जिसमें **संचालक रिपोर्ट, अंकेक्षक रिपोर्ट, निगमन अधिशासन रिपोर्ट** तथा **प्रबंध चर्चा** और **विश्लेषण** शामिल हैं। वित्तीय विवरणों की उपयोगिताओं एवं महत्त्व को नीचे प्रस्तुत किया गया है–

1. ***प्रबंधकों की संरक्षणता पर रिपोर्ट***– वित्तीय विवरण अंश धारकों के लिए प्रबंधकों की कार्यदक्षता की रिपोर्ट करते हैं। वित्तीय विवरणों की सहायता से प्रबंधन की कार्यदक्षता या निष्पादन तथा स्वामित्व की अपेक्षाओं के बीच अंतर को समझा जा सकता है।

© NCERT not to be republished

2. ***वित्त नीतियों के लिए आधार***– वित्तीय नीतियाँ, विशेष रूप से सरकार की कराधान नीतियाँ निगमित उपक्रमों के वित्तीय निष्पादन से संबंधित होती हैं। वित्तीय विवरण औद्योगिक, कराधान तथा सरकार की अन्य आर्थिक नीतियों के लिए निविष्टि या निवेश प्रदान करते हैं।
3. ***ऋणों की स्वीकृति के लिए आधार***– निगमित संस्थानों को बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थानों से विभिन्न उद्देश्यों हेतु ऋण उठाने पड़ते हैं। ऋणदाता संस्थान निगमों के वित्तीय निष्पादनों के आधार पर ऋण स्वीकृत करते हैं। अतः वित्तीय विवरण ऋणों के स्वीकार के लिए आधार बनाते हैं।
4. ***प्रत्याशित निवेशकों के लिए आधार***– निवेशकों में दीर्घकालिक और अल्पकालिक दोनों प्रकार के निवेशक सम्मिलित होते हैं। उनके निवेश के निर्णय में प्रमुख ध्यान देने योग्य बात अपने निवेश के लिए न्यायोचित लाभ के साथ सुरक्षा एवं तरलता होती है। वित्तीय विवरण निवेशकों को दीर्घकालिक एवं अल्पकालिक ऋण शोधन क्षमता आकलन के साथ-साथ कारोबार की लाभदायकता को भी आँकने में सहायता देते हैं।
5. ***पहले से ही किए निवेश के मूल्य हेतु दिशा निर्देश***– कंपनी के अंश धारक अपने किए गए निवेश की स्थिति, सुरक्षा तथा वापसी के बारे में जानने को उत्सुक रहते हैं। इसके साथ ही वे इस संदर्भ में भी जानकारी पाना चाहते हैं कि वे व्यवसाय में निवेश को अनुवरत् या सतत् रखें या उसे समाप्त कर दें। इस तरह के महत्त्वपूर्ण निर्णयों को लेने में वित्तीय विवरण अंश धारको को जानकारी प्रदान करते हैं।
6. ***व्यापार संगठनों को अपने सदस्यों की सहायता में सहायक***– व्यापार संगठन इस उद्देश्य के लिए वित्तीय विवरणों का विश्लेषण कर सकते हैं कि वे अपने सदस्यों को सेवा और सुरक्षा प्रदान कर सकें। वे मानक अनुपात विकसित कर सकते हैं और खातों के लिए एकरूपी व्यवस्था निर्मित कर सकते हैं।
7. ***शेयर बाज़ारों की सहायता***– वित्तीय विवरण शेयर बाज़ार को वित्तीय निष्पादनों की रिपोर्टों में पारदर्शिता की सीमा को समझने में सहायता करते हैं तथा उन्हें इस योग्य बनाते हैं कि वे निवेशकों के हितों की रक्षा के लिए अपेक्षित सूचनाओं के लिए माँग कर सकें। वित्तीय विवरण अंश दलालों को इस योग्य बनाते हैं कि विभिन्न संबद्धताओं से वित्तीय स्थिति को जान सकें तथा मूल्य उद्धृत करने के बारे में निर्णय ले सकें।

3.6 वित्तीय विवरणों की सीमाएँ

यद्यपि वित्तीय विवरण तैयार करने में तथा उपयोगकर्त्ताओं को सूचना प्रदान करने में अत्यधिक सावधानी बरती जाती है, तथापि इनकी निम्नलिखित सीमाएँ है–

1. ***वर्तमान स्थिति को प्रतिबिंबित नहीं करते***– वित्तीय विवरण को ऐतिहासिक लागत के आधार पर तैयार किया जाता है। चूंकि धन की क्रय शक्ति बदलती रहती है। अतः वित्तीय विवरणों में दर्शाई गई परिसंपत्तियों एवं दायित्वों (देयताओं) के मूल्य चालू या वर्तमान बाज़ार स्थिति को नहीं दर्शाते हैं।

2. ***परिसंपत्तियाँ वसूल नहीं की जा सकतीं***– लेखांकन को विशेष रूढियों के आधार पर किया जाता है। कुछेक परिसंपत्तियाँ संभवत: कथित मूल्य पर वसूल नहीं की जा सकतीं, अगर कंपनी पर परिसमापन का ज़ोर डाला जाए। तुलन–पत्र में दर्शाई गई परिसंपत्तियाँ केवल असमाप्त या अपरिशोधित लागत प्रदर्शित करती हैं।
3. ***पक्षपाती***– वित्तीय विवरण अभिलिखित तथ्यों, संकल्पनाओं तथा प्रयुक्त परंपराओं का परिणाम होते हैं और लेखाकार या लेखापाल के द्वारा विभिन्न स्थितियों में निजी धारणा के आधार पर निर्णय लिए जाते हैं। अत: परिणामों में पक्षपात दिखता है और वित्तीय विवरणों में दर्शाई गई वित्तीय स्थिति वास्तविक नहीं होती है।
4. ***समग्र सूचना***– वित्तीय विवरण समग्र सूचना दर्शाते हैं न कि विस्तृत सूचना। अतैव, वे शायद उपयोगकर्ता को निर्णय लेने में अधिक सहायक नहीं होते।
5. ***अनिवार्य सूचना का अभाव***– तुलन–पत्र बाज़ार से संबंधित हानि, समझौते के उल्लंघन के बारे में सूचना या जानकारी नहीं दर्शाते हैं। जो कि उद्यम हेतु काफ़ी महत्त्वपूर्ण है।
6. ***गुणवत्तापूर्ण या गुणात्मक सूचना की कमी***– वित्तीय विवरण में केवल आर्थिक जानकारी समाहित होती है तथा इनमें औद्योगिक संबधों, औद्योगिक वातावरण, श्रम संबंधों, कार्य एवं श्रम की गुणवत्ता आदि जैसी गुणात्मक जानकारियाँ नहीं होती हैं।
7. ***ये केवल अंतरिम रिपोर्ट होती हैं***– लाभ व हानि विवरण केवल विशिष्ट अवधि के लाभों/हानियों को दर्शाता है यह आने वाले समय में अर्जन क्षमता के बारे में कुछ नहीं बताता। उसी प्रकार तुलन–पत्र में दर्शाई गई वित्तीय स्थिति एक समय बिंदु पर सत्य हो सकती है परंतु भविष्य की तिथि पर होने वाला परिवर्तन नहीं दर्शाया जाता।

इस अध्याय में प्रयुक्त शब्द

1. वित्तीय विवरण
2. लाभ एवं हानि विवरण
3. तुलन–पत्र
4. उपभोग की गई सामग्री की लागत
5. अंशधारक निधि

सारांश

वित्तीय विवरण लेखांकन प्रक्रिया का अंतिम उत्पाद होते हैं जो एक विशेष अवधि के लिए 'वित्तीय परिणाम' और एक विशेष तिथि पर 'वित्तीय स्थिति' को प्रकट करते है। ये सामान्य उद्देश्य वाले वित्तीय विवरण हैं जो प्रत्येक निगमित उद्यम द्वारा उसमें हित रखने वाले पक्षों के लाभ हेतु तैयार तथा प्रकाशित किए जाते हैं। इन विवरणों के अंतर्गत आय विवरण तथा तुलन–पत्र शामिल होते हैं। इन विवरणों का आधारभूत उद्देश्य प्रबंधकों द्वारा निर्णय लेने के लिए जानकारी उपलब्ध कराने के साथ–साथ बाहरी लोगों को भी जानकारी उपलब्ध कराना है जो कि उपक्रम के काम–काज में रुचि रखते हैं।

© NCERT not to be republished

तुलन-पत्र– तुलन–पत्र में वे सभी परिसंपत्तियाँ दर्शाई जाती हैं, जो एक करोबार के स्वामित्व में होती हैं इसके साथ ही सभी दायित्व जो लेनदारों को देय होते हैं तथा विशेष तिथि पर स्वामियों के दावे शामिल होते हैं। यह एक विशिष्ट महत्त्वपूर्ण विवरण होता है जो एक निगम की सुदृढ़ता अथवा वित्तीय स्थिति को चित्रित करता है।

लाभ-हानि विवरण– एक विशिष्ट अवधि में एक उपक्रम के प्रचालन परिणामों को ज्ञात करने हेतु **लाभ-हानि** विवरण तैयार किया जाता है। यह अर्जित किए गए आगमों तथा आगम–अर्जन हेतु किए गए व्ययों का विवरण है। यह दो तुलन–पत्रों की तिथियों के बीच वर्ष के दौरान व्यवसाय प्रचालनों के परिणाम के रूप में आयों, व्ययों, लाभों तथा हानियों को दर्शाने वाली निष्पादन रिपोर्ट है।

वित्तीय विवरणों का महत्त्व– वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्त्ताओं में अंशधारक, निवेशक, लेनदार, ऋणदाता, ग्राहक, प्रबंधन, सरकार आदि सम्मिलित हैं। वित्तीय विवरण निर्णय लेने की प्रक्रिया में सभी उपयोगकर्ताओं की सहायता करते हैं। इन सदस्यों के सामान्य उद्देश्य आवश्यकताओं के बारे में ये उन्हें आँकड़े उपलब्ध कराते हैं।

वित्तीय विवरणों की सीमाएँ– वित्तीय विवरण सीमाओं से मुक्त नहीं होते हैं। यह केवल समग्र जानकारियाँ हैं ताकि उपयोगकर्ताओं की सामान्य आवश्यकताओं की तुष्टि हो लेकिन विशिष्ट आवश्यकताओं की तुष्टि नहीं होती है। ये तकनीकी विवरण हैं जो केवल लेखांकन ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों द्वारा ही समझे जाते हैं। ये ऐतिहासिक जानकारी प्रदर्शित करते हैं न कि वर्तमान स्थिति, जो कि किसी भी निर्णय लेने की प्रक्रिया के लिए आवश्यक होती है। इसके अतिरिक्त, कोई व्यक्ति संगठन के निष्पादन के बारे में मात्रात्मक बदलावों के बारें में अनुमान लगा सकता है न कि गुणात्मक बदलावों के बारे में, जैसे कि श्रम संबंध, कार्य की गुणवत्ता, कर्मचारी संतुष्टि आदि। वित्तीय विवरण न तो परिपूर्ण होते हैं और न ही परिशुद्ध होते है चूँकि आय एवं व्यय पृथक होते हैं तथा स्वीकृत संकल्पना की बजाय सर्वोत्तम निर्णय का उपयोग करते हैं। अतः किसी भी निर्णय से पहले इन विवरणों का उचित विश्लेषण करने की आवश्यकता होती है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वित्तीय विवरणों का अर्थ स्पष्ट कीजिए
2. वित्तीय विवरणों की सीमाएँ क्या हैं?
3. वित्तीय विवरणों के किन्हीं तीन उद्देश्यों की सूची दीजिए।
4. वित्तीय विवरणों का निम्नलिखित के लिए महत्व बताइए–
   (i) अंशधारक
   (ii) लेनदार
   (iii) सरकार
   (iv) निवेशक

5. एक कंपनी के तुलन-पत्र में निम्नलिखित मदों को आप किस प्रकार दर्शाएँगे–
    (i) चालू परिसंपत्तियाँ – रहतिया
    (ii) नोट पर टिप्पणी में दी गई आकस्मिक देयताएँ
    (iii) अंशधारक निधि – संचय एवं अधिशेष
    (iv) स्थिर परिसंपत्ति – अमूर्त परिसंपत्ति
    (v) चालू वर्ष के लिए प्रस्तावित लाभांश
    (vi) गैर चालू देयताएँ
    (vii) संचयी पूर्वाधिकार अंशो पर बकाया लाभांश

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वित्तीय विवरणों की प्रकृति का वर्णन कीजिए।
2. वित्तीय विवरणों के महत्त्व के बारे में विस्तार से व्याख्या कीजिए।
3. वित्तीय विवरणों की सीमाओं का वर्णन कीजिए।
4. लाभ-हानि विवरण का प्रारूप बनाइए तथा इसकी मदों की व्याख्या कराधान से पूर्व लाभ की राशि की गणना तक कीजिए।
5. तुलन-पत्र का प्रारूप बनाइए तथा तुलन-पत्र के विभिन्न अवयवों की व्याख्या कीजिए।
6. व्याख्या कीजिए कि एक उपक्रम के मामलों में हित रखने वाले विभिन्न पक्षों के लिए वित्तीय विवरण किस प्रकार उपयोगी होते हैं।
7. वित्तीय विवरण अभिलेखित तथ्यों, लेखांकन परिपाटियों तथा व्यक्तिगत निर्णयों के संयोजन को प्रतिबिंबित करते हैं। चर्चा कीजिए।
8. आय विवरण तथा तुलन-पत्र बनाने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

संख्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित मदों को तुलन-पत्र में दर्शाइए–

विवरण	रु.	विवरण	रु.
प्रारंभिक व्यय	2,40,000	ख्याति	30,000
अंश निर्गमन पर बट्टा	20,000	खुले औज़ार	12,000
10% ऋणपत्र	2,00,000	मोटर वाहन	4,75,000
व्यापारिक रहतिया	1,40,000	कर हेतु प्रावधान	16,000
बैंक में रोकड़	1,35,000		
प्राप्य विपत्र	1,20,000		

2. 1 अप्रैल 2017 को जंबो लिमिटेड ने 20% बट्टे पर 100 रु. प्रत्येक वाले 10,000 12% ऋणपत्र जारी किए जो 5 वर्षों बाद शोधनीय हैं। कंपनी ने यह निर्णय लिया कि इन ऋणपत्रों पर दिए गए बट्टे को ऋणपत्रों की जीवनावधि में अपलेखित किया जाए। इन ऋणपत्रों के निर्गमन के तुरंत बाद कंपनी के तुलन-पत्र में मदों को दर्शाइए।

© NCERT not to be republished

3. निम्नलिखित सूचना से गीतांजली लि. का तुलन-पत्र बनाइए–

   रहतिया रु. 14,00,000; समता अंश पूँजी रु. 20,00,000; संयत्र एवं मशीनरी रु. 10,00,000; अधिमानी अंश पूँजी रु. 12,00,000; ऋणपत्र शोधन कोष रु. 6,00,000; अदत्त व्यय रु. 3,00,000; प्रस्तावित लाभांश रु. 5,00,000; भूमि व भवन रु. 20,00,000; चालू निवेश रु. 8,00,000; रोकड़ तुल्यांक रु. 10,00,000; जावेरी लि. (ट्विलाईट लि. की एक सहायक कंपनी) से अल्पावधि ऋण रु. 4,00,000; सार्वजनिक जमा रु. 12,00,000।

4. निम्नलिखित सूचना से जाम लि. का तुलन-पत्र बनाइए–
   रहतिया रु. 7,00,000; समता अंश पूँजी रु. 16,00,000; संयत्र एवं मशीनरी रु. 8,00,000; अधिमानी अंश पूँजी रु. 6,00,000; सामान्य संचय रु. 6,00,000; देय विपत्र रु. 1,50,000; कराधान हेतु प्रावधान रु. 2,50,000; भूमि व भवन रु. 16,00,000; गैर-चालू निवेश रु. 10,00,000; बैंक में रोकड़ रु. 5,00,000; लेनदार रु. 2,00,000; 12% ऋणपत्र रु. 12,00,000 ।

5. निम्नलिखित सूचना से 31 मार्च 2017 को ज्योति लि. का तुलन-पत्र बनाइए–
   भवन रु. 10,00,000; मैट्रो टायर लि. के अंशों में निवेश रु. 3,00,000; भंडार और अतिरिक्त पुर्ज़े रु. 1,00,000; लाभ-हानि विवरण (डेबिट) शेष रु. 90,000; रु. 20 प्रत्येक वाले रु. 5,00,000 पूर्ण प्रदत्त समता अंश; पूँजी शोधन कोष रु. 1,00,000; 10% ऋणपत्र रु. 3,00,000; अदत्त लाभांश रु. 90,000; अंश विकल्प अदत्त खाता रु. 10,000।

6. बृंदा लि. ने निम्नलिखित सूचनाएँ प्रदान कीं।
   (क) रु. 100 प्रत्येक वाले, 25000, 10% ऋणपत्र।
   (ख) रु. 10,00,000 का बैंक ऋण जो 5 वर्ष बाद देय है।
   (ग) ऋणपत्रों पर ब्याज अभी दिया जाना बाकी है।
   31 मार्च 2017 को कंपनी के तुलन-पत्र में उपरोक्त मदों को दर्शाइए।

7. निम्नलिखित सूचना से 31 मार्च 2017 को ब्लैक स्वान लि. का तुलन-पत्र तैयार कीजिए–

		रु.
सामान्य संचय	:	3,000
10% ऋणपत्र	:	3,000
लाभ-हानि विवरण का शेष	:	1,200
स्थायी संपत्तियों पर ह्रास	:	700
सकल खंड	:	9,000
चालू देयताएँ	:	2,500
प्रारंभिक व्यय	:	300
10% अधिमानी अंश पूँजी	:	5,000
रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	:	6,100

12129CH05

लेखांकन अनुपात

4

निर्णायकों की सूचना संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु व्यावसायिक संगठन के संदर्भ में वित्तीय सूचनाएँ प्रदान करना वित्तीय विवरणों का प्रमुख उद्देश्य है। तैयार किए गए वित्तीय विवरण निगम क्षेत्र के एक व्यावसायिक उद्यम द्वारा उपयोगकर्ताओं के लिए प्रकाशित और उपलब्ध कराए जाते हैं। ये विवरण वित्तीय आँकड़े उपलब्ध कराते हैं जिन्हें विश्लेषण तुलनात्मकता एवं व्याख्या की आवश्यकता होती है ताकि वित्तीय सूचनाओं के बाहरी उपयोगकर्ताओं के साथ-साथ आंतरिक उपयोगकर्ता भी सक्षमता से निर्णय ले सकें। इस कार्य को "*वित्तीय विवरण विश्लेषण* कहते हैं।" इसे लेखांकन का अभिन्न एवं महत्त्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। जैसा कि पिछले अध्याय में संकेत दिया जा चुका है वित्तीय विवरणों के विश्लेषण की सर्वाधिक उपयोग की जाने वाली तकनीकें तुलनात्मक विवरण, समरूप विवरण, प्रवृत्ति विश्लेषण, लेखांकन अनुपात तथा रोकड़ प्रवाह विश्लेषण हैं। पहले तीन के बारे में पिछले अध्याय में विस्तार से चर्चा की जा चुकी है। यह अध्याय वित्तीय विवरणों में समाहित सूचना विश्लेषण के लिए *लेखांकन अनुपात* की तकनीक पर आधारित है जो फर्म की ऋण शोधन क्षमता, कार्य कुशलता तथा लाभप्रदता के मूल्यांकन में सहायक होते हैं।

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के उपरांत आप –

- *लेखांकन अनुपात के अर्थ, उद्देश्यों तथा विश्लेषणों की सीमाओं की व्याख्या कर सकेंगे।*
- *सामान्यत: प्रयुक्त किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के अनुपातों को पहचान सकेंगे।*
- *समानता रखें फ़र्म की ऋण शोधन क्षमता, द्रवता, कार्य कुशलता एवं लाभप्रदता के मूल्यांकन हेतु विभिन्न अनुपातों का परिकलन कर सकेंगे।*
- *अंत:-फ़र्म एवं अंतरा-फ़र्म की तुलना के लिए परिकलित विभिन्न अनुपातों की व्याख्या कर सकेंगे।*

4.1 लेखांकन अनुपात का अर्थ

जैसा कि पहले बताया गया है, लेखांकन अनुपात वित्तीय विवरण के विश्लेषणों की महत्त्वपूर्ण तकनीक है। अनुपात एक गणितीय संख्या है जिसे दो या दो से अधिक संख्याओं की संबद्धता से संदर्भ हेतु परिकलित किया जाता है और इसे भिन्न समानुपात, प्रतिशत, आवर्त के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। जब वित्तीय विवरणों से लिए गए दो लेखांकन अंकों के संदर्भ में, एक संख्या को परिकलित किया जाता

© NCERT not to be republished

है तब इसे *लेखांकन अनुपात* के नाम से जाना जाता है। उदाहरण के लिए, यदि एक व्यवसाय का सकल लाभ 10,000 रुपये है और प्रचालन से आगम 1,00,000 रुपये है तो कहा जा सकता है कि प्रचालन से आगम पर सकल लाभ 10% $\frac{10,000}{1,00,000} \times 100$ हुआ है। इस अनुपात को सकल लाभ अनुपात कहते हैं। ठीक इसी प्रकार से स्टॉक/रहतिया आवर्त अनुपात 6 हो सकता है जो यह दर्शाता है कि रहतिया एक वर्ष में प्रचालन से आगम के 6 गुणा है।

यहाँ पर यह अवलोकन करने की आवश्यकता है कि लेखांकन अनुपात संबंध या संबद्धता प्रदर्शित करते है। यदि वित्तीय विवरण से कोई लेखांकन संख्याएँ निष्कर्षित की जाती हैं तो वे अनिवार्यतः व्युत्पन्न संख्याएँ होती हैं और उनकी प्रभावोत्पादकता या सक्षमता बहुत हद तक मूलभूत संख्या पर निर्भर करती है, जिसके द्वारा उनका परिकलन किया गया था। यद्यपि, यदि वित्तीय विवरणों में कुछ गलतियाँ सन्निहित होती हैं, तब अनुपात विश्लेषण के रूप में प्राप्त की गई संख्याएँ भी त्रुटिपूर्ण दृश्य लेख प्रस्तुत करेंगी। इसके अतिरिक्त एक अनुपात का परिकलन दो या दो से अधिक संख्याओं का उपयोग करते हुए होना चाहिए (परस्पर सार्थक रूप से सह संबद्ध) दो असंबद्ध संख्याओं का उपयोग करते हुए परिकलित किया गया अनुपात कोई भी उद्देश्य पूरा कर नहीं पाएगा। उदाहरण के लिए, यदि एक व्यवसाय में फ़र्नीचर 1,00,000 रुपये का है और क्रय 3,00,000 रुपये का होता है, तब क्रय का फ़र्नीचर से अनुपात $\frac{3,00,000}{1,00,000} = 3$ है, लेकिन यह अनुपात कोई औचित्य नहीं रखता है। इसका कारण यह है कि इन दोनों पहलुओं के बीच कोई संबंध नहीं है।

4.2 अनुपात विश्लेषण के उद्देश्य

अनुपात विश्लेषण वित्तीय विश्लेषणों द्वारा प्रकट किए गए परिणामों के निर्वचन का अपरिहार्य अंग है। यह उपयोगकर्त्ताओं को निर्णायक वित्तीय सूचनाएँ उपलब्ध कराता है और उन क्षेत्रों को इंगित करता है जहाँ जाँच पड़ताल की आवश्यकता है। अनुपात विश्लेषण एक तकनीक है जिसमें अंकगणितीय संबंधों के उपयोग द्वारा आँकड़ों का पुनः समूहन सम्मिलित है, यद्यपि इसकी व्याख्या एक जटिल विषय है। इसके लिए वित्तीय विवरण की तैयारी में प्रयुक्त नियमों तथा उसके पहलू की सूक्ष्म समझ की आवश्यकता होती है। जब एक बार इसे प्रभावी ढंग से निर्धारित कर लिया जाता है तब यह बहुत अधिक सूचनाएँ उपलब्ध कराता है जो विश्लेषक को इसमें मदद देती है–

1. व्यवसाय के उन क्षेत्रों को जानना जिन्हें अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।
2. उन संभावित क्षेत्रों के बारे में जानना जिन्हें अपेक्षित दिशा में प्रयासों के द्वारा बेहतर बनाया जा सकता है।
3. व्यवसाय में लाभप्रदता, द्रवता, ऋण शोधन क्षमता तथा सक्षमता के स्तर के गहन विश्लेषण को उपलब्ध कराता है।
4. सर्वोत्तम औद्योगिक मानकों के साथ निष्पादन की तुलना के द्वारा प्रतिनिधिक या समूहगत विश्लेषण करने के लिए सूचना उपलब्ध कराता है।
5. भावी आकलनों एवं प्रक्षेपों के लिए वित्तीय विवरणों से प्राप्त उपयोगितापूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध कराता है।

4.3 अनुपात विश्लेषण के लाभ

यदि अनुपात विश्लेषण उचित ढंग से किया जाए तो उपयोगकर्ता की कार्यकुशलता की समझ बेहतर बनती है जिसके साथ व्यवसाय को सुचारू रूप से संचालित किया जाता है। संख्यात्मक संबद्धता व्यवसाय के अनेक अव्यक्त पहलुओं पर प्रकाश डालती है। यदि उपयुक्त विश्लेषण किया जाए, तो अनुपात व्यवसाय के विभिन्न समस्या क्षेत्रों के साथ साथ सुदृढ़ बिंदुओं को समझने में सहायता करते हैं। समस्या क्षेत्रों का ज्ञान प्रबंधक को भविष्य में और बेहतर ढंग से कार्य करने में मदद करता है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि अनुपात स्वयं में साधन नहीं हैं, यह साध्य को प्राप्त करने का एक साधन हैं। इनकी भूमिका अनिवार्य रूप से निदेशात्मक एवं चेतावनी सूचक है। अनुपात विश्लेषण के कई लाभ हैं। जिन्हें संक्षिप्त रूप से नीचे बताया गया है।

1. *निर्णयों की प्रभावोत्पादकता समझने में मदद करते हैं* – अनुपात विश्लेषण आपको यह समझने में मदद करते हैं कि क्या व्यावसायिक फर्म ने सही प्रकार के प्रचालन, निवेश एवं वित्तीय निर्णय लिए हैं या नहीं। वे संकेत देते हैं कि इन्होंने निष्पादन को सुधारने में किस सीमा तक सहायता की है।
2. *जटिल अंकों को सरल बनाते एवं संबंध स्थापित करते हैं* – अनुपात जटिल लेखांकन संख्याओं को सरल बनाने में तथा उनके बीच संबंधों को दर्शाने में मदद करते हैं। ये वित्तीय सूचनाओं को प्रभावी तरीके से संक्षेपीकृत करने और प्रबंधकीय सक्षमता, फर्म की उधार पात्रता एवं अर्जन क्षमता आदि का आकलन करने में मदद करते हैं।
3. *तुलनात्मक विश्लेषण में सहायक* – अनुपातों का परिकलन केवल एक वर्ष के लिए ही नहीं होता है। जब कई वर्षों के आँकड़ों को एक साथ रखते हैं तो वे व्यवसाय में प्रकट प्रवृत्ति को व्यक्त करने में व्यापक सहायता करते हैं। प्रवृत्ति की जानकारी से व्यवसाय के बारे में प्रक्षेप बनाने में सहायता मिलती है जो कि बहुत उपयोगी विशेषता है।
4. *समस्या क्षेत्रों की पहचान* – अनुपात व्यवसायों में समस्या क्षेत्रों की पहचान करने के साथ–साथ सुस्पष्ट पहलुओं या क्षेत्रों को उभारने में सहायता करते हैं। समस्या क्षेत्र की ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है जबकि सुस्पष्ट क्षेत्रों को परिष्कृत करने की ज़रूरत होती है जिससे कि बेहतर परिणाम प्राप्त हों।
5. *स्वॉट* (SWOT) *विश्लेषण को संभव करते हैं* – अनुपात व्यवसाय में होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या करने में काफ़ी सीमा तक सहायता करते हैं। परिवर्तन की सूचना प्रबंधन को वर्तमान भय तथा सुअवसरों को बेहतर ढंग से समझने में सहायक होते हैं और व्यवसाय को अपना स्वॉट (SWOT) (अर्थात्, शक्ति, कमज़ोरी, अवसर एवं भय) विश्लेषण करने के योग्य बनाते हैं।
6. *विभिन्न तुलनाएँ* – अनुपात कुछ विशेष (मानदंडों के साथ) तुलनाओं में मदद करते हैं, जो फ़र्म को यह मूल्यांकित करने में सहायक होते हैं। कि कार्य निष्पादन बेहतर है या नहीं। इस उद्देश्य के लिए एक व्यवसाय की लाभप्रदता, ऋण शोधन क्षमता तथा द्रवता आदि की तुलना की जा सकती है। जैसे कि– (i) विभिन्न लेखांकन अवधियों में परस्पर तुलना (अंतरा–फ़र्म तुलना/समय श्रृंखला विश्लेषण), (ii) अन्य व्यावसायिक उद्यमों के साथ (अंतर–फर्म तुलना/अंतः विभागीय विश्लेषण), और (iii) फ़र्म/उद्योग के लिए निर्धारित मानकों के साथ (उद्योग के मानकों या अपेक्षित मानकों की तुलना करना)।

4.4 अनुपात विश्लेषण की सीमाएँ

चूँकि अनुपातों को वित्तीय विवरणों से प्राप्त किया जाता है, अतः मूल वित्तीय विवरण में कैसी भी कमज़ोरियाँ अनुपात विश्लेषण से प्राप्त विश्लेषणों में भी दृष्टिगत होंगी। इसलिए वित्तीय विवरणों की सीमाएँ भी अनुपात विश्लेषणों की सीमाएँ बन जाती हैं। यद्यपि, अनुपात की व्याख्या हेतु, उपयोगकर्ता को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वित्तीय विवरणों को तैयार करने में किन नियमों का पालन किया गया था और साथ ही उनकी प्रकृति एवं सीमाओं को भी स्मरण रखना चाहिए। अनुपात विश्लेषण की सीमाएँ, जो कि प्रथमतः वित्तीय विवरण की प्रकृति के रूप में आती हैं, निम्नानुसार हैं–

1. *लेखांकन आँकड़ों की सीमाएँ* – लेखांकन आँकड़े परिशुद्धता और अन्तिमता की अनापेक्षित छाप देते हैं। वास्तव में लेखांकन आँकड़े, "अभिलिखित तथ्यों लेखांकन परंपराओं और वैयक्तिक निर्णयों के एक समिश्रण को प्रतिबिंबित करते हैं तथा ये निर्णय एवं परंपराएँ अनुप्रयुक्त हो कर उन्हें महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं।" उदाहरण के लिए, एक व्यवसाय का लाभ ही एकदम सही एवं अंतिम संख्या नहीं होती हैं। यह केवल लेखांकन नीतियों के अनुप्रयोग पर आधारित लेखाकार का एक विचार मात्र होता है। एक निर्णय की सच्चाई या सटीकता अनिवार्यतः उन लोगों की योग्यता एवं सत्यनिष्ठा पर निर्भर करती है जो उन्हें तैयार करते हैं और उनकी निष्ठा सामान्य तौर पर स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों एवं परंपराओं के साथ होती है। इसलिए वित्तीय विवरण मसले की बिलकुल सही तस्वीर नहीं प्रस्तुत कर सकते और इस प्रकार से अनुपात भी सही तस्वीर नहीं दर्शाएँगे।
2. *मूल्य स्तर बदलावों की उपेक्षा*– वित्तीय विवरण स्थिर मुद्रा मापन सिद्धांत पर आधारित होते हैं। इसकी अव्यक्तता यह मानती है कि हर स्तर में मूल्य बदलाव या तो न्यूनतम है या कोई मायने नहीं रखती है। लेकिन इसका सच कुछ अलग है। हम सामान्यतः स्फीतिकारी अर्थव्यवस्था में रह रहे हैं जहाँ मुद्रा की शक्ति लगातार गिर रही है। मूल्य के स्तर में एक बदलाव विभिन्न वर्षों के लेखांकन के वित्तीय विवरणों के विश्लेषण को अर्थहीन बना देता है क्योंकि लेखांकन रिकॉर्ड मुद्रा के मूल्य में आए परिवर्तन की उपेक्षा करता है।
3. *गुणात्मक या गैर–मौद्रिक पहलू की उपेक्षा* – लेखांकन एक व्यवसाय के परिमाणात्मक (अथवा मौद्रिक) पहलू के बारे में जानकारी प्रदान करता है। यद्यपि अनुपात केवल मौद्रिक पहलू को प्रकट करता है और पूरी तरह से गैर–मौद्रिक (गुणात्मक) पहलू की उपेक्षा करता है।
4. *लेखांकन व्यवहार में विभिन्नताएँ*– यहाँ पर स्टॉक के मूल्यांकन, मूल्यह्रास के परिकलन, अमूर्त परिसंपत्तियों के निरूपण, कुछ विशिष्ट वित्तीय चरों की परिभाषा आदि के लिए विभिन्न लेखांकन नीतियों का उपयोग होता है, जोकि व्यवसाय के विभिन्न पहलुओं के लेन–देन के लिए उपलब्ध होती हैं। ये विभिन्नताएँ अंतः विभागीय विश्लेषण पर एक बड़ा प्रश्न चिह्न लगाती हैं। चूँकि यहाँ पर विभिन्न व्यावसायिक उद्यमों द्वारा लेखांकन व्यवहारों में वैवध्यताओं का पालन किया जाता है। अतः उनके वित्तीय विवरणों की वैध तुलना संभव नहीं है।
5. *पूर्वानुमान* – केवल ऐतिहासिक विश्लेषणों पर भविष्य की प्रवृत्ति के बारे में पूर्वानुमान लगाना संभव नहीं है। उचित पूर्वानुमानों के लिए गैर–वित्तीय घटकों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

आइए अब हम अनुपातों की सीमाओं के बारे में बात करें। इसकी विभिन्न सीमाएँ ये हैं–

1. *साधन न कि साध्य*– अनुपात स्वयं में साध्य नहीं हैं बल्कि साध्य को प्राप्त करने का एक साधन हैं।
2. *समस्या समाधान की क्षमता से रहित* – इनकी भूमिका अनिवार्यत: संकेतात्मक है और एक चेतावनी सूचक है लेकिन यह किसी समस्या का हल उपलब्ध नहीं कराते हैं।
3. *मानकीकृत परिभाषाओं का अभाव* – अनुपात विश्लेषण में प्रयुक्त की जाने वाली विभिन्न अवधारणाओं के लिए एक मानकीकृत परिभाषा का अभाव होता है। उदाहरण के लिए, तरल देयताओं की कोई मानक परिभाषा नहीं है। सामान्यत: इसके अंतर्गत सभी चालू दायित्व शामिल होते हैं। लेकिन कई बार चालू दायित्व के अंतर्गत बैंक अधिविकर्ष शामिल नहीं होता है।
4. *सार्वभौमिक स्वीकृत मानक स्तर का अभाव* – यहाँ पर कोई ऐसा सार्वभौमिक मापदंड नहीं है जो आदर्श अनुपातों के स्तर को स्पष्ट करे। यहाँ पर सार्वभौमिक स्वीकार्य स्तरों की कोई मानक सूची भी नहीं है, और भारत में, औद्योगिक औसत भी उपलब्ध नहीं है।
5. *असंबद्ध आँकड़ों पर आधारित अनुपात* – असंबंद्ध आँकड़ों पर परिकलित अनुपात, वास्तव में एक अर्थहीन प्रयास या अभ्यास है। उदाहरण के लिए, यदि लेनदार 1,00,000 रुपये के है तथा फर्नीचर 1,00,000 रुपये का है और इसे 1:1 में व्यक्त करते हैं, लेकिन यह बेकार है और सक्षमता या ऋण शोधन क्षमता के मूल्यांकन हेतु कोई औचित्यता नहीं है।

इसलिए अनुपातों का उपयोग सचेतना के साथ, उनकी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए जब एक संगठन के निष्पादन को मूल्यांकित किया जा रहा हो और उसके सुधार हेतु भावी कार्यनीतियों का नियोजन किया जा रहा हो।

स्वयं जाँचिए 1

1. बताएँ कि निम्नलिखित में कौन-सा कथन सही है या गलत–
   (क) वित्तीय रिपोर्टिंग का एक मात्र उद्देश्य प्रबंधकों को कार्यशीलता की प्रगति के बारे में सूचित रखना है।
   (ख) वित्तीय विवरणों में उपलब्ध कराए गए आँकड़ों के विश्लेषण को वित्तीय विश्लेषण कहा जाता है।
   (ग) दीर्घकालिक ऋण फ़र्म की ब्याज भुगतान क्षमता और मूल राशि के भुगतान के प्रति सरोकार रखते हैं।
   (घ) एक अनुपात सदैव एक संख्या के द्वारा दूसरी संख्या के विभाजन के भागफल के रूप में व्यक्त किया जाता है।
   (च) अनुपात एक फ़र्म के विभिन्न लेखांकन अवधियों के परिणामों के साथ-साथ अन्य व्यावसायिक उद्यमों से तुलना में सहायता करते हैं।
   (घ) एक अनुपात मात्रात्मक एवं गुणात्मक, दोनों पहलुओं को दर्शाता है।

4.5 अनुपातों के प्रकार

अनुपातों के वर्गीकरण के दो प्रकार हैं – (1) परंपरागत वर्गीकरण, और (2) क्रियात्मक वर्गीकरण। परंपरागत वर्गीकरण उस वित्तीय विवरण पर आधारित होता है जो संबंधित अनुपात का निर्धारक होता है। इस आधार पर अनुपातों को निम्नवत् वर्गीकृत किया गया है–

© NCERT not to be republished

1. *लाभ व हानि विवरण अनुपात* – लाभ व हानि विवरण से दो चरों के एक अनुपात को लाभ हानि विवरण अनुपात के रूप में जाना जाता है। उदाहरण के लिए प्रचालन से आगम एवं सकल लाभ के अनुपात को सकल लाभ अनुपात के रूप में जानते हैं और यह लाभ व हानि विवरण के दोनों आँकड़ों को प्रयुक्त कर परिकलित किया गया है।
2. *तुलन-पत्र अनुपात* – यदि इस प्रकरण में दोनों चर तुलन-पत्र से हैं तो इसे तुलन-पत्र अनुपात के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। उदाहरण के लिए, चालू परिसंपत्तियाँ तथा चालू दायित्व के अनुपात को चालू अनुपात के नाम से जानते हैं और इसे तुलन-पत्र से प्राप्त दोनों आँकड़ों के उपयोग से परिकलित किया गया है।
3. *मिश्रित अनुपात* – यदि अनुपात का परिकलन दो भिन्न चरों-अर्थात् एक चर लाभ व हानि विवरण से लेकर तथा एक चर तुलन-पत्र से लेकर किया जाता है तो उसे मिश्रित अनुपात कहा जाता है। उदाहरण के लिए, उधार प्रचालन से आगम तथा व्यापारिक प्राप्य के अनुपात जिसे (व्यापारिक प्राप्य के आवर्त अनुपात के रूप से जानते हैं) के परिकलन में एक संख्या लाभ व हानि विवरण से (उधार प्रचालन से आगम) तथा दूसरी संख्या को तुलन-पत्र (व्यापारिक प्राप्य) से लिया जाता है।

यद्यपि लेखांकन अनुपातों का परिकलन वित्तीय विवरणों से प्राप्त आँकड़ों द्वारा किया जाता है, लेकिन वित्तीय विवरणों के आधार पर अनुपात का वर्गीकरण व्यवहार में बहुत कम प्रयुक्त होता है। यह स्मरण रहे कि लेखांकन का आधारभूत उद्देश्य वित्तीय निष्पादन (लाभप्रदता), वित्तीय स्थिति (मुद्रा की उगाही बुद्धिमता से और निवेश की क्षमता) के साथ-साथ वित्तीय स्थिति में उत्पन्न परिवर्तन (प्रचालन स्तर में परिवर्तन के लिए संभावित व्याख्या) पर उपयोगी प्रकाश डालना है। इस प्रकार से ज्ञात किए गए अनुपात के उद्देश्य पर आधारित वैकल्पिक वर्गीकरण (क्रियात्मक वर्गीकरण), सर्वाधिक प्रयोग में लाया जाने वाला वर्गीकरण है, जिसे नीचे बताया गया है–

1. *द्रवता अनुपात* – अपनी देनदारियों को पूरा करने हेतु एक व्यवसाय को तरल निधियों की आवश्यकता होती है। व्यवसाय की अपने पणधारियों को देय राशियों की भुगतान क्षमता को द्रवता के रूप में जाना जाता है। और इस मापने के अनुपात को 'द्रवता अनुपात' के नाम से जानते हैं। ये सामान्यतः प्रकृति में अल्पकालिक होते हैं।
2. *ऋण शोधन क्षमता अनुपात*– व्यवसाय की ऋण शोधन क्षमता का निर्धारण पणधारियों, विशेष रूप से बाहरी पणधारियों के प्रति इसकी संविदात्मक दायित्व (दायित्वों) के पूरा करने की क्षमता से होता है तथा ऋणशोधन क्षमता की स्थिति को मापने के लिए परिकलित अनुपात को 'ऋण शोधन क्षमता अनुपात' के नाम से जानते हैं। ये अनिवार्यतः प्रकृति से दीर्घकालिक होते हैं।
3. *सक्रियता या (आवर्त) अनुपात* – यह उन अनुपातों को संदर्भित करता है जिन्हें संसाधनों के प्रभावी उपयोगिता पर आधारित व्यवसाय की सक्रियता या कार्यात्मकता की क्षमता के मापन हेतु परिकलित किया जाता है। इसलिए इन्हें सक्षमता अनुपात के नाम से भी जानते हैं।
4. *लाभप्रदता अनुपात* – यह अनुपात व्यवसाय में नियोजित फंड (या परिसंपत्तियाँ) अथवा प्रचालन से आगम से संबंधित लाभ के विश्लेषण के लिए प्रयोग किया जाता है और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए परिकलित अनुपात को लाभप्रदता अनुपात के रूप में जानते हैं।

4.6 द्रवता अनुपात

द्रवता अनुपात का परिकलन व्यवसाय के अल्पकालिक ऋणशोधन क्षमता को मापने हेतु किया जाता है अर्थात् चालू दायित्व को चुकाने के लिए फर्म की क्षमता जानना है। इन्हें तुलन–पत्र में चालू परिसंपत्तियों एवं चालू दायित्व की राशि को ज्ञात करके विश्लेषित किया जाता है। इस श्रेणी में शामिल दो अनुपात हैं — चालू अनुपात तथा तरल अनुपात

4.6.1 चालू अनुपात

चालू अनुपात चालू परिसंपत्तियों तथा चालू दायित्व का समानुपात होता है। इसे निम्नवत् व्यक्त किया जाता है–

$$\text{चालू अनुपात} = \text{चालू परिसंपत्तियाँ} - \text{चालू दायित्व अथवा } \frac{\text{चालू परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$$

चालू परिसंपत्तियों के अंतर्गत चालू निवेश, स्टॉक (रहतिया/माल सूची), व्यापारिक प्राप्य (देनदार तथा प्राप्य विपत्र), रोकड़ तथा रोकड़ तुल्यांक, अल्पकालीन ऋण एवं अग्रिम तथा अन्य चालू परिसंपत्तियाँ जैसे पूर्वदत्त व्यय, अग्रिम कर तथा उपार्जित आय आदि शामिल हैं।

चालू दायित्व के अंतर्गत अल्पकालीन ऋण, व्यापारिक देय (लेनदार तथा देय विपत्र), अन्य चालू दायित्व तथा अल्पकालीन प्रावधान शामिल हैं।

उदाहरण 1

निम्नलिखित जानकारी से चालू अनुपात का परिकलन कीजिए–

विवरण	रु.	विवरण	रु.
रहतिया	50,000	रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	30,000
व्यापारिक प्राप्य	50,000	व्यापारिक देय	1,00,000
अग्रिम कर	4,000	अल्पकालीन ऋण (बैंक अधिविकर्ष)	4,000

हल

$$\text{चालू अनुपात} = \frac{\text{चालू परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$$

चालू परिसंपत्तियाँ = रहतिया + व्यापारिक प्राप्य + अग्रिम कर + रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक

= 50,000 रु. + 50,000 रु.+ 4,000 रु. + 30,000 रु. = 1,34,000 रु.

चालू दायित्व = व्यापारिक देय + अल्पकालीन ऋण

= 1,00,000 रु. + 4,000 रु. = 1,04,000 रु.

$$\text{चालू अनुपात} = \frac{1,34,000 \text{ रु.}}{1,04,000 \text{ रु.}}$$

= 1.29:1

महत्त्व– यह एक मापदंड प्रदान करता है कि चालू परिसंपत्तियाँ, चालू देयताओं को किस सीमा तक पूरा करने में समर्थ हैं। चालू दायित्व के ऊपर चालू परिसंपत्तियों का आधिक्य चालू परिसंपत्तियों की वसूली एवं निधियों

© NCERT not to be republished

के प्रवाह में अनिश्चितता के प्रति उपलब्ध सुरक्षा राशि के साधन या उपाय को उपलब्ध कराता है। यह अनुपात औचित्यपूर्ण होना चाहिए। यह न तो बहुत ऊँचा होना चाहिए और न ही बहुत निम्न। दोनों ही स्थितियों की अन्तर्निहित हानियाँ हैं। एक अति उच्च चालू अनुपात, चालू परिसंपत्तियों में उच्च निवेश की ओर संकेत करता है जो कि एक अच्छा संकेत नहीं है चूँकि वह संसाधनों की अधूरी उपयोगिता अनुचित उपयोग दर्शाता है। एक निम्न अनुपात व्यवसाय के लिए संकट की स्थिति है और इसे जोखिम झेलने जैसी स्थिति में पहुँचाता है जहाँ वह इस योग्य नहीं होगा कि अपने अल्पकालिक ऋणों का भुगतान समय पर करने के काबिल हो। यदि यह समस्या विद्यमान रही है तो यह फर्म की ऋण पात्रता पर विपरीत प्रभाव डालता है। सामान्यत: यह अनुपात 2:1 आदर्श माना जाता है।

4.6.2 तरल अनुपात

यह त्वरित (तरल) परिसंपत्तियों पर चालू दायित्व का अनुपात है। इसे निम्नवत् व्यक्त किया जाता है–

$$\text{तरल अनुपात} = \text{तरल परिसंपत्तियाँ} - \text{चालू दायित्व या } \frac{\text{त्वरित अथवा तरल परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू देनदारियाँ}}$$

तरल परिसंपत्तियों को उन परिसंपत्तियों के रूप में परिभाषित किया गया है, जो तुरंत ही नकदी में परिवर्तनीय हैं। जब हम तरल परिसंपत्तियों का परिकलन करते हैं तब हम अंतिम स्टॉक तथा अन्य चालू परिसंपत्तियों जैसे पूर्वदत्त व्ययों, अग्रिम कर आदि को चालू परिसंपत्तियों में से घटा देते हैं, क्योंकि गैर–तरल चालू परिसंपत्तियों के अपवर्जन से, इसे व्यवसाय के द्रवता स्थिति के मापन के रूप में चालू अनुपात की अपेक्षा बेहतर माना जाता है। इसे व्यवसाय की द्रवता स्थिति पर संपूरक जाँच के रूप में काम लेने के लिए परिकलित किया जाता है। इसलिए इसे अम्ल जाँच अनुपात के नाम से भी जाना जाता है।

उदाहरण 2

उदाहरण 1 में दी गई सूचना के आधार पर तरल अनुपात परिकलित कीजिए।

हल

$$\text{तरल अनुपात} = \frac{\text{तरल परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$$

तरल परिसंपत्तियाँ = चालू परिसंपत्तियाँ – (अंतिम स्टॉक + अग्रिम कर)
= 1,34,000 रु. – (50,000 रु. + 4,000 रु.)
= 80,000 रु.

चालू दायित्व = 1,04,000 रु.

$$\text{तरल अनुपात} = \frac{80,000 \text{ रु.}}{1,04,000 \text{ रु.}}$$

= 0:77.1

महत्त्व—यह अनुपात व्यवसाय को बिना किसी त्रुटि के, उसकी अल्पकालिक दायित्व को पूरा करने की क्षमता का मापक उपलब्ध कराता है। सामान्यत: यह माना गया है कि सुरक्षा के लिए 1:1 अनुपात होना चाहिए क्योंकि अनावश्यक रूप से बहुत निम्न अनुपात बहुत जोखिम युक्त होता है और उच्च अनुपात यह प्रकट करता है कि कम लाभ वाले अल्पकालिक निवेशों में अन्यथा संसाधनों का आबंटन होता है।

उदाहरण 3

निम्नलिखित सूचना से द्रवता अनुपात का परिकलन कीजिए –

	रु.
चालू दायित्व	50,000
चालू परिसंपत्तियाँ	80,000
स्टॉक	20,000
अग्रिम कर	5,000
पूर्वदत्त व्यय	5,000

हल

तरल अनुपात $= \dfrac{\text{तरल परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$

तरल परिसंपत्तियाँ = चालू परिसंपत्तियाँ – (स्टॉक + पूर्वदत्त व्यय + अग्रिम कर)

= 80,000 रु. – (20,000 रु. + 5,000 रु. + 5,000 रु.)

= 50,000 रु.

तरल अनुपात $= \dfrac{50,000 \text{ रु.}}{50,000 \text{ रु.}}$

= 1:1

उदाहरण 4

एक्स लिमिटेड का चालू अनुपात 3.5:1 का है और तरल अनुपात 2:1 का है। यदि तरल परिसंपत्ति पर चालू परिसंपत्ति का आधिक्य 24,000 रु. है जो रहतिया को दर्शाता है। चालू परिसंपत्तियाँ एवं चालू दायित्व का परिकलन कीजिए।

हल

चालू अनुपात = 3.5:1

तरल अनुपात = 2:1

माना, चालू दायित्व = x

चालू परिसंपत्तियाँ	=	3.5x होगी
एवं तरल परिसंपत्तियाँ	=	2x
अतः, रहतिया	=	चालू परिसंपत्तियाँ – तरल परिसंपत्तियाँ
24,000 रु.	=	3.5x – 2x
24,000 रु.	=	1.5x
x	=	16,000 रु.
चालू दायित्व	=	x= 16,000 रु.
चालू परिसंपत्तियाँ	=	3.5 x = 3.5 × 16,000 रु. = 56,000 रु.

सत्यापन

चालू अनुपात	=	चालू परिसंपत्तियाँ – चालू दायित्व
	=	56,000 रु. : 16,000 रु.
	=	3.5 : 1
तरल अनुपात	=	त्वरित परिसंपत्तियाँ – चालू दायित्व
	=	32,000 रु.: 16,000 रु.
	=	2 : 1

उदाहरण 5

निम्नलिखित सूचना से चालू अनुपात को परिकलित करें–

कुल परिसंपत्तियाँ	3,00,000 रु.	गैर-चालू परिसंपत्तियाँ	
गैर-चालू दायित्व	80,000 रु.	स्थिर परिसंपत्तियाँ	1,60,000 रु.
अंशधारक निधि	2,00,000 रु.	गैर-चालू निवेश	1,00,000 रु.

हल

कुल परिसंपत्तियाँ	=	गैर-चालू परिसंपत्तियाँ + चालू परिसंपत्तियाँ
3,00,000 रु.	=	2,60,000 रु. + चालू परिसंपत्तियाँ
चालू परिसंपत्तियाँ	=	3,00,000 रु. – 2,60,000 रु. = 40,000 रु.
कुल परिसंपत्तियाँ	=	इक्विटी (समता) तथा दायित्व
	=	अंशधारक कोष + गैर-चालू दायित्व + चालू दायित्व
3,00,000 रु.	=	2,00,000 रु. + 80,000 रु. + चालू दायित्व
चालू दायित्व	=	3,00,000 रु. – 2,80,000 रु. = 20,000 रु.

$$\text{चालू अनुपात} = \frac{\text{चालू परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$$

$$= \frac{40,000 \text{ रु.}}{20,000 \text{ रु.}}$$

$$= 2:1$$

© NCERT not to be republished

स्वयं करें

1. एक कंपनी के चालू दायित्व 5,60,000 रु. हैं, चालू अनुपात 2.5: 1 और तरल अनुपात 2:1 है। स्टॉक का मूल्य ज्ञात करें।
2. चालू अनुपात = 4.5:1, तरल अनुपात = 3:1 और स्टॉक 36,000 रु. है। चालू परिसंपत्तियों एवं चालू दायित्व परिकलित करें।
3. एक कंपनी की चालू परिसंपत्तियाँ 5,00,000 रु. की हैं। चालू अनुपात 2.5:1 तथा तरल अनुपात 1:1 का है। चालू दायित्व, तरल परिसंपत्तियों तथा स्टॉक का मूल्य परिकलित करें।

उदाहरण 6

चालू अनुपात 2:1 है। तर्क सहित व्याख्या करें कि कौन-से लेन-देन चालू अनुपात में वद्धि करेंगे, कमी करेंगे अथवा परिवर्तन नहीं करेंगे–

(क) चालू दायित्व का भुगतान
(ख) माल का उधार क्रय
(ग) एक कंप्यूटर की बिक्री केवल 3,000 रु. (पुस्तक मूल्य- 4,000 रु.) में हुई;
(घ) माल की बिक्री 11,000 रु. में जबकि लागत 10,000 रु. है।
(च) दावा रहित लाभांश का भुगतान।

हल

दिया गया चालू अनुपात 2:1 है। यदि मान लें कि चालू परिसंपत्ति 50,000 रु. की है और चालू दायित्व 25,000 रु. का है और इस तरह से चालू अनुपात 2:1 है। अब हम चालू अनुपात का दिए गए लेन-देन पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करेंगे।

(क) माना कि 10,000 रु. लेनदारों को चेक द्वारा चुकाया गया। यह चालू परिसंपत्ति को घटाकर 40,000 रु. कर देगा और चालू दायित्व 15,000 रु. का है। अब नया अनुपात 2.67:1 (40,000 रु./ 15,000 रु.) होगा। अतः इसमें वृद्धि हुई है।

(ख) अब मान लीजिए 10,000 रु. का माल उधार खरीदा गया। यह चालू परिसंपत्तियों को बढ़ाकर 60,000 रु. कर देगा और चालू दायित्व 35,000 रु. हो गया। अब नया अनुपात 1.7:1 (60,000 रु. / 35,000 रु.) होगा। अतः इसमें कमी हुई है।

(ग) एक कंप्यूटर (स्थिर परिसंपत्ति) की बिक्री के कारण चालू परिसंपत्ति बढ़कर 53,000 रु. होगी और चालू दायित्व में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। नया अनुपात 2.12:1 (53,000 रु. / 25,000 रु.) होगा। अतः इसमें वृद्धि हुई है।

(घ) यह लेन-देन स्टॉक को 10,000 रु. घटाएगा और रोकड़ में 11,000 रु. की बढ़त होगी। इस तरह से चालू परिसंपत्तियों में, चालू दायित्व में बिना किसी परिवर्तन के, 1,000 रु. की वृद्धि होगी। इस तरह से नया अनुपात 2.04:1 (51,000 रु. / 25,000 रु.) होगा। अतः इसमें वृद्धि हुई है।

(च) मान लीजिए कि 5,000 रु. दावा रहित लाभांश के रूप में दिए जाएँगे। यह चालू परिसंपत्तियों को घटाकर कर देगा 45,000 रु. और दावा रहित (चालू देयताएँ) 5,000 रु. की कमी आएगी। नया अनुपात 2.25:1 (45,000 रु. ÷ 20,000 रु.) होगा। इसलिए यह कमी है।

4.7 ऋण शोधन क्षमता अनुपात

वे व्यक्ति जो व्यवसाय में अग्रिम धन दीर्घकालिक आधार पर लगाते हैं उन्हें आवधिक ब्याज के भुगतान की सुरक्षा में रुचि के साथ-साथ, ऋण अवधि की समाप्ति पर मूलधन की राशि के पुनर्भुगतान की चिंता भी रहती है। ऋण शोधन क्षमता अनुपात का परिकलन व्यवसाय द्वारा दीर्घकाल में ऋण चुकाने की क्षमता को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। व्यवसाय की ऋण शोधन क्षमता के मूल्यांकन हेतु सामान्यत: निम्नलिखित अनुपातों को परिकलित किया जाता है–

1. ऋण इक्विटी (समता) अनुपात
2. ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात
3. स्वामित्व अनुपात
4. कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात
5. ब्याज व्याप्ति अनुपात

4.7.1 ऋण समता अनुपात

ऋण समता अनुपात दीर्घकालिक ऋण और समता के बीच संबंध को मापता है। यदि कुल दीर्घकालिक निधियों में ऋण संघटक लघु हैं तो बाहरी लोग अधिक सुरक्षित महसूस करते हैं। सुरक्षा की दृष्टि से अधिक समता तथा कम ऋण का पूँजी ढाँचा अधिक अनुकूल माना जाता है क्योंकि यह दिवालियेपन के अवसर घटा देता है। प्राय: इसे अधिक सुरक्षित माना जाता है यदि ऋण समता अनुपात 2:1 का हो। यह अनुपात विभिन्न प्रकार के उद्योगों में भिन्न-भिन्न हो सकता है। इसे निम्नवत् परिकलित किया जाता है–

$$\text{ऋण समता अनुपात} = \frac{\text{दीर्घकालीक ऋण}}{\text{अंशधारक निधि}}$$

जहाँ, अंश धारक निधि = अंश पूँजी + आरक्षित एवं अधिशेष + अंश अधिपत्र (वारंट) के प्रति प्राप्त किया गया धन + अपूर्ण आवंटन पर अंश आवेदन राशि

अंश पूंजी = समता अंश पूँजी + पूर्वाधिकार अंश पूँजी

अथवा

अंशधारक निधि = गैर-चालू परिसंपत्तियाँ + कार्यशील पूँजी - गैर-चालू दायित्व

कार्यशील पूँजी = चालू परिसंपत्तियाँ - चालू दायित्व

महत्त्व- यह अनुपात एक उद्यम की ऋण ग्रस्तता को मापता है और दीर्घकालिक ऋणदाता को ऋणों की सुरक्षा की सीमा का एक अनुमान देता है। जैसा कि पहले संकेत दिया गया है कि एक निम्न ऋण-समता अनुपात अधिक सुरक्षा को दर्शाता है और दूसरी ओर एक उच्च अनुपात जोखिम पूर्ण माना जाता है और यह

© NCERT not to be republished

फर्म को बाह्य देयताओं का भुगतान करने में कठिनाई में डाल सकता है। हालाँकि, एक मालिक के दृष्टिकोण से, ऋण (समता पर व्यापार) का व्यापक उपयोग उसके लिए उच्च प्रतिफल को सुनिश्चित कर सकता है, यदि नियोजित पूँजी पर अर्जन की दर, दिए जाने वाले ब्याज के अनुपात से अधिक हो।

उदाहरण 7

अ ब स लिमिटेड की 31 मार्च 2017 के निम्नलिखित तुलन-पत्र के आधार पर ऋण-समता अनुपात परिकलित कीजिए–

अ ब स लि.
31 मार्च 2014 का तुलन-पत्र

विवरण	*नोट संख्या*	*राशि रु.*
I. समता तथा देयताएँ		
(i) अंशधारक निधि		
(क) अंश पूँजी		12,00,000
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष		2,00,000
(ग) अंश अधिपत्रों के प्रति प्राप्त किया धन		1,00,000
(ii) गैर-चालू दायित्व		
(क) दीर्घकालीन ऋण		4,00,000
(ख) अन्य दीर्घकालीन दायित्व		40,000
(ग) दीर्घकालीन प्रावधान		60,000
(iii) चालू दायित्व		
(क) अल्पकालीन ऋण		2,00,000
(ख) व्यापारिक देय		1,00,000
(ग) अन्य चालू दायित्व		50,000
(घ) अल्पकालीन प्रावधान		1,50,000
योग		**25,00,000**
II. परिसंपत्तियाँ		
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ		
(क) स्थाई परिसंपत्तियाँ		15,00,000
(ख) गैर-चालू निवेश		2,00,000
(ग) दीर्घकालीन ऋण एवं अग्रिम		1,00,000
(ii) चालू परिसंपत्तियाँ		
(क) चालू निवेश		1,50,000
(ख) रहतिया		1,50,000

© NCERT not to be republished

(ग) व्यापारिक प्राप्य		1,00,000
(घ) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		2,50,000
(ङ) अल्पकालीन ऋण एवं अग्रिम		50,000
योग		**25,00,000**

हल

ऋण-समता अनुपात $= \dfrac{\text{ऋण}}{\text{समता}}$

ऋण = दीर्घकालीन ऋण + अन्य दीर्घकालीन दायित्व + दीर्घकालीन प्रावधान

= 4,00,000 रु. + 40,000 रु. + 60,000 रु.

= 5,00,000 रु.

समता = अंश पूँजी + आरक्षित एवं अधिशेष + अंश अधिपत्रों के प्रति प्राप्त किया गया धन

= 12,00,000 रु. + 2,00,000 रु. + 1,00,000 रु.

= 15,00,000 रु.

या

समता = गैर चालू परिसंपत्तियाँ + कार्यशील पूँजी गैर चालू-गैर चालू दायित्व

= 18,00,000 रु. + 2,00,000 रु. – 5,00,000 रु.

= 15,00,000 रु.

कार्यशील पूँजी = चालू परिसंपत्तियाँ – चालू दायित्व

= 7,00,000 रु. – 5,00,000 रु.

= 2,00,000 रु.

ऋण-समता अनुपात $= \dfrac{50,000}{1,50,000} = 0.33:1$

© NCERT not to be republished

उदाहरण 8

निम्न तुलन-पत्र के आधार पर ऋण-समता अनुपात ज्ञात कीजिए–

तुलन-पत्र

विवरण	नोट संख्या	राशि रु.
I. समता तथा देयताएँ		
(i) अंशधारक निधि		
(क) अंश पूँजी		8,00,000
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष	1	1,00,00
(ii) अपूर्ण आवंटन पर अंश आवेदन राशि		2,00,000
(iii) गैर चालू दायित्व		
(क) दीर्घकालीन ऋण		1,50,000
चालू दायित्व		1,50,000
		14,00,000
II. परिसंपत्तियाँ		
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ		
(क) स्थाई परिसंपत्तियाँ		
मूर्त परिसंपत्तियाँ	2	11,00,000
(ii) चालू परिसंपत्तियाँ		
(क) स्टॉक		1,00,000
(ख) व्यापारिक प्राप्य		90,000
(ग) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		1,10,000
		14,00,000

टिप्पणी 2– स्थाई परिसंपत्तियाँ

टिप्पणी 1– अंश पूँजी	
	रु.
समता अंश पूँजी	6,00,000
पूर्वाधिकार अंश पूँजी	2,00,000
	8,00,000

खातों की टिप्पणी	
	रु.
2. मूर्त परिसंपत्तियाँ	
संयत्र एवं मशीनरी	5,00,000
भूमि एवं भवन	4,00,000
मोटर कार	1,50,000
फ़र्नीचर	50,000
	11,00,000

© NCERT not to be republished

हल

ऋण-समता अनुपात $= \dfrac{\text{दीर्घकालीन ऋण}}{\text{समता या अंशधारक निधि}}$

दीर्घकालीन ऋण = 1,50,000 रु.

समता = अंश पूँजी + आरक्षित एवं अधिशेष + अपूर्ण आवंटन पर अंश आवेदन राशि

= 8,00,000 रु. + 1,00,000 रु. + 2,00,000

= 11,00,000 रु.

?ऋण-समता अनुपात $= \dfrac{1,50,000 \text{ रु.}}{11,00,000 \text{ रु.}} = 0.136 : 1$

4.7.2 ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात

ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात दीर्घकालिक ऋण हेतु कुल बाहरी एवं आंतरिक निधियों (नियोजित पूँजी या निवल परिसंपत्तियों) के अनुपात को संदर्भित करता है। इसे निम्नवत् परिकलित करते हैं–

$$\text{ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात} = \frac{\text{दीर्घकालिक ऋण}}{\text{नियोजित पूँजी (निवल परिसंपत्तियाँ)}}$$

नियोजित पूँजी, दीर्घकालिक ऋण + अंशधारक निधि के बराबर होती है। वैकल्पिक तौर पर इसे निवल परिसंपत्तियों के रूप में लिया जा सकता है जो कि कुल परिसंपत्तियों - चालू दायित्व के बराबर होती हैं। उदाहरण 7 से लिए गए आँकड़ों से नियोजित पूँजी 5,00,000 रु. + 15,00,000 रु. = 20,00,000 रु. ठीक इसी प्रकार से, निवल परिसंपत्तियाँ यथा 25,00,000 रु. – 5,00,000 रु. = 20,00,000 रु. और ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात $\dfrac{5,00,000 \text{ रु.}}{20,00,000 \text{ रु.}} = 0.25 : 1$ है।

महत्त्व– ऋण समता अनुपात की भाँति, यह विनियोजित पूँजी में दीर्घकालिक ऋण के समानुपात को दर्शाता है। निम्न अनुपात ऋणदाताओं को सुरक्षा प्रदान करता है तथा उच्च अनुपात प्रबंधन को समता पर व्यापार में मदद करता है। ऊपर के प्रकरण में ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात आधे से कम है जो ऋण द्वारा पर्याप्त कोषों और ऋणों के लिए पर्याप्त सुरक्षा को भी दर्शाता है।

यह भी देखा जा सकता है कि ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात को कुल परिसंपत्तियों के संबंध में भी परिकलित किया जा सकता है। तब ऐसे प्रकरण में, यह प्रायः कुल ऋण (दीर्घकालिक ऋण + चालू दायित्व) तथा कुल परिसंपत्ति के अनुपात को संदर्भित करता है अर्थात् गैर-चालू एवं चालू परिसंपत्तियों का योग (या अंश धारक निधि + दीर्घकालिक ऋण + चालू दायित्व) इसे इस प्रकार प्रकट किया जाता है

$$\text{ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात} = \frac{\text{कुल ऋण}}{\text{कुल परिसंपत्तियाँ}}$$

© NCERT not to be republished

4.7.3 स्वामित्व अनुपात

स्वामित्व अनुपात स्वामी (अंशधारक) निधि और निवल परिसंपत्तियों के मध्य संबंधों को व्यक्त करता है और इसे निम्नवत् परिकलित् किया जाता है।

स्वामित्व अनुपात = अंशधारक निधि/नियोजित पूँजी (या निवल परिसंपत्तियाँ)

उदाहरण 7 के आँकड़ों पर आधारित, इसे निम्नवत् हल किया जाएगा–

$$\frac{15,00,000 \text{ रु.}}{20,00,000 \text{ रु.}} = 0.75 : 1$$

महत्त्व– परिसंपतियों के वित्तीयन में अंशधारकों की निधि का उच्च समानुपात एक सकारात्मक विशिष्टता है। क्योंकि यह लेनदारों को सुरक्षा प्रदान करता है। इसे निवल परिसंपत्तियाँ (नियोजित पूँजी) की अपेक्षा, कुल परिसंपत्तियों के संदर्भ में भी परिकलित किया जा सकता है। यहाँ पर यह ध्यान दिया जा सकता है कि ऋण पर नियोजित पूँजी अनुपात और स्वामित्व अनुपात का योग 1 होता है। उदाहरण 7 के आँकड़ों के आधार पर इन अनुपातों को निकालें जहाँ ऋण नियोजित पूँजी अनुपात 0.25:1 तथा स्वामित्व अनुपात 0.75:1है और दोनों का योग 0.25 + 0.75 = 1 है। यदि प्रतिशत के रूप में इसे व्यक्त किया जाए तो यह कुल नियोजित पूँजी का 25% ऋण निधि द्वारा और 75% स्वामित्व निधि द्वारा पूँजीकरण है।

4.7.4 कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात

यह अनुपात परिसंपत्तियों के द्वारा दीर्घकालिक ऋण की संरक्षण की व्यापकता को मापता है। इसे इस तरह परिकलित किया जाता है।

कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात = कुल परिसंपत्तियाँ/ दीर्घकालिक ऋण

उदाहरण 8 से आंकड़े लेकर, इस अनुपात को निम्नवत् हल किया जाएगा–

$$\frac{14,00,000 \text{ रु.}}{1,50,000 \text{ रु.}} = 9.33 : 1$$

उच्च अनुपात यह संकेत देता है कि परिसंपत्तियाँ मुख्यतः स्वामित्व पूँजी से वित–पोषित हैं और दीर्घकालिक ऋण पर्याप्त रूप से परिसंपत्तियों से संरक्षित है।

इस अनुपात को परिकलित करने के लिए यह ज़्यादा अच्छा है कि कुल परिसंपत्तियों की अपेक्षा निवल परिसंपत्तियों (विनियोजित पूँजी) को लिया जाए। यह देखा गया है कि ऐसे मामले में यह अनुपात ऋण पर विनियोजित पूँजी अनुपात का व्युत्क्रम होगा

महत्त्व – यह अनुपात मुख्यतः परिसंपत्तियों के वित्त हेतु बाह्य निधियों की दर को संकेत करता है और परिसंपत्तियों द्वारा ऋण के संरक्षण को दर्शाता है।

उदाहरण 9

निम्नलिखित सूचनाओं से ऋण समता अनुपात, कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात, स्वामित्व अनुपात तथा ऋण पर विनियोजित पुँजी अनुपात ज्ञात कीजिए–

मार्च 31 2017 का तुलन-पत्र

विवरण	*नोट संख्या*	*राशि रु.*
I. समता तथा देयताएँ		
(i) अंशधारक निधि		
(क) अंश पूँजी		4,00,000
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष		1,00,000
(ii) गैर-चालू देयताएँ		
(क) दीर्घ कालीन ऋण		1,50,000
(iii) चालू दायित्व		50,000
योग		**7,00,000**
II. परिसंपत्तियाँ		
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ		
(क) स्थाई परिसंपत्तियाँ		4,00,000
(ख) गैर-चालू निवेश		1,00,000
(ii) चालू परिसंपत्तियाँ		2,00,000
योग		**7,00,000**

हल

i) ऋण-समता अनुपात = $\frac{\text{ऋण}}{\text{समता}}$

ऋण = दीर्घकालीन ऋण = 1,50,000 रु.

समता = अंश पूँजी + आरक्षित एंव अधिशेष

= 4,00,000 रु. + 1,00,000 रु.

= 5,00,000 रु.

ऋण-समता अनुपात = $\frac{1,50,000}{5,00,000} = 0.3 : 1$

ii) कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात = $\frac{\text{कुल परिसंपत्तियाँ}}{\text{दीर्घकालीन ऋण}}$

कुल परिसंपत्तियाँ = स्थिर परिसंपत्तियाँ + गैर चालू निवेश + चालू परिसंपत्तियाँ

= 4,00,000 रु. + 1,00,000 रु. + 2,00,000 रु.

= 7,00,000 रु.

दीर्घकालीन ऋण = 1,50,000 रु.

© NCERT not to be republished

कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात = $\frac{7,00,000}{1,50,000} = 4.67 : 1$

स्वामित्व अनुपात = या $\frac{\text{अंशधारक निधि}}{\text{कुल परिसंपत्तियाँ}}$

= $\frac{5,00,000}{7,00,000} = 0.71 : 1$

ऋण पर विनियोजित पूँजी अनुपात = $\frac{\text{दीर्घकालीन ऋण}}{\text{विनियोजित पूँजी}}$

विनियोजित पूँजी = अंशधारक निधि + दीर्घकालीन ऋण

= 5,00,000 रु. + 1,50,000 रु.

= 6,50,000 रु.

ऋण पर विनियोजित पूँजी अनुपात = $\frac{\text{दीर्घकालीन ऋण}}{\text{विनियोजित पूँजी}}$

= $\frac{1,50,000}{6,50,000} = 0.23 : 1$

उदाहरण 10

एक्स लिमिटेड का ऋण–समता अनुपात 0.5:1 है। निम्न में से किससे ऋण इक्विटी अनुपात बढ़ेगा, घटेगा या नहीं बदलेगा?

(i) समता अंश के अतिरिक्त निर्गमन पर

(ii) देनदारों से नकदी प्राप्ति पर

(iii) माल का नकद विक्रय

(iv) ऋणपत्रों का शोधन

(v) उधार पर माल का क्रय

हल

अनुपात में परिवर्तन मूल अनुपात पर निर्भर करता है। यदि यह मानें कि बाहरी निधियाँ 5,00,000 रु. हैं और आंतरिक निधियाँ 10,00,000 रु. हैं। यह ऋण–समता अनुपात को 0.5:1 दर्शाता है। अब हम ऋण–समता अनुपात पर किए जाने वाले लेन देनों के प्रभाव का विश्लेषण करेंगे।

© NCERT not to be republished

(i) मान लीजिए 1,00,000 रु. मूल्य के समता अंश निर्गमित किए गए। यह आंतरिक निधि को बढ़ा कर 11,00,000 रु. बना देगा। अब नया अनुपात 0.45:1 (5,00,000/11,00,000) होगा। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि समता अंश का अतिरिक्त निर्गमन ऋण समता अनुपात को घटाता है।

(ii) देनदार से प्राप्त की गई रोकड़, बाहरी एवं आंतरिक दोनों निधियों को अपरिवर्तित छोड़ देगा, चूँकि यह केवल चालू परिसंपत्तियों को प्रभावित करेगा। इस तरह से, ऋण समता अनुपात यथानुसार रहेगा।

(iii) माल का नकद विक्रय ऋण या समता को प्रभावित नहीं करता है इसलिए यह भी अनुपात में कोई परिवर्तन नहीं करेगा।

(iv) मान लीजिए कि 1,00,000 रुपये के ऋणपत्र शोधित किए जाते हैं, यह दीर्घकालिक ऋण को 4,00,000 रु. कर देगा। अब नया अनुपात 0.4:1 (4,00,000/10,00,000) होगा। इस तरह ऋण पत्रों का शोधन ऋण समता अनुपात को घटा देगा।

(v) उधार पर माल का क्रय ऋण या समता को प्रभावित नहीं करेगा इसलिए यह अनुपात को अपरिवर्तित रहने देगा।

4.7.5 ब्याज व्याप्ति अनुपात

यह वह अनुपात है जो ऋणों पर ब्याज की उपयुक्तता को दर्शाता हैं। यह दीर्घकालिक ऋणों पर देय ब्याज की सुरक्षा का मापक है। यह ब्याज के भुगतान हेतु उपलब्ध लाभ और देय ब्याज की राशि के बीच संबंध को दर्शाता है। इसे निम्नवत् परिकलित किया जाता है–

$$\text{ब्याज व्यप्ति अनुपात} = \frac{\text{ब्याज व कर देने से पूर्व निवल लाभ}}{\text{दीर्घकालिक ऋणों पर ब्याज}}$$

महत्त्व – यह अनूपात प्रकट करता है कि दीर्घकालिक ऋणों पर ब्याज के लिए लाभों में से उपलब्धता संभव हो सकती है।

उदाहरण 11

निम्नलिखित विवरणों से ब्याज व्याप्ति संरक्षण अनुपात परिकलित कीजिए–
कर के पश्चात् लाभ 60,000 रु.;15% दीर्घकालिक ऋण 10,00,000 रु.; और कर दर 40%

हल

कर के पश्चात् निवल लाभ	= 60,000 रु.
कर दर	= 40%
कर से पूर्व निवल लाभ	= कर के पश्चात निवल लाभ × 100/(100 - कर दर)
	= 60,000 रु. × 100/(100-40)
	= 1,00,000 रु.
दीर्घकालिक ऋण पर ब्याज	= 15% × 10,00,000 रु. = 1,50,000 रु.

© NCERT not to be republished

ब्याज व कर से पूर्व निवल लाभ	= कर से पूर्व निवल लाभ + ब्याज
	= 1,00,000 रु. + 1,50,000 रु. = 2,50,000 रु.
ब्याज व्याप्ति अनुपात	= कर एवं ब्याज से पूर्व निवल लाभ/दीर्घकालिक ऋण पर ब्याज
	$= \frac{2,50,000 \text{ रु.}}{1,50,000 \text{ रु.}}$
	= 1.67 गुणा

4.8 क्रियाशीलता (या आवर्त) अनुपात

आवर्त अनुपात व्यवसाय की क्रियान्वित गतिविधियों की अथवा तत्संबधित गति को दर्शाता है। क्रियाशीलता अनुपात यह व्यक्त करता है कि एक लेखा अवधि के दौरान विनियोजित परिसंपत्तियों अथवा परिसंपत्तियों के किसी संघटक को कितनी बार विक्रय में परिवर्तित किया गया है। उच्च आवर्त अनुपात का मतलब परिसंपत्तियों का बेहतर उपयोग है और यह अच्छी कार्यक्षमता और लाभप्रदत्ता को दर्शाता है। इस वर्ग में आने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण क्रियाशील अनुपात इस प्रकार हैं।

1. रहतिया आवर्त अनुपात
2. व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात
3. व्यापारिक देय आवर्त अनुपात
4. निवेश (निवल परिसंपत्तियाँ) आवर्त अनुपात
5. स्थिर परिसंपतियाँ आवर्त अनुपात
6. कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात

4.8.1 रहतिया आवर्त अनुपात

रहतिया आवर्त अनुपात यह निर्धारित करता है कि एक लेखा अवधि के दौरान रहतिया प्रचालन से आगम में कितनी बार परिवर्तित हुआ है। यह अनुपात प्रचालन से आगम की लागत और औसत रहतिया के मध्य संबंध को व्यक्त करता है इसके परिकलन का सूत्र इस प्रकार है।

रहतिया आवर्त अनुपात = प्रचालन से आगम की लागत/औसत रहतिया

जहाँ, औसत रहतिया प्रारंभिक और अंतिम रहतिया के गणितीय औसत की और संकेत करता है। और प्रचालन से आगम की लागत का मतलब प्रचालन से आगम राशि में से घटाई गई सकल लाभ की राशि से है। *महत्त्व* – यह अनुपात तैयार माल के रहतिया की प्रचालन से आगम में परिवर्तन की बारंबारता का अध्ययन करता है। यह तरलता का मापक भी है। यह वर्ष के दौरान क्रय अथवा प्रतिस्थापित हुए रहतिया के आवर्त का अध्ययन करता है। निम्न रहतिया आवर्त अप्रचलित रहतिया या गलत क्रय के कारण होता है और चेतावनी सूचक है। उच्च आवर्त अच्छा संकेत होता है किन्तु इसकी व्याख्या में सतर्कता बरती जाती है चूँकि उच्च अनुपात लघु मात्रा में माल के क्रय अथवा शीघ्र नकद प्राप्ति हेतु कम मूल्य पर माल बेचने पर भी आ सकता है। अतः यह माल के रहतिया के उपयुक्त उपयोग पर प्रकाश डालता है।

स्वयं जाँचिए 2

(i) अनुपातों के निम्न वर्ग प्रमुख रूप से जोखिम की गणना करते हैं–
 (अ) द्रवता, क्रियाशीलता और लाभप्रदता
 (ब) द्रवता, क्रियाशीलता और स्टॉक
 (स) द्रवता, क्रियाशीलता और ऋण
 (द) द्रवता, ऋण और लाभप्रदता

(ii) __________ अनुपात प्रमुख रूप से प्रत्याय की गणना करते हैं–
 (अ) द्रवता
 (ब) क्रियाशीलता
 (स) ऋण
 (द) लाभप्रदता

(iii) एक व्यावसायिक फ़र्म की __________ की गणना उसकी लघुकालीन देयताओं के भुगतान की क्षमता से की जाती है।
 (अ) क्रियाशीलता
 (ब) द्रवता
 (स) ऋण
 (द) लाभप्रदता

(iv) __________ अनुपात विभिन्न खातों के प्रचालन से आगम अथवा रोकड़ में परिर्वतन की तीव्रता के सूचक हैं।
 (अ) क्रियाशीलता
 (ब) द्रवता
 (स) ऋण
 (द) लाभप्रदता

(v) द्रवता के दो आधारभूत माप है।
 (अ) रहतिया आर्वत और चालू अनुपात
 (ब) चालू अनुपात और द्रवता अनुपात
 (स) सकल लाभ सीमान्त और प्रचालन अनुपात
 (द) चालू अनुपात और औसत संग्रहण अवधि

(vi) __________ द्रवता का सूचक है जो कि सामान्यत:__________न्यूनतम तरल परिसंपत्ति को, सम्मिलित नहीं करता।
 (अ) चालू अनुपात, व्यापारिक प्राप्य
 (ब) तरल अनुपात, व्यापारिक प्राप्य
 (स) चालू अनुपात, स्टॉक
 (द) तरल अनुपात, स्टॉक

उदाहरण 12

निम्नलिखित जानकारी (सूचना) से, रहतिया के आवर्त अनुपात को परिकलित कीजिए।

प्रारंभिक रहतिया	18,000	मज़दूरी	14,000
अंतिम रहतिया	22,000	प्रचालन से आगम	80,000
क्रय	46,000	आंतरिक ढुलाई	4,000

हल

स्टॉक आवर्त अनुपात = प्रचालन से आगम की लागत/औसत रहतिया

प्रचालन से आगम की लागत = प्रारंभिक स्टॉक + निवल क्रय + मज़दूरी + आंतरिक ढुलाई – अंतिम स्टॉक

= 18,000 रु. + 46,000 रु. + 14,000 रु.+ 4,000 रु.– 22,000 रु

= 60,000 रु.

औसत रहतिया = प्रारंभिक स्टॉक + अंतिम रहतिया/ 2

= (18,000 + 22,000)/2 = 20,000 रु.

स्टॉक आवर्त अनुपात = $\frac{60,000 \text{ रु.}}{20,000 \text{ रु.}}$

= 3 गुणा

उदाहरण 13

निम्नलिखित सूचना से स्टॉक आवर्त अनुपात का परिकलन करें। प्रचालन से आगम 4,00,000 रु.,औसत स्टॉक 55,000 रु., सकल लाभ अनुपात 10% है।

हल

प्रचालन से आगम = 4,00,000 रु.

सकल लाभ = 4,00,000 रु. का 10% = 40,000 रु.

प्रचालन से आगम की लागत = प्रचालन से आगम की लागत – सकल लाभ

4,00,000 रु. – 40,000 रु. = 3,60,000 रु.

रहतिया आवर्त अनुपात = प्रचालन से आगम की लागत/औसत रहतिया

= $\frac{3,60,000 \text{ रु.}}{55,000 \text{ रु.}}$

= 6.55 गुणा

उदाहरण 14

एक व्यापारी औसतन 40,000 रु. का स्टॉक रखता है। उसका स्टॉक आवर्त 8 गुना है। यदि वह माल को प्रचालन से आगम पर 20% लाभ पर बेचता है तो सकल लाभ की राशि ज्ञात करें।

हल

स्टॉक आवर्त अनुपात = प्रचालन से आगम की लागत/औसत स्टॉक

8 = प्रचालन से आगम की लागत/ 40,000 रु.

प्रचालन से आगम की लागत = 40,000 रु. × 8

= 3,20,000 रु.

प्रचालन से आगम = प्रचालन से आगम की लागत $\times \frac{100}{80}$

$$= 3,20,000 \times \frac{100}{80}$$

= 4,00,000 रु.

सकल लाभ = प्रचालन से आगम – प्रचालन से आगम की लागत

= 4,00,000 रु. – 3,20,000 रु. = 80,000 रु.

स्वयं करें

1. सकल लाभ की राशि ज्ञात करें–

औसत स्टॉक	=	80,000 रु.
स्टॉक आवर्त अनुपात	=	6 गुना
विक्रय मूल्य	=	25% लागत से ऊपर

2. स्टॉक आवर्त अनुपात ज्ञात करें

प्रचालन से वार्षिक आगम	=	2,00,000 रु.
सकल लाभ	=	प्रचालन से आगम की लागत का 20%
प्रारंभिक स्टॉक	=	38,500 रु.
अंतिम स्टॉक	=	41,500 रु.

4.8.2 व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात

यह अनुपात प्रचालन से उधार आगम और व्यापारिक प्राप्य के मध्य संबंध को व्यक्त करता है। इसे निम्न प्रकार से परिकलित किया जाता है।

$$\text{व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात} = \frac{\text{प्रचालन से निवल उधार आगम}}{\text{औसत व्यापारिक प्राप्य}}$$

$$\text{जहाँ औसत व्यापारिक प्राप्य} = \frac{(\text{प्रारंभिक देनदार एवं प्राप्य विपत्र + अंतिम देनदार और प्राप्य विपत्र})}{2}$$

यहाँ यह ध्यान योग्य है कि संदिग्ध ऋणों के लिए कोई प्रावधान से पूर्व देनदार की राशि ली जाए।

महत्त्व– किसी फ़र्म की द्रवता स्थिति व्यापारिक प्राप्य से वसूली की तीव्रता पर निर्भर करती है। यह अनुपात एक लेखांकन अवधि में प्राप्यों आवर्त के गुणा और उनकी नकदी की ओर संकेत करता है। यह अनुपात औसत वसूली अवधि की गणना में भी सहायक होता है, जिसका परिकलन अवधि–वर्ष में दिनों परिवर्तन अथवा महीनों की संख्या को व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात द्वारा भाग करके किया जाता है।

अर्थात्

$$\frac{\text{दिनों अथवा महीनों की संख्या}}{\text{व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात}}$$

उदाहरण 15

निम्नलिखित सूचना से व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात का परिकलन कीजिए–

प्रचालन से कुल आगम	=	4,00,000 रु.
प्रचालन से नगद आगम	=	प्रचालन से कुल आगम का 20%
1.4.2016 को व्यापारिक प्राप्य	=	40,000 रु.
31.3.2017 को व्यापारिक प्राप्य	=	1,20,000 रु.

हल

$$\text{व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात} = \frac{\text{प्रचालन से निवल उधार आगम}}{\text{औसत व्यापारिक प्राप्य}}$$

प्रचालन से उधार आगम = प्रचालन से कुल आगम – प्रचालन से नकद आगम

प्रचालन से नकद आगम = 4,00,000 रु. का 20%

$$= 4{,}00{,}000 \text{ रु} \times \frac{20}{100} = 80{,}000 \text{ रु.}$$

प्रचालन से उधार आगम = 4,00,000 रु – 80,000 रु. = 3,20,000 रु.

औसत व्यापारिक प्राप्य = (प्रारम्भिक व्यापारिक प्राप्य + अंतिम व्यापारिक प्राप्य)/2

$$= \frac{40{,}000 \text{ रु.} + 1{,}20{,}000 \text{ रु.}}{2} = 80{,}000 \text{ रु}$$

$$\text{व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात} = \frac{\text{प्रचालन से निवल उधार आगम}}{\text{औसत व्यापारिक प्राप्य}}$$

$$= \frac{3{,}20{,}000 \text{ रु.}}{80{,}000 \text{ रु.}}$$

= 4 गुणा

4.8.3 व्यापारिक देय आवर्त अनुपात

व्यापारिक देय आवर्त अनुपात व्यापारिक देय के भुगतान के ढंग की ओर संकेत देता है। चूँकि व्यापारिक देयताएँ उधार क्रय से उत्पन्न होती हैं, यह अनुपात उधार क्रय और व्यापारिक देय के बीच के संबंधों को दर्शाता है। इसके परिकलन का सूत्र इस प्रकार है।

व्यापारिक देय आवर्त अनुपात = निवल उधार क्रय/औसत व्यापारिक देय

$$\text{जहाँ औसत देय} = \frac{(\text{प्रारंभिक लेनदार और देय विपत्र} + \text{अंतिम लेनदार और देय विपत्र})}{2}$$

$$\text{औसत देय अवधि} = \frac{\text{एक वर्ष में दिनों/महीनों की संख्या}}{\text{व्यापारिक देय आवर्त अनुपात}}$$

© NCERT not to be republished

महत्त्व—यह अनुपात औसत भुगतान अवधि को व्यक्त करता है। निम्न अनुपात पूर्तिकर्ताओं द्वारा दीर्घकालीन ऋण अवधि अथवा पूतिकर्ताओं को भुगतान में विलंब को प्रदर्शित करता है जो कि एक अच्छी नीति नहीं है और व्यवसाय की प्रतिष्ठा को प्रभावित करती है। औसत भुगतान अवधि की गणना अवधि वर्ष में दिनों/महीनों की संख्या/व्यापारिक देय आवर्त अनुपात सूत्र से की जाती है।

उदाहरण 16

निम्नलिखित आँकड़ों से व्यापारिक देय के आवर्त अनुपात का परिकलन कीजिए–

		रु.
उधार क्रय 2016-17 के दौरान	=	12,00,000
1.4.2016 को लेनदार	=	3,00,000
1.4.2016 को देय विपत्र	=	1,00,000
31.3.2017 को लेनदार	=	1,30,000
31.3.2017 को देय विपत्र	=	70,000

हल

व्यापारिक देय आवर्त अनुपात $= \dfrac{\text{निवल उधार क्रय}}{\text{औसत व्यापारिक देय}}$

= 3,00,000 रु.

औसत व्यापारिक देय = (प्रारंभिक लेनदार + प्रारम्भिक देय विपत्र + अंतिम लेनदार + अंतिम देय विपत्र)/2

$= \dfrac{3{,}00{,}000 \text{ रु.} + 1{,}00{,}000 \text{ रु.} + 1{,}30{,}000 \text{ रु.} + 70{,}000 \text{ रु.}}{2}$

= 3,00,000 रु.

व्यापारिक देय आवर्त अनुपात $= \dfrac{12,00,000 \text{ रु.}}{3,00,000 \text{ रु.}} = 4$ गुणा

उदाहरण 17

निम्नलिखित सूचनाओं से परिकलित करें–

(i) व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात
(ii) औसत वसूली अवधि
(iii) व्यापारिक देय आवर्त अनुपात
(iv) औसत भुगतान अवधि

	रु.
प्रचालन से आगम	8,75,000
लेनदार	90,000

प्राप्य विपत्र	48,000
देय विपत्र	52,000
क्रय	4,20,000
देनदार	59,000

हल

(i) व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात $= \dfrac{\text{प्रचालन से निवल उधार आगम}}{\text{औसत व्यापारिक प्राप्य}}$

$= \dfrac{8,75,000 \text{ रु.}}{59,000 \text{ रु.} + 48,000 \text{ रु.*}}$

$= 8.18$ गुणा

*औसत व्यापारिक प्राप्यों को परिकलित करने के क्रम में, आँकड़ों को 2 से विभाजित नहीं किया गया है। चूँकि वर्ष के प्रारंभ में देनदार और प्राप्य विपत्रों के आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए जब केवल वर्ष के अंत के आँकड़े प्राप्त हों तो उन्हें उसे यथानुसार उपयोग करेंगे।

(ii) औसत वसूली अवधि $= \dfrac{365}{\text{व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात}}$

$= \dfrac{365}{8.18}$

$= 45$ दिन

(iii) व्यापारिक देय आवर्त अनुपात $= \dfrac{\text{क्रय *}}{\text{औसत व्यापारिक देय}}$

$= \dfrac{\text{क्रय}}{\text{लेनदार + देय विपत्र}}$

$= \dfrac{4,20,000 \text{ रु.}}{90,000 \text{ रु.} + 52,000 \text{ रु.}}$

$= \dfrac{4,20,000 \text{ रु.}}{1,42,000 \text{ रु.}}$

$= 2.96$ गुणा

(iv) औसत भुगतान अवधि $= \dfrac{365}{\text{व्यापारिक देय आवर्त भुगतान}}$

$= \dfrac{365}{2.96}$

$= 123$ दिन

* क्योंकि उधार क्रय की सूचना नही दी गई है, इसीलिये इसे ही निवल उधार क्रय माना जाएगा।

© NCERT not to be republished

4.8.4 निवल परिसंपत्तियाँ अथवा (विनियोजित पूँजी) आवर्त अनुपात

यह अनुपात प्रचालन से आगम और निवल परिसंपत्तियाँ/(अथवा विनियोजित पूँजी) के मध्य संबंध को व्यक्त करता है। उच्च आवर्त बेहतर क्रियाशीलता और लाभप्रदता को दर्शाता है। इसका परिकलन निम्न प्रकार किया जाता है–

निवल परिसंपत्तियाँ (अथवा नियोजित पूँजी) आवर्त अनुपात = प्रचालन से निवल आगम/विनियोजित पूँजी

विनियोजित पूँजी आवर्त अनुपात, जो कि विनियोजित पूँजी (अथवा निवल परिसंपत्तियाँ) के आवर्त का अध्ययन करती है आगे का विश्लेषण निम्नवत् दो आवर्त अनुपातों द्वारा किया जाता है।

(अ) स्थायी परिसंपत्तियाँ आवर्त अनुपात = $\frac{\text{प्रचालन से निवल आगम}}{\text{निवल स्थायी परिसंपत्तियाँ}}$

(ब) कार्यशील पूँजी आवर्त = प्रचालन से निवल आगम/कार्यशील पूँजी

महत्व – विनियोजित पूँजी, कार्यशील पूँजी और स्थायी परिसंपत्तियों का उच्च आवर्त अच्छे संकेत हैं तथा संसाधनों के कुशलतम उपयोग से संबंधित हैं। विनियोजित पूँजी अथवा इसके किसी भी घटक के उपयोग को आवर्त अनुपात व्यक्त करता है। उच्चतर आवर्त कुशलतम उपयोग को दर्शाता है जिसके परिणामस्वरूप व्यवसाय में उच्चतर द्रवता और लाभप्रदत्ता प्राप्त होती है।

उदाहरण 18

निम्नलिखित सूचना से (i) निवल परिसंपत्ति आवर्त (ii) स्थायी परिसंपत्ति आवर्त (iii) कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात ज्ञात करें।

	(रु.)		(रु.)
अधिमानी अंश पूँजी	4,00,000	संयत्र एवं मशीनरी	8,00,000
समता अंश पूँजी	6,00,000	भूमि एवं भवन	5,00,000
सामान्य आरक्षित	1,00,000	मोटर कार (गाड़ी)	2,00,000
लाभ एवं हानि विवरण का शेष	3,00,000	फ़र्नीचर	1,00,000
15% ऋण पत्र	2,00,000	रहतिया	1,80,000
14% ऋण	2,00,000	देनदार	1,10,000
लेनदार	1,40,000	बैंक	80,000
देय विपत्र	50,000	रोकड़	30,000
बकाया व्यय	10,000		

वर्ष 2016-17 के लिए प्रचालन से आगम 30,00,000 रु. है।

हल

प्रचालन से आगम = 30,00,000 रु.

विनियोजित पूँजी = अंश पूँजी + आरक्षित एवं अधिशेष + दीर्घकालिक ऋण (या निवल परिसंपत्तियाँ)

= (4,00,000 रु. + 6,00,000 रु.)
+ (1,00,000 रु. + 3,00,000 रु.)
+ (2,00,000 रु. + 2,00,000 रु.)
= 18,00,000 रु.

स्थिर परिसंपत्तियाँ = 8,00,000 रु.+ 5,00,000 रु.+ 2,00,000 रु.+ 1,00,000 रु.
= 16,00,000 रु.

कार्यशील पूँजी = चालू परिसंपत्तियाँ – चालू दायित्व
= 4,00,000 रु. – 2,00,000 रु. = 2,00,000 रु.

निवल परिसंपत्ति आवर्त अनुपात $= \frac{30,00,000 \text{ रु.}}{18,00,000 \text{ रु.}} = 1.67$ गुणा

स्थिर परिसंपत्ति आवर्त अनुपात $= \frac{30,00,000 \text{ रु.}}{16,00,000 \text{ रु.}} = 1.88$ गुणा

कार्यशील पूँजी आवर्त $= \frac{30,00,000 \text{ रु.}}{2,00,000 \text{ रु.}} = 15$ गुणा

स्वयं जाँचिए 3

(i) उधार एवं वसूली नीतियों के मूल्यांकन में _________ उपयोगी है।
- (क) औसत भुगतान अवधि
- (ख) चालू अनुपात
- (ग) औसत वसूली अवधि
- (घ) चालू परिसंपत्ति आवर्त

(ii) _________ एक फ़र्म के रहतिया की क्रियाशीलता को मापता है–
- (क) औसत वसूली अवधि
- (ख) रहतिया आवर्त
- (ग) द्रवता अनुपात
- (घ) चालू अनुपात

(iii) ____ संकेत दे सकता है कि फ़र्म *स्टॉक आऊट* तथा विक्रय न होना (लॉस्ट सेल्स) की स्थिति में है।
- (क) औसत भुगतान अवधि
- (ख) रहतिया आवर्त अनुपात
- (ग) औसत वसूली अवधि
- (घ) द्रवता अनुपात

(iv) ए बी सी कंपनी ने अपने ग्राहकों को 45 दिन की उधार प्रदान की है। उस स्थिति में इसे खराब उधार वसूली माना जाएगा यदि उसकी औसत वसूली अवधि होती–
- (क) 30 दिन
- (ख) 36 दिन
- (ग) 47 दिन
- (घ) 37 दिन

© NCERT not to be republished

(v) _________ विशेष रूप से औसत भुगतान अवधि में दिलचस्पी रखते हैं, चूँकि यह उन्हें फर्म के देय भुगतान ढ़ाँचे की सूचना देता है–

(क) उपभोक्ता

(ख) अंशधारी

(ग) ऋणग्राही एवं आपूर्तिकर्ता

(घ) ऋणदाता एवं क्रेता

(vi) _________ अनुपात फर्म की दीघकालीन प्रचालनों के संदर्भ में आलोचनात्मक सूचनाएँ देते हैं–

(क) द्रवता

(ख) क्रियाशीलता

(ग) ऋण शोधन क्षमता

(घ) लाभप्रदता

4.9 लाभ प्रदता अनुपात

लाभप्रदता या वित्तीय निष्पादन मुख्यत: लाभ-हानि विवरण में संक्षेपीकृत किया जाता है। लाभप्रदता अनुपात का परिकलन एक व्यवसाय की अर्जन क्षमता के विश्लेषण के लिए किया जाता है जोकि व्यवसाय में नियोजित संसाधनों के उपयोग के परिणामस्वरूप होता है। व्यवसाय में नियोजित संसाधनों के उपयोग और लाभ के बीच एक निकट संबध है। व्यवसाय की लाभप्रदता को विश्लेषित किए जाने हेतु सामान्य तौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले अनुपात ये हैं–

1. सकल लाभ अनुपात
2. प्रचालन अनुपात
3. प्रचालन लाभ अनुपात
4. निवल लाभ अनुपात
5. निवेश पर प्रत्याय (ROI) अथवा नियोजित पूँजी प्रत्याय (ROCE)
6. निवल संपत्ति पर प्रत्याय (RONW)
7. प्रति अंश अर्जन
8. प्रति अंश पुस्तक मूल्य
9. लाभांश भुगतान अनुपात
10. मूल्य अर्जन अनुपात

4.9.1 सकल लाभ अनुपात

प्रचालन से आगम पर प्रतिशत के रूप में सकल लाभ की गणना सकल सुरक्षा सीमा जानने हेतु की जाती है। इसे ज्ञात करने का सूत्र है–

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \frac{\text{सकल लाभ}}{\text{प्रचालन से निवल आगम}} \times 100$$

महत्त्व– यह विक्रय उत्पादों पर सकल सुरक्षा सीमा की ओर संकेत करता है। यह अनुपात प्रचालन व्ययों, गैर-प्रचालन व्ययों आदि की व्यवस्था के लिए उपलब्ध सुरक्षा सीमा को इंगित करता है। सकल लाभ अनुपात में परिवर्तन विक्रय राशि अथवा प्रचालन से आगम की लागत अथवा दोनों के सम्मिश्रण से परिवर्तित

© NCERT not to be republished

हो सकता है। निम्न अनुपात प्रतिकूल क्रय और विक्रय नीति को इंगित करता है। सारांश में यह कहा जा सकता है कि उच्च सकल लाभ अनुपात अच्छा संकेत है।

उदाहरण 19

वर्ष 2016-17 के लिए निम्न सूचना उपलब्ध है, सकल लाभ अनुपात की गणना करें।

		रु.
प्रचालन से आगम	नकद	25,000
	उधार	75,000
क्रय	नकद	15,000
	उधार	60,000
आवक ढुलाई		2,000
वेतन		25,000
रहतिए में कमी		10,000
बाह्य वापसी		2,000
मज़दूरी		5,000

हल

प्रचालन से आगम = नकद प्रचालन से आगम + उधार प्रचालन से आगम

= 25,000 रु. + 75,000 रु. = 1,00,000 रु.

निवल खरीद = नकद क्रय + उधार क्रय – बाह्य वापसी

= 15,000 रु. + 60,000 रु. – 2,000 रु. = 73,000 रु.

प्रचालन से आगम की लागत = क्रय + (प्रारंभिक रहतिया – अंतिम रहतिया) + प्रत्यक्ष व्यय

= क्रय + रहतिया में कमी (गिरावट) + प्रत्यक्ष व्यय

= 73,000 रु. + 10,000 रु. + 2,000 रु. + 5,000 रु. = 90,000 रु.

सकल लाभ = प्रचालन से आगम – प्रचालन से आगम की लागत = 1,00,000 रु. – 90,000 रु.

= 10,000 रु.

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \frac{\text{सकल लाभ}}{\text{प्रचालन से निवल आगम}} \times 100$$

$$= \frac{10,000}{1,00,000} \times 100$$

= 10%

4.9.2 प्रचालन अनुपात

इस अनुपात की गणना प्रचालन से आगम की तुलना में प्रचालन लागत के विश्लेषण हेतु की जाती है। इसका गणना सूत्र है–

प्रचालन अनुपात = (प्रचालन से आगम की लागत + प्रचालन व्यय)/ प्रचालन से निवल आगम × 100

प्रचालन व्ययों में कार्यालय व्यय, प्रशासनिक व्यय, विक्रय व्यय, वितरण व्यय, ह्रास, तथा कर्मचारी हित व्यय आदि शामिल हैं।

प्रचालन लागत के निर्धारण में गैर–प्रचालन आय और व्यय जैसे कि परिसंपत्तियों के विक्रय पर हानि, ब्याज, भुगतान, लाभांश प्राप्ति, आग से हानि, सट्टे से अधिलाभ आदि को अलग कर दिया जाता है।

4.9.3 प्रचालन लाभ अनुपात

यह अनुपात प्रचालन सुरक्षा सीमा को प्रदर्शित करता है। इसकी प्रत्यक्ष अथवा प्रचालन अनुपात के अवशिष्ट के रूप में गणना की जा सकती है।

प्रचालन लाभ अनुपात = 100 – प्रचालन अनुपात

वैकल्पिक रूप से, इसकी गणना निम्न प्रकार की जा सकती है–

$$\text{प्रचालन लाभ अनुपात} = \frac{\text{प्रचालन लाभ}}{\text{प्रचालन से आगम}} \times 100$$

जहाँ प्रचालन लाभ = प्रचालन से आगम – प्रचालन लागत

महत्त्व– प्रचालन अनुपात की गणना प्रचालन से आगम के संबंध में वित्तीय प्रभार रहित प्रचालन लागत के संदर्भ में की जाती है। इसका उप परिणाम ''प्रचालन लाभ अनुपात'' है। यह अनुपात व्यवसाय के निष्पादन के विश्लेषण में सहायक होता है और व्यवसाय की प्रचालन कार्यक्षमता पर प्रकाश डालता है। यह अनुपात अंतर फर्म और अंतरा फर्म तुलना हेतु उपयोगी है। निम्न प्रचालन अनुपात एक अच्छा संकेत होता है।

उदाहरण 20

निम्नलिखित सूचनाओं से सकल लाभ अनुपात तथा प्रचालन अनुपात का परिकलन कीजिए

	रु.
प्रचालन से आगम	3,40,000
प्रचालन से आगम की लागत	1,20,000
विक्रय व्यय	80,000
प्रशासनिक व्यय	40,000

हल

सकल लाभ = प्रचालन से आगम – प्रचालन से आगम की लागत

= 3,40,00 रु. – 1,20,000 रु.

= 2,20,000 रु.

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \frac{\text{सकल लाभ}}{\text{प्रचालन से आगम}} \times 100$$

$$= \frac{2,20,000 \text{ रु.}}{3,40,000 \text{ रु.}} \times 100$$

= 64.71%

प्रचालन लागत = प्रचालन से आगम की लागत + विक्रय व्यय + प्रशासनिक व्यय

= 1,20,000 रु. + 80,000 रु. + 40,000 रु.

= 2,40,000 रु.

© NCERT not to be republished

$$\text{प्रचालन अनुपात} = \frac{\text{प्रचालन लागत}}{\text{प्रचालन से निवल आगम}} \times 100$$

$$= \frac{2{,}40{,}000 \text{ रु.}}{3{,}40{,}000 \text{ रु.}} \times 100$$

$$= 70.59\%$$

4.9.4 निवल लाभ अनुपात

निवल लाभ अनुपात लाभ में सभी मदें सम्मिलित-संकल्पना पर आधारित हैं। यह प्रचालन एवं गैर-प्रचालन व्ययों और आयों के पश्चात् निवल लाभ के प्रचालन से आगम के संबंध को प्रदर्शित करता है। इसे निम्न प्रकार से परिकलित किया जाता है।

$$\text{निवल लाभ अनुपात} = \frac{\text{निवल लाभ}}{\text{प्रचालन से आगम}} \times 100$$

सामान्यत: निवल लाभ कर के पश्चात् लाभ (PAT) को दर्शाता है।

महत्त्व- यह अनुपात प्रचालन से आगम का निवल लाभ की सुरक्षा सीमा के मापन से संबंधित है। यह न केवल लाभ प्रदता को दर्शाता है अपितु, यह निवेश पर प्रत्याय की गणना के लिए प्रमुख चर है। यह व्यवसाय की संपूर्ण कार्यक्षमता का प्रदर्शन करता है और निवेशकों के दृष्टिकोण में यह महत्त्वपूर्ण अनुपात है।

उदाहरण 21

एक कंपनी का सकल लाभ अनुपात 25% है। प्रचालन से उधार आगम 20,00,000 रु. है और प्रचालन से नगद आगम कुल प्रचालन से आगम का 10% है। यदि कंपनी के अप्रत्यक्ष व्यय 50,000 रु. है तो सकल लाभ का परिकलन करें।

हल

नकद विक्रय	=	$20,00,000 \times \frac{10}{90}$
	=	2,22,222 रु.
इसलिए कुल विक्रय हुई	=	22,22,222. रु.
सकल लाभ =.25 × 22,22,222	=	5,55,555 रु.
निवल लाभ	=	5,55,555 रु. – 50,000 रु.
	=	5,05,555 रु.
निवल लाभ अनुपात	=	निवल लाभ/ प्रचालन से आगम × 100
	=	5,05,555/22,22,222 × 100
	=	22.75%

4.9.5 नियोजित पूँजी अथवा निवेश पर प्रत्याय

यह अनुपात एक व्यावसायिक उद्यम द्वारा निधि के समस्त उपयोग की व्याख्या करता है। नियोजित पूँजी से आशय व्यवसाय में नियोजित दीर्घकालिक निधि से है जिसमें अंशधारी निधि, ऋणपत्र और दीर्घकालीन ऋण

© NCERT not to be republished

सम्मिलित हैं। वैकल्पिक रूप से नियोजित पूँजी में गैर-चालू परिसंपत्तियाँ और कार्यशील पूँजी शामिल हैं। इस अनुपात की गणना हेतु लाभ से आशय ब्याज और कर से पूर्व लाभ (PBIT) से है। अंत: इसे निम्न प्रकार ज्ञात किया जाता है–

$$\text{निवेश पर प्रत्याय (अथवा नियोजित पूँजी)} = \frac{\text{ब्याज और कर से पूर्व लाभ}}{\text{नियोजित पूँजी}} \times 100$$

महत्त्व– यह अनुपात व्यवसाय में नियोजित पूँजी पर प्रत्याय का मापक है। यह अंशधारियों, ऋणपत्र धारकों तथा दीर्घकालीन ऋण के माध्यम से एकत्रित निधि के उपयोग द्वारा व्यवसाय की कार्यक्षमता का प्रदर्शन करता है। अंतर फर्म तुलना के लिए नियोजित पूँजी पर प्रत्याय लाभप्रदता का अच्छा मापक है। यह अनुपात दर्शाता है कि क्या फर्म भुगतान किए गए ब्याज दर की तुलना में नियोजित पूँजी पर उच्च प्रत्याय अर्जित कर रही है अथवा नहीं।

4.9.6 अंशधारक निधि पर प्रत्याय

यह अनुपात अंशधारकों के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है जो यह दर्शाता है कि क्या अंशधारकों द्वारा फर्म में किए गए निवेश पर उपयुक्त प्रत्याय अर्जित हो रहा है अथवा नहीं। यह अनुपात निवेश पर प्रत्याय से अधिक होना चाहिए अन्यथा इसका मतलब है कि कंपनी की निधियों का लाभप्रद निवेश नहीं किया गया है।

अंशधारकों के दृष्टिकोण से लाभप्रदता के बेहतर मापन की गणना कुल अंशधारक निधि पर प्रत्याय को निर्धारित करके की जा सकती है इसे निवल संपत्ति पर प्रत्याय (RONW) भी कहा जाता है और इसकी गणना निम्न प्रकार की जाती है–

$$\text{अंशधारक निधि पर प्रत्याय} = \frac{\text{कर के पश्चात् लाभ}}{\text{अंशधारक निधि}} \times 100$$

4.9.7 प्रति अंश अर्जन

इस अनुपात को निम्न प्रकार परिकलित करते हैं–

प्रति अंश अर्जन (EPS) = समता अंशधारकों के लिए उपलब्ध लाभ/ समता अंशों की संख्या

इस संदर्भ में, अर्जन से आशय समता अंशधारकों के लिए उपलब्ध लाभ से है जिसकी गणना अधिमानी अंशों पर लाभांश को कर के पश्चात् लाभ में से घटा कर की जाती है।

यह अनुपात भी समता अंशधारकों के दृष्टिकोण के साथ-साथ स्टॉक बाज़ार में अंश मूल्य के निर्धारण हेतु महत्त्वपूर्ण है। यह अन्य फर्मों के साथ औचित्य एवं लाभांश भुगतान की क्षमता की तुलना के लिए सहायक होता है।

4.9.8 प्रति अंश पुस्तक मूल्य

इस अनुपात को निम्न प्रकार ज्ञात किया जाता है–

प्रति अंश पुस्तक मूल्य = समता अंशधारक निधि/ समता अंशों की संख्या

समता अंशधारक निधि से अभिप्राय है– अंशधारक निधि-अधिमानी अंश पूँजी। यह अनुपात भी समता अंशधारकों के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे अंशधारकों को अपनी धारकता का बोध होता है साथ ही यह अनुपात बाज़ार मूल्य को प्रभावित करता है।

© NCERT not to be republished

4.9.9 लाभांश भुगतान अनुपात

यह अर्जन के समानुपात की ओर संकेत करता है जोकि अंशधारकों को वितरित किया जाता है। इसे निम्नवत् परिकलित करते हैं–

$$\text{लाभांश भुगतान अनुपात} = \frac{\text{लाभांश प्रति अंश}}{\text{अर्जन प्रति अंश}}$$

यह कंपनी की लाभांश नीति तथा स्वामित्व समता में वृद्धि को प्रदर्शित करता है।

4.9.10 मूल्य अर्जन अनुपात

यह अनुपात निम्नानुसार परिकलित होता है–

$$\text{मूल्य अर्जन अनुपात} = \frac{\text{प्रति अंश बाज़ार मूल्य}}{\text{प्रति अंश अर्जन}}$$

उदाहरण के लिए, यदि एक्स लिमिटेड की प्रति अंश अर्जन 10 रु. है और बाज़ार मूल्य (प्रति अंश) 100 रु. है तो मूल्य अर्जन अनुपात 10 (100/10) होगा। यह फर्म की कमाई में वृद्धि तथा उसके अंश की बाज़ार मूल्य की तर्कसंगतता के बारे में निवेशकों की अपेक्षाओं को प्रतिबिंबित करता है। मूल्य अर्जन अनुपात उद्योग से उद्योग तथा एक उद्योग में कंपनी से कंपनी में भिन्न होता है तथा यह निवेशकों के उसके भावी अवबोधन पर निर्भर करता है।

उदाहरण 22

निम्नलिखित विवरणों से निवेश पर प्रत्याय को परिकलित कीजिए–

	रु.		रु.
अंश पूँजी समता (10 रु.)	4,00,000	चालू दायित्व	1,00,000
12% अधिमानी अंश पूँजी	1,00,000	स्थिर परिसंपत्तियाँ	9,50,000
सामान्य आरक्षित	1,84,000	चालू परिसंपत्तियाँ	2,34,000
10% ऋणपत्र	4,00,000		

साथ ही अंशधारक निधि पर प्रत्याय, प्रति अंश अर्जन (EPS), प्रति अंश पुस्तक मूल्य और मूल्य अर्जन अनुपात ज्ञात करें यदि अंश का बाज़ार मूल्य 34 रूपये और कर के पश्चात् निवल लाभ 1,50,000 है और कर की राशि 50,000 रु. है।

हल

ब्याज एवं कर से पूर्व लाभ = 1,50,000 रु. + ऋण पत्रों ब्याज + कर

= 1,50,000 रु. + 40,000 रु. + 50,000 रु. = 2,40,000 रु.

विनियोजित पूँजी = समता अंश पूँजी + अधिमानी अंश पूँजी + सामान्य आरक्षित + ऋण पत्र

= 4,00,000 रु. + 1,00,000 रु. + 1,84,000 रु. + 4,00,000 रु. = 10,84,000 रु.

© NCERT not to be republished

निवेश पर प्रत्याय = ब्याज व कर से पूर्व लाभ/विनियोजित पूँजी $\times 100$

$$= \frac{2,40,000 \text{ रु.}}{10,84,000 \text{ रु.}} \times 100 = 22.14\%$$

अंशधारक निधि = समता अंश पूँजी + अधिमानी अंश पूँजी + सामान्य आरक्षित

= 4,00,000 रु. + 1,00,000 रु. + 1,84,000 रु.

= 6,84,000

$$\text{अंशधारक निधि पर प्रत्याय} = \frac{\text{कर के पश्चात् लाभ}}{\text{अंशधारक निधि}} \times 100$$

$$= \frac{1,50,000 \text{ रु.}}{6,84,000 \text{ रु.}} \times 100$$

= 21.93%

$$\text{प्रति अंश अर्जन} = \frac{\text{समता अंशधारकों हेतु उपलब्ध लाभ}}{\text{समता अंशों की संख्या}}$$

$$= \frac{1,38,000 \text{ रु.}}{40,000 \text{ रु.}} = 3.45 \text{ रु.}$$

अधिमानी अंशों पर लाभांश = लाभांश की दर × अधिमानी अंश पूँजी

= 1,00,000 रु. का 12%

= 12,000 रु.

समता अंशधारकों हेतु उपलब्ध लाभ = कर के पश्चात् लाभ – अधिमान लाभांश

= 1,50,000 रु. – 12,000 रु. = 1,38,000 रु.

मूल्य अर्जन अनुपात = प्रति अंश बाज़ार मूल्य/ प्रति अंश अर्जन

$$= \frac{34}{3.45}$$

= 9.86 गुणा

$$\text{समता अंशों की संख्या} = \frac{\text{समता अंश पूँजी}}{\text{प्रति अंश मूल्य}}$$

$$\text{प्रति अंश पुस्तक मूल्य} = \frac{\text{समता अंशधारक निधि}}{\text{समता अंशों की संख्या}}$$

$$= \frac{4,00,000 \text{ रु.}}{10 \text{ रु.}}$$

= 40,000 अंश

$$= \frac{5,84,000 \text{ रु.}}{40,000 \text{ अंश}} = 14.60 \text{ रु.}$$

यहाँ यह ध्यान दिया जा सकता है कि विविध अनुपात एक–दूसरे से परस्पर संबंधित होते हैं। कई बार दो या दो से अधिक अनुपात की समिश्रित जानकारी दी होती है और कुछ अज्ञात आँकड़ों को परिकलित करना होता है। ऐसी परिस्थिति में अज्ञात आँकड़ों को पता करने में अनुपातों के सूत्र सहायक होते हैं। (देखें उदाहरण 23 व 24)

उदाहरण 23

निम्नलिखित जानकारियों से एक कंपनी की चालू परिसंपत्तियों का परिकलन करें–

रहतिया आवर्त अनुपात = 4 गुना

अंतिम रहतिया जो प्रारंभिक रहतिया से 20.000 रु. अधिक है।

प्रचालन से आगम 3,00,000 रु. और सकल लाभ अनुपात प्रचालन से आगम का 20% है।

चालू देयताएँ = 40,000 रु.

तरल अनुपात = 0.75:1

हल

प्रचालन से आगम की लागत = प्रचालन से आगम – सकल लाभ

= 3,00,000 रु. – (3,00,00 × 20%)

= 3,00,000 रु. – 60,000 रु.

= 2,40,000 रु.

रहतिया आवर्त अनुपात = प्रचालन से आगम की लागत/ औसत रहतिया

औसत रहतिया = $\frac{2,40,000}{4}$ = 60,000 रु.

औसत रहतिया = प्रारंभिक रहतिया + अंतिम रहतिया/ 2

60,000 = $\frac{\text{प्रारंभिक रहतिया + (प्रारंभिक रहतिया + 20,000)}}{2}$

60,000 = प्रारंभिक रहतिया + 10,000 रु.

प्रारंभिक रहतिया = 50,000 रु.

अंतिम रहतिया = 70,000 रु.

तरल अनुपात = $\frac{\text{तरल परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$

0.75 = $\frac{\text{तरल परिसंपत्तियाँ}}{\text{40,000 रु.}}$

तरल परिसंपत्तियाँ = 40,000 रु. × 0.75 = 30,000 रु.

चालू परिसंपत्तियाँ = तरल परिसंपत्तियाँ + अंतिम रहतिया

= 30,000 रु. + 70,000 रु. = 1,00,000 रु.

उदाहरण 24

चालू अनुपात है 2.5:1, चालू परिसंपत्तियाँ हैं 50,000 रु. और चालू दायित्व हैं 20,000 रु. चालू अनुपात 2:1 लाने के लिए चालू परिसंपत्तियों में निश्चित रूप से कितनी कमी लानी चाहिए ?

हल

चालू दायित्व	= 20,000 रु.
2:1 अनुपात के लिए, चालू परिसंपत्तियाँ निश्चित रूप से 2 × 20,000 रु.	= 40,000 रु.
चालू परिसंपत्तियों का वर्तमान स्तर	= 50,000 रु.
अनिवार्य गिरावट	= 50,000 – 40,000 रु.
	= 10,000 रु.

उदाहरण 25

लेखा पुस्तकों से 31 मार्च, 2017 की एक कंपनी की निम्नलिखित सूचना ली गई है–

विवरण	रु.
रहतिया	1,00,000
कुल चालू परिसंपत्तियाँ	1,60,000
अंशधारक निधि	4,00,000
13% ऋणपत्र	3,00,000
चालू दायित्व	1,00,000
कर से पहले निवल लाभ	3,51,000
प्रचालन से आगम की लागत	5,00,000

ज्ञात कीजिए–

(i) चालू अनुपात
(ii) तरलता अनुपात
(iii) ऋण समता अनुपात
(iv) ब्याज व्याप्ति अनुपात
(v) रहतिया आवर्त अनुपात

हल

(i) चालू अनुपात $= \frac{\text{चालू परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$

$= \frac{1,60,000 \text{ रु.}}{1.00.000 \text{ रु.}} = 1.6:1$

(ii) तरल परिसंपत्तियाँ = चालू परिसंपत्तियाँ – रहतिया

= 1,60,000 रु. – 1,00,000 रु.

= 60,000 रु.

$$\text{तरलता अनुपात} = \frac{\text{तरल परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$$

$$= \frac{60,000\ \text{रु.}}{1,00,000\ \text{रु.}} = 0.6 : 1$$

(iii) $$\text{ऋण समता अनुपात} = \frac{\text{दीर्घकालीन ऋण}}{\text{अंशधारक निधि}}$$

$$= \frac{3,00,000\ \text{रु.}}{4,00,000\ \text{रु.}} = 0.75 : 1$$

(iv) ब्याज व कर से पूर्व निवल लाभ = कर से पहले निवल लाभ + दीर्घकालीन ऋण पर ब्याज

= 3,51,000 रु. + (13% का 3,00,000 रु.)

= 3,51,000 रु. + 39,000 रु. = 3,90,000 रु.

$$\text{ब्याज व्याप्ति अनुपात} = \frac{\text{ब्याज व कर से पहले निवल लाभ}}{\text{दीर्घकालीन ऋण पर ब्याज}}$$

$$= \frac{3,90,000\ \text{रु.}}{39.000\ \text{रु.}} = 10\ \text{गुणा}$$

(v) $$\text{रहतिया आवर्त अनुपात} = \frac{\text{प्रचालन से आगम की लागत}}{\text{औसत रहतिया}}$$

$$= \frac{5,00,000\ \text{रु.}}{1,00,000\ \text{रु.}} = 5\ \text{गुणा}$$

नोट– आरंभिक रहतिया व अंतिम रहतिया की सूचना के अभाव में दिए गए रहतिया को ही औसत रहतिया माना जाता है।

उदाहरण 26

निम्न सूचनाओं से ज्ञात करें–

(i) प्रति अंश अर्जन
(ii) प्रति अंश पुस्तक मूल्य
(iii) लाभांश भुगतान अनुपात
(vi) मूल्य अर्जत अनुपात

विवरण	रु.
70,000 समता अंश (प्रति 10 रु.)	7,00,000
लाभांश से पूर्व किंतु कर के पश्चात् निवल लाभ	1,75,000
प्रति अंश बाज़ार मुल्य	13
घोषित लाभांश @ 15%	

© NCERT not to be republished

हल

(i) प्रति अंश अर्जन $= \dfrac{\text{समता अंशधारियों के लिए उपलब्ध लाभ}}{\text{समता अंशों की संख्या}}$

$= \dfrac{1,75,000 \text{ रु.}}{70,000 \text{ रु.}} = 2.50 \text{ रु.}$

(ii) प्रति अंश पुस्तक मूल्य $= \dfrac{\text{समता अंशधारियों की निधि}}{\text{समता अंशों की संख्या}}$

$= \dfrac{8,75,000 \text{ रु.}}{70,000 \text{ रु.}} = 12.50 \text{ रु.}$

(iii) लाभांश भुगतान अनुपात $= \dfrac{\text{प्रति अंश लाभांश}}{\text{प्रति अंश अर्जन}}$

$= \dfrac{1.50}{2.50} = 0.61$

(iv) मूल्य अर्जन अनुपात $= \dfrac{\text{प्रति अंश बाज़ार मूल्य}}{\text{प्रति अंश अर्जन}}$

$= \dfrac{13}{2.50} = 5.20$

इस अध्याय में प्रयुक्त शब्द

1. अनुपात विश्लेषण
2. द्रवता अनुपात
3. ऋणशोधन अनुपात
4. क्रियाशीलता अनुपात
5. लाभप्रदता अनुपात
6. निवेश पर प्रत्याय (ROI)
7. तरल परिसंपत्तियाँ
8. अंशधारक निधि (समता)
9. निवल संपत्ति पर प्रत्याय
10. औसत वसूली अवधि
11. व्यापारिक प्राप्य
12. आवर्त अनुपात
13. क्षमता अनुपात
14. लाभांश भुगतान

© NCERT not to be republished

सारांश

अनुपात विश्लेषण– वित्तीय विवरण विश्लेषण का एक महत्त्वपूर्ण साधन अनुपात विश्लेषण है। लेखांकन अनुपात दो लेखांकन संख्याओं के बीच संबंध का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अनुपात विश्लेषण का उद्देश्य– अनुपात विश्लेषण का उद्देश्य व्यवसाय की लाभप्रदता, द्रवता, ऋण शोधन क्षमता तथा सक्रियता स्तर के गहन विश्लेषण को उपलब्ध कराता है। इसका उद्देश्य व्यवसाय की कठिनाइयों व प्रबल क्षेत्रों की पहचान कराना भी है।

अनुपात विश्लेषण के लाभ– अनुपात विश्लेषण कई लाभ प्रदान करता है जिसमें वित्तीय विवरण विश्लेषण, निर्णय की सुसाध्यता समझने में मदद, जटिल आँकड़ों का सरलीकरण करने तथा संबंध स्थापित करने, तुलनात्मक विश्लेषण के सहायक के रूप में, कठिनाई क्षेत्र की पहचान तथा *SWOT* विश्लेषण को योग्य बनाता है तथा विभिन्न तुलनाएँ प्रदान करता है।

अनुपात विश्लेषण की सीमाएँ– अनुपात विश्लेषण की कई सीमाएँ होती हैं। कुछ एक लेखांकन आँकड़ों पर आधारित मूल सीमाओं के कारण होती हैं जिन पर यह आधारित होते हैं। पहले समूह में ऐतिहासिक विश्लेषण, मूल्य परिवर्तन स्तरों की उपेक्षा, गुणात्मक उपेक्षा या गैर–मौद्रिक (मुद्रात्मक) पहलू, लेखांकन आँकड़ों की सीमाएँ लेखांकन पद्धतियों (प्रथाओं) की विभिन्नताएँ तथा पूर्वानुमान शामिल हैं। दूसरे समूह में साधन न कि साध्य, समस्या हल न कर पाने की क्षमता का अभाव तथा असंबद्ध आँकड़ों के बीच अनुपात जैसे घटक शामिल हैं।

अनुपातों के प्रकार– यहाँ पर अनेक प्रकार के अनुपात जैसे कि द्रवता, ऋण शोधन क्षमता, सक्रियता एवं लाभप्रदता अनुपात हैं। द्रवता अनुपात के अंतर्गत चालू अनुपात तथा तरल अनुपात सम्मिलित होता है। ऋण शोधन क्षमता का परिकलन व्यवसाय की इस क्षमता निर्धारण हेतु किया जाता है कि वह लघुकालिक ऋणों की अपेक्षा दीर्घकालिक ऋणों की सेवाएँ पूरी कर पाएगा या नहीं। इसके अंतर्गत ऋण अनुपात कुल परिसंपत्ति एवं ऋण अनुपात, स्वामित्व अनुपात तथा ब्याज संरक्षण अनुपात शामिल होता है। आवर्त अनुपात व्यवसाय द्वारा की गई अधिक विक्रय या आवर्त की क्षमता द्वारा विशिष्टीकृत सक्रियता स्तर को प्रदर्शित करती है और इसमें रहतिया आवर्त, व्यापारिक प्राप्य आवर्त, व्यापारिक देय आवर्त, कार्यशील पूँजी आवर्त, स्थिर परिसंपत्ति आवर्त तथा चालू परिसंपत्ति आवर्त शामिल हैं। लाभप्रदता अनुपात व्यवसाय की अर्जन क्षमता के विश्लेषण हेतु किया जाता है जोकि व्यवसाय में नियोजित संसाधनों को उपयोगिता का परिणाम होता है। इन अनुपातों के अंतर्गत सकल लाभ अनुपात, प्रचालन अनुपात, निवल लाभ अनुपात, निवेश (पूँजी विनियोजित) पर प्रत्याय, प्रति अंश अर्जन, पुस्तक मूल्य प्रति अंश, लाभांश प्रति अंश तथा मूल्य अर्जन अनुपात आते हैं।

Reprint 2026-27

अभ्यास हेतु प्रश्न

क. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अनुपात विश्लेषण से आप का क्या तात्पर्य है?
2. अनुपातों के विविध प्रकार कौन-से हैं?
3. अध्ययन से इनका क्या संबंध स्थापित होगा–
   (क) रहतिया आवर्त
   (ख) व्यापारिक प्राप्य आवर्त
   (ग) व्यापारिक देय आवर्त
   (घ) कार्यशील पूँजी आवर्त
4. एक व्यावसायिक फ़र्म की द्रवता उसकी दीर्घकालिक दायित्वों के समय आने पर भुगतान हेतु उसकी क्षमता की संतुष्टि हेतु मापी जाती है। इस उद्देश्य के लिए किन अनुपातों का प्रयोग किया जाता है? टिप्पणी कीजिए।
5. एक माल सूची की औसत आयु को उस औसत समयावधि के रूप में देखा जाता है जिसमें वह फ़र्म द्वारा धारित की जाती है। कारण सहित व्याख्या कीजिए।

ख. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. द्रवता अनुपात क्या है? चालू एवं तरल अनुपात के महत्त्व की चर्चा कीजिए।
2. आप एक फर्म की ऋणशोधन क्षमता का अध्ययन कैसे करेंगे?
3. विभिन्न प्रकार के लाभप्रदता अनुपात कौन-कौन से हैं। इन्हें कैसे ज्ञात किया जाता है?
4. चालू अनुपात समग्र द्रवता का बेहतर माप केवल तभी उपलब्ध कराता है जब एक फर्म की माल सूची आसानी से रोकड़ में न परिवर्तित हो सके। यदि माल सूची तरल है तो समग्र द्रवता के मापन हेतु तरल अनुपात एक प्राथमिकता है। व्याख्या कीजिए।

ग. संख्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित तुलन-पत्र 31 मार्च 2017 पर राज ऑयल लिमिटेड का है।

विवरण	रु.
I. समता तथा देयताएँ	
(i) अंशधारक निधि	
(क) अंश पूँजी	7,90,000
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष	35,000
(ii) चालू दायित्व	
(क) व्यापारिक देय	72,000
योग	**8,97,000**

© NCERT not to be republished

II. परिसंपत्तियाँ	
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ	
(क) स्थाई परिसंपत्तियाँ	
मूर्त परिसंपत्तियाँ	7,53,000
(ii) चालू परिसंपत्तियाँ	
(क) रहतिया	55,800
(ख) व्यापारिक प्राप्य	28,800
(ग) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	59,400
योग	**8,97,000**

चालू अनुपात ज्ञात कीजिए।

(**उत्तर–** चालू अनुपात 2:1)

2. निम्नलिखित तुलन-पत्र 31 मार्च 2017 पर टाइटे मशीन लिमिटेड का है–

विवरण	*राशि (रु.)*
I. समता तथा देयताएँ	
(i) अंशधारक निधि	
(क) अंश पूँजी	24,00,000
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष	6,00,000
(ii) गैर-चालू दायित्व	
(क) दीर्घकालीन ऋण	9,00,000
(iii) चालू दायित्व	
(क) अल्पकालीन ऋण	6,00,000
(ख) व्यापारिक देय	23,40,000
(क) अल्पकालीन प्रावधान	60,000
योग	**69,00,000**
II. परिसंपत्तियाँ	
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ	
(क) स्थाई परिसंपत्तियाँ	
मूर्त परिसंपत्तियाँ	45,00,000
(ii) चालू परिसंपत्तियाँ	
(क) रहतिया	12,00,000
(ख) व्यापारिक प्राप्य	9,00,000
(ग) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	2,28,000
(घ) अल्पकालीन ऋण एवं अग्रिम	72,000
योग	**69,00,000**

© NCERT not to be republished

चालू अनुपात तथा तरलता अनुपात ज्ञात कीजिए।

(**उत्तर–** चालू अनुपात 0.8:1; तरलता अनुपात 0.4:1)

3. चालू अनुपात 3:5 है। कार्यशील पूँजी 90,000 रु. है। चालू परिसंपतियों तथा चालू दायित्व की राशि परिकलित करें।
(**उत्तर–** चालू परिसंपत्तियाँ 1,26,000 रु. एवं चालू दायित्व 36,000 रु.)

4. शाइन लिमिटेड का चालू अनुपात 4.5:1 एवं तरल अनुपात 3:1 है। यदि रहतिया 36,000 रु. है तो चालू दायित्व एवं चालू परिसंपत्तियाँ परिकलित करें।
(**उत्तर–** चालू परिसंपत्तियाँ 1,08,000 रु., चालू दायित्व 24,000 रु.)

5. एक कंपनी की चालू दायित्व 75,000 रु. है, यदि चालू अनुपात 4:1 है तथा तरल अनुपात 1:1 है तो चालू परिसंपत्तियों, तरल अनुपात एवं रहतिए का मूल्य परिकलित कीजिए।
(**उत्तर–** चालू परिसंपत्तियाँ 3,00,000 रु., तरल अनुपात 75,000 रु., तथा रहतिया 2,25,000 रु. है)

6. हांडा लिं. का रहतिया 20,000 रु. है, कुल तरल परिसंपत्तियाँ 1,00,000 रु. हैं। और तरल अनुपात 2:1 है। चालू अनुपात परिकलित कीजिए।
(**उत्तर–** चालू अनुपात 2.4:1)

7. निम्नलिखित जानकारी से ऋण समता अनुपात परिकलित कीजिए–

	रु.
कुल परिसंपत्तियाँ	15,00,000
चालू दायित्व	6,00,000
कुल ऋण	12,00,000

(**उत्तर–** ऋण समता अनुपात 2:1)

8. चालू अनुपात परिकलित करें, यदि, रहतिया 6,00,000 रु. है। तरल परिसंपत्तियाँ 24,00,000 रु. है। तरल अनुपात 2:1
(**उत्तर–** चालू अनुपात 2.5:1)

9. निम्नलिखित सूचना से रहतिया आवर्त अनुपात परिकलित करें–

	रु.
प्रचालन से आगम	2,00,000
सकल लाभ	50,000
अंतिम रहतिया	60,000
प्रारंभिक रहतिया पर अंतिम रहतिया का आधिक्य	20,000

(**उत्तर–** रहतिया आवर्त अनुपात 3 गुणा)

10. निम्नलिखित जानकारी से निम्न अनुपात परिकलित कीजिए–
(i) चालू अनुपात (ii) तरल अनुपात, (iii) प्रचालन अनुपात (iv) सकल लाभ अनुपात

	रु.
चालू परिसंपत्तियाँ	35,000
चालू दायित्व	17,500

रहतिया	15,000
प्रचालन व्यय	20,000
प्रचालन से आगम	60,000
प्रचालन से आगम की लागत	30,000

(**उत्तर–** चालू अनुपात 2:1, तरल अनुपात 1.14:1, प्रचालन अनुपात 83.3%, सकल लाभ अनुपात 50%)

11. निम्नलिखित जानकारी से परिकलित करें।
(i) सकल लाभ अनुपात (ii) रहतिया आवर्त अनुपात (iii) चालू अनुपात (iv) तरल अनुपात (v) निवल लाभ अनुपात (vi) कार्यशील पूँजी अनुपात

प्रचालन से आगम	25,20,000
निवल लाभ	3,60,000
प्रचालन से आगम की लागत	19,20,000
दीर्घकालीन ऋण	9,00,000
व्यापारिक देय	2,00,000
औसत रहतिया	8,00,000
चालू परिसंपत्तियाँ	7,60,000
स्थाई परिसंपत्तियाँ	14,40,000
तरल दायित्व	6,00,000
ब्याज व कर से पूर्व निवल लाभ	8,00,000

(**उत्तर–** सकल लाभ अनुपात 23.81%; रहतिया आवर्त अनुपात 2.4 गुणा, चालू अनुपात 2.6:1; तरल अनुपात 1.27:1; निवल लाभ अनुपात 14.21%; कार्य पूँजी अनुपात 2.625 गुणा)

12. निम्न जानकारी से सकल लाभ अनुपात, कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात, ऋण समता अनुपात तथा स्वामित्व अनुपात परिकलित कीजिए–

	रु.
प्रदत पूँजी	5,00,000
चालू परिसंपत्तियाँ	4,00,000
प्रचालन से निवल आगम	10,00,000
13% ऋण पत्र	2,00,000
चालू दायित्व	2,80,000

(**उत्तर–** कार्यशील पूँजी अनुपात 8.33 गुणा; ऋण समता अनुपात 0.4:1; स्वामित्व अनुपात 0.71:1)

13. रहतिया आवर्त अनुपात परिकलित कीजिए, यदि
प्रारंभिक रहतिया 76,250 रु., अंतिम रहतिया 98,500 रु. है, विक्रय 5,20,000 रु. है। विक्रय वापसी 20,000 रु. है। क्रय 3,22,250 रु. है।
(**उत्तर–** रहतिया आवर्त अनुपात 3.43 गुणा)

14. नीचे दिए गए आँकड़ों से रहतिया आवर्त अनुपात परिकलित कीजिए।

वर्ष के प्रारंभ में रहतिया	10,000
वर्ष के अंत में रहतिया	5,000
ढुलाई	2,500

© NCERT not to be republished

प्रचालन से आगम	50,000
क्रय	25,000

(**उत्तर–** रहतिया आवर्त अनुपात 4.33 गुणा)

15. एक व्यापारिक फ़र्म का औसत रहतिया 20,000 रु. (लागत) है। यदि रहतिया आवर्त अनुपात 8 गुणा है और फर्म विक्रय पर 20% सकल लाभ पर माल बेचती है, तो फ़र्म का लाभ सुनिश्चित कीजिए।
(**उत्तर–** सकल लाभ 40,000 रु.)

16. आपने एक कंपनी की दो वर्ष की निम्न सूचनाएँ एकत्र की हैं–

	2015-16	*2016-17*
01 अप्रैल को व्यापारिक प्राप्य	4,00,000	5,00,000
31 मार्च को व्यापारिक प्राप्य		5,60,000
31 मार्च को व्यापारिक रहतिया	6,00,000	9,00,000
प्रचालन से आगम (सकल लाभ से प्रचालन से आगम की लागत का 25 % है)	3,00,000	24,00,000

रहतिया आवर्त अनुपात तथा व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात परिकलित कीजिए।
(**उत्तर–** रहतिया आवर्त अनुपात 2.67 गुणा, व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात 4.41 गुणा।); 2016-17 का रहतिया आवर्त अनुपात 2.13 गुणा है; प्राप्य आवर्त अनुपात 4.53 गुणा है।

17. दिए गए तुलन-पत्र एवं अन्य सूचनाओं से निम्नलिखित अनुपातों का परिकलन कीजिए–
(i) ऋण समता अनुपात (ii) कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात (iii) व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात

31 मार्च 2017 पर तुलन-पत्र

विवरण	*नोट संख्या*	*राशि रु.*
I. समता तथा देयताएँ		
(i) अंशधारक निधि		
(क) अंश पूँजी		10,00,000
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष		7,00,000
(ग) अंश वारंट पर प्राप्त धन		2,00,000
(ii) गैर-चालू दायित्व		
(क) दीर्घकालीन ऋण		12,00,000
(iii) चालू दायित्व		
(ख) व्यापारिक देय		5,00,000
योग		**36,00,000**
II. परिसंपत्तियाँ		
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ		
(क) स्थाई परिसंपत्तियाँ		
मूर्त परिसंपत्तियाँ		18,00,000

© NCERT not to be republished

(ii) चालू परिसंपत्तियाँ		
(क) रहतिया		4,00,000
(ख) व्यापारिक प्राप्य		9,00,000
(ग) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		5,00,000
योग		**36,00,000**

अतिरिक्त सूचना – प्रचालन से आगम 18,00,000 रु.।

(**उत्तर–** ऋण-समता अनुपात 0.63:1; कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात 1.38 गुणा; व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात 2 गुणा;)

18. निम्न सूचनाओं से परिकलित करें–
   (i) तरल अनुपात
   (ii) रहतिया आवर्त अनुपात
   (iii) निवेश पर प्रत्याय

	रु.
आरंभिक रहतिया	50,000
अंतिम रहतिया	60,000
निवल लाभ	2.17.900
प्रचालन से आगम	4,00,000
10% ऋणपत्र	2,50,000
सकल लाभ	1,94,000
रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	40,000
अंश वारंट पर प्राप्त धन	20,000
व्यापारिक प्राप्य	1,00,000
व्यापारिक देय	1,90,000
अन्य चालू दायित्व	70,000
अंश पूँजी	2,00,000
आरक्षित एवं अधिशेष	1,40,000
(लाभ हानि विवरण का शेष)	

(**उत्तर**– त्वरित अनुपात 0.54:1; रहतिया आवर्त अनुपात 3.76 गुणा; निवेश पर प्रत्याय 41.17%)

19. निम्न सूचना के आधार पर परिकलित करें– (क) ऋण समता अनुपात (ख) कुल परिसंपत्तियों का ऋण से अनुपात
   (ग) स्वामित्व अनुपात

	रु.
समता अंश पूँजी	75,000
अपूर्ण आवंटन पर आवेदन राशि	25,000
सामान्य आरक्षित	45,000
लाभ-हानि विवरण का शेष	30,000
ऋणपत्र	75,000
व्यापारिक देय	40,000
बकाया व्यय	10,000

© NCERT not to be republished

(**उत्तर–** ऋण समता अनुपात 0.43:1; कुल परिसंपत्तियों का ऋण से अनुपात 4:1; स्वामित्व अनुपात 0.58:1)

20. प्रचालन से आगम की लागत 1,50,000 रु. है, प्रचालन व्यय 60,000 रु. है, प्रचालन से आगम 2,50,000 रु. है. प्रचालन अनुपात का परिकलन कीजिए।

21. निम्न सूचना के आधार पर निम्न अनुपात ज्ञात करें–

(i) सकल लाभ अनुपात
(ii) चालू अनुपात
(iii) तरल अनुपात
(vi) रहतिया आवर्त अनुपात
(v) स्थाई परिसंपत्तियाँ आवर्त अनुपात

	रु.
सकल लाभ	50,000
प्रचालन से आगम	1,00,000
रहतिया	15,000
व्यापारिक प्राप्य	27,500
रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	17,500
चालू दायित्व	40,000
भूमि एवं भवन	50,000
संयंत्र एवं मशीनरी	30,000
फ़र्नीचर	20,000

(**उत्तर–** (i) सकल लाभ अनुपात 50% (ii) चालू अनुपात 1.5:1 (iii) तरल अनुपात 1.125:1 (iv) रहतिया आवर्त अनुपात 3.33 गुणा, (v) स्थिर परिसंपत्ति आवर्त अनुपात 1:1)

22. निम्नलिखित सूचना से परिकलित करें– सकल लाभ अनुपात, रहतिया आवर्त अनुपात, तथा लेनदार आवर्त अनुपात

	रु.
प्रचालन द्वारा आगम	3,00,000
प्रचालन द्वारा आगम की लागत	2,40,000
अंतिम रहतिया	62,000
सकल लाभ	60,000
प्रारंभिक रहतिया	58,000
व्यापारिक प्राप्य	32,000

(**उत्तर–** सकल लाभ अनुपात 20%; रहतिया आवर्त अनुपात 4 गुणा; व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात 9.375 गुणा)

स्वयं जाँचने हेतु जाँच सूची

स्वयं जाँचिए–1

(क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य (घ) असत्य (च) सत्य (छ) असत्य

स्वयं जाँचिए–2

(i) द (ii) द (iii) ब (iv) अ (v) ब (vi) द

स्वयं जाँचिए–3

(i) ग (ii) ख (iii) ख (iv) ग (v) ग (vi) ग

© NCERT not to be republished

12129CH06

5

रोकड़ प्रवाह विवरण

अभी तक आपने वित्तीय विवरणों के बारे में पढ़ा है; विशेष रूप से तुलन–पत्र (एक विशिष्ट तिथि पर एक उद्यम की वित्तीय स्थिति को दर्शाते हुए) तथा आय विवरण (एक विशिष्ट अवधि के बाद एक उद्यम के प्रचालन क्रियाकलापों के परिणाम को दर्शाते हुए) सहित अध्ययन किया है। यहाँ पर एक तीसरा महत्त्वपूर्ण वित्तीय विवरण भी है जिसे *रोकड़ प्रवाह विवरण* के नाम से जानते हैं जो रोकड़ के अंतर्वाह तथा बाहिर्वाह एवं रोकड़ तुल्यराशियों (या तुल्यांकों) को दर्शाता है। यह विवरण प्रायः कंपनियों द्वारा तैयार किया जाता है जो वित्तीय सूचनाओं के उपयोगकर्ताओं के साधन के रूप में स्रोतों एवं रोकड़ के उपयोग जानने तथा एक उद्यम की विभिन्न क्रियाकलापों में एक अवधि के दौरान *उद्यम* की तुल्यराशियों को जानने के काम आता है। यह अध्याय रोकड़ प्रवाह विवरण से संबंधित है जिसने पिछले दशक में पर्याप्त महत्त्व अर्जित किया है। वित्तीय सूचनाओं के उपयोगकर्ताओं हेतु व्यावहारिक उपयोगिता के कारणवश है।

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के उपरांत आप –

- *रोकड़ प्रवाह विवरण के उद्देश्य तथा निर्माण की व्याख्या कर सकेंगे।*
- *प्रचालन क्रियाकलापों, निवेश क्रियाकलापों तथा वित्तीय क्रिया कलापों के बीच विभेद कर सकेंगे।*
- *प्रत्यक्ष विधि का उपयोग करते हुए रोकड़ प्रवाह का विवरण तैयार कर सकेंगे।*
- *अप्रत्यक्ष विधि का उपयोग करते हुए रोकड़ प्रवाह का विवरण तैयार कर सकेंगे।*

कंपनियों के वित्तीय विवरण कंपनी अधिनियम, 2013 में निर्धारित लेखा मानकों के बाद तैयार किए जाते हैं। लेखा मानक कंपनी अधिनियम, 2013 के लेखा मानक नियम, 2006 की धारा 133 के तहत अधिसूचित किए जाते हैं और प्रकृति में अनिवार्य हैं। कंपनी अधिनियम, 2013 यह भी निर्दिष्ट करता है कि यदि लेखांकन मानकों का पालन नही किया जाता है, तो वित्तीय विवरण सही और निष्पक्ष नहीं होंगे, जो कि वित्तीय विवरण की एक गुणवत्ता है। वित्तीय विवरण कंपनी अधिनियम, 2013 धारा 2 (40) में परिभाषित किए गए हैं और इसमें लेखा मानक–3 (एएस–3) रोकड़ प्रवाह विवरण शामिल है।

रोकड़ प्रवाह विवरण एक उद्यम की रोकड़ तुल्यराशियों तथा रोकड़ में बदलाव के संदर्भ में रोकड़ प्रवाह को प्रचालन, निवेश एवं वित्तीय क्रियाकलापों में वर्गीकृत करते हुए ऐतिहासिक जानकारियाँ

© NCERT not to be republished

प्रदान करता है। इसके लिए अपेक्षित है कि एक उद्यम को रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करना चाहिए और उसे प्रत्येक लेखांकन अवधि में प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जिस अवधि में वित्तीय विवरण प्रस्तुत किए जाते हैं। इस अध्याय में एक लेखांकन अवधि के लिए रोकड़ प्रवाह विवरण के निर्माण की तकनीक एवं विधि की चर्चा की गई है।

5.1 रोकड़ प्रवाह विवरण के उद्देश्य

रोकड़ प्रवाह विवरण एक कंपनी की अवधि-विशेष में विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा रोकड़ के अंतर्वाह एवं बाहिर्वाह तथा रोकड़ तुल्यराशियों को दर्शाता है। रोकड़ प्रवाह विवरण का प्राथमिक उद्देश्य एक उद्यम की अवधि विशेष के दौरान विभिन्न (क्रियाकलापों के) शीर्षों जैसे कि प्रचालन क्रियाकलाप, निवेश क्रियाकलाप तथा वित्तीय क्रियाकलापों में रोकड़ प्रवाह (अंतर्वाह एवं बाहिर्वाह) के संबंध में उपयोगिता पूर्ण सूचना प्रदान करना है।

यह सूचना वित्तीय विवरण के उपयोगकों या उपयोगकर्ताओं के उपयोगिता पूर्ण होती है; क्योंकि यह एक उद्यम की रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांकों को पैदा करने की क्षमता तथा इन रोकड़ प्रवाहों को उद्यम द्वारा उपयोग की आवश्यकताओं के मूल्यांकन हेतु आधार प्रदान करती है। आर्थिक निर्णय जो उपयोगकों द्वारा लिए जाते हैं उन्हें एक उद्यम के द्वारा रोकड़ तथा रोकड़ तुल्यांकों को पैदा करने की क्षमता तथा उनकी उत्पत्ति के लिए सामयिकता एवं सुनिश्चिता की क्षमता को मूल्यांकित करने की आवश्यकता होती है।

5.2 रोकड़ प्रवाह विवरण के लाभ

रोकड़ प्रवाह विवरण निम्नलिखित लाभ प्रदान करता है–

- एक रोकड़ प्रवाह विवरण जब अन्य वित्तीय विवरणों के साथ उपयोग किया जाता है तब वह ऐसी सूचनाएँ प्रदान करता है जो एक उद्यम की निवल परिसंपत्तियों में बदलाव तथा उसके वित्तीय ढाँचे (तरलता एवं ऋणशोधन क्षमता सहित) को मूल्यांकित करने तथा बदलती परिस्थितियों एवं अवसरों में अनुकूल रोकड़ प्रवाह की सामयिकता तथा राशि की प्रभावशीलता की क्षमता जानने में मदद करता है।
- रोकड़ प्रवाह सूचना एक उद्यम की रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांकों को पैदा करने की क्षमता को मूल्यांकित करने में उपयोगी होती है और उपयोगकर्त्ताओं को वर्तमान मूल्य को भविष्य में विभिन्न व्यावसायिक इकाइयों के रोकड़ प्रवाह की तुलना एवं मूल्यांकन के प्रतिमान को विकसित करने में सक्षम बनाती है।
- इसके साथ ही यह विभिन्न उद्यमों की प्रचालन दक्षता एवं रिपोर्टिंग की तुलनात्मकता को बढ़ाता है क्योंकि यह एक ही लेन-देन एवं घटना के लिए विभिन्न लेखांकन निरूपणों के प्रभावों को समाप्त करता है।
- यह परिवर्तनीय परिस्थितियों मे रोकड़ अंतर्वाह एवं बाहिर्वाह में सामंजस्य स्थापित करने में भी सहायक है। इसके साथ ही भावी रोकड़ प्रवाह की परिशुद्धता के पूर्व मूल्यांकनों को जाँचने में सहायक होते हैं और लाभप्रदता तथा निवल रोकड़ प्रवाह तथा परिवर्तनीय मूल्यों के प्रभाव के बीच संबंधों की जाँच करने में भी सहायक होते हैं।

5.3 रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यराशियाँ

जैसा कि पहले बताया गया है कि रोकड़ प्रवाह विवरण, एक उद्यम की अवधि–विशेष के दौरान विभिन्न क्रियाकलापों से रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांकों के अंतर्वाह एवं बाहिर्वाह को दर्शाते हैं। ले. मा.–3 (AS-3) के अनुसार 'रोकड़' के अंतर्गत हस्तस्थ रोकड़ तथा बैंक के साथ माँग जमा तथा रोकड़ तुल्यराशियों का तात्पर्य अल्पकालिक उच्च तरलता निवेशों से है जो कि तत्काल रोकड़ की राशि में परिवर्तनीय–रूप में जाने जाते हैं और जो कि अपने मूल्य परिवर्तन के जोखिम हेतु महत्त्वपूर्ण नहीं समझे जाते हैं। एक निवेश सामान्यत: एक रोकड़ तुल्यांक योग्यता तभी पाता है जब उसकी परिपक्वता अवधि अत्यंत लघुकालिक होती है यानि कि प्राप्ति तिथि से तीन माह या कम की हो। अंशों में निवेश को रोकड़ तुल्यांकों से तब तक बाहर रखते हैं जब तक वे ठोस या पर्याप्त रूप से रोकड़ तुल्यराशि/तुल्यांक न हों। उदाहरण के लिए एक कंपनी के अधिमान अंश अपनी मोचन तिथि से ठीक थोड़ा पहले प्राप्त किए जाते हैं बशर्ते कि कंपनी को इनकी परिपक्वता पर भुगतान करने की असफलता का जोखिम बिलकुल ही महत्त्वहीन हो। इसी प्रकार अल्प कालिक विपणन योग्य प्रतिभूतियाँ जिन्हें तत्काल बिना मूल्य में किसी महत्त्वपूर्ण बदलाव के, रोकड़ में परिवर्तित किया जा सके, रोकड़ तुल्यराशियाँ माना जाता है।

5.4 रोकड़ प्रवाह

'रोकड़ प्रवाह' का आशय गैर–रोकड़ मदों द्वारा रोकड़ के आवक एवं जावक (अंतर्वाह एवं बाहिर्वाह) से है। एक ओर गैर–रोकड़ मद की रोकड़ के रूप में प्राप्ति को रोकड़ अंतर्वाह कहा जाता है। जबकि ऐसे मद के लिए रोकड़ के भुगतान को बाहिर्वाह रोकड़ प्रवाह के रूप में जाना जाता है। उदाहरण के लिए नकद भुगतान द्वारा मशीनरी की खरीद रोकड़ बाहिर्वाह है जबकि एक मशीन की नकद बिक्री के लिए प्राप्त रोकड़ को रोकड़ अंतर्वाह के रूप में जाना जाता है। इसके अतिरिक्त रोकड़ प्रवाह के अन्य उदाहरणों में व्यापारिक प्राप्यों से रोकड़ प्राप्ति, व्यापारिक देयताओं को भुगतान, कर्मचारियों को भुगतान, लाभांश की प्राप्ति, ब्याज का भुगतान आदि सम्मिलित है।

रोकड़ प्रबंधन में रोकड़ तुल्यराशियों में रोकड़ आधिक्य का निवेश भी शामिल होता है। इसीलिए विपणन योग्य प्रतिभूतियों की खरीद या अल्पकालिक निवेश जिससे कि रोकड़ तुल्यांक संघटित होता है, उसे रोकड़ प्रवाह विवरण बनाते समय ध्यान नहीं दिया जाता है।

5.5 रोकड़ प्रवाह विवरण को तैयार करने हेतु क्रियाकलापों का वर्गीकरण

आप जानते हैं कि एक उद्यम को विभिन्न क्रियाकलापों के परिणामस्वरूप रोकड़ प्रवाह (अंतर्वाह या रोकड़ प्राप्ति तथा बाहिर्वाह या भुगतान) होता है जो कि रोकड़ प्रवाह की विषय–वस्तु होती है। ले.मा.–3 के अनुसार इन क्रियाकलापों को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है – (1) प्रचालन (2) निवेश और (3) वित्तीय क्रियाकलाप, ताकि इन्हें इन तीनों क्रियाकलापों से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह को अलग–अलग दर्शाया जा सके। यह रोकड़ प्रवाह विवरण एक उद्यम की वित्तीय स्थिति में इन क्रियाकलापों के प्रभाव को मूल्यांकित करने में मदद करता है और इसके साथ ही इनमें रोकड़ और रोकड़ तुल्यांकों को जानने में भी मददगार होता है।

Reprint 2026-27

5.5.1 प्रचालन क्रियाकलाप से रोकड़

प्रचालन क्रियाकलाप वे क्रियाकलाप हैं जिनमें एक उद्यम की प्राथमिक या प्रमुख क्रियाकलाप संघटित होता है। उदाहरण के लिए, एक कंपनी के लिए पोशाकें बनाना, कच्चे सामान को जुटाना, निर्माण खर्चों का उभरना, पोशाकों की बिक्री, आदि। ये एक उद्यम के प्रधान या प्रमुख आमदनी अर्जक क्रियाकलाप (या मुख्य क्रियाकलाप) हैं तथा यह वे क्रियाकलाप हैं जिनमें निवेश या वित्तीय गतिविधि शामिल नहीं है। प्रचालन में रोकड़ की राशि कंपनी के आंतरिक ऋणशोधन क्षमता स्तर का संकेत देती है तथा बिना बाह्य वित्तीय स्रोतों की सहायता के एक उद्यम की प्रचालन क्षमता को बनाए रखने के लिए पर्याप्त रोकड़ प्रवाह उत्पन्न करती है, लाभांशों को चुकाना, नए निवेशों को क्रियान्वित करने में और ऋणों की वापसी में भी मदद करती है ऋणशोधन क्षमता का एक प्रमुख संकेतक माना जाता है।

प्रचालन के क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह को उद्यम की मुख्य क्रियाओं से प्राप्त किया जाता है, इसीलिए सामान्यत: लेन-देनों एवं अन्य घटनाओं का क्रियान्वित रूप परिणाम होते हैं जोकि निवल लाभ या हानि में प्रविष्ट होते हैं। ये प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह के उदाहरण हैं–

प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ अंतर्वाह

- माल की बिक्री तथा सेवाओं को प्रदान करने से रोकड़ प्राप्तियाँ
- रॉयल्टी, फ़ीस, कमीशनों तथा अन्य रोकड़ प्राप्तियाँ

प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ बाहिर्वाह

- माल एवं सेवाएँ हेतु नकद भुगतान
- कर्मचारियों तथा उनके माध्यम से अन्य व्यक्ति को नकदी भुगतान
- बीमा उपक्रम को प्रीमियम और दावों, वार्षिकी और अन्य पॉलिसी लाभों के लिए रोकड़ भुगतान
- आयकर हेतु नकद भुगतान, जब तक कि इन्हें वित्तीय एवं निवेशन क्रियाकलापों के साथ स्पष्टीकृत न किया जा सके।

प्रचालन रोकड़ प्रवाह के मामलों में निवल स्थिति को दर्शाया जाता है।

एक उद्यम निपटान या व्यापारिक उद्देश्यों के लिए ऋणों एवं प्रतिभूतियों को धारित कर सकता है, तब ऐसे मामलों में वह पुन: बिक्री के लिए विशेष रूप से अपेक्षित मालसूची के समान होते हैं। इस प्रकार प्रतिभूतियों के निपटान या व्यापार की बिक्री एवं खरीद से पैदा होने वाले रोकड़ प्रवाह को प्रचालन क्रियाकलापों में वर्गीकृत किया जाता है। ठीक इसी प्रकार से वित्तीय उद्यमों द्वारा तैयार किया गया रोकड़ अग्रिम एवं ऋण आदि को प्राय: प्रचालन क्रियाकलाप के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, चूँकि ये उद्यम के प्रमुख क्रियाकलापों से संबंद्ध होते हैं।

5.5.2 निवेश क्रियाकलापों से रोकड़

ले.मा.-3 के अनुसार, निवेश क्रियाकलाप के अंतर्गत दीर्घकालिक परिसंपत्तियों की प्राप्ति एवं निपटान तथा वे अन्य निवेश जो रोकड़ तुल्यांकों में शामिल न हों, निवेश क्रियाकलाप की श्रेणी में आते हैं। निवेश क्रियाकलापों के अंतर्गत दीर्घकालिक परिसंपत्तियों या स्थिर परिसंपत्तियों की खरीद और बिक्री भी समाहित

होती है जैसे कि मशीनरी, फ़र्नीचर, भूमि एवं भवन आदि। "दीर्घकालिक निवेशों से संबंधित लेनदेन भी निवेश क्रियाकलाप माने जाते हैं।"

निवेश क्रियाकलापों का पृथक रूप से प्रस्तुतीकरण महत्त्वपूर्ण है क्योंकि ये उन मदों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो भविष्य की आय एवं रोकड़ प्रवाह को पैदा करने के संसाधनों में अर्जित खर्चों के लिए किए गए हैं। जिन निवेश क्रियाकलापों से अलग रोकड़ प्रवाह पैदा होता है उनके कुछ उदाहरण ये हैं–

निवेश क्रियाकलापों से रोकड़ बाहिर्वाह

- स्थिर परिसंपत्तियों को प्राप्त करने के लिए नकद भुगतान जिनमें अगोचर एवं पूँजीकृत अनुसंधान एवं विकास आते हैं।
- अंशों, अधिपत्रों या ऋण प्रपत्रों को अन्य उद्यमों से प्राप्त करने पर नकद भुगतान, यदि ऐसे प्रपत्रों को व्यापारिक उद्देश्यों के लिए धारित न किया गया है।
- तीसरी पार्टी को रोकड़ अग्रिम एवं ऋण देना (वित्तीय उद्यमों द्वारा अग्रिम एवं ऋणों के देने के अलावा, जहाँ यह प्रचलन क्रियाकलाप माना जाता है)।

निवेश क्रियाकलापों से रोक अंतर्वाह

- अमूर्त परिसंपत्ति सहित स्थिर परिसंपत्तियों के निपटान से नकद प्राप्तियाँ
- तीसरी पार्टी को दिए गए ऋणों एवं पेशगी के परिशोधन से प्राप्त रोकड़ (केवल वित्तीय उद्यमों को छोड़कर)।
- अन्य उद्यमों के अंशों, अधिपत्रों या ऋण प्रपत्रों के निपटान ये प्राप्त रोकड़ यदि ऐसे प्रपत्रों को व्यापारिक उद्देश्य के लिए धारित न किया गया हो।
- ऋणों एवं अग्रिमों ब्याज की रोकड़ में प्राप्ति।
- अन्य उद्यमों में निवेशों से प्राप्त लाभांश।

5.5.3 वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़

जैसा कि नाम संकेतित करता है, "वित्तीय कियाकलापों का संबंध दीर्घकालिक निधियों या एक उद्यम की पूँजी से है।" उदाहरण के रूप में समता अंश, ऋणपत्रों के निर्गमन की प्राप्ति में रोकड़, बैंकों से ऋण उगाहना या बैंक ऋणों का भुगतान आदि। ले.मा.-3 के अनुसार वित्तीय क्रियाकलाप वे क्रियाकलाप हैं जिनके परिणाम स्वरूप स्वामित्व पूँजी (यदि एक कंपनी है तो अधिमानी अंश पूँजी सहित) और उद्यमों से ऋण या कर्ज़ उठाने के संघटन एवं आकार में परिवर्तन आता है। वित्तीय क्रियाकलापों का रोकड़ प्रवाह के लिए, अलग प्रकरण महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि एक उद्यम निधि प्रदानकर्ता (पूँजी एवं ऋण दोनों) के द्वारा भावी दावों का अनुमान लगाने में सक्षम होता है। वित्तीय क्रियाकलापों के उदाहरण हैं–

वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ अंतर्वाह

- अंश निर्गम से रोकड़ प्राप्तियाँ। (समता अथवा/और अधिमानी)
- ऋणपत्रों, ऋणों, बंधपत्रों एवं अन्य अल्प या दीर्घकालिक ऋणों से रोकड़ प्राप्तियाँ।

वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ बाहिर्वाह

- उधार ली गई राशि का नकद भुगतान।
- ऋणपत्रों, दीर्घकालिक ऋणों तथा पेशगियों पर ब्याज भुगतान
- समता एवं अधिमानी पूँजी पर लाभांश भुगतान

यहाँ पर यह बताना महत्त्वपूर्ण है कि एक लेन-देन में ऐसा रोकड़ प्रवाह भी शामिल हो सकता है, जिसे भिन्न रूप से वर्गीकृत किया गया हो। उदाहरण के लिए, जब एक स्थिर परिसंपत्ति का अर्जन विभिन्न भुगतान के आधारों पर होता है, जिसमें ब्याज एवं ऋण दोनों शामिल होते हैं तब ब्याज को वित्तीय क्रियाकलाप में वर्गीकृत किया जाता है। तथा ऋण को निवेश क्रियाकलाप के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। इसके अतिरिक्त एक ही क्रियाकलाप को भिन्न उद्यमों के लिए भिन्नता पूर्वक वर्गीकृत किया जाता है। उदाहरण के लिए, अंशों की खरीद अंश दलाली फ़र्म हेतु एक प्रचालन क्रियाकलाप है जबकि अन्य उद्यमों के लिए एक निवेश क्रियाकलाप है।

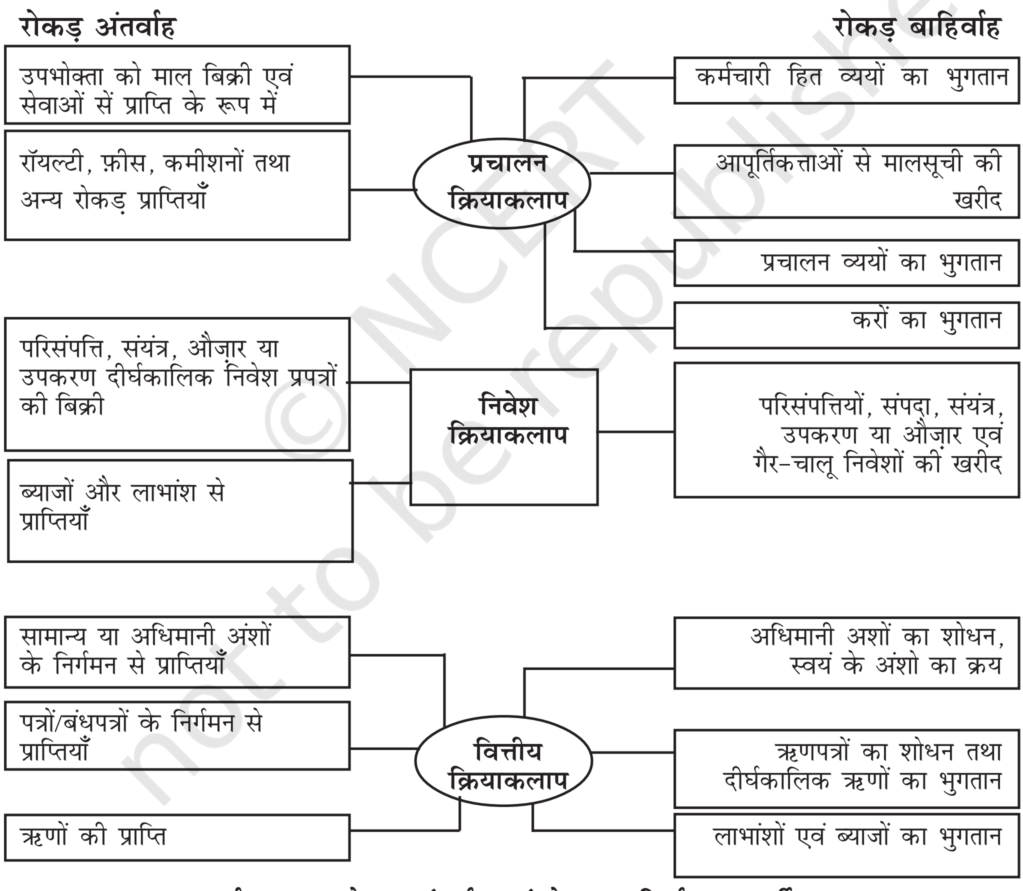

प्रदर्श 5.1 – *रोकड़ अंतर्वाह एवं रोकड़ बाहिर्वाह का वर्गीकरण*

5.5.4 कुछ विशिष्ट (व्यक्तिगत) मदों का व्यवहार

असाधारण मदें

'असाधारण मदें सामान्य परिदृश्य नहीं होती हैं।' उदाहरण के रूप में, चोरी या भूकंप अथवा बाढ़ के कारण हुई क्षति या हानि। "असाधारण मदें प्रकृति में गैर-पुनरार्वतक होती हैं और इसी कारण असाधारण मदों के साथ जुड़े रोकड़ प्रवाह को प्रचालन, निवेश एवं वित्तीय क्रियाकलापों से अलग हटकर प्रकट किया जाता है।" ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि उपयोगकर्ता असाधारण मदों की प्रकृति एवं एक उद्यम के वर्तमान एवं भावी रोकड़ प्रवाह पर हुए प्रभाव को समझने में सक्षम हो सकें।

ब्याज व लाभांश

यदि कोई वित्तीय उद्यम (जिसका प्रमुख कार्य वित्त का लेन-देन है) ब्याज देता है, ब्याज प्राप्तियाँ और लाभांश प्राप्त करता है तो उसे प्रचालन क्रियाकलाप के अंतर्गत वगीकृत किया जाता है जबकि लाभांश के भुगतान को वित्तीय क्रियाकलाप के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

गैर-वित्तीय उद्यमों के संदर्भ में, ले.मा.-3 के अनुसार, ब्याज और लाभांश के भुगतान को वित्तीय क्रियाकलापों के रूप में वर्गीकृत करना उपयुक्त समझा जाता है जब की ब्याज और लाभांश से प्राप्तियों को निवेशन क्रियाओं में वर्गीकृत किया जाता है।

आय एवं लाभों पर कर

कर जो आयकर (लाभों पर कराधान), पूँजी लाभ पर कर, लाभांश पर कर (अंश धारकों को लाभांश के रूप में वितरित की गई राशि पर कर) आदि हो सकते हैं। ले.मा.-3 के अनुसार "आय पर कर से अर्जित रोकड़ प्रवाह को, पृथक रूप से दर्शाया जाएगा और उसे प्रचालन क्रियाकलापों से अर्जित रोकड़ प्रवाह के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा जब तक कि उसकी पहचान वित्तीय अथवा निवेशन क्रियाकलापों के रूप में न की जा चुकी हो।" इससे यह स्पष्टतया है कि–

- प्रचालन लाभों पर करों को प्रचालन रोकड़ प्रवाह के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए।
- लाभांश कर अर्थात् लाभांश पर चुकाए गए कर को लाभांश भुगतान के साथ वित्तीय क्रियाकलाप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए।
- पूँजी लाभ पर कर स्थिर परिसंपित्तयों की बिक्री पर चुकाया जाता है, उसे निवेशन क्रियाकलापों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए।

गैर-रोकड़ लेनदेन

ले.मा.-3 के अनुसार, "जिन निवेश एवं वित्तीय लेनदेनों के लिए रोकड़ या रोकड़ तुल्यांकों की आवश्यकता नहीं होती है, उन्हें रोकड़ प्रवाह विवरण से बहिष्कृत रखना चाहिए।" ऐसे लेन देनों के उदाहरण हैं– समता अंशों के निर्गमन द्वारा मशीनरी का क्रय अथवा समता अंशों के निर्गमन द्वारा ऋण पत्रों का मोचन। ऐसे लेन-देनों को वित्तीय विवरणों में कहीं अन्य तरीकों से व्यक्त किया जाना चाहिए, जो उन निवेशों एवं वित्तीय क्रियाकलापों के बारे में उपयुक्त सभी जानकारी प्रदान कर सके। इसी कारण, अंश के निर्गम द्वारा प्राप्त किए गए परिसंपत्तियों को गैर-रोकड़ प्रकृति का लेन-देन होने के कारण रोकड़ प्रवाह विवरण में व्यक्त नहीं किया जाना चाहिए।

इन तीनों वर्गीकरणों के साथ रोकड़ प्रवाह विवरण को प्रदर्श 5.2 में दर्शाया गया है।

रोकड़ प्रवाह विवरण

(मुख्य शीर्ष केवल)

(क) प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह	xxx
(ख) निवेश क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह	xxx
(ग) वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह	xxx
रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक में निवल वृद्धि (कमी)(क + ख + ग)/	xxx
+ प्रारंभ में रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	xxx
= अंत में रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	xxx

प्रदर्श 5.2 – *रोकड़ प्रवाह विवरण का प्रारुप*

स्वयं जाँचिए 1

निम्नलिखित क्रियाकलापों को प्रचालन क्रियाकलाप, निवेश क्रियाकलाप, वित्तीय क्रियाकलाप, रोकड़ तुल्यांक में वर्गीकृत कीजिए।

1.	मशीनरी की खरीद	2.	समता अंश पूँजी के निर्गमन से प्राप्तियाँ
3.	प्रचालन से रोकड़ आगम	4.	दीर्घकालिक उधारों से प्राप्तियाँ
5.	पुरानी मशीनरी की बिक्री से प्राप्तियाँ	6.	व्यापारिक प्राप्यों से नकद प्राप्तियाँ
7.	व्यापारिक कमीशन प्राप्ति	8.	गैर-चालू विनियोगों का क्रय
9.	अधिमान अंशों का मोचन	10.	नकद क्रय
11.	गैर-चालू विनियोगों के विक्रय से प्राप्तियाँ	12.	ख्याति का क्रय
13.	आपूर्तिकर्ता को नकद भुगतान	14.	समता अंशों पर अंतरिम लाभांश भुगतान
15.	कर्मचारी हित व्ययों का भुगतान	16.	एकस्व की बिक्री से प्राप्तियाँ
17.	निवेश के रूप में धारित ऋण पत्रों पर ब्याज	18.	दीर्घकालिक ऋणों पर ब्याज भुगतान
		20.	निर्माण ऊपरी लागत का भुगतान
19.	कार्यालय एवं प्रशासनिक व्यय भुगतान		
21.	निवेश के रूप में रखे गए ऋणपत्रों पर प्राप्त ब्याज	22.	निवेश के रूप में रखी गई संपदा पर प्राप्त किराया
23.	बिक्री एवं वितरण व्यय भुगतान	24.	आयकर भुगतान
25.	अधिमान अंशों पर लाभांश भुगतान	26.	अधिगोपन कमीशन का भुगतान
27.	किराया भुगतान	28.	गैर-चालू विनियोगों की खरीद पर दलाली भुगतान
29.	बैंक ओवर-ड्राफ्ट	30.	नकद जमा
31.	अल्पकालिक जमा	32.	विपणन योग्य प्रतिभूतियाँ
33.	आयकर वापसी प्राप्ति		

© NCERT not to be republished

5.6 प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह की गणना

एक उद्यम में प्रचालन क्रियाकलाप आय एवं व्ययों का मुख्य स्रोत होते हैं। इसलिए, प्रचालन क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह को विशेष ध्यान की आवश्यकता होती है।

लेखा मानक-3 के अनुसार, एक उद्यम को प्रचालन क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह की रिपोर्ट में इनमें से किसी एक का उपयोग करना चाहिए–

- प्रत्यक्ष विधि जहाँ सकल रोकड़ प्राप्तियों तथा सकल रोकड़ भुगतानों के प्रमुख वर्ग व्यक्त किए जाते हैं।

या

- अप्रत्यक्ष विधि जहाँ निवल लाभ या हानि को यथानुसार निम्न के प्रभाव से समायोजित किया जाता है– (1) गैर-रोकड़ प्रकृति के लेनदेन, (2) भूतकालिक/भविष्यकालिक रोकड़ प्राप्तियों में कोई विलंबन या प्रोद्भवन, (3) निवेश या वित्तीय रोकड़ प्रवाह से संबद्ध आय एवं व्यय के मद। यहाँ पर यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि अप्रत्यक्ष विधि के अंतर्गत के प्रारंभिक बिंदु लाभ व हानि, विवरण के अनुसार कराधान और असाधारण मदों से पूर्व निवल लाभ व हानि हैं। इसके बाद यह राशि गैर-रोकड़ मदों आदि प्रचालन क्रियाकलापों से अभिनिश्चित रोकड़ प्रवाह के लिए समायोजित की जाती है।

प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह को प्रत्यक्ष विधि अथवा अप्रत्यक्ष विधि का उपयोग करते हुए यथानुसार सुनिश्चित किया जा सकता है। इन विधियों की विस्तृत परिचर्चा निम्नवत् है।

प्रत्यक्ष विधि वह सूचना प्रदान करती है जोकि भावी रोकड़ प्रवाह को अनुमानित करने के लिए उपयोगी होती है, लेकिन इस प्रकार की जानकारी अप्रत्यक्ष विधि के अंतर्गत उपलब्ध नहीं होती है। हालाँकि व्यावहारिकता में कंपनियों द्वारा प्रचालन क्रियाकलाप से निवल रोकड़ प्रवाह पर आने के लिए अधिकतर अप्रत्यक्ष विधि का उपयोग किया जाता है। इस अध्याय में रोकड़ प्रवाह विवरण अप्रत्यक्ष विधि से तैयार किया गया है।

प्रस्तावित लाभांश

लेखा मानक के अनुसार तुलन पत्र के पष्ठचात् होने वाली आकस्मिकताएं और घटनाएँ, प्रस्तावित लाभांष्ठा को खातों में दिखाया जाता है। अंष्ठाधारकों द्वारा घोज़ित (अनुमोदित) होने के बाद यह एक देयता के रूप में आकस्मिक देयता के रूप में दिखाया जाएगा। वार्ज़िक आम बैठक में अंष्ठाधारकों द्वारा घोज़ित (अनुमोदित) होने के बाद इसे खाते की पुस्तकों में ष्ठाामिल किया जाएगा। चूंकि, पिछले वर्ज़ के प्रस्तावित लाभांष्ठा को चालू वर्ज़ में घोज़ित (अनुमोदित) किया जाएगा (पिछले वर्ज़ के प्रस्तावित लाभांष्ठा का भुगतान लाभांष्ठा के रूप में किया जाएगा। इसके अलावा, घोज़ित लाभांष्ठा का भुगतान इसकी घोज़णा के 30 दिनों के भीतर किया जाता है (इसका भुगतान उसी वित्तीय वर्ज़ के भीतर किया जाएगा)।
संक्षेप में, अंष्ठाधारकों द्वारा घोज़णा (अनुमोदित) के बाद पिछले वर्ज़ के प्रस्तावित लाभांष्ठा को अधिष्ठोज़ यानी लाभ व हानि विवरण के नाम पक्ष में लिखा जाएगा। रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करते समय, पिछले वर्ज़ के प्रस्तावित लाभांष्ठा को परिचालन गतिविधियों के तहत अधिनियम लाभ में जोड़ा जाएगा और वित्तीय गतिविधि के अंतर्गत दिखाया जाएगा।

© NCERT not to be republished

5.6.2 अप्रत्यक्ष विधि

अप्रत्यक्ष विधि में प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह की गणना निवल लाभ/हानि की राशि से प्रारंभ होती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि एक उद्यम के सभी प्रचालन क्रियाकलापों के प्रभावों को लाभ व हानि विवरण संभावित करता है। हालाँकि लाभ व हानि विवरण उपार्जन आधार पर (और न कि रोकड़ आधार पर) तैयार किए जाते हैं। इसके अलावा यह कुछ निश्चित गैर-प्रचालन मदों को भी शामिल करता है जैसे कि ब्याज भुगतान, (स्थिर परिसंपत्तियों की बिक्री पर लाभ/हानि आदि) तथा गैर-रोकड़ मदें (जैसे कि मूल्यह्रास, ख्याति घोषित लाभांश)। इसीलिए, यह आवश्यक हो जाता है कि लाभ व हानि विवरण में दर्शाई गई निवल लाभ/हानि को प्रचालन क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह आने पर समायोजित किया जाए। आइए इस उदाहरण को देखें–

लाभ व हानि विवरण
वर्षांत 31 मार्च, 2017 को

विवरण	*नोट संख्या*	*राशियाँ* रु.
(i) प्रचालन से आगाम		1,00,00
(ii) अन्य आय	1	2,000
(iii) कुल आगम (i+ii)		1,02,000
(iv) व्यय		
उपभोग की गई सामग्री की लागत		30,000
व्यापारिक रहतिया का क्रय		10,000
कर्मचारी हित व्यय		10,000
वित्तीय लागत		5,000
ह्रास		5,000
अन्य व्यय		12,000
		72,000
(v) कर से पूर्व लाभ (iii–iv)		30,000

टिप्पणी–

अन्य आय में भूमि के विक्रय से प्राप्त लाभ सम्मिलित है।

उपर्युक्त लाभ व हानि विवरण निवल लाभ की राशि 30,000 रु. दर्शाता है। इसे प्रचालन क्रियाकलाप से आने वाले रोकड़ प्रवाह द्वारा किया जाता है। आईए एक के बाद एक विभिन्न मदों को देखते हैं–

1. *ह्रास*–एक गैर-रोकड़ मद है। अतः 5,000 रु. ह्रास के रूप में रोकड़ प्रवाह नहीं है। इसी कारण, इस राशि को निश्चित रूप से निवल लाभ में वापस जोड़ा जाना चाहिए।
2. *वित्तीय लागत*–यह 5,000 रु. का वित्तीय क्रियाकलापों में एक रोकड़ बाहिर्वाह है। इसलिए, जब प्रचालन क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह का परिकलन किया जा रहा हो, इस राशि को भी वापस

© NCERT not to be republished

निश्चित रूप से निवल लाभ में जोड़ा जाना चाहिए। वित्तीय लागत की यह राशि वित्तीय क्रियाकलाप के शीर्ष में एक बाहिर्वाह के रूप में दर्शाई गई है। घोषित लाभांश एक वित्तीय क्रिया है अत: इसे निवल लाभ पर दोबारा जोड़ा जाएगा और रोकड़ बहिर्वाह के रूप में वित्तीय क्रिया में दर्शाया जाएगा।

3. अन्य आय में भूमि के विक्रय से प्राप्त लाभ सम्मिलित है। अतैव, प्रचालन क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह के, परिकलन के समय निवल लाभ की राशि को निश्चित रूप से घटाया जाना चाहिए।

उपयुर्क्त उदाहरण आपको यह अनुमान देता है कि निवल लाभ/हानि की राशि में विविध समायोजन कैसे किए जाते हैं। अन्य महत्त्वपूर्ण समायोजन कार्य पूँजी में परिवर्तन से संबधित होते हैं जो कि अपरिहार्य रूप से (अर्थात् चालू परिसंपत्तियों एवं चालू देनदारियों के मद) निवल लाभ/हानि में बदलते हैं जोकि प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह में उपार्जन पर आधारित होते हैं, इसीलिए चालू परिसंपत्तियों में वृद्धि तथा चालू देनदारियों में कमी को प्रचालन लाभ से घटाया जाता है तथा चालू परिसंपतियों में कमी तथा चालू देनदारियों में वृद्धि को प्रचालन लाभ में जोड़ा जाता है, जिससे प्रचालन क्रियाकलापों से निवल रोकड़ प्रवाह की परिशुद्ध राशि ज्ञात होती हैं। लेखा मानक-3 के अनुसार, अप्रत्यक्ष विधि के अंतर्गत प्रचालन क्रियाकलापों से निवल रोकड़ प्रवाह का निर्धारण, निम्न के प्रभावों से निवल लाभ या हानि में समायोजन के द्वारा संभव होता है।

- गैर-रोकड़ मदें जैसा कि ह्रास, ख्याति का अपलेखन, प्रावधान, अस्थगित कर आदि जो कि बाद में जोड़ी जाती हैं।
- अन्य सभी मदें जिनके लिए निवेश या वित्तीय रोकड़ प्रवाह को रोकड़ प्रभावित करता है। इस प्रकार की मदों का निरूपण उनकी प्रवृति पर निर्भर करता है। सभी निवेश एवं वित्तीय आय निवल लाभ की राशि से घटाई जाती है जबकि इस प्रकार के खर्चों को वापस जोड़ा जाता है। उदाहरण के लिए, वित्तीय लागत जो कि एक वित्तीय रोकड़ बाहिर्वाह है, वापस जोड़ा जाता है जबकि अन्य आय जैसे कि प्राप्त ब्याज जो कि एक निवेश रोकड़ अंतर्वाह है, निवल लाभ की राशि से घटाया जाता है।

परिसंपत्तियों एवं देनदारियों में अवधि के दौरान बदलाव चालू परिसंपत्तियों में वृद्धि तथा देनदारियों में कमी को घटाया जाता है जबकि चालू देनदारियों में वृद्धि तथा चालू परिसंपत्तियों में कमी को जोड़ा जाता है।

प्रदर्श 6.4 अप्रत्यक्ष विधि के अनुसार प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह के परिकलन का प्रारूप दर्शाता है।

प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह
(अप्रत्यक्ष निधि)

	असाधारण मदें तथा कराधान से पहले निवल लाभ/हानि तथा	
+	गैर-रोकड़ मदों के लिए पहले ही लाभ व हानि विवरण में कटौती की गई जैसे कि मूल्यह्रास, ख्याति का अपलेखन	xxx
+	गैर-प्रचालनीय मदों जैसे कि ब्याज के खातों पर लाभ व हानि विवरण में पहले ही कटौती की गई	xxx
–	गैर-प्रचालन मदों जैसे कि लाभांश प्राप्ति, स्थिर परिसंपत्तियों की बिक्री पर लाभ जिन्हें विवरण में जोड़ा गया है।	(xxx)

	कार्यशील पूँजी में परिवर्तन से पूर्व प्रचालन लाभ	xxx
+	चालू परिसंपत्ति में वृद्धि और चालू दायित्व में कमी	xxx
–	चालू दायित्व में वृद्धि और चालू परिसंपत्ति में कमी	xxx
	कराधान एवं असाधारण मदें से पूर्व प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह	xxx
–	आयकर भुगतान	(xxx)
+/–	असाधारण मदों का प्रभाव	xxx
	प्रचालन क्रियाकलापों से निवल रोकड़	**xxx**

प्रदर्श 5.3 – *प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह का प्रारूप (अप्रत्यक्ष विधि)*

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि प्रचालन क्रियाकलापों सें रोकड़ प्रवाह की गणना का प्रारंभिक बिंदु ''कराधान एवं असाधारण मदों से पूर्व निवल लाभ'' है न कि लाभ व हानि विवरण में दर्शाया गया निवल लाभ । प्रचालन क्रियाकलापों से निवल रोकड़ प्रवाह की गणना करते समय आय कर भुगतान को अंतिम मद के रूप में घटाया जाता है।

उदाहरण 2

उदाहरण 1 में दिए गए आँकड़ों का उपयोग करते हुए अप्रत्यक्ष विधि के द्वारा प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह का परिकलन कीजिए।

प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह

हल

	विवरण	राशि रु.
	कराधान एवं असाधारण मदों से पूर्व निवल लाभ (1)	42,000
	समायोजन के लिए–	
+	मूल्यह्रास	20,000
=	कार्यशील पूँजी बदलाव से पूर्व प्रचालन लाभ	62,000
–	व्यापारिक प्राप्यों में वृद्धि	(3,000)
–	रहतिया (स्टॉक) में वृद्धि	(5,000)
–	पूर्वदत्त बीमा में वृद्धि	(500)
–	व्यापारिक देयताओं में कमी	(2,000)
+	बकाया कर्मचारी हित व्ययों में वृद्धि	+1,000
=	प्रचालनों से जनित रोकड़	52,500
–	आयकर भुगतान	(11,000)
=	प्रचालन क्रियाकलापों से निवल रोकड़	**41,500**

आप देखेंगे कि प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह की राशि समान रहती है भले ही हम इसके परिकलन हेतु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष विधि प्रयोग करें।

कार्यकारी टिप्पणी

कराधान तथा असाधारण मदों से पूर्व निवल लाभ को निम्नवत् निकाला गया–

(1) निवल लाभ	=	32,000 रु.
+ आयकर	=	10,000 रु.
= कराधान एवं असाधारण मदों से पूर्व निवल लाभ	=	42,000 रु.

उदाहरण 3

दी गई सूचनाओं से प्रचालन से रोकड़ प्रवाह ज्ञात करें:

वर्षांत मार्च 31, 2020 को लाभ व हानि विवरण

विवरण	नोट संख्या	राशियाँ रु.
(i) प्रचालन से आगाम		60,000
(ii) अन्य आय	1	5,000
(iii) कुल आगम (i + ii)		**65,000**
व्यय		
उपभोग की गई सामग्री		15,000
कर्मचारी लाभ व्यय		10,000
ह्रास और परिशोधान व्यय	2	7,000
अन्य व्यय	3	13,000
		45,000
(v) कर से पूर्व लाभ (iii + iv)		20,000
(vi) कराधान के लिए प्रावधान		20,000
(vii) कर के पश्चात् लाभ		8,000
		12,000

खातों पर टिप्पणी

नोट–1 : अन्य आय

विवरण	**(रु.)**
मशीनरी के क्रम पर लाभ	2,000
आयकर वापसी	3,000
	5,000

नोट–2 : ह्रास और परिशोधन व्यय

विवरण	**(रु.)**
ह्रास	5,000
ख्याति का परिशोधान व्यय	2,000
	7,000

नोट–3 : अन्य व्यय

विवरण	**(रु.)**
किराया	10,000
उपकरण के विक्रय पर हानि	3,000
	13,000

अतिरिक्त सूचना

	मार्च 31, 2019	मार्च 31, 2020
कराधान के लिए प्रावधान	10,000	13,000
देय किराया	2,000	2,500
लेनदार	21,000	25,000
देनदार	15,000	21,000
रहतिया	25,000	22,000

हल

प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह

विवरण	*(रु.)*
कराधान और असमान्य मदों से पूर्व निवल लाभ	17,000
गैर रोकड़ और गैर प्रचालन मदों के लिए समायोजन	
ह्रास	5,000
ख्याति का परिशोधन	2,000
उपकरण के विक्रय पर हानि	3,000
	27,000
घटाया : मशीनरी पर लाभ	(2,000)
कार्यशील पूंजी से पूर्व प्रचालन लाभ	25,000
कार्यशील पूंजी के लिए समायोजन	
रहतिया में कमी	3,000
देय किराया में कमी	500
घटाया : देनदार में वृद्धि	4,000
	32,500
प्रचालन में वृद्धि	(6,000)
प्रचालन से रोकड़	26,500
आयकर का भुगतान	(5,000)
आयकर वापसी	3,000
प्रचालन क्रियाओं से शुद्ध अंतर्वाह	**24,500**

1. कार्यकारी टिप्पणी

कर एवं असामान्य मदों से पूर्व निवल लाभ

कर के पश्चात् निवल लाभ	12,000
कराधान के लिए प्रावधान	8,000
	20,000
घटाया : आयकर वापसी	(3,000)
	17,000

2. वर्ष में भुगतान किया गया आयकर की गणना इस प्रकार है

कराधान के लिए प्रावधान खाता

नाम *जमा*

विवरण	*रो.पृ सं.*	*राशि (रु.)*	*विवरण*	*रो.पृ सं.*	*राशि (रु.)*
बैंक (वर्ष में आयकर का भुगतान)		5,000	शेष आ/ला		10,000
शेष आ/ला		13,000	लाभ व हानि विवरण		8,000
		18,000			**18,000**

उदाहरण 4

चार्ल्स लिमिटेड ने परिसंपत्तियों पर 20,000 रु. के ह्रास प्रभारित करने के पश्चात् तथा 30,000 रु. सामान्य सचंय में हस्तांतरण के बाद 1,00,000 रु. का लाभ अर्जित किया। 7,000 रु. से ख्याति को अपलिखित किया गया तथा मशीनरी के विक्रय पर 3,000 रु. का लाभ प्राप्त हुआ। आपके लिए उपलब्ध अन्य जानकारियाँ (चालू परिसंपत्तियों एवं चालू देनदारियों में परिवर्तन) हैं– व्यापारिक प्राप्यों 3,000 रु. की वृद्धि, व्यापारिक देय में 6,000 रु. की वृद्धि, पूर्वदत्त व्ययों में 200 रु. वृद्धि तथा बकाया व्ययों में 2,000 रु. की कमी दर्शाई गई। प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह की गणना करें।

अतिरिक्त सूचनाएँ

	रु.	रु.
व्यापारिक प्राप्य	20,00,000	40,00,000
व्यापारिक देय	20,00,000	10,00,000
अन्य देय व्यय (प्रशासनिक)	10,000	20,000
पूर्वदत्त प्रशासनिक व्यय	20,000	10,000
बकाया व्यापारिक व्यय	20,000	40,000
अग्रिम व्यापरिक व्यय	40,000	20,000
कराधान के लिए प्रावधान	10,00,000	12,00,000

प्रचालन से रोकड़ प्रवाह की गणना करें। साथ ही कार्यकारी टिप्पणी स्पष्टत: दर्शाएँ।

हल

प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह

विवरण	*(रु.)*
कराधान एवं असाधारण मदों से पूर्व निवल लाभ	1,30,000
गैर-रोकड़ एवं गैर-प्रचालन मदों हेतु समायोजन	
+ मूल्यह्रास	20,000
+ ख्याति का अपलेखन	7,000
– मशीनरी की बिक्री पर लाभ	(3,000)
कार्यशील पूँजी से पूर्व प्रचालन लाभ	1,54,000

कार्यशील पूँजी में परिवर्तन हेतु समायोजन	
– व्यापारिक प्राप्यों में वृद्धि	(3,000)
+ व्यापारिक देय में वृद्धि	6,000
– पूर्वदत्त व्ययों में वृद्धि	(200)
– बकाया व्ययों में कमी	(2,000)
= प्रचालन क्रियाकलापों से निवल रोकड़	1,54,800

खातों पर टिप्पणी

नोट–1 : प्रचालन से आगम

विवरण	*(रु.)*
प्रचालन से नकद आगम	8,00,000
प्रचालन से उधार आगम	34,00,000
घटाया : वापसी	42,00,000
प्रचालन से आगम (निबल)	(2,00,000)
	40,00,000

नोट–2 : अन्य आय

विवरण	*(रु.)*
प्व्यापारिक कमीशन	20,40,000
आपूर्तिवार्त्ताओं से बट्टा प्राप्त हुआ	60,000
	21,00,000

नोट–3 : उपभोग की गई सामग्री की लागत

विवरण	*(रु.)*
नकद पर क्रय सामग्री की लागत	4,00,000
उधार पर क्रय सामग्री की लागत	17,00,000
	21,00,000
घटाया : वापसी	(1,00,000)
	21,00,000

© NCERT not to be republished

नोट-4 : तैयार मात्र के रहतिया में बदलाव

विवरण	(रु.)
प्रारंभिक रहतिया	2,00,000
घटाया : अंतिम रहतिया	(1,00,000)
	1,00,000

नोट-5 : ह्रास और परिशोधन व्यय

विवरण	(रु.)
ह्रास	3,20,000
ख्याति का परिशोधन	60,000
	3,80,000

नोट-6 : अन्य व्यय

विवरण	(रु.)
प्रशासनिक व्यय	10,20,000
ग्राहकों को बट्टा दिया गया	1,20,000
डूबत ऋण	1,00,000
	12,40,000

स्वयं जाँचिए 2

1. नीचे दिए गए दो विकल्पों में एक को चुनिए और दिए गए कथनों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
   (क) यदि वर्ष के दौरान अर्जित निवल लाभ 50,000 रु. है, प्रारंभिक व अंतिम देनदार में क्रमशः 10,000 रु. तथा 20,000 रु. हैं तब प्रचालन क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह ____________रु. के बराबर होगा (40,000/60,0000)
   (ख) यदि वर्ष के दौरान निवल लाभ 50,000 रु. है और प्राप्य विपत्रों की राशि वर्ष के दौरान 10,000 रु. घटी है तब प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह ___________रु. के बराबर होगा। (40,000रु./60,000 रु.)
   (ग) वर्ष के अंत में व्ययों का अग्रिम भुगतान किया गया है जिसे वर्ष में अर्जित लाभ के साथ ____________ जाता है (जोड़ा या घटाया)
   (घ) एक वर्ष के दौरान उपार्जित आय को निवल लाभ के साथ ___________ जाता है। (जोड़ा या घटाया)

© NCERT not to be republished

(च) प्रचालन क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह की गणना हेतु ख्याति का अपलेखन वर्ष के दौरान लाभ में __________ जाता है। (जोड़ा/घटाया)

(छ) प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह की गणना के लिए संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान को वर्ष के दौरान अर्जित लाभ में __________ जाता है। (जोड़ा/घटाया)

2. प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ को संगणित करते समय यह दर्शाएँ कि क्या निम्न मदों को निवल लाभ के साथ जोड़ा या घटाया जाएगा। यदि मान्य नहीं है तो अमान्य लिखें।

विवरण	*व्यवहार*
(क) लेनदारों के मूल्य में वृद्धि	
(ख) एकस्व के मूल्य में वृद्धि	
(ग) पूर्वदत्त व्ययों में कमी	
(घ) पेशगी (अग्रिम) प्राप्त आय में कमी	
(च) स्टॉक के मूल्य में कमी	
(छ) अंश पूँजी में वृद्धि	
(ज) प्राप्य विपत्रों के मूल्य में वृद्धि	
(झ) बकाया व्ययों की राशि में वृद्धि	
(ट) ऋणपत्रों का अंशों में परिवर्तन	
(ठ) व्यापारिक देय के मूल्य में कमी	
(ड) व्यापारिक प्राप्यों के मूल्य में वृद्धि	
(ढ) उपार्जित आय की राशि में कमी	

कई बार न तो निवल मूल्य की राशि विशेष रूप से दी गई होती है और न ही लाभ एवं हानि विवरण दिया गया होता है। ऐसी परिस्थितियों में, निवल लाभ की राशि को दो वर्षों के तुलन–पत्रों में लाभ व हानि विवरण की तुलना करके निकाला जा सकता है। दोनों के बीच अंतर को उस वर्ष के लिए लाभ माना जाता है, इसके बाद, इस वर्ष के दौरान कर प्रावधान की राशि के साथ समायोजित करके (दो वर्षों के तुलन–पत्रों की तुलना करके पता किया जाता है) कराधान से पूर्व निवल लाभ की गणना की जाती है। (देखें उदाहरण 7 एवं 8)

5.7 निवेश एवं वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह की गणना

निवेश एवं वित्तीय क्रियाकलापों से अंतर्वाह एवं बार्हिवाह की मदों की रूपरेखा पहले ही बनाई जा चुकी है। रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करते समय सकल नकद प्राप्तियाँ सकल नकद भुगतान तथा निवेश एवं वित्तीय क्रियाकलापों से अर्जित निवल रोकड़ प्रवाह के मुख्य शीर्षों को पृथक रूप से क्रमशः निवेश क्रियाकलापों में रोकड़ प्रवाह तथा वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह शीर्षक के अंतर्गत दर्शाया जाता है। निवेश एवं वित्तीय क्रियाकलापों से निवल रोकड़ प्रवाह की गणना उदाहरण 5 और 6 में दर्शाई गई है।

उदाहरण 5

वेलप्रिंट लि. ने निम्नलिखित जानकारी प्रदान की है–

	रु.
01 अप्रैल, 2016 को मशीनरी	50,000
31 मार्च, 2017 को मशीनरी	60,000
01 अप्रैल, 2016 को संचित ह्रास	25,000
31 मार्च, 2017 को संचित ह्रास	15,000

वर्ष के दौरान एक मशीन जिसका मूल्य 25,000 रु. था और जिस पर संचित ह्रास 15,000 रु. है, को 13,000 रु. पर बेचा गया।

उपर्युक्त जानकारी के आधार पर निवेश क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह का परिकलन करें।

हल

निवेश क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह	रु.
मशीनरी का विक्रय	13,000
मशीनरी का क्रय	(35,000)
निवेश क्रियाकलाप में उपर्युक्त निवल रोकड़	(22,000)

कार्यकारी टिप्पणी

मशीनरी खाता

नाम *जमा*

विवरण	*रो.पृ सं.*	*राशि (रु.)*	*विवरण*	*रो.पृ सं.*	*राशि (रु.)*
शेष आ/ला		50,000	रोकड़ (मशीन की बिक्री)		13,000
लाभ व हानि विवरण (मशीन के विक्रय पर लाभ)		3,000	संचित ह्रास		15,000
रोकड़ (शेष राशि – नई मशीन का क्रय)		35,000	शेष आ/ले		60,000
		88,000			**88,000**

संचित मूल्यह्रास खाता

नाम *जमा*

विवरण	*रो.पृ सं.*	*राशि रु.*	*विवरण*	*रो.पृ सं.*	*राशि रु.*
मशीनरी		15,000	शेष आ/ला		25,000
शेष आ/ले		15,000	लाभ व हानि विवरण (वर्ष के दौरान ह्रास)		5,000
		30,000			**30,000**

© NCERT not to be republished

उदाहरण 6

निम्नलिखित सूचना से वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह का परिकलन करें–

	1 अप्रैल, 2016 रु.	31 मार्च, 2017 रु.
दीर्घकालिक ऋण वर्ष के दौरान कंपनी ने 1,00,000 रु. का ऋण चुकता किया	2,00,000	2,50,000

हल

वित्तीय क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह	रु.
दीर्घकालिक ऋणों से प्राप्तियाँ	1,50,000
दीर्घकालिक ऋण से की चुकौती (परिशोधन)	(1,00,000)
वित्तीय क्रियाकलापों से निवल रोकड़ अंतर प्रवाह (अंतर्वाह)	50,000

कार्यकारी टिप्पणी

दीर्घकालिक ऋणखाता

नाम *जमा*

विवरण	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*
नकद (ऋण भुगतान)		1,00,000	शेष आ/ले		2,00,000
शेष आ/ले		2,50,000	रोकड़ (नया ऋण उगाहा गया)		1,50,000
		3,50,000			**3,50,000**

स्वयं करें

1. निम्नलिखित विवरणों से निवेशन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह की गणना करें–

	खरीद रु.	*बिक्री* रु.
संयंत्र	4,40,000	50,000
निवेश	1,80,000	1,00,000
ख्याति	2,00,000	—
एकस्व	—	1,00,000

निवेश के रूप में धारित ऋण पत्रों पर प्राप्त ब्याज 60,000 रु.

निवेश के रूप में धारित अंशों पर प्राप्त लाभांश 10,000 रु.

निवेश के उद्देश्य से ज़मीन का एक भाग खरीदा गया और व्यावसायिक उपयोग हेतु 30,000 रु. किराए पर दिया गया।

2. निम्नलिखित जानकारी से निवेशन तथा वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह का परिकलन करें।

विवरण	2016	2017
मशीन (पुस्तक मूल्य पर)	5,00,000	9,00,000
संचित ह्रास	3,00,000	4,50,000
समता अंश पूँजी	28,00,000	35,00,000
बैंक ऋण	12,50,000	7,50,000

वर्ष 2015 में 2,00,000 रु. की लागत वाली मशीन को 1,50,000, रु. के लाभ पर बेचा गया। वर्ष 2011 के दौरान मशीन पर प्रभारित संचित ह्रास 2,50,000 रु. था।

5.8 रोकड़ प्रवाह विवरण का निर्माण

जैसा कि पहले बताया गया है कि रोकड़ प्रवाह विवरण एक उद्यम की एक लेखांकन अवधि के दौरान रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांकों की स्थिति में बदलावों के संदर्भ में जानकारी उपलब्ध कराता है। वे क्रियाकलाप जो परिवर्तन लाने में भागीदारी देते हैं उन्हें प्रचालन, निवेश तथा वित्तीय क्रियाकलाप के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। एक लेखांकन अवधि के दौरान तीन क्रियाकलापों से निवल रोकड़ प्रवाह को निकालने की विधियों को विस्तार से वर्णित किया गया है तथा प्रदर्श 6.2 में रोकड़ प्रवाह विवरण का एक संक्षिप्त प्रारूप भी बताया गया। हालाँकि, अंततः रोकड़ प्रवाह विवरण को तैयार करते समय अंतर्वाह एवं बाहिर्वाह के पूर्ण विवरण इन्हीं शीर्ष के अंतर्गत है। निवल रोकड़ प्रवाह (अथवा उपयोग) की गणना, जैसा कि प्रदर्श 6.2 में दर्शाया गया है रोकड़ तथा रोकड़ तुल्यराशि में वृद्धि/कमी के रूप में की जाती है, जिसमें प्रारंभिक रोकड़ और रोकड़ तुल्यराशि को जोड़ा जाता है। अतः इस प्रकार रोकड़ और रोकड़ तुल्यराशि ज्ञात की जाती है। यह ज्ञात की गई राशि तुलन–पत्रों में दी गई कुल हस्तस्थ रोकड़ बैंकस्थ रोकड़ और रोकड़ तुल्यराशि (यदि कोई है तो) के समान होगी। (देखें उदाहरण 7 से 10 तक)। यहाँ एक अन्य बिंदु पर भी ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है, वह यह कि प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह को जब अप्रत्यक्ष विधि द्वारा ज्ञात किया जाता है और यथावत रोकड़ प्रवाह विवरण में दर्शाया जाता है तब यह विवरण स्वतः ही अप्रत्यक्षत विधि रोकड़ प्रवाह विवरण कहलाता है। इसलिए, उदाहरण 7, 8 एवं 9 में तैयार किए गए रोकड़ प्रवाह विवरण इसी श्रेणी के अंतर्गत आते हैं ठीक इसी प्रकार से यदि रोकड़ प्रवाह विवरण की तैयारी के दौरान जब प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह को प्रत्यक्ष विधि से निकाला जाता है तो इसे 'प्रत्यक्ष विधि रोकड़ प्रवाह विवरण' कहा जाएगा। उदाहरण 10 दोनों ही प्रकार के रोकड़ प्रवाह विवरण दर्शाता है। **हालाँकि जब तक यह स्पष्ट रूप से नहीं बताया जाता है कि रोकड़ प्रवाह विवरण किस विधि के प्रयोग से निकाला गया है तब बहुत संभव हो सकता है कि रोकड़ प्रवाह विवरण अप्रत्यक्ष विधि द्वारा तैयार किया गया हो जैसाकि अधिकतर कंपनियाँ इसे ही व्यवहार में लाती हैं।**

© NCERT not to be republished

उदाहरण 7

दी गई सूचनाओं से पायोनियर लिमिटेड का रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करें–

मार्च 31, 2017 को पायोनिर लिमिटेड का तुलन-पत्र

विवरण	नोट संख्या	31, मार्च 2017 (रु.)	31, मार्च 2016 (रु.)
I. समता एवं देयताएँ			
1. अंश धारक निधि			
(अ) अंश पूँजी	1	7,00,000	5,00,000
(ब) संचय और अधिशेष	2	4,20,000	2,50,000
2. गैर चालू देयताएं			
(अ) दीर्घकालीन ऋण : 10–1 बैंक ऋण		50,000	1,00,000
3. चालू देयताएं			
(अ) लेनदार		45,000	50,000
(स) अन्य चालू देयताएं : बकाया किराया		7,000	5,000
(द) लघु कालीन प्रावधान	3	50,000	30,000
कुल योग		**12,72,000**	**9,35,000**
II. परिसंपत्तियां			
1. गैर चालू परिसंपत्तियां			
(अ) स्थित परिसंपत्तियां			
(i) मूर्त परिसंपत्तियां	4	5,00,000	5,00,000
(ii) अमूर्त परिसंपत्तियां	5	95,000	1,00,000
(ब) गैर चालू विनियोग		1,00,000	
2. चालू परिसंपत्तियां			
(i) रहतिया		1,30,000	50,000
(ii) देनदार		1,20,000	80,000
(iii) नकद एवं नकद समतुल्य	6	3,27,000	2,05,000
कुल योग		**12,72,000**	**9,35,000**

खाते पर टिप्पणी

विवरण	31, मार्च 2017 (रु.)	31, मार्च 2016 (रु.)
1. समता अंश पूंजी	7,00,000	5,00,000
2. संचय और अधिशेष		
अधिशेष : लाभ व हानि विवरण का शेष	4,20,000	2,50,000

© NCERT not to be republished

3. लघु कालीन प्रावधान		
कराधान के लिए प्रावधान	50,000	30,000
4. स्थिर परिसंपत्तियाँ		
मूर्त्त परिसंपत्तियां		
(i) उपकरण	2,30,000	2,00,000
(ii) फर्नीचर	2,70,000	3,00,000
कुल योग	**5,00,000**	**5,00,000**
5. अमूर्त्त परिसंपत्तियाँ		
पेटेंट	95,000	1,00,000
6. नकद और नकद समतुल्य		
(i) रोकड़	27,000	5,000
(ii) बैंक	3,00,000	2,00,000
कुल योग	**3,27,000**	**2,05,000**

अतिरिक्त सूचना

वर्ष के दौरान 80,000 रू. का उपकरण खरीदा गया। उपकरण को 5000 रू. की हानि पर बेचा गया। उपकरण और फर्नीचर पर ह्रास क्रमशः 15,000 रू. और 3,000 रू. था। 31.03.2014 को 50,000 रू. के. ऋण का भुगतान किया गया। वर्ष 2015-16 में 50,000 रू. का प्रस्तावित लाभांश था।

हल :

विवरण	रु.
I. प्रचालन से रोकड़ प्रवाह	
कराधान और असमान्य मदों से पूर्व निवल लाभ प्रावधान	2,70,000
(i) उपकरण पर ह्रास	15,000
(ii) फर्नीचर पर ह्रास	30,000
(iii) पेटेंट का अपलेखन	5,000
(iv) उपकरण पर हानि	5,000
(v) बैंक ऋण पर ब्याज	10,000
कार्यशील पूंजी परिवर्तन से पूर्व प्रचालन लाभ	**3,35,000**
(–) लेनदार में कमी	(5,000)
(+) बकाया किराये में वृद्धि	2,000
(–) देनदार में वृद्धि	(40,000)
(–) रहतिया में वृद्धि	(80,000)
प्रचालन क्रियाओं से रोकड़	2,12,000
(–) कर का भुगतान	(30,000)
(अ) प्रचालन क्रियाओं से रोकड़ अंतर्वाह	**1,82,000**

II.	**विनियोजन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह**	
(i)	उपकरण पर विक्रय	30,000
(ii)	नये उपकरण का क्रय	(80,000)
(iii)	विनियोग का क्रय	(1,00,000)
(ब)	विनियोजन क्रियाओं से रोकड़ बहीर्वाह	**(1,50,000)**
	वित्तीय क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह	
(i)	समता अंशों का निर्गम	2,00,000
(ii)	बैंक ऋण का भुगतान	(50,000)
(iii)	लाभांश का भुगतान	(50,000)
(iv)	बैंक ऋण पर ब्याज का भुगतान	(10,000)
(अ)	**वित्तीय क्रियाओं से नकद अंतर्वाह**	**90,000**
	नकद और नकद समतुल्य में निवल वृद्धि (अ+ब+स)	1,22,000
(+)	आरंभ में नकद और नकद समतुल्य	2,05,000
	अंत में नकद और नकद समतुल्य	**3,27,000**

कार्यकारिणी टिप्पणी:

(1) उपकरण खाता

नाम *जमा*

विवरण	*रो.पृ सं.*	*राशि रू.*	*विवरण*	*रो.पृ सं.*	*राशि रू.*
शेष आ/ला		2,00,000	ह्रास (शेष राशि)		15,000
रोकड़		80,000	बैंक		30,000
			लाभ व हानि विवरण (विक्रय पर हानि)		5,000
			शेष आ/ले		
		2,80,000			**2,80,000**

(2) 5,000 रू. के पेटेंट (1,00,000 रू. – 95,000 रू.) को वर्ष के दौरान अपलिखित किया गया और फर्नीचर पर 30,000 रू. का ह्रास लगाया गया (3,00,000 रू. – 2,27,000)

(3) यह माना गया कि 2015–16 के लिए 50,000 रू. का लाभांश और 30,000 रू. के कर का भुगतान 2016–17 में हुआ है। अत: प्रस्तावित लाभांश और कर का प्रावधान क्रमश: 70,000 रू. और 50,000 रू. है।

(4)

(5)

© NCERT not to be republished

विवरण	रु.
वर्ष के अंत में लाभ व हानि	**4,20,000**
(–) आरंभ में लाभ व हानि	(2,50,000)
वर्ष के दौरान निवल लाभ	1,70,000
(+) कर पर प्रावधान	50,000
(+) प्रस्तावित लाभांश	50,000
कराधान और असमान्य मदों से पूर्व निवल लाभ	**2,70,000**

उदाहरण 8

निम्नलिखित जानकारी से ज़ेरोक्स लिमिटेड के लिए रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार कीजिए।

31 मार्च, 2015 को जेरोक्स लिमिटेड का तुलन-पत्र

विवरण	नोट संख्या	31, मार्च 2017 (रु.)	31, मार्च 2016 (रु.)
I. समता एवं देयताएँ			
(i) अंश धारक निधि			
(क) अंश पूँजी		15,00,000	10,00,000
(ख) आरक्षित एंव अधिशेष		7,50,000	6,00,000
(अधिशेष अर्थात् लाभ व हानि विवरण का शेष)			
(ii) गैर-चालू देयताएँ			
(क) दीर्घकालीन ऋण	1	1,00,000	2,00,000
(iii) चालु देयताएँ			
(क) व्यापारिक देय		1,00,000	1,10,000
(ख) अल्पकालीन प्रावधान		95,000	80,000
(कराधान के लिए प्रावधान)			
योग		**25,45,000**	**19,90,000**
II. परिसंपत्तियाँ			
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) स्थाई परिसंपत्तियाँ			
(i) मूर्त परिसंपत्तियाँ	2	10,10,000	12,00,000
(ii) अमूर्त परिसंपत्तियाँ – ख्याति		1,80,000	2,00,000
(ख) गैर-चालू निवेश		6,00,000	—
(ii) चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) रहतिया		1,80,000	1,00,000
(ख) व्यापारिक प्राप्य		2,00,000	1,50,000
(ग) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	3	3,75,000	3,40,000
योग		**25,45,000**	**19,90,000**

© NCERT not to be republished

खातों की टिप्पणियाँ

विवरण	*31, मार्च 2017 रु.*	*31, मार्च 2016 रु.*
(i) दीर्घकालीन ऋण		
(क) 9% ऋणपत्र		2,00,000
(ख) 5% बैंक ऋण	1,00,000	
	1,00,000	**2,00,000**
(ii) मूर्त परिसंपत्तियाँ		
(क) भूमि एवं भवन	6,50,000	8,00,000
(ख) संयत्र एवं मशीनरी	3,60,000	4,00,000
	10,10,000	**12,00,000**
(iii) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		
(क) हस्तस्थ रोकड़	70,000	50,000
(ख) बैंक शेष	3,05,000	2,90,000
	3,75,000	**3,40,000**

अतिरिक्त जानकारी

1. वर्ष मार्च 31, 2016–17 और वर्ष मार्च 31, 2015–16 के लिए प्रस्तावित लाभांश क्रमशः 2,25,000 रु. और 1,50,000 रु. है।
2. आयकर चुकाया गया जिसमें रु. 15,000 लाभांश कर की राशि शामिल थी।
3. रु. 1,50,000 के (पुस्तक मूल्य के) भूमि एवं भवन को 10% लाभ पर बेचा गया है।
4. संयंत्र व मशीनरी पर ह्रास की दर 10% है।
5. अप्रैल 2017 को 9% ऋणपत्र का शोधन किया गया। 5% बैंक ऋण मार्च 31, 2017 को लिया गया है।

हल

रोकड़ प्रवाह विवरण

	विवरण	रु.
I.	**प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह**	
	कराधान एवं असाधारण मदों से पूर्व निवल लाभ समायोजन हेतु	3,95,000
	समायोजन	
	+ ह्रास	40,000
	+ ख्याति का अपलेखन	20,000
	– भूमि की बिक्री पर लाभ	(15,000)
	= कार्यशील पूँजी में परिवर्तन से पूर्व प्रचालन लाभ	4,40,000
	– व्यापारिक देय में कमी	(10,000)
	– व्यापारिक प्राप्यों में वृद्धि	(50,000)

© NCERT not to be republished

	– रहतिए में वृद्धि	(80,000)
	= प्रचालनों से अर्जित रोकड़	3,00,000
	– आयकर का भुगतान (1)	(65,000)
	(क) प्रचालन से रोकड़ अंतर्वाह	2,35,000
II.	**निवेश क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह**	
	भूमि व भवन बिक्री से प्राप्तियाँ	1,65,000
	निवेश की खरीद	(6,00,000)
	(ख) निवेश क्रियाकलापों में प्रयुक्त रोकड़	(4,35,000)
III.	**वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह**	
	समता अंश पूँजी का निर्गमन	5,00,000
	ऋण-पत्रों का मोचन	(2,00,000)
	बैंक ऋण से प्राप्त राशि	1,00,000
	लाभांश का भुगतान	(1,50,000)
	लाभांश वितरण कर का भुगतान	(15,000)
	(ग) वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह	2,35,000
	रोकड़ व रोकड़ तुल्यराशियों (क+ख+ग) में निवल वृद्धि	35,000
	+ प्रारंभ में रोकड़ व रोकड़ तुल्यराशियाँ	3,40,000
	अंत में रोकड़ व रोकड़ तुल्यराशियाँ	3,75,000

कार्यकारी टिप्पणियाँ

	रु.
(1) वर्ष के दौरान चुकता कुल कर	80,0000
(–) लाभांश वितरण कर का भुगतान (दिया गया)	(15,000)
प्रचालन हेतु आयकर का भुगतान	65,000

(2) कर एवं लाभांश के पश्चात् वर्ष के दौरान अर्जित निवल लाभ
= 7,50,000 रु. – 6,00,000 रु. = 1,50,000 रु.

(3) कर से पूर्व निवल लाभ
= कर एवं लाभांश के पश्चात् वर्ष के दौरान अर्जित निवल लाभ + कर हेतु प्रावधान + घोषित लाभांश
= 1,50,000 रु. + 95,000 रु. (कर हेतु प्रावधान खाता देखिए) + 1,50,000 रु.
= 3,95,000 रु.

समता अंश पूँजी खाता

नाम *जमा*

विवरण	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*
शेष आ/ले		15,00,000	शेष आ/ला रोकड़ (नई पूँजी निर्गमित)		10,00,000 5,00,000
		15,00,000			**15,00,000**

© NCERT not to be republished

ऋणपत्र खाता

नाम *जमा*

विवरण	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*
रोकड़ (मोचन)		20,000	शेष आ/ला		20,000
		20,000			**20,000**

बैंक खाता

नाम जमा

विवरण	*रो.पृ.सं.*	*राशि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*
शेष आ/ले		1,00,000	रोकड़		1,00,000
		1,00,000			**1,00,000**

कर हेतु प्रावधान

नाम *जमा*

विवरण	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*
रोकड़ (कर का भुगतान जिसमें लाभांश के 15,000 रु. शामिल हैं)		80,000	शेष आ/ला		80,000
			लाभ व हानि विवरण (वर्ष के दौरान किए गए प्रावधान)		95,000
शेष आ/ले		95,000			
		1,75,000			**1,75,000**

भूमि व भवन खाता

नाम *जमा*

विवरण	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*
शेष आ/ला		8,00,000	रोकड़		1,65,000
लाभ व हानि विवरण (विक्रय पर लाभ)		15,000	शेष आ/ले		6,50,000
		8,15,000			**8,15,000**

प्रस्तावित लाभांश खाता

नाम जमा

विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.
रोकड़		1,50,000	अधिशेष		1,50,000
		1,50,000			**1,50,000**

संयंत्र व मशीनरी खाता

नाम जमा

विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.
शेष आ/ला		4,00,000	ह्रास		40,000
			शेष आ/ले		3,60,000
		4,00,000			**4,00,000**

© NCERT not to be republished

उदाहरण 9

निम्नलिखित विवरण ओसवाल मिल लिमिटेड से संबंधित हैं। वर्ष की समाप्ति हेतु 31 मार्च, 2015 पर रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करें।

तुलन-पत्र 31 मार्च 2016 व 2017 को **(रु. लाख में)**

विवरण	नोट संख्या	31, मार्च 2017 रु.	31, मार्च 2016 रु.
I. समता एवं देयताएँ			
(i) अंशधारक निधि			
(क) अंश पूँजी	1	1,300	1,400
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष (अधिशेष)		4,700	4,000
(ii) चालू देयताएँ			
(क) अल्पकालीन ऋण		200	600
(ख) व्यापारिक देय		500	400
योग		**6,700**	**6,400**
II. परिसंपत्तियाँ			
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) स्थाई परिसंपत्तियाँ	2	2,400	2,400
(ख) गैर-चालू निवेश		300	200

(ii) चालू परिसंपत्तियाँ				
(क) रहतिया			1,200	1,300
(ख) व्यापारिक प्राप्य			800	900
(ग) रोकड़ एव रोकड़ तुल्यांक			1,200	800
(घ) अल्पकालीन ऋण एवं अग्रिम			800	800
योग			6,700	6,400

खातों की टिप्पणियाँ

(रु. लाख में)

विवरण	*31, मार्च 2017 रु*	*31, मार्च 2016 रु*
1. अंश पूँजी		
समता अंश पूँजी	1,000	1,000
10% अधिमानी अंश पूँजी	300	400
	1,300	**1,400**
2. स्थायी परिसंपत्तियाँ		
(क) मूर्त परिसंपत्तियाँ	3,600	3,400
घटाया– संचित ह्रास	(1,200)	(1,000)
	2,400	2,400

31 मार्च 2015 को लाभ व हानि विवरण

विवरण	*नोट संख्या*	*31, मार्च 2017 रु*	–
I. प्रचालन से आगम		2,800	–
II. अन्य आय (लाभांश से आय)		1,000	–
III. कुल आगम		3,800	–
IV. व्यय			
उपभोग किए गए माल की लागत		400	–
कर्मचारी हित व्यय		200	–
वित्तीय लागत (ब्याज का भुगतान)		200	–
ह्रास		200	–
भूकंप हानि		1,100	–
		2,100	
V. कराधान से पूर्व लाभ		1,700	–
VI. कर भुगतान		(1,000)	–
कराधान के पश्चात् लाभ		700	–

अतिरिक्त सुचनाएँ

1 कंपनी द्वारा चालू वित्तीय वर्ष के दौरान लाभांश का भुगतान नहीं किया गया।

2 स्थिर परिसंपत्तियों में से रु. 1,000 लाख के मूल्य की भूमि पर कोई संचित ह्रास नहीं है, उसे बिना लाभ या हानि में बेचा गया।

हल

रोकड़ प्रवाह विवरण **(रु. लाख में)**

विवरण	रु.
प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह	
कर व असाधारण मदें से पूर्व निवल लाभ (1)	2,800
समायोजन–	
+ ब्याज का भुगतान	200
+ मूल्यह्रास	200
कार्यशील पूँजी में परिवर्तन से पूर्व प्रचालन लाभ	3,200
समायोजन–	
+ रहतिया में कमी	100
+ व्यापारिक प्राप्यों में कमी	100
+ व्यापारिक देय में वृद्धि	100
प्रचालनों से अर्जित रोकड़	3,500
(–) आयकर का भुगतान	(1,000)
असाधारण मदों से पूर्व नकद प्रवाह	2,500
(–) भूकंप से हानि	(1,100)
(क) प्रचालन क्रियाकलाप से निवल रोकड़	1,400
निवेशन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह	
भूमि की बिक्री	1,000
स्थिर परिसंपत्तियों का क्रय (2)	(1,200)
विनियोगों का क्रय	(100)
(ख) निवेशन क्रियाकलापो से निवल रोकड़ प्रवाह	(300)
वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह	
अल्पकालीन ऋण का भुगतान	(400)
ब्याज का भुगतान	(200)
10% अधिमानी पूँजी का मोचन	(100)
(ग) वित्तीय क्रियाकलापों में प्रयुक्त निवल रोकड़	(700)
वर्ष के दौरान रोकड़ एवं तुल्यराशियों में निवल वृद्धि (क + ख + ग)	400
+ वर्ष के प्रारंभ में रोकड़ व रोकड़ तुल्यराशियाँ	800
= अंत में रोकड़ व रोकड़ तुल्यराशियाँ	**1,200**

कार्यकारी टिप्पणी

(1) कर व असाधारण मदों से पूर्व लाभ = 700 रु. + 1,100 रु. + 1,000 रु. = 2,800 रु.

स्थिर परिसंपत्ति खाता

नाम *जमा*

विवरण	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*
शेष आ/ला		3,400	रोकड़ (भूमि का विक्रय)		1,000
रोकड़ (स्थिर परिसंपत्तियों का क्रय)		1,200	शेष आ/ले		3,600
		4,600			**4,600**

संचित ह्रास खाता

नाम *जमा*

विवरण	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*
शेष आ/ले		1,200	शेष आ/ला		1,000
			लाभ व हानि विवरण		200
		1,200			**1,200**

उदाहरण *10*

निम्नलिखित जानकारी से बंजारा लिमिटेड का रोकड़ प्रवाह विवरण बनाइए।

(राशियाँ '000 रु. में)

विवरण	नोट संख्या	31, मार्च 2017 (रु.)	31, मार्च, 2016 (रु.)
I. समता एवं देयताएँ			
(i) अंश धारक निधि			
(क) अंश पूँजी		1,500	1,250
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष		3,410	1,380
(ii) गैर-चालू देयताएँ			
(क) दीर्घकालीन ऋण		1,110	1,040
(iii) चालू देयताएँ			

© NCERT not to be republished

(क) व्यापारिक देय		150	1890
(ख) अन्य चालू देयताएँ	1	630	1,100
योग		**6,800**	**6,660**
II. परिसम्पत्तियाँ			
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) स्थाई परिसंपत्तियाँ	2	730	850
(ख) गैर-चालू निवेश		2,500	2,500
(ii) चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) चालू निवेश (विपणन योग्य)		670	135
(ख) रहतिया		900	1950
(ग) व्यापारिक प्राप्य		1,700	1,200
(घ) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		200	25
(ङ) अन्य चालू परिसंपत्तियाँ (प्राप्य ब्याज)		100	–
योग		**6,800**	**6,660**

खातों की टिप्पणियाँ

विवरण	*31, मार्च 2017 (रु.)*	*31, मार्च 2016 (रु.)*
I. अन्य चालू देयताएँ		
(i) ब्याज देय	230	100
(ii) देय आयकर	400	1000
	630	**1,100**
II. स्थाई परिसंपत्तियाँ		
(i) मूर्त परिसंपत्तियाँ	2,180	1,910
घटाया– संचित ह्रास	(1,450)	(1,060)
	730	**850**

वर्षान्त 31 मार्च, 2017 लाभ व हानि विवरण

विवरण	नोट संख्या.	31, मार्च 2016 रु.
I. प्रचालन से आगम	1	30,650
II.अन्य आय		640
III.कुल आगम		**31,290**

© NCERT not to be republished

IV.व्यय		
उपभोग की गई सामग्री की लागत		26,000
वित्तीय लागत (ब्याज व्यय)		400
ह्रास		450
अन्य व्यय		910
(प्रशासनिक एवं विक्रय व्यय)		
कुल व्यय		**27,760**
कर से पूर्व लाभ		3,530
घटाया: कर		(300)
कर के पश्चात् लाभ		**3,230**

खातों की टिप्पणी

अन्य आय– वर्ष 2016-17 के दौरान (,000 रु. में)

विवरण	रु.
(i) ब्याज आय	300
(ii) लाभांश आय	200
(iii) भूकंप आपदा निपटान से बीमा प्राप्तियाँ	140

अतिरिक्त जानकारी (रु. '000)

(i) 250 रु. की राशि की अंश पूँजी निर्गमित की गई और 250 रु. की एक अतिरिक्त राशि दीर्घ-कालिक ऋण उठाई गई।

(ii) ब्याज व्यय 400 रु. था जिसमें 170 रु. को अवधि के दौरान चुकाया गया। पूर्व अवधि से संबंधित ब्याज के 100 रु. भी इस अवधि के दौरान चुकाए गए।

(iii) लाभांश के 1,200 रु. चुकाए गए।

(iv) लाभांश की प्राप्ति पर स्रोत पर कर कटौती की गई जो 40 रु. थी (वर्ष के लिए कर 300 रु. कर खर्चों में जोड़ा गया)।

(v) मार्च 31, 2017 को 70,00,000 रु. का 8% बैंक ऋण लिया गया।

(vi) अवधि के दौरान उद्यम में 350 रु. की स्थायी परिसंपत्ति प्राप्त की। इसका रोकड़ भुगतान किया गया।

(vii) संयत्र की मूल लागत 80 रु. थी और संचित मूल्यह्रास 60 रु. था, इसे 20 रु. में बेचा गया

(viii) व्यापारिक प्राप्यों तथा व्यापारिक देय के अंतर्गत केवल उधार बिक्री एवं उधार खरीद शामिल है।

रोकड़ प्रवाह विवरण

(रु.'000)

विवरण	रु.
I प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह	
कराधान तथा असाधारण मदों से पूर्व निवल लाभ	3,390
समायोजन–	
+ ह्रास	450
– ब्याज आय	(300)
– लाभांश आय	(200)
+ ब्याज व्यय	400
कार्यशील पूँजी में परिवर्तन से पूर्व प्रचालन लाभ	3,740
व्यापारिक प्राप्यों में वृद्धि	(500)
रहतिए में कमी	1,050
व्यापारिक देय में कमी	(1,740)
प्रचालन से अर्जित रोकड़	2,550
आयकर का भुगतान	900
असाधारण मदों से पूर्व रोकड़ प्रवाह	1,650
भूकंप आपदा से निपटान से प्राप्तियाँ	140
प्रचालन क्रियाकलापों से निवल रोकड़	1,790
II निवेश क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह	
स्थिर परिसंपत्तियों का क्रय	(350)
उपकरणों की बिक्री से प्राप्तियाँ	20
ब्याज प्राप्ति	200
लाभांश प्राप्ति (टी.डी.एस. सहित)	200
निवेश क्रियाकलापों से निवल रोकड़	70
III वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह	
निर्गमित अंश पूँजी से प्राप्तियाँ	250
दीर्घकालिक ऋणों से प्राप्तियाँ	250
दीर्घकालिक ऋणों की चुकौती (शोधन)	(180)
ब्याज का भुगतान	(270)
लाभांश का भुगतान	(1,200)
वित्तीय क्रियाकलापों से निवल रोकड़	(1,150)
IV रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक में निवल वृद्धि	710
अवधि के प्रारंभ में रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	160
अवधि के अंत में रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	870

© NCERT not to be republished

नोट:- चूंकि रोकड प्रवाह विवरण लाभ व हानि विवरण में तैयार हुआ है अत: भुगतान किया गया लाभांश का समायोजन वित्तीय क्रियाकलाप में किया जाएगा।

कार्यकारी टिप्पणियाँ

1. *रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक*

रोकड़ एवं रोकड़ तुल्याकों के अंतर्गत हस्तस्थ रोकड़ एवं बैंक शेष तथा बाज़ार मुद्रा प्रपत्र समाहित होते हैं। रोकड़ प्रवाह विवरण में निहित रोकड़ एवं रोकड़ तुल्याकों में निम्नलिखित तुलन पत्र राशियाँ संघटित होती हैं।

	2014 रु.	2013 रु.
		(रु. '000)
हस्तस्थ रोकड़ एवं बैंक शेष	200	25
अल्पकालिक निवेश	670	135
रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	870	160

2. ग्राहकों से प्राप्त रोकड़ प्राप्तियाँ

बिक्री		30,650
जोड़ा- वर्ष के प्रारंभ में व्यापारिक प्राप्य		1,200
		31,850
घटाया- वर्ष के अंत में व्यापारिक प्राप्य		(1,700)
		30,150

3. पूर्तिकारों एवं कर्मचारियों को रोकड़ भुगतान

प्रचालन से आगम की लागत		26,000
प्रशासनिक एवं विक्रय व्यय		910
		26,910
जोड़ा- वर्ष के प्रारंभ में व्यापारिक देय	1,890	
वर्ष के अंत में रहतिया	900	2,790
		29,700
घटाया- वर्ष के अंत में व्यापारिक देय	150	
वर्ष के प्रारंभ में रहतिया	1,950	(2,100)
		27,600

4. *आयकर का भुगतान (लाभांश प्राप्ति से टी.डी.एस. सहित)*

वर्ष के लिए आयकर व्यय (लाभांश प्राप्त से टी.डी.एस. सहित)	300
जोड़ा – वर्ष के प्रारंभ में देय आयकर	1,000
	1,300
घटाया - वर्ष के अंत में देय आयकर	(400)
	900

5. दीर्घकालिक ऋणों की चुकौती (शोधन)

वर्ष के प्रारंभ में दीर्घकालिक ऋण	1,040
जोड़ा – वर्ष के दौरान लिए गए दीर्घकालिक ऋण	250
	1,290
घटाया – वर्ष के अंत में दीर्घकालिक ऋण	(1,110)
	180

6. ब्याज का भुगतान

वर्ष के लिए ब्याज व्यय	400
जोड़ा– वर्ष के प्रारंभ में देय ब्याज	100
	500
घटाया– वर्ष के अंत में देय ब्याज	(230)
	270

इस अध्याय में प्रयुक्त शब्द

1. लेखा मानक-3
2. रोकड़
3. रोकड़ अंतर्वाह
4. रोकड़ तुल्यांक
5. रोकड़ बाहिर्वाह
6. गैर-रोकड़ मद
7. रोकड़ प्रवाह विवरण
8. प्रचालन क्रियाकलाप
9. निवेश क्रियाकलाप
10. वित्तीय क्रियाकलाप
11. असाधारण मदें

सारांश

रोकड़ प्रवाह विवरण – रोकड़ प्रवाह विवरण एक उद्यम की वित्तीय स्थिति से तरलता को अभिनिश्चित करने में सहायक है। कंपनी अधिनियम द्वारा अनुमोदित लेखांकन मानक 3 के अनुसार भारतीय कंपनियों को रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करना अनिवार्य होता है। रोकड़ प्रवाह को प्रचालन, निवेशन तथा वित्तीय क्रियाकलापों के प्रवाह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। यह विवरण एक कंपनी द्वारा जनित रोकड़ प्रवाह की राशि एवं अभिनिश्चयात्मकता को सुरक्षित करता है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

क. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. एक रोकड़ प्रवाह विवरण क्या है?
2. जब रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार कर रहे हों तो विभिन्न क्रियाकलापों को (संशोधित ले. मा. के अनुसार) कैसे वर्गीकृत किया जाता है?
3. रोकड़ प्रवाह विवरण के उपयोगों की व्याख्या कीजिए?
4. एक रोकड़ प्रवाह विवरण को तैयार करने के उद्देश्य क्या हैं?

© NCERT not to be republished

5. इन शब्दों का अर्थ बताइए – रोकड़ तुल्यांक, रोकड़ प्रवाह।
6. अप्रत्यक्ष विधि का उपयोग करते हुए प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह का एक प्रारूप तैयार करें?
7. यह स्पष्ट करें कि निम्न में से प्रत्येक प्रकार के उद्यमों के लिए प्रचालन क्रियाकलाप में क्या संघटित होगा –
   (i) होटल
   (ii) फ़िल्म निर्माण कंपनी
   (iii) वित्तीय उद्यम
   (iv) मीडिया उद्यम
   (v) स्टील निर्माण इकाई
   (vi) सॉफ़्टवेयर विकास व्यवसाय इकाई
8. "एक उद्यम की प्रकृति/प्रकार उसे पूर्णत: उस श्रेणी में परिवर्तित कर सकता है जिसमें कि एक विशिष्ट क्रियाकलाप वर्गीकृत हो सकती है" क्या आप इससे सहमत हैं? अपने उत्तर का वर्णन कीजिए।

ख. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. रोकड़ प्रवाह विवरण बनाने की प्रक्रिया का वर्णन करें।
2. प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह को अभिलिखित कराने हेतु "अप्रत्यक्ष" विधि का वर्णन करें।
3. निवेश क्रियाकलापों से रोकड़ अंतर्वाह एवं बाहिर्वाह की व्याख्या करें।
4. वित्तीय क्रियाकलापों से प्रमुख रोकड़ अंतर्वाह एवं बाहिर्वाह की व्याख्या करें।

संख्यात्मक प्रश्न

1. 31 मार्च, 2017 को आनंद लिमिटेड की निवल आय 5,00,000 रु. थी। वर्ष के दौरान ह्रास 2,00,000 रु. था। साथ ही परिसंपत्तियाँ बेचने पर 50,000 रु का लाभ हुआ जिसे लाभ व हानि विवरण में हस्तांतरित किया गया। वर्ष के दौरान व्यापारिक प्राप्यों में 40,000 रु. की वृद्धि हुई और व्यापारिक देय में रु. 60,000 की वृद्धि हुई। अप्रत्यक्ष विधि के द्वारा प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह को परिकलित कीजिए।
   (**उत्तर** – 6,70,000 रु.)

2. नीचे दी गई जानकारी से आप रहतिए के लिए रोकड़ भुगतान की गणना कीजिए –

विवरण	रु.
प्रारंभ में रहतिया	40,000
उधार क्रय	1,60,000
अंत में रहतिया	38,000
प्रारंभ में व्यापारिक देय	14,000
अंत में व्यापारिक देय	14,500

[**उत्तर** – 1,59,500 रु.]

3. नीचे दिए गए प्रत्येक लेनदेन के लिए रोकड़ प्रवाह परिकलित कीजिए तथा रोकड़ प्रवाह की प्रकृति बताइए जैसे कि प्रचालन, निवेश व वित्तीय
   (अ) 2,50,000 रु. में मशीनरी को 20% चेक देकर प्राप्त किया गया और शेष देय हेतु बॉण्ड जारी किया गया।
   (ब) इन्फोर्माटेक से प्राप्त अंश हेतु 2,50,000 रु. चुकता किया गया और अधिग्रहण के बाद 50,000 रु. का लाभांश प्राप्त हुआ।
   (स) एक मशीन की मूल लागत 2,00,000 रु. थी जिसे 1,60,000 रु. की संचित मूल्यह्रास के साथ 60,000 रु. में बेचा गया।
   [**उत्तर** – 50,000 रु. निवेश क्रियाकलाप (बाहिर्वाह); 2,00,000 रु. निवेश क्रियाकलाप (बाहिर्वाह); 60,000 रु. निवेश क्रियाकलाप (अंतर्वाह)]

4. यमुना लिमिटेड का लाभ व हानि विवरण निम्नलिखित है।

यमुना लिमिटेड का लाभ व हानि विवरण
वर्षांत 31 मार्च 2017 को

विवरण	नोट संख्या	राशि (रु.)
(i) प्रचालन से आगम		10,00,000
(ii) व्यय		
उपभोग की गई सामग्री की लागत	1	50,000
व्यापारिक रहतिए का क्रय		5,00,000
अन्य व्यय	2	3,00,000
कुल व्यय		**8,50,000**
(iii) कर से पूर्व लाभ (i-ii)		1,50,000

अतिरिक्त सूचना

(i) वर्ष के दौरान व्यापारिक प्राप्यों में 30,000 रु. की कमी।
(ii) वर्ष के दौरान पूर्ववत्त व्ययों में 5,000 रु. की वृद्धि।
(iii) वर्ष के दौरान व्यापारिक देय में 15,000 रु. की वृद्धि।
(iv) वर्ष के दौरान 3,000 रु. के बकाया व्ययों में वृद्धि।
(v) अन्य व्यय में ह्रास 25,000 रु. सम्मिलित है।

अप्रत्यक्ष विधि के द्वारा 31 मार्च, 2017 वर्ष समाप्ति के लिए प्रचालन से उपलब्ध निवल रोकड़ परिकलित कीजिए।

[**उत्तर** – प्रचालन से उपलब्ध रोकड़ 2,18,000 रु.]

5. निम्नलिखित आँकड़ों से प्रचालन से रोकड़ परिकलित कीजिए।
   (i) वर्ष 2016-17 के लिए मूल्यह्रास के लिए 2,000 रु. के पश्चात् लाभ की राशि 10,000 रु. है।

© NCERT not to be republished

(ii) 31 मार्च, 2016 व 2017 पर वर्ष समाप्ति के लिए व्यवसाय की चालू परिसंपत्तियाँ और चालू देयताएँ निम्नवत् हैं–

	31 मार्च 2016 रु.	*31 मार्च 2017* रु.
व्यापारिक प्राप्य	14,000	15,000
संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान	1,000	1,200
व्यापारिक देय	13,000	15,000
रहतिया	5,000	8,000
अन्य चालू परिसम्पत्तियाँ	10,000	12,000
बकाया व्यय	1,000	1,500
पूर्वदत्त व्यय	2,000	1,000
उपार्जित आय	3,000	4,000
अग्रिम (पेशगी) आय प्राप्त	2,000	1,000

[**उत्तर** – 7,700 रु. प्रचालनों से रोकड़]

6. निम्नलिखित विवरण भारत गैस लिमिटेड से हैं। निवेश क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह परिकलित कीजिए। साथ ही खाता बही तैयार करते हुए स्पष्ट कार्यकारी टिप्पणी दें।

31 मार्च 2016 और 31 मार्च 2017........... को भारत गैस लिमिटेड का तुलन पत्र

विवरण	*नोट संख्या*	*मार्च 31 2017*	*मार्च 31 2016*
I. परिसंपत्तियाँ			
1. गैर-चालू परिसंपत्तियाँ			
(i) स्थायी परिसंपत्तियाँ			
(क) मूर्त परिसंपत्तियाँ	1	12,40,000	10,20,000
(ख) अमूर्त परिसंपत्तियाँ	2	4,60,000	3,80,000
(ii) गैर-चालू निवेश	3	3,60,000	2,60,000

टिप्पणी

1. मूर्त परिसंपत्तियाँ = मशीनरी
2. अमूर्त परिसंपत्तियाँ = एकस्व

© NCERT not to be republished

खातों की टिप्पणियाँ

	मार्च 31, 2017	मार्च 31, 2016
1. मूर्त परिसंपत्तियाँ		
मशीनरी	**12,40,000**	**10,20,000**
2. अमूर्त परिसंपत्तियाँ		
ख्याति	3,00,000	1,00,000
एकस्व	1,60,000	2,80,000
	4,60,000	**3,80,000**
3. गैर-चालू निवेश		
10% दीर्घकालीन निवेश	1,60,000	60,000
भूमि में निवेश	1,00,000	1,00,000
एमैरटैक्स लिमिटेड के अंश	1,00,000	1,00,000
	3,60,000	**2,60,000**

अतिरिक्त जानकारी

(अ) 40,000 रु. के एकस्व को अपलिखित किया गया और कुछ एकस्व 20,000 रु. के लाभ पर बेचा गया।

(ब) 1,40,000 रु. लागत की एक मशीन (जिसमें ह्रास 60,000 रु. दिया गया) को 50,000 रु. में बेचा गया। वर्ष के दौरान ह्रास 1,40,000 रु. प्रभारित किया गया।

(स) 31 मार्च, 2016 को 1,80,000 रु. के 10% निवेश खरीदे गए और कुछ निवेशों को 20,000 रु. के लाभ पर बेचा गया। निवेशों पर 31 मार्च, 2017 को ब्याज प्राप्त किया गया।

(द) अंशों पर एमैरटैक्स लिमिटेड ने 10% की दर से लाभांश प्रदान किया।

(य) निवेश के लिए एक भूखंड का क्रय किया और उसे व्यावसायिक कार्य के उद्देश्य के लिए किराए पर देकर किराए के 30,000 रु. प्राप्त किए।

[**उत्तर**- 5,24,000 रु.]

7. निम्नलिखित विवरण मोहन लिमिटेड से हैं। वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह को परिकलित करें–

31 मार्च 2016 एवं 31 मार्च 2017 को मोहन लिमिटेड का तुलन-पत्र यथानुसार है

विवरण	*नोट संख्या*	*31 मार्च 2017 (रु.)*	*31 मार्च 2016 (रु.)*
I. समता एवं देयताएँ			
(i) अंशधारक निधि			
(क) समता अंश पूँजी		3,00,000	2,00,000
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष		2,00,000	2,20,000
(ii) गैर-चालू देयताएँ			
(क) दीर्घकालीन ऋण	1	80,000	1,00,000

(iii) चालू देयताएँ			
(क) व्यापारिक देय		1,20,000	1,40,000
(ख) अल्पकालीन प्रावधान		70,000	60,000
योग		**7,70,000**	**6,60,000**
II. परिसंपत्तियाँ			
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) स्थाई परिसंपत्तियाँ	2	5,00,000	3,20,000
(i) चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) रहतिया		1,50,000	1,30,000
(ख) व्यापारिक प्राप्य	3	90,000	1,20,000
(ग) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक	4	30,000	90,000
योग		**7,70,000**	**6,60,000**

खातों की टिप्पणियाँ

विवरण	*31 मार्च,* 2017 (रु.)	*31 मार्च,* 2016 (रु.)
1. दीर्घकालीन ऋण		
बैंक ऋण	**80,000**	**1,00,000**
2. स्थाई परिसंपत्तियाँ	6,00,000	4,00,000
घटाया – संचित ह्रास	1,00,000	80,000
(निवल) स्थाई परिसंपत्तियाँ	**5,00,000**	**3,20,000**
3. व्यापारिक प्राप्य		
देनदार	60,000	1,00,000
प्राप्य विपत्र	30,000	20,000
	90,000	**1,20,000**
4. रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		
बैंक	**30,000**	**90,000**

अतिरिक्त जानकारी

मशीन की लागत 80,000 रु. है तथा उस पर संचित ह्रास 50,000 रु. था और (वह 20,000 रु. में बेची गई।) 9% बैंक ऋण का भुगतान मार्च 31, 2017 को किया गया। 2015-16 के लिए प्रस्तावित लाभांश 60,000 रु. था।

[**उत्तर –** प्रचालन क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह 1,80,000 रु.
निवेश क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह (2,60,000) रु.
वित्तीय क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह 11,000 रु.

© NCERT not to be republished

8. टाइगर सूपर स्टील लिमिटेड के निम्नलिखित तुलन-पत्र से रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार कीजिए।

31 मार्च 2016 और 31 मार्च 2017 को टाइगर सूपर स्टील लिमिटेड का तुलन-पत्र

विवरण	नोट संख्या	31 मार्च 2017 (रु.)	31 मार्च 2016 (रु.)
I. समता एवं देयताएँ			
(i) अंशधारियों की निधि			
(क) अंश पूँजी	1	1,40,000	1,20,000
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष	2	38-,400	26,400
(ii) चालू देयताएँ			
(क) व्यापारिक देय	3	21,200	14,000
(ख) अन्य चालू देयताएँ	4	2,400	3,200
(ग) अल्पकालीन प्रावधान	5	12,800	11,200
योग		**2,14,800**	**1,74,800**
II. परिसम्पत्तियाँ			
(i) गैर चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) स्थायी परिसंपत्तियाँ			
मूर्त परिसंपत्तियाँ	6	96,400	76,000
अमूर्त परिसंपत्तियाँ		18,800	24,000
(ख) गैर चालू निवेश		14,000	4,000
(ii) चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) रहतिया		31,200	34,000
(ख) व्यापारिक प्राप्य		43,200	30,000
(ग) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		11,200	6,800
योग		**2,14,800**	**1,74,800**

खातों की टिप्पणियाँ

	31 मार्च, 2017 रु.	31 मार्च, 2016 रु.
1. अंश पूँजी		
समता अंश पूँजी	1,20,000	80,000
10% अधिमानी अंश पूँजी	20,000	40,000
	1,40,000	**1,20,000**
2. आरक्षित एवं अधिशेष		
सामान्य आरक्षित	12,000	8,000
लाभ व हानि विवरण मे शेष	10,800	18,400
	38,400	**26,400**

3. व्यापारिक देय		
देय विपत्र	**21,200**	**14,000**
4. अन्य चालू देयताएँ		
बकाया व्यय	**24,000**	**3,200**
5. अल्पकालीन प्रावधान		
कराधान के लिए प्रावधान		
6. मूर्त परिसंपत्तियाँ	20,000	40,000
भूमि एवं भवन	76,400	36,000
संयत्र	**96,400**	**76,000**

अतिरिक्त जानकारी

चालू वर्ष में भूमि एवं भवन पर ह्रास प्रभार 20,000 रु. है तथा संयंत्र पर 10,000 रु. है। वर्ष 2016-17 और 2015-16 का प्रस्तावित लाभांश क्रमशः 15,600 और 11,200 रु. है।

[**उत्तर –** प्रचालन क्रियाकलाप से राकेड़ प्रवाह 56,000 रु. निवेश क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह (60,400) रु. वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह 8,800 रु.]

9. निम्नलिखित जानकारी से रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करें –

तुलन-पत्र

विवरण	*नोट संख्या*	*31 मार्च 2015 रु.*	*31 मार्च 2014 रु.*
I. समता एवं देयताएँ			
(i) अंशधारियों की निधि			
(क) अंश पूँजी		7,00,000	5,00,000
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष		4,70,000	2,50,000
(ii) गैर-चालू देयताएँ			
(क) 8% ऋणपत्र		4,00,000	6,00,000
(iii) चालू देयताएँ			
(क) व्यापारिक देय		9,00,000	6,00,000
योग		**24,70,000**	**19,50,000**
II. परिसंपत्तियाँ			
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) स्थायी परिसंपत्तियाँ			
मूर्त परिसंपत्तियाँ		7,00,000	5,00,000
अमूर्त परिसंपत्तियाँ (ख्याति)		1,70,000	2,50,000
(ख) चालू परिसंपत्तियाँ			
रहतिया		6,00,000	5,00,000
व्यापारिक प्राप्य		6,00,000	4,00,000
रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		4,00,000	3,00,000
योग		**24,70,000**	**19,50,000**

अतिरिक्त जानकारी

संयंत्र पर ह्रास 80,000 रु.।

[**उत्तर** – प्रचालन क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह 4,28,000 रु., निवेश क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह (2,80,000) रु. वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह (48,000) रु.]

10. निम्नलिखित जानकारी से योगिता लि. के लिए रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार कीजिए।

तुलन पत्र

विवरण	*नोट संख्या*	*31 मार्च 2017, रु.*	*31 मार्च 2016, रु.*
I. समता एवं देयताएँ			
(i) अंशधारक निधि			
(क) अंश पूँजी	1	4,00,000	2,00,000
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष (अधिशेष)		2,00,000	1,00,000
(ii) गैर चालू देयताएँ			
(क) दीर्घकालीन ऋण	2	1,50,000	2,20,000
(iii) चालू देयताएँ			
(क) अल्पकालीन ऋण (बैंक अधिविकर्ष)		1,00,000	
(क) व्यापारिक देय		70,000	50,000
(ख) अल्पकालीन प्रावधान (कराधान के लिए प्रावधान)		50,000	30,000
योग		**9,70,000**	**6,00,000**
II. परिसंपत्तियाँ			
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) स्थाई परिसंपत्तियाँ			
मूर्त परिसंपत्तियाँ		7,00,000	4,00,000
(i) चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) रहतिया		1,70,000	1,00,000
(ख) व्यापारिक प्राप्य		1,00,000	50,000
(ग) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक			50,000
योग		**9,70,000**	**6,00,000**

खातों की टिप्पणियाँ

विवरण	*31 मार्च 2017 रु.*	*31 मार्च 2016 रु.*
I. अंश पूँजी		
(i) समता अंश पूँजी	3,00,000	2,00,000
(ii) अधिमानी अंश पूँजी	1,00,000	–
	4,00,000	**2,00,000**

II. दीर्घकालीन ऋण		
(i) दीर्घकालीन ऋण		2,00,000
(ii) राहुल से ऋण	1,50,000	20,000
योग	**1,50,000**	**2,20,000**

अतिरिक्त जानकारी

50,000 रु. मूल्यह्रास के रूप में प्राप्ति करने के पश्चात् निवल लाभ 1,50,000 रु. है। अंशों पर लाभांश भुगतान 50,000 रु. किया गया, वर्ष के दौरान कर प्रावधान की राशि 60,000 रु. थी। 8% ऋण का भुगतान मार्च 31, 2017 को किया गया और अप्रैल 01, 2016 को 30,000 रु. का अतिरिक्त 9% ऋण लिया गया।
[**उत्तर** – प्रचालन क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह 1,49,500 रु. निवेश क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह (13,50,000) रु. वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह (1,50,000) रु.]

11. निम्नलिखित तुलन-पत्र गरिमा लिमिटेड के हैं, इनके आधार पर रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार कीजिए।

विवरण	*नोट संख्या*	*31 मार्च 2017 (रु.)*	*31 मार्च 2016 (रु.)*
I. समता एवं देयताएँ			
(i) अंशधारक निधि			
(क) अंश पूँजी	1	4,40,000	2,80,000
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष	2	40,000	28,000
(ii) चालू देयताएँ			
(क) व्यापारिक देय		1,56,000	56,000
(ख) अल्पकालीन प्रावधान (कराधान के लिए प्रावधान)		12,000	4,000
योग		**6,48,000**	**3,68,000**
II. परिसम्पत्तियाँ			
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) स्थाई परिसंपत्तियाँ			
(ख) मूर्त परिसंपत्तियाँ		3,64,000	2,00,000
(i) चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) रहतिया		1,60,000	60,000
(ख) व्यापारिक प्राप्य		80,000	20,000
(ग) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		28,000	80,000
(घ) अन्य चालू परिसंपत्तियाँ		16,000	8,000
योग (पूर्वदत्त व्यय)		**6,48,000**	**3,68,000**

© NCERT not to be republished

खातों की टिप्पणियाँ

विवरण	*31 मार्च 2017 रु.*	*31 मार्च 2016 रु.*
I. अंश पूँजी		
(i) समता अंश पूँजी	3,00,000	2,00,000
(ii) अधिमानीं अंश पूँजी	1,40,000	80,000
	4,40,000	**2,80,000**
II. आरक्षित एवं अधिशेष		
वर्ष के आरंभ मे लाभ व हानि विवरण में अधिशेष	28,000	
जोड़ा – वर्ष के दौरान लाभ	16,000	
घटाया – लाभांश	4,000	
वर्ष के अंत में लाभ	**40,000**	

अतिरिक्त जानकारी

1. वर्ष के दौरान ह्रास लगाया गया रु. 32,000

[**उत्तर –** प्रचालन क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह (प्रवाह प्रयुक्त) 12,000 रु.
निवेश क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह (1,96,000) रु.
वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह 1,56,400 रु.

12. कंप्यूटर इंडिया लि. के निम्नलिखित तुलन-पत्र से रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार कीजिए।

विवरण	*नोट संख्या*	*31 मार्च 2017 रु.*	*31 मार्च 2016 रु.*
I. समता एवं देयताएँ			
(i) अंशधारक निधि			
(क) अंश पूँजी		52,000	40,000
(ख) आरक्षित एवं अधिशेष	1	9,500	8,000
(ii) गैर-चालू देयताएँ			
10% ऋणपत्र		6,500	6,000
(iii) चालू देयताएँ			
(क) अल्पकालीन ऋण	2	6,800	12,500
(क) व्यापारिक देय		11,000	12,000
(ग) अल्पकालीन प्रावधान	3	4,200	3,000
योग		**88,000**	**81,500**

© NCERT not to be republished

II. परिसंपत्तियाँ			
(i) गैर-चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) स्थायी परिसंपत्तियाँ	4	27,000	30,000
(ii) चालू परिसंपत्तियाँ			
(क) रहतिया		35,000	30,000
(ख) व्यापारिक प्राप्य		24,000	20,000
(ग) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यांक		3,500	1,200
(घ) अन्य चालू परिसंपत्तियाँ – पूर्वदत व्यय		500	300
योग		**90,000**	**81,500**

खातों की टिप्पणियाँ

विवरण	*31 मार्च 2017 रु.*	*31 मार्च 2016 रु.*
I. आरक्षित एवं अधिशेष		
(i) लाभ व हानि विवरण का शेष	7,000	6,000
(ii) सामान्य आरक्षित	2,500	2,000
	9,500	**8,000**
II. अल्पकालीन ऋण		
(i) बैंक अधिविकर्ष	6,800	12,500
III. अल्पकालीन प्रावधान		
(i)कराधान के लिए प्रावधान	4,200	3,000
IV. स्थाई परिसंपत्तियाँ		
स्थाई परिसंपत्तियाँ	42,000	41,000
घटाया- संचित ह्रास	(15,000)	(11,000)
	27,000	**30,000**

अतिरिक्त जानकारी

वर्ष 2015-16 के लिए प्रस्तावित लाभांश 2,50,000 रु. है।

[**उत्तर –** प्रचालन क्रियाकलाप से रोकड़ प्रवाह 2,100 रु.
निवेश क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह 1,000 रु.
वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह 4,900 रु.

© NCERT not to be republished

स्वयं जाँचने हेतु जाँच सूची

स्वयं जाँचिए-1

उत्तर –(अ) प्रचालन क्रियाकलाप- 3, 6, 7, 10, 13, 15, 19, 20, 23, 24, 27;
(ब) निवेश क्रियाकलाप - 1, 5, 8, 11, 12, 16, 17, 21, 22, 29;
(स) वित्तीय क्रियाकलाप - 2, 4, 9, 14, 18, 25, 26, 28;
(द) रोकड़ तुल्यराशियाँ - 30, 31, 32, 33.

स्वयं जाँचिए-2

उत्तर – 1. 40,000 रु., 2. 60,000 रु., 3. से कटौती
4. से कटौती, 5. जोड़ने हेतु (जोड़) 7. जोड़ने हेतु (जोड़ें)

उत्तर –1. +, 2. एन सी, 3. +, 4. -, 5. +, 6. एन सी, 7. -, 8 +, 9. एन सी, 10 -, 11 -, 12 +

अदावी लाभांशों का भुगतान	(0.03)	(0.09)
वित्तीय क्रियाकलापों से निवल रोकड़ प्रवाह	1,230.65	(334.49)
रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यराशियों में निवल वृद्धि	325.42	124.42
वर्ष के अंत में रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यराशियाँ	137.66	13.24
वर्ष की शुरुआत में रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यराशियाँ	463.08	137.66

© NCERT not to be republished

टिप्पणी

© NCERT not to be republished